बिट्ठलदास संस्कृत सीरीज २९

शरभ तन्त्रम्

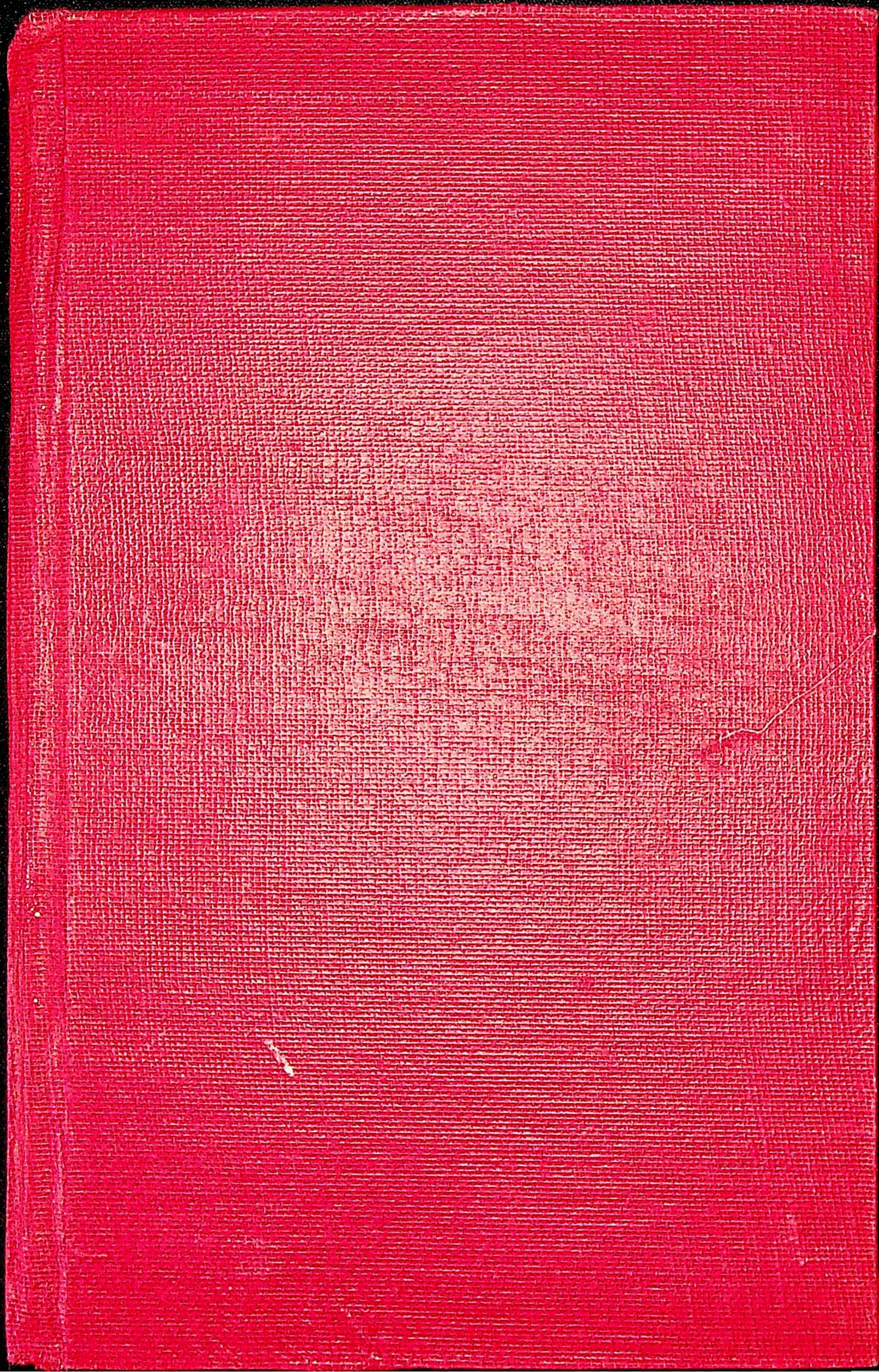
पक्षिराज तन्त्रम्

[आकाश भैरव कल्पोक्तम्]

हिन्दीभाष्यकार

कपिलदेव नारायण

चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी



बिट्ठलदास संस्कृत सीरीज
२९
***

दतिया पीताम्बरापीठस्थ स्वामिविरचितम्

शरभ तन्त्रम्

पक्षिराज तन्त्रम्

[आकाश भैरव कल्पोक्तम्]

हिन्दीभाष्यकार
कपिलदेव नारायण



चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी

प्रकाशक : चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी
मुद्रक : चौखम्बा प्रेस, वाराणसी
संस्करण : तृतीय, वि०सं० २०७६, सन् २०१९
मूल्य : रू० ३९५.००

ISBN : 978-81-218-0310-6

सूचना—तान्त्रिक अनुष्ठानों के प्रयोग हेतु सुयोग्य गुरु की अत्यन्त आवश्यकता होती है। अत: पाठकों के लिए ध्यातव्य है कि केवल पुस्तक के आधार पर किये गये तान्त्रिक अनुष्ठानों के विपरीत परिणाम हेतु लेखक, प्रकाशक एवं तत्सम्बन्धी कोई भी व्यक्ति किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होगा।

के० ३७/११८, गोपाल मन्दिर लेन
गोलघर (मैदागिन) के पास
पो० बा० नं० १११८, वाराणसी–२२१००१ (भारत)
फोन : (०५४२) २३३३४५८ P.P. & २३३५०२०

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस
के० ३७/९९, गोपाल मन्दिर लेन
गोलघर (मैदागिन) के पास
पो० बा० नं० १००८, वाराणसी—२२१००१ (भारत)
(आफिस) (०५४२) २३३३४५८
(आवास) (०५४२) २३३५०२०, २३३४०३२
Fax : 0542 - 2333458
e-mail : cssoffice01@gmail.com
web-site : www.chowkhambasanskritseries.com

प्रकाशकीय

काशी के कोतवाल काल भैरव हैं। इनके दर्शन के बिना विश्वनाथ शिव के दर्शन का फल नहीं मिलता। ब्रह्माजी का पाँचवाँ मुख जब शिवजी पर अपमानजनक शब्दों की वर्षा कर रहा था तब शिव से उत्पन्न होकर कालभैरव ने ब्रह्मा के पाँचवें मुख को काटकर उन्हें चतुर्मुख बना दिया। ब्रह्मा का शिर कालभैरव के हाथ से चिपक गया। ब्रह्म हत्या का दोष लग गया। तीनों लोकों में भटकने पर भी कपाल से मुक्त न होने पर काल भैरव काशी आये। यहाँ कपाल मोचन में हाथ से कपाल छूटा। काशी का यह कपाल मोचन तीर्थ हो गया। शिवजी ने इन्हें काशी का कोतवाल बना दिया। श्री विष्णु के नृसिंह अवतार के क्रोध को शान्त करने के लिये श्री शिव ने शरभ का अवतार लिया। उनके क्रोध को शान्त किया। इन दोनों कारणों के साथ अनेक कारणों से ब्रह्मा विष्णु से भी श्रेष्ठ शिवजी को महादेव माना गया।

इन्हीं महादेव शिव के अवतार शरभ की उपासना से सम्बन्धित 'शरभ तन्त्र' को आपकी सेवा में समर्पित करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। प्राचीन १९२ तन्त्र ग्रन्थों में से 'आकाश भैरव तन्त्र' से 'शरभ कल्प' को पंचांग उपासना सहित प्रस्तुत किया गया है। इससे मुझे काल भैरव और श्री विश्वनाथ की कृपा तो प्राप्त होगी ही साथ ही देव भाषा संस्कृत को संस्कृत न जानने वालों तक राष्ट्रभाषा हिन्दी में पहुँचाने का श्रेय भी मिलेगा। आशा है कि 'शरभ तन्त्र' से साधना करके जन सामान्य अपनी इच्छाओं की पूर्ति कर सकेंगे।

सचिन कुमार गुप्त



भूमिका

यह पुस्तक 'शरभ तन्त्रम्' 'पक्षिराजतन्त्रम्' आकाश भैरव तन्त्र का शरभ कल्प है। छोटे छोटे कल्प भी तन्त्र के अंग है। कल्प में किसी एक वस्तु विशेष को लक्ष्य रखकर अथवा किसी एक देवता विशेष को ध्यान में रखकर विधियों का संग्रह किया जाता है। भगवान शंकर के दिव्य तेज से प्रादुर्भूत श्री वीरभद्र ही भगवान शरभ हैं। शंकर जी के अनेक अवतारों में क्रोधानल स्वरूप श्री शरभ अवतार हैं। इनकी आकृति में पशु और पक्षि के अंगों का मिश्रण है। इनके विशाल पंखों के कारण इन्हें पक्षिराज कहा जाता है।

श्री पीताम्बरापीठ दतिया के स्वामी जी के द्वारा आकाश भैरव तन्त्र से इसका संकलन किया गया है। प्राचीन १९२ तन्त्रों के ग्रन्थों को भूमण्डल के आधार पर विभक्त करके प्रयोग किये जाते थे। भूमण्डल के आधार पर तीन भागों में विभक्त ग्रन्थों के नाम १ रथ क्रान्त २ विष्णु क्रान्त और ३ अश्व क्रान्त है। प्रत्येक में चौसठ-चौसठ ग्रन्थ हैं। आकाश भैरव तन्त्र रथक्रान्त विभाग का ३७वाँ तन्त्र है।

तन्त्र एक स्वतन्त्र शास्त्र है। यह पूजा और आचार पद्धति का परिचय देते हुए इच्छित तत्वों को अपने अधीन करने का मार्ग दिखलाता है। इसमें देवताओं के स्वरूप गुण कर्म आदि के चिन्तन आदि की प्रक्रिया बतलाते हुए पटल पद्धति कवच सहस्रनाम तथा स्तोत्र पाँच अंगोंवाली पूजा के विधान रहते है। इस तन्त्र में पीताम्बरा पीठ के स्वामीजी ने पंचांगों का संकलन किया है।

आकाश भैरव तन्त्र के अध्याय १६ में श्री पार्वती ने श्री शिवजी से सभी मनुष्यों के कष्ट विनाशन रक्षा और लोकों के कल्याण के लिये सभी मन्त्रों का सारस्वरूप महामन्त्र को जानने की इच्छा प्रकट किया। श्री शिव ने सभी प्रकार से रक्षा करनेवाला, भोग और मोक्ष प्रदायक, सभी पापों के फलों का विनाशक, अपस्मार आदि सभी कठिन मानसिक रोगों को नष्ट करनेवाला, सभी ज्वर रोग अपमृत्यु आदि नाना

प्रकार के कष्टों को हरण करनेवाला तथा सभी शत्रुओं का विनाशक श्री शरभेश्वर मन्त्र का उपदेश दिया।

पुराणों में प्रसिद्ध है कि ब्रह्मा विष्णु और शिव आदि देवताओं के अवतार समय समय पर होते रहते हैं। इन अवतारों में ब्रह्मा और शिव के अवतारों की संख्या कम है। भगवान विष्णु के अवतारों की संख्या सबसे अधिक है। इसी प्रकार भगवती के अवतारों की संख्या भी बहुत है।

भगवान विष्णु के अवतारों में हिरण्यकशिपु के वध और भक्तवर प्रह्लाद की रक्षा के लिये श्री नृसिंह अवतार अनूठा है। श्रीमद्‌भागवत के सप्तम स्कन्ध के आठवें अध्याय में वर्णन है कि अपने भक्त के कथन—'मेरा प्रभु सर्वत्र व्याप्त है' को सिद्ध करने के लिये अद्भुत नरसिंह रूप में सभा में स्थित स्तम्भ में प्रभु प्रकट हुए। इन्हें देखकर सभी आश्चर्य चकित हो गये। सोचने लगे कि यह कैसा विचित्र रूप है। न सिंह न पुरुष। अति भयंकर तप्त सोने के समान आँखों वाले, सुनहरी रोमावली युक्त, मुँह फैलाये हस्त, कराल दाढ़ें, तीक्ष्ण जिह्वा, भयंकर भौहें, खड़े खड़े कानों वाले, पर्वत गुफा के समान गहरी नाक वाले, भीषण ठोढ़ी, आकाश को स्पर्श करते हुए विशाल शरीर, छोटी किन्तु सुदृढ़ ग्रीवा वाला विशाल वक्ष, कृश कटि, भूरे भूरे बालों वाले तथा अत्यन्त कठोर नखों वाले भगवान नरसिंह प्रकट हुए।

इस प्रकार के अपूर्व रूप में अवतार लेने के कारण और परम पराक्रमी राक्षस हिरण्यकशिपुं का वध करने के कारण श्री विष्णु के मन में अहंकार प्रबल हो गया। क्रोध का आवेग सीमा पार कर गया था। अनेक प्रकार की स्तुतियाँ हो रही थी। सभी देवता चिन्तित थे कि क्रोध का शमन कैसे हो? अन्ततः श्री शिव ने इसका समाधान सोच लिया। उसी समय एक विचित्र पक्षी का रूप धारण किया। अपने पंजों से भगवान नरसिंह को पकड़कर आकाश में उड़ गये। आकाश में उड़ते हुए उन्होंने इतने भीषण चक्कर लगाये कि सारा ब्रह्माण्ड प्रलय काल के समान डोलता प्रतीत हुआ। नृसिंह अपने क्रोध को भूल गये स्वयं आश्चर्य में पड़ गये कि यह क्या हुआ? कैसे हुआ? कुछ समय के बाद

उन्हें पृथ्वी पर लाकर सभी देवताओं के सामने छोड़ भगवान नरसिंह का क्रोध धीरे धीरे शान्त हो गया।

इस आकस्मिक घटना से वातावरण बदल गया। इसी समय देवताओं ने शरभेश्वर को देखा। चन्द्र सूर्य अग्नि इनके तीन नेत्र है। इनके नख वज्र के समान है। अत्यन्त उग्र और चंचल जीभ है। इनके एक पंख पर काली और दूसरे पंख पर दुर्गा है। हृदय से उदंर भाग तक़ प्रलयकालीन अग्नि व्याप्त है। दोनों जंघों पर व्याधि और मृत्यु बैठे हैं। उड़ने के गति प्रचण्ड वायु वेग के समान है। सभी शत्रुओं के संहारक श्रेष्ठ शरभ पक्षी रूप शरभ सालुव पक्षिराज नामवाले सर्वोत्कर्ष की जय हो।

अन्य स्तुति पद्यों में भी ज्वलन कुटिलकेश, रक्तपानोन्मद, पंचानन, कलंकिचूड़, भुजंगभूषण, दिगम्बर, वज्रदंष्ट्र, वज्रनख, अनेकभुज, अष्टचरण, चतुर्थ शुक, भृगांगलांगूल सुचंचु, सहस्त्रांशुशतप्रकाश, सपक्षिसिंहाकृति, प्रेतवाहन, शंखध्वनि और अप्रतिहतगति विशेषणों से इनकी स्तुति की गयी है। तन्त्र शास्त्रों में श्री शरभ का स्वरूप वर्णन करते हुए स्थान-स्थान पर इन्हें श्मशान रुद्र, प्रलयाग्निरुद्र, नीलभैरव, उग्रभैरव, महाभैरव आदि कहा गया है। इन्हें सर्वकूर्म साधक और शत्रु दर्प दमन के लिये पूज्य कहा गया है।

आकाश भैरव कल्प में कहा गया है कि भगवान भैरव ने लोक. रक्षा के लिये अपने स्वरूप को यथा समय तीन रूपों में प्रकट किया है। ये तीन रूप है—१. आकाश भैरव २. आशु गरुड़ और ३ शरभ। इनमें भी तीसरे स्वरूप परमेश्वर के पुनः तीन रूप व्यक्त हुए है—१. शरभ २. सालुव ३. पक्षिराज। श्रद्धा विश्वास के विना उपासना सफल नहीं होती। श्री तुलसीदास के अनुसार—

जीव विना न होइ परतीति। विनु परतीति होइ नहि प्रीति।

इसीलिये संक्षेप में विष्णु के विचित्र अवतार श्री नृसिंह और शिव के विचित्र अवतार शरभेश्वर के रूप गुणकर्मों का वर्णन यहाँ किया गया।

भगवान शरभ भैरव परम दयालु हैं। वे अपने भक्तों की ही नहीं अन्य देवों के भक्तों की भी रक्षा के लिये भक्तों को दुख देने वाले शत्रुओं का नाश करने के लिये तत्पर रहते हैं। ललिता सहस्रनाम की फल श्रुति में कहा है—

यत्विदं नाम साहस्त्रं सकृत पठति भक्तिमान।
तस्य ये शत्रवस्तेषां निहन्ता शरभेश्वर।।

ऐसे अद्भुत पराक्रमी श्री शरभेश्वर के उपासना विरले ही भक्त करते हैं। तथा इनके उपासकों की इच्छओं की पूर्ति सभी देवता पहले ही कर देते हैं।

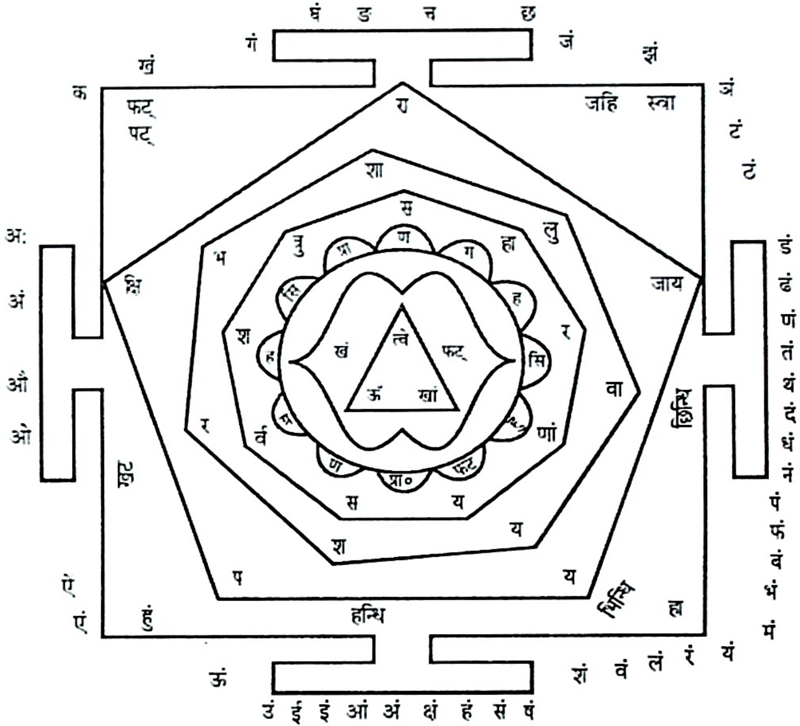
तान्त्रिक पद्धति में भैरव शब्द की निरुक्ति देखने के योग्य है। वामकेश्वर तन्त्र के एक भाग की टीका 'योगिनी हृदयदीपिका' में अमृतानन्द नाथ ने कहा है—'विश्वस्य भरणाद रमणाद वमनाद सृष्टि स्थिति संहारकारी परशिवो भैरव:' इसमें भ र व इन तीन अक्षरों के अर्थ भरण रमण और वमन से सम्बन्धित आद्यक्षर समुदाय से भैरव नाम बना है।

ऐसे भगवान शिव भैरव शरभेश्वर की उपासना करके मनोवांछित प्राप्त कर सकें इसी उद्देश्य से संस्कृत से राष्ट्र भाषा हिन्दी में व्याख्या कराकर चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस प्राच्य विद्या ग्रन्थों के प्रकाशक वितरक श्री सचिन गुप्त पाठकों उपासकों के कर कमलों में यह पुस्तक समर्पित कर रहे हैं। आशा है कि उपासक-साधक इस ग्रन्थ से ज्ञान प्राप्त करके उपासना-साधना करके अपनी इच्छाओं की पूर्त्ति करेंगे।

स्वरूपावस्थित
श्री कपिलदेव नारायण
पुनाई चक, पटना

विषय सूची

शरभ धारण यन्त्र



त्रिकोणं विलिखेत् पूर्वं तद्वाह्ये तु दलद्वयम्।
द्वादशारं तु तद्वाह्ये तद्वाह्ये तु नवास्त्रकम्।।
सप्तास्त्रं चैव पञ्चास्त्रं भूपुरं च क्रमाल्लिखेत्।

पहले त्रिकोण बनावें। उसके बाहर द्विदल बनावें। उसके बाहर द्वादशार बनावें। उसके बाहर नवास्त्र बनावें। उसके बाहर सप्तास्त्र बनावें उसके बाहर पंचास्त्र बनावें। उसके बाहर भूपुर बनावें।

पावकादि पृथिव्यान्तं लिखेन्मंत्रं यथा क्रमम्।।
तद्वहिः कोणषट्केषु भागरम्यं मनु शिवे।
खट् पट् जहि तथा छिन्धि भिन्धि हन्धि लिखेत् क्रमात्।।
अकारादिक्षकारान्तं वेष्टयेद्बिन्दुसंयुतम्।
महायन्त्रमिदं पुण्यं सप्तावरणकं परम्।।

शरभेश्वर मन्त्र में बयालिस ४२ अक्षर हैं। मन्त्र है—

ॐ खें खां खं फट् प्राण ग्रहासि प्राण ग्रहासि हुं फट् सर्वशत्रु संहारणाय शरभशालुवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।

इन ४२ अक्षरों को पावक त्रिकोण से प्रारम्भ करके भूपुर तक यथा क्रम लिखे। अर्थात् त्रिकोण में ॐ खें खा, द्विदल में खं फट्, द्वादश दल में प्राण ग्रहसि प्राण ग्रहसि हुँ फट्, नव कोण में सर्व शत्रु संहारणाय, सप्त कोण में शरभ शालुवाय, पंचकोण में पक्षिराजाय और भूपुर के चारों कोनों में हुं फट् स्वाहा लिखे। उसके बाहर छह कोनों में खट् पट् गहि छिन्धि भिन्धि हन्धि लिखे। ॐ से क्षं तक पचास मातृकाओं को भूपुर के बाहर लिखे।

महायन्त्रमिदं पुण्यं सप्तावरणकं परम्।
सर्व सिद्धिप्रदं श्रेष्ठं सर्वसम्पत्प्रदायकम्।
सर्वरोगप्रशमनं सर्वसौभाग्यदायकम्।
सर्वबाधाप्रशमनं सर्वशत्रुजयं शुभम्।।
सर्वभूतवशीकरं सर्वपापविमोचनम्।
नाना ज्वरहरं यन्त्रं नाना क्षुद्रनिवारणम्।।
य इदं धारयेद् भक्त्या नासाध्यं तस्य विद्यते।
अनेनैव तु मन्त्रेण साक्षाच्छिवमयो भवत्।।

सात आवरणों वाला यह महायन्त्र परम पावन है। यह सभी सिद्धियों की देनेवाला श्रेष्ठ है। यह सभी सम्पत्तियों को देने वाला है। यह सभी रोगों का विनाशक और सभी सौभाग्यों को देनेवाला है। यह सभी बाधाओं का निवारक और सभी शत्रुओं पर विजय देने वाला है। यह सभी भूतों को वश में करनेवाला और सभी पापों का विनाशक है। नाना प्रकार के ज्वरों का विनाशक और नाना क्षुद्रों का निवारक है। इस यन्त्र को जो भक्ति के साथ धारण करता है उसके लिये संसार में कुछ भी असाध्य नहीं रहता। इस मन्त्र का उपासक साक्षात् शिव हो जाता है। इस यन्त्र को विषु काल में अयन पूर्णिमा अमावस्या एकादशी द्वादशी में शुक्र बुध और सोमवार में जन्म नक्षत्र में शोभन ब्राह्म योग छोड़कर सिद्धियोग में निर्जन मण्डप में लिखे। भोजपत्र पर देवता के अष्टगन्ध से अनार की कलम से लिखे। देव अष्टगन्ध में अगर, तगर, गोरोचन, केसर, कस्तूरी, श्वेत चन्दन, लाल चन्दन और सिन्दूर होते हैं।

पूजन सामग्री में अष्टगन्ध से रंगा अरवा चावल फूल धूपदीप नैवेद्य आदि और जल रखे। शरीर शुद्धि, स्थान शुद्धि पूजन सामग्री शुद्धि आदि के बाद न्यास आदि करे। तब शरभेश्वर का ध्यान करें।

विनियोग–अस्य श्री शरभेश्वर मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः अतिजगति छन्दः श्री शरभो देवता ॐ खं बीजं स्वाहा शक्तिः मम कार्य सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास—ॐ वामदेव ऋषये नमः शिरसि, ॐ अति जगती छन्दसे नमः मुखे। ॐ शरभेश्वर देवतायै नम; हृदये। ॐ खं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहा शवृतये नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

कर हृदयादिन्यासः

करन्यासः	हृदयादि न्यासः	
ॐ खे खां खं कट	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
प्राण ग्रहसि प्राण ग्रहसि हुंफट	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सर्वशत्रु संहारणाय	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
शरभ शालुवाय	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुँ
पक्षिराजाय	कनिष्ठाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
हुंफट् स्वाहा	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान

चन्द्रार्काग्निस्त्रिदृष्टिः कुलिशवरनखश्चंचलोत्युग्रजिह्व।
काली दुर्गा च पक्षौ हृदयजठरगौ भैरवो जाठराग्निः।
उरुस्थौ व्याधिमृत्यू शरभवरखगश्चण्डवातातिवेगः।
संहर्ता सर्व शत्रून् स जयति शरभः शालुवः पक्षिराजः।

ध्यान के बाद यंत्र मध्य में शरभेश्वर का आवाहनादि से गन्धाक्षत पुष्प तक पूजा करे। तब यन्त्रस्थ प्रत्येक मन्त्र वर्ण और मातृका की पूजा गन्धाक्षत पुष्प से करे। जैसे—

१. खं ॐ रूपाय नमः
२. खं खें रूपाय नमः
३. खं खां रूपाय नमः
४. खं खं रूपाय नमः
५. खं फट् रूपाय नमः
६. खं प्रा रूपाय नमः
७. खं ण रूपाय नमः
८. खं ग्र रूपाय नमः
९. खं हा रूपाय नमः
१०. खं सि रूपाय नमः
११. खं प्रा रूपाय नमः
१२. खं ण रूपाय नमः

१३. खं ग्र रूपाय नमः
१४. खं हा रूपाय नमः
१५. खं सि रूपाय नमः
१६. खं हु रूपाय नमः
१७. खं फट रूपाय नमः
१८. खं स रूपाय नमः
१९. खं र्व रूपाय नमः
२०. खं श रूपाय नमः
२१. खं त्रु रूपाय नमः
२२. खं सं रूपाय नमः
२३. खं हा रूपाय नमः
२४. खं र रूपाय नमः
२५. खं णा रूपाय नमः
२६. खं य रूपाय नमः
२७. खं श रूपाय नमः
२८. खं र रूपाय नमः
२९. खं भ रूपाय नमः
३०. खं शा रूपाय नमः
३१. खं लु रूपाय नमः
३२. खं वा रूपाय नमः
३३. खं य रूपाय नमः
३४. खं प रूपाय नमः
३५. खं क्षि रूपाय नमः
३६. खं रा रूपाय नमः
३७. खं जा रूपाय नमः
३८. खं य रूपाय नमः
३९. खं हुँ रूपाय नमः
४०. खं फट् रूपाय नमः
४१. खं स्वा रूपाय नमः
४२. खं हा रूपाय नमः

इसी प्रकार खं अं रूपाय नमः से खं क्षं रूपाय नमः तक पचास मातृकाओं की पूजा करे। तब धूप दीप नैवेद्य आदि से शरभेश्वर की पूजा करे। इसके बाद यन्त्र को सोने, चाँदी के यन्त्र में भरकर धारण करे। मन्त्र जप करे और स्तोत्र पाठ करे।

●

।। श्री गणेशाय नमः ।।

।। अथ श्री पक्षिराज तन्त्रम् ।।

शरभ यन्त्र पूजा विधान

अष्टाङ्घ्रिश्च सहस्त्रबाहुरनिलच्छायाशिरोयुग्मभृत्,
द्वित्र्यक्षोतिजवो द्विपुच्छ उदितः साक्षान्नृसिंहापहा।
अर्द्धेनापि भगाकृतिः पुनरथोप्यर्द्धेन पक्ष्याकृतिः,
श्री वीरः शरभः स पातु रुचिरं नीत्वा सदा नो हृदि।।१।।

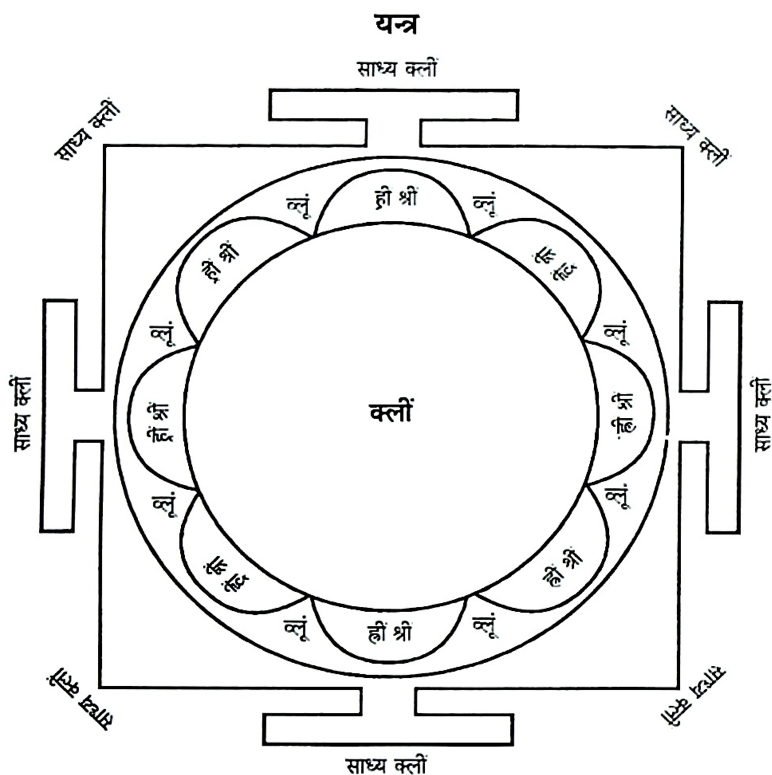
ॐ नमो अष्टापदाय सहस्त्रबाहवे द्विशिरसे त्रिनेत्राय द्विपक्षाय अग्निवर्णाय मृगविहङ्गम रूपाय वीर शरभेश्वराय हुं फट्।
अरुणमरुणमालालंकृतं शङ्कराग्रैर्विधृत परशु शक्तिंपुष्पबाणेषु चापम्।
विविधमणिफणीन्द्रैर्भूषणैर्भूषिताङ्ग ।
शरभमखिलनाथ शालुवेशं नमामि।।२।।

पक्षिराज-शरभेश्वर के आठ पैर हजार हाथ वायु छाया दो शिर है। एक मुख में दो आँखें और दूसरे में तीन नेत्र हैं। दो पूँछ हैं जो साक्षात् नृसिंह के अपहृत कान वाले है। आधा शरीर भगा कृति है और आधा शरीर पक्षी के आकार का है। ऐसे वीर शरभ हमारी सदैव रक्षा करें। वे हमारे हृदय में सदा निवास करें। हम उन्हें प्रणाम करते हैं जिनके आठ पैर, हजार हाथ, दो शिर, तीन नेत्र, दो पंख, अग्नि के समान वर्ण है मृग और पक्षी के रूप के वीर शरभेश्वर है। वीर शरभेश्वराय हुं फट। इनकी माला लाल और अलंकार लाल है। हाथों में फरसा शक्ति, पुष्पबाण इच्छु धनुष है। विविध नागेन्द्रों के फणों से इनके अंग विभूषित है। सारे संसार के स्वामी शरभ शालुवेश को हमारा प्रणाम है।

मारं वर्तुलमध्यके वसुदले मायां च लक्ष्मीं तथा,
बाह्ये क्षोणिपुटे लिखेत्प्रतिदिनं रूंकारकं भूपुरे।
मारं साध्यसमन्वितं रिपुजयं त्रैलोक्यमोहाकरं,
नारी वश्यकरं विचित्रमचिरात्साम्राज्यलक्ष्मीप्रदम्।।३।।

पहले वृत्त बनाकर उसके मध्य में 'क्लीं' लिखे। उसके बाहर अष्टदल कमल बनाकर दलों में 'ह्रीं श्रीं' लिखे इसके बाहर भूपुर के अन्दर प्रत्येक दिशा में व्लूं लिखे। भूपुर में साध्य के साथ क्लीं लिखे। यह यन्त्र शत्रुओं पर विजय प्रदायक है तीनों लोकों को मोहित करने वाला है। स्त्रियों को वश में करने वाला है। थोड़े ही दिनों में यह साम्राज्य लक्ष्मी देने वाला है।

यन्त्र

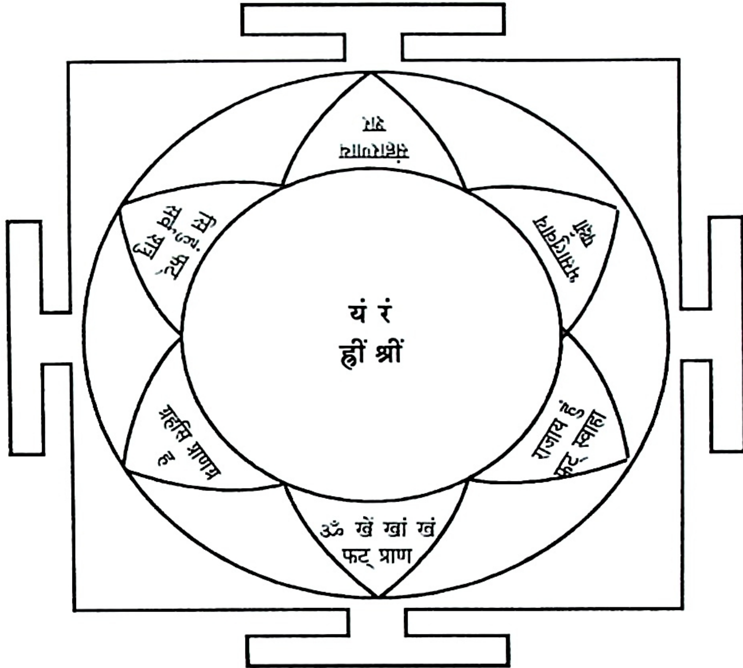


आलेख्यं वृत्तमध्ये मरुदनलग्रहद्वन्द्वके शक्ति लक्ष्मीं।
तद्बाह्ये षड्दलान्तः शरभमनुमथो सप्तकं सप्तकञ्च॥४॥
दिव्यगन्धेन युक्तेन भस्मना रत्नमात्रकम्।
चतुरस्रगतं कृत्वा तस्मिन् भस्मनि बुद्धिमान्॥५॥

पहले वृत्त बनाकर उसके मध्य में यं रं ह्रीं श्रीं लिखे। उसके बाहर षट्दल बनाकर दलों में ४२ अक्षरों के शरभ मन्त्र के सात सात अक्षरों

को लिखे। यह यन्त्र देव गन्धाष्टक में भस्म मिलाकर लिखे। इसके बाहर चतुरस्र बनाकर पूजा करे। लेखन शेष भस्म को लगाने से आकर्षण होता है।

यन्त्र

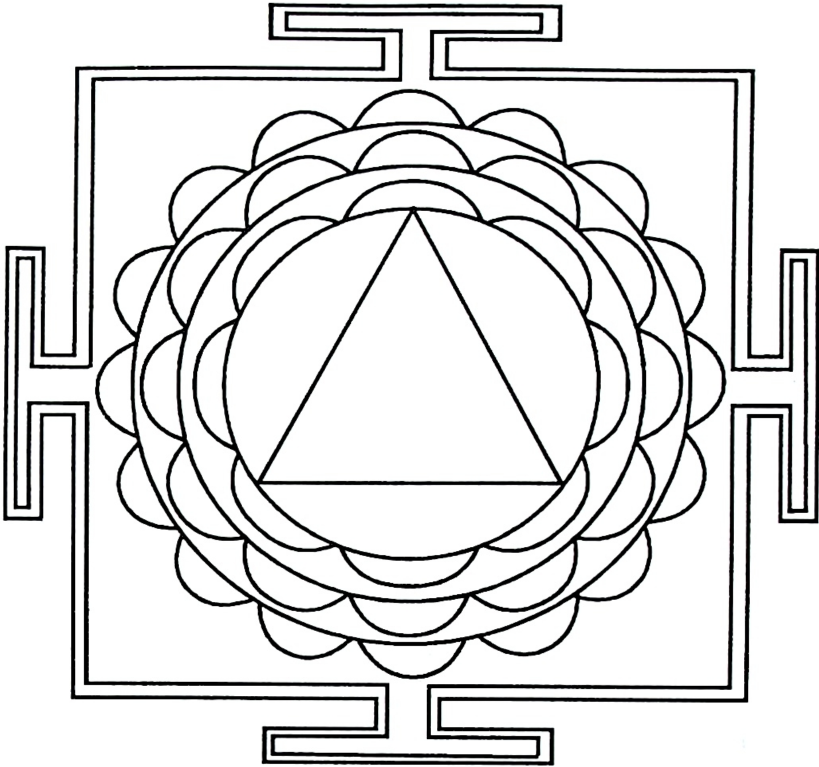


त्रिकोणं विलिखेत्पूर्वं, तदग्रे वृत्तमालिखेत्।
तद्बहिश्चाष्टपत्रं तु द्वादशारं ततः परम्॥६॥
षोडशारं ततः पश्चात् ततो भूपुर युग्मकम्।
त्रिकोणमध्यदेशस्थं शालुवेश्वरमर्चयेत्॥७॥
चिरं ध्यात्वा महामन्त्री गुरुपादयुगं स्मरन्।
मूलेन गन्धपुष्पादिपुष्पान्तान्मण्डले पुनः॥८॥
आवाहनादि पूजान्तानुफ्चारान्तान्प्रकल्पयेत्।
चन्द्रसूर्यमहावन्हित्रिकोणेषु यजेत् क्रमात्॥९॥
भैरवं वडवाग्निं च दुर्गां कालीं पृथक् पृथक्।
त्रिकोणवृत्तमध्ये तु चतुर्दिक्षु यथाक्रमम्॥१०॥

इन्द्रादीनष्टपत्रेषु तत्तन्मन्त्रेण पूजयेत्।
पार्श्वद्वये कालमृत्यू तथा देवीं प्रपूजयेत्॥११॥
मदनां रक्तचामुण्डां मोहनीं द्राविणीं तथा।
शब्दाकर्षणजां वाणीं रमां मायां पुलिन्दिनीम्॥१२॥
शास्तारं क्षोभिणीं ज्येष्ठा द्वादशारे यथाक्रमम्।
पूजयेन्मूलमन्त्रेण स्वस्वमन्त्रेण चाम्बिके॥१३॥
षोडशारे यजेत्पश्चात् षोडशस्वर देवताः।
गणेश्वरं यमं स्कन्दं भैरवश्च महादिशि॥१४॥
प्रागादितो यजेन्मन्त्री मूलेन खयुजा पृथक्।
त्वरितां वीरभद्रञ्च वडवानल भैरवम्॥१५॥
महा मायां यजेद्देवि वायव्यादिविदिक्षु च।
आरम्भं चाग्रतो मन्त्री ब्राह्माद्याश्चाष्ट मातरः॥१६॥

पहले त्रिकोण बनावे। उसके बाहर वृत्त बनावे। उसके बाहर अष्टपत्र बनावे। उसके बाहर द्वादशदल बनावे। उसके बाहर षोडश दल बनावे। उसके बाहर दो भूपुर बनावे। त्रिकोण के मध्य में शालुवेश्वर की पूजा करे। साधक देर तक ध्यान करके गुरु पादुका युग का स्मरण करे। तब मूल मन्त्र से गन्ध पुष्प तक पूजा करे। तब मंण्डल में पुनः आवाहनादि से पूजा के अन्तिम उपचार से पूजा करे। त्रिकोण के कोणों में चन्द्र, सूर्य, अग्नि की पूजा करे। त्रिकोण वृत्त के अन्तराल में चारों दिशाओं में भैरव, बड़वानल, दुर्गा और काली की पूजा अलग अलग करे। अष्टदल में इन्द्रादि की पूजा उनके मन्त्रों से करे। दोनों पार्श्वों में काल और मृत्यु की पूजा करे। द्वादशार में मदना, रक्तचामुण्डा, मोहिनी, द्राविणी, शब्दाकर्षिणी, वाणी, रमा माया, पुलिन्दिनीम, शास्तार, क्षोभिणी ज्येष्ठा की पूजा करे। इनकी पूजा मूल मन्त्र और उनके अपने अपने मन्त्रों से करे। षोडश दल में षोडश स्वर के देवताओं की पूजा करे। पूर्वादि चारों दिशाओं में गणेश्वर यम, स्कन्द और भैरव की पूजा करे। इनके मन्त्रों के पहले ख जोड़कर पूजा करे। वायव्यादि विदिक्षुओं में त्वरिता, वीरभद्र, वड़वानल भैरव महामाया की पूजा करे। अपने सामने से आरम्भ करके ब्राह्मी आदि अष्ट मातृकाओं की पूजा करे। भूपुर के बाहर चारों ओर ककाराणादि देवता की पूजा शालुवेश के मूल मन्त्र से गन्ध धूप दीप नैवेद्य आदि से करे।

पूजन यन्त्र



त्रिकोण के मध्य में स्थित शालुवेश्वर का पूजन करे। कुछ देर तक शरभ का ध्यान करके गुरु पादुका युगल' का स्मरण करे। विनियोग ऋष्यादि न्यास हृदयादि न्यास का न्यास करके ध्यान करे।

चन्द्रार्काग्निस्त्रिदृष्टि कुलिश्वर नखश्चंचलोत्युग्र जिह्वः
कालीदुर्गा च पक्षौ हृदयजठरगो भैरवो जाठराग्निः।
ॐ स्थौ व्याधिमृत्युशरभवारखग चण्डवातातित वेगः
संहर्त्ता सर्वशत्रून स जयति शरभः सालुवः पक्षिराजः।।

शरभं ध्यायामि। आवाहयामि। शरभायनमः आसनं सर्मयामि। पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्य समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि वस्त्रालंकरान् समर्पयामि यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

ॐ खें खां खं फट् प्राण ग्रहासि–२ हुफट् सर्वशत्रु संहारणाय शरभशालुवाय पक्षिराजाय हुं फट स्वाहा गन्धं समर्पयामि। पुष्पं समर्पयामि।

प्रथम आवरण यंत्र में आवाहनादि से पुष्प तक के उपचारों से पूजा करे।

त्रिकोण में प्रथम आवरण–ॐ चन्द्राय नमः चन्द्र श्री पादुकां पूजयामि नमः गन्धाक्षत पुष्प।

ॐ सूर्याय नमः सूर्य श्री पादुकां पूजयामि नमः गन्धाक्षत पुष्प।

ॐ अग्नये नमः अग्नि श्री पादुकां पूजयामि नमः गन्धाक्षत पुष्प।

प्रथम आवरण पूजा समर्पण करे अभीष्ट सिद्धि को प्रणाम करे। त्रिकोण वृत्त के अन्तराल में पूर्वादि चारों दिशाओं में—द्वितीय आवरण

१. ॐ भैरवाय नमः भैरव श्री पादुकां पूजयामि।

२. ॐ वड़वाग्नये नमः वड़वाग्नि पादुकां पूजयामि।

४. ॐ दुर्गायै नमः दुर्गा श्री पादुकां पूजयामि।

५. ॐ कालिकायै नमः काली श्री पादुकां पूजयामि।

द्वितीय आवरण पूजा समर्पण करे। अभीष्ट सिद्धि मार्ग प्रणाम करे। तृतीय आवरण अष्टपत्र में—

१. ॐ इन्द्राय नमः इन्द्र श्री पादुकां पूजयामि।

२. ॐ अग्नये नमः अग्नि श्री पादुकां पूजयामि।

३. ॐ यमाय नमः यम श्री पादुकां पूजयामि।

४. ॐ निर्ऋतये नमः निर्ऋत श्री पादुकां पूजयामि।

५. ॐ वरुणाय नमः वरुण श्री पादुकां पूजयामि।

६. ॐ वायवे नमः वायु श्री पादुकां पूजयामि।

७. ॐ कुबेराय नमः कुबेर श्री पादुकां पूजयामि।

८. ॐ ईशानाय नमः ईशान श्री पादुकां पूजयामि।

पूजा समर्पण। अभीष्ट सिद्ध०। प्रणाम।

चतुर्थ आवरण पार्श्वों में—

१. ॐ कालाय नमः काल श्री पादुकां पूजयामि।

२. ॐ मृत्यवे नमः मृत्यु श्री पादुकां पूजयामि।

पूजा समर्पण। अभीष्ट सिद्धि०। प्रणाम।

पंचम आवरण द्वादशदल में—

१. ॐ मदनायै नमः मदनाश्री पादुकां पूजयामि।

२. ॐ रक्त चामुण्डायै नमः रक्त चामुण्डा श्री पादुकां पूजयामि।

३. ॐ मोहिनी देव्यै नमः मोहिनी श्री पादुकां पूजयामि।

४. ॐ द्राविण्यै नमः द्राविणी श्री पादुकां पूजयामि।
५. ॐ शब्दाकर्षिण्यै नमः शब्दाकर्षिणी श्री पादुकां पूजयामि।
६. ॐ वाण्यै नमः वाणी श्री पादुकां पूजयामि।
७. ॐ रमायै नमः रमा श्रीपादुकां पूजयामि।
८. ॐ मायायै नमः माया श्री पादुकां पूजयामि।
९. ॐ पुलिन्दिन्यै नमः पुलिन्दिनी श्री पादुकां पूजयामि।
१०. ॐ ॐ शास्ताय नमः शास्ता श्री पादुकां पूजयामि।
११. ॐ क्षोभिण्यै नमः क्षोभिणी श्री पादुकां पूजयामि।
१२. ॐ ज्येष्ठायै नमः ज्येष्ठा श्री पादुकां पूजयामि।

पूजा समर्पण। अभीष्ट सिद्धि। प्रणाम।

षष्ठ आवरण—षोडशदल में षोडश स्वर देवता की पूजा करे।

१. ॐ अं रूपाय नमः अं रूप श्री पादुकां पूजयामि।
२. ॐ आं रूपाय नमः आं रूप श्री पादुकां पूजयामि।
३. ॐ इं रूपाय नमः इं रूप श्री पादुकां पूजयामि।
४. ॐ ई रूपाय नमः ई रूप श्री पादुकां पूजयामि।
५. ॐ उं रूपाय नमः उं रूप श्री पादुकां पूजयामि।
६. ॐ ऊं रूपाय नमः ऊँ रूप श्री पादुकां पूजयामि।
७. ॐ ऋं रूपाय नमः ऋ रूप श्री पादुकां पूजयामि।
८. ॐ ॠं रूपाय नमः ॠं रूप श्री पादुकां पूजयामि।
९. ॐ ऌं रूपाय नमः ऌ रूप श्री पादुकां पूजयामि।
१०. ॐ ॡं रूपाय नमः ॡ रूप श्री पादुकां पूजयामि।
११. ॐ एं रूपाय नमः एं रूप श्री पादुकां पूजयामि।
१२. ॐ ऐं रूपाय नमः ऐ रूप श्री पादुकां पूजयामि।
१३. ऽ ओं रूपाय नमः ओ रूप श्री पादुकां पूजयामि।
१४. ॐ औं रूपाय नमः औ रूप श्री पादुकां पूजयामि।
१५. ॐ अं रूपाय नमः अं रूप श्री पादुकां पूजयामि।
१६. ॐ अः रूपाय नमः अः रूप श्री पादुकां पूजयामि।

पूजा समर्पण। अभीष्ट सिद्धि। प्रणाम।

सप्तम आवरण—चारों दिशों में और चारों विदिशाओं में पूर्वादि क्रम में।

१. ॐ खं गणेश्वराय नमः गणेश्वर श्री पादुकां पूजयामि।

२. ॐ खं यमाय नमः य्रम श्री पादुकां पूजयामि।

३. ॐ खं स्कन्दाय नमः स्कन्द श्री पादुकां पूजयामि।

४. ॐ खं भैरवाय नमः भैरव श्री पादुकां पूजयामि।

५. ॐ खं त्वरितायै नमः त्वरिता श्री पादुकां पूजयामि।

६. ॐ खं वीरभद्राय नमः वीरभद्र श्री पादुकां पूजयामि।

७. ॐ खं वड़वानल भैरवाय नमः वड़वानल भैरव श्री पादुकां पूजयामि।

८. ॐ खं महामायायै नमः महाभाया श्री पादुकां पूजयामि।

पूजा समर्पण। अभीष्टसिद्धि०। प्रणाम।

अष्टम आवरण—भूपुर की प्रथम रेखा में अपने आगे से प्रारम्भ करके—

१. ॐ ब्राह्मयै नमः ब्राह्मी श्री पादुकां पूजयामि।

२. ॐ माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि।

३. ॐ कौमार्यै नमः कौमारी श्री पादुकां पूजयामि।

४. ॐ वैष्णाव्यै नमः वैष्णवी श्री पादुकां पूजयामि।

५. ॐ वाराह्यै नमः वराही श्री पादुकां पूजयामि।

६. ॐ इन्द्राण्यै नमः इन्द्राणी श्री पादुकां पूजयामि।

७. ॐ चामुण्डायै नमः चामुण्डा श्री पादुकां पूजयामि।

८. ॐ महालक्ष्म्यै नमः महालक्ष्मी श्री पादुकां पूजयामि।

पूजा समर्पण करे। अभीष्टसिद्धि करे। प्रणाम करे।

नवम आवरण भूपुर की दूसरी रेखा में—

१. ॐ कं रुपाय नमः कं रूप श्री पादुका पूजयामि।

२. ॐ ख रूपाय नमः खं रूप श्री पादुका पूजयामि।

इसी प्रकार ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह क्ष तक के वर्णों की पूजा करे। इसके बाद मूल मन्त्र से शरभेश्वर की पूजा धूप दीप नैवेद्य आदि से करे।

ॐ खें खां खं फट् प्राण ग्रहसि- २ 'हुं फट सर्वशत्रु संहारणाय शरभशालुवाय पक्षिराजाय हुं फट स्वाहा- धूपं आघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि नैवेद्यं निवेदयामि। पानीय, आचमनीयं करोद्वर्तनीयं मुखशुद्धिं, आरार्तिक्यं समर्पयामि।

परतस्तु यजेत् सर्वा ककाराणादि देवताः।
मूलेन शालुं गन्धेन धूपदीपादिकैर्यजेत्॥१७॥
स्तुतिभिस्तोषयित्वा च यथोक्तं प्रणिपत्य च।
मूलमन्त्रं जपेन्मन्त्री अष्टोत्तर सहस्रकम्॥१८॥
आचार्यं पूजयेन्मन्त्री यथाशक्त्या धनैस्तथा।
शरभं हृद्ययन्मन्त्री शिवोऽहमिति भावयेत्॥१९॥
तद्भक्तागमनं श्रुत्वा कम्पन्ते विग्रहा ग्रहाः। किं पुनर्दर्शनात्तस्य।

स्तुति पाठ से सन्तुष्ट करे। यथोक्त प्रणाम करे। मूलमन्त्र का जप एक हजार आठ बार करे। आचार्य की पूजा साधक यथा शक्ति धन आदि से करे। शरभेश्वर को हृदय में धारण करके भावना करे कि 'शिवोऽहम्'। मैं शिव हूँ। ऐसे भक्त का आगमन सुनकर विग्रह ग्रह काँपने लगते है। इनके दर्शन होने पर क्या होगा? कैसे कहा जाय।



मातृकाओं के देवता

श्री शिव उवाच

आराधनानन्तरं वक्ष्ये सर्वसिद्धिप्रदायकम्।
भोगमोक्षप्रदं पुण्यं भुक्तिमुक्त्यैक साधनम्॥१॥
विषुकालेऽयने पुण्ये पौर्णिमायां च दर्शके।
एकादश्यां च द्वादश्यां शुक्रसौम्येन्दु वासरे॥२॥
जन्मर्क्षे विपदृक्षे च प्रत्यरौ वध ऋच्छके।
शोभने पातके ब्राह्मे दण्डयोग विवर्जिते॥३॥
सिद्धियोगे तथाकाश पातालरहिते दिने।
विजने मण्डपे रम्ये गोमयेनोपलेपिते॥४॥
विताने पद्ममालाढ्ये धूपदीप समाकुले।
स्नात्वा पवित्रपाणिः सन् शुद्धोमौनी दृढव्रतः॥५॥
प्राङ्मुखोदङ्मुखोवापि सुखासीनः स्वलङ्कृतः।

अब सभी सिद्धियों को देने वाले दूसरे प्रकार की आराधना कहता हूँ। यह भोग मोक्ष दायक पुण्य, भुक्ति मुक्ति का श्रेष्ठ साधन है। विषुकाल अयन में, पुनीत पूर्णिमा दर्श अमावस्या, एकादशी द्वादशी

में, शुक्र बुध और सोमवार में, जन्म नक्षत्र में, विपत्ति नक्षत्र में, वध करने वाले शत्रु के नक्षत्र में, दण्ड योग को छोड़कर शोभन पातक ब्राह्म सिद्धि योग में, आकाश पाताल रहित दिन में, गोबर से लिपे रम्य निर्जन कमल माला के वितान से युक्त मण्डप को धूपदीप से समाकुल करे। स्नान करके पवित्र पाणी शुद्ध मौनी दृढ़व्रत होकर पूर्व या उत्तर के तरफ मुख करके अपने को अलंकृत करके आसन पर सुख पूर्वक बैठकर मातृका देवताओं के मन्त्रों का जप करे।

अकारं ब्रह्मदैवत्यं श्वेतं सर्ववशं करम्॥६॥
सर्वज्ञत्वं मनोज्ञत्वं कामरूपत्वमम्बिके।
आकारं तु पराशक्तिः श्वेतमार्ष वरानने॥७॥
इकारं विष्णुदैवत्यं श्यामं रक्षाकरं भवेत्।
रूपकान्तिप्रदं श्रेष्ठं वरेण्यं मोक्ष सिद्धिदम्॥८॥
माया दैवतमीकारं श्यामं मोहनकारकम्।
वीराणां वनितानाञ्च वशीकारं वरानने॥९॥
उकारं लोकदैवत्यं श्यामं लोकवशं करम्।
मृतकोत्थापनं पुण्यं कररोगविनाशनम्॥१०॥
ऊकारो पृथिवी बीजं श्यामं रक्षाकरं परम्।
भूतप्रेतपिशाचानां नाशनं रिपुनाशनम्॥११॥
ऋकारं विधिदैवत्यं पीतं सर्वार्थसिद्धिदम्।
चिरायुष्यं तपः सिद्धिं परं भोगं वरानने॥१२॥
ॠकारं शिवदैवत्यं रक्तं सर्ववशंकरम्।
जन्ममृत्युजराव्याधिं वर्जितं श्रीजयप्रदम्॥१३॥
एकारं बीरभद्रं स्यात् पीतं सर्वार्थसिद्धिदम्।
निग्रहानुग्रहकरं भीषणं जयवर्द्धनम्॥१४॥
ऐकारं भारतीं विद्यात् स्फाटिकं ज्ञानं सिद्धिदम्।
चतुः षष्ठिः कलासिद्धिदायकं परमं शिवे॥१५॥
ओकारं शिवदैवत्यं ज्योतिर्मयमनुग्रहम्।
मनोवेगप्रदं श्रेष्ठं शान्तं सर्व फलप्रदम्॥१६॥
औकारं शाङ्करं विद्यात् स्फाटिकं सर्वसिद्धिदम्।
सारस्वतं विशेषेण शत्रूणां कोपनाशनम्॥१७॥

अंकारं रूद्रं बीजं स्यात् रक्तं देववशंकरम्।
सर्वलोकजयं कारं कृपा चित्तविशुद्धिदम्॥१८॥
अः कारं कालरूद्रं स्यात् रक्तं पाशनिकृन्तनम्।
स्वप्रपञ्चोपसंहारं परमात्मप्रबोधकम्॥१९॥

अ—अकार ब्रह्मदैवत्य श्वेत वर्ण का है। यह सवों को वश में करनेवाला सर्वज्ञत्व मनोज्ञत्व काम रूपत्व देनेवाला है।

आ—आकार पराशक्ति है। हे पार्वती यह श्वेत आर्ष है।

इ—इकार विष्णु दैवत्य श्यामवर्ण का रक्षाकारक है। यह रूप कान्ति देनेवाला श्रेष्ठ वरेण्य मोक्ष और सिद्धिदायक है।

ई—ईकार माया दैवत्य श्याम वर्ण मोहन कारक है। यह वीरों और स्त्रियों को वश में करनेवाला है।

उ—उकार लोक दैवत्य श्याम वर्ण का लोकों को वश में करनेवाला है। यह मृतक को भी जीवित कर सकता है। पुण्य प्रदायक हाथों के रोगों का विनाशक है।

ऊ—ऊकार पृथ्वी बीज श्यामवर्ण का रक्षाकारक श्रेष्ठ है। यह भूत, प्रेत, पिशाच और शत्रुओं का विनाशक है।

ऋ—ऋकार विधि दैवत्य पीले वर्ण का सर्वार्थ सिद्धि दायक है। दीर्घ आयु तपः सिद्धि और उत्तम भोगों का देनेवाला है।

ॠ—ऋकार शिव दैवत्य लाल वर्ण का सवों को वश में करनेवाला है। जन्म मृत्यु बुढ़ापा रोगों का निवारक लक्ष्मी और विजय प्रदायक है।

ऌ ॡ—ऌ ॡकार अश्विनी दैवत्य रक्तवर्ण रोग लोक वशकारक है। यह तीव्र सिद्धि, भिषक् सिद्धि, मोक्ष बुद्धि सिद्धिदायक है।

ए—एकार वीरभद्र दैवत्य पीले वर्ण का सर्वार्थ सिद्धि दायक है। यह निग्रह अनुग्रह कारक भीषण जय वर्द्धक है।

ऐ—ऐकार का दैवत्य सरस्वती है। वर्ण स्फटिक के समान है। यह ज्ञान सिद्धिप्रद, चौसठों कलाओं का उत्तम सिद्धि दायक है।

ओ—ओकार शिव दैवत्य ज्योर्तिमय अनुग्रह मनोवेग प्रद श्रेष्ठ शान्त सर्व फलप्रदायक है।

औ—औकार शांकर विद्यायें हैं। यह स्फटिक वर्ण का सभी

सिद्धियों का दाता है। यह सारस्वत सिद्धि विशेष देता है। शत्रुओं के क्रोध का विनाशक है।

अं—अंकार रुद्र बीज हैं। इसका वर्ण लाल है। यह देवताओं को वश में करनेवाला है। सभी लोकों पर विजय प्रदायक कृपालु है। यह चित्त को विशुद्धि देने वाला है।

अ:—अ:कार कालरुद्र है। इसका वर्ण लाल है। यह सभी बन्धनों को काटने वाला है। अपने प्रपंच का संहार करने वाला परमात्मा का बोध कराने वाला है।

ककारं ब्रह्मजीवं स्यात् पीतं वृष्टिकरं परम्।
सञ्जीवनम् शेषाणां लोकानां वृद्धिकारकम्।।२०।।
खकारं जाह्नवी बीजं स्फाटिकं पाप नाशनम्।
भोगमोक्षप्रदं पुण्यं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम्।।२१।।
गकारं तु गणेशं स्यात् पीताभं विघ्ननाशनम्।
पूर्वापरं स्थितं ज्ञानं भूर्लोकविजयप्रदम्।।२२।।
घकारं भैरवं विद्यात् रक्ताभं शत्रुनाशनम्।
महाघोरं गृहाकारं संयुगे जयवर्द्धनम्।।२३।।
ङकारं कालबीजं स्यात् कृष्णं जीवजयप्रदम्।
महाभीमं जगत्क्षोभ्यं मरणापत्तिं भञ्जनम्।।२४।।
चकारं भद्रकालीज्यं रक्ताभं शोभनं परम्।
स्वेच्छाकर्षणवृद्धिः स्यात् स्वस्थानं समयेत्ततः।।२५।।
छकारं भीमकालीज्यं रक्ताभं वैरिनाशनम्।
संकामकं त्रिलोकघ्नं समरे विजयप्रदम्।।२६।।
जकारं जातवेदाख्यं तुर्यं सौदामिनीमयम्।
अभिचारं महाघोरमपमृत्युभयापहम्।।२७।।
झकारमर्द्धनारीशं श्यामं रक्तसमाकुलम्।
सर्वसौख्यकरं श्रेष्ठं भोगमोक्षफलप्रदम्।।२८।।
ञकारं परमं ज्ञेयमवाङ्मनस गोचरम्।
सर्वज्ञानप्रदं ब्रह्म ज्ञानन्दं श्रीजयप्रदम्।।२९।।
टकारं पृथिवीबीजं श्वेतं संहारकारकम्।
कृष्यादावौषधी वृद्धिः पातालनिधिदर्शनम्।।३०।।

ठकारं चन्द्रबीजं स्यात् स्फाटिकं शत्रुनाशनम्।
रोगक्ष्वेड हरं दिव्यं महाज्वरहरं परम्॥३१॥
डकारं शुक्रबीजं स्यात् पीताभज्ञानदं भवेत्।
मृतसञ्जीवनं च स्यान्महामाया वशं भवेत्॥३२॥
ढकारं वैष्णवं विद्यात् पीतं सर्वार्थसिद्धिदम्।
बलप्रदं जलस्तम्भं पातालस्यापि दर्शनम्॥३३॥
णकारं बलभद्रं स्यात् श्वेतं बलविवर्द्धनम्।
नित्यत्वं युद्धवीर्यत्वं रिपुदर्पविनाशनम्॥३४॥

क—ककार ब्रह्म जीव है। पीले वर्ण का, वर्षा करनेवाला, यह परम संजीवन है। शेष लोकों की वृद्धि करने वाला है।

ख—खकार गंगाबीज है। यह स्फटिक वर्ण का पापों का विनाशक है। यह भोग और मोक्ष देनेवाला भुक्ति-मुक्ति प्रदायक है।

ग—गकार गणेश दैवत्य है। पीले वर्ण का विघ्नों का विनाशक है। ज्ञान के पहले और बाद में स्थित रहता है। भूलोक पर विजयप्रद है।

घ—घकार भैरव विद्या से है। लाल वर्ण का शत्रुओं का संहारक है। यह महाभयंकर गुफा के आकार का संयुग जय वर्द्धन है।

ङ—ङकार काल बीज है। काले वर्ण का जीवों को जय देने वाला है। यह बहुत भीषण संसार को क्षुब्ध करनेवाला संभावित मृत्यु का विनाशक है।

च—चकार भद्रकाली इज्या है। लाल वर्ण का बहुत सुन्दर है। स्वेच्छा आकर्षण वृद्धिकारक अपने स्थान से संयमित करता है।

छ—छकार भीम काली इज्या है। लाल वर्ण का शत्रु विनाशक है। यह संक्रामक तीनों लोकों का विनाशक युद्ध में विजय प्रदायक है।

ज—जकार जातवेद अग्नि तुरीय है। बिजली के समान प्रकाशमय है। महाघोर अभिचार और अपमृत्यु का विनाशक है।

झ—अकार अर्द्धनारीश्वर शिव है, लाल-काला मिश्रित वर्ण का है। यह सभी प्रकार के सुखों को देनेवाला श्रेष्ठ भोग-मोक्ष फलप्रदायक है।

ञ—ञकार परम है। मन वाणी से अज्ञेय है। सर्व ज्ञानप्रद ब्रह्म ज्ञानानन्द, लक्ष्मी और विजय प्रदायक है।

ट—टकार पृथ्वी बीज है। उजले रंग का संहार कारक है। कृषि आदि औषधियों को बढ़ानेवाला पाताल की निधि को दिखाने वाला है।

ठ—ठकार चन्द्रबीज स्फटिक वर्ण का है। शत्रुओं का विनाशक है। रोग क्ष्वेद का नाशक दिव्य है। महाज्वर का विनाशक है।

ड—डकार शुक्र बीज पीले आभावाला ज्ञान प्रदायक है। यह मृत संजीवन है। इससे महामाया वश में होती है।

ढ—ढकार वैष्णव विद्या पीले रंग का सर्वार्थ सिद्धि दायक है। यह बल प्रदायक जल स्तम्भन कारक पाताल दर्शन करानेवाला है।

ण—ढ़कार बलभद्र है। श्वेत वर्ण का बल वृद्धिकारक है। यह नित्यत्व, युद्ध वीर्यत्व शत्रु दर्प विनाशक है।

तकारं धनदं विद्यात् पीतमैश्वर्य वर्द्धनम्।
यक्षकिन्नरसिद्धानां वशीकारं जगद्वशम्॥३५॥
थकारं तु पराशक्तिः रक्तं कालजयं भवेत्।
शान्तिकं पौष्टिकं चैव भोगमायुष्यवर्द्धनम्॥३६॥
दुर्गाबीजं दकारं स्यात् सर्वार्थस्य च साधनम्।
निग्रहानुग्रहकरं भोगमोक्षैकसाधकम्॥३७॥
धकारं धर्मबीजं स्यात् श्वेतं पुण्यविवर्द्धनम्।
सर्वदेवमयं दिव्यं सर्वदर्शनदर्शनम्॥३८॥
नकारं निर्विकल्पं स्यादप्रमेयाभयाक्षरम्।
वायुवेगं मनोवेगमिच्छारूपं वरानने॥३९॥
पकारमग्निबीजं स्यात् रक्तं सर्वहरं क्षणात्।
स्त्री नपुंसकादीनाञ्च भवेदाकर्षणं परम्॥४०॥
फकारं भैरवं विद्यात् रक्ताभं विजयं ततः।
महाग्रहहरं रोगं सर्वज्वरविनाशनम्॥४१॥
बकारं चाश्विनी बीजं कृष्णाभं बलवर्द्धनम्।
सर्वोच्चाटकरं क्रूरं संग्रामे विजयप्रदम्॥४२॥
भकारं भार्गवं बीजं लोकरक्षणकारणम्।
मकारमीश्वरं बीजं सर्वं संहारकारकम्॥४३॥
यकारं वायुवीजं स्यात् सर्वोच्चाटनकारकम्।
रेफः कृष्णाग्निबीजं स्यात् रक्ताभं सर्वनाशनम्॥४४॥
जंगमाकर्षणं युद्धे द्विषां सेनाबलं तथा।
लकारं शक्तिबीजं स्यात् पीतं सर्वफलप्रदम्॥४५॥

अग्निस्तम्भं जलस्तम्भं स्वेच्छास्तम्भं विशेषतः।
वकारं वारूणं बीजं श्वेतं स्वेच्छाभिः सिद्धिदम्॥४६॥

त—तकार धनदा विद्या से है। पीले वर्ण का ऐश्वर्य बढ़ानेवाला है। यक्ष, किन्नर रुद्रों के साथ सारे संसार को वश में करनेवाला है।

थ—थकार पराशक्ति है। लाल वर्ण का काल पर विजयदायक है। शान्तिक पौष्टिक कर्मों से भोग और आयु का वर्द्धक है।

द—दकार दुर्गा का बीज है। यह सर्वार्थ साधक है। निग्रह अनुग्रह करनेवाला भोग मोक्ष का श्रेष्ठ साधन है।

ध—धकार धर्म बीज है। यह श्वेत वर्ण का पुण्य विवर्द्धक है। यह सर्व देव मय दिव्य है। सभी दर्शनों का दर्शन है।

न—नकार निर्विकल्प अप्रमेय अभयाक्षर है। हे वरानने यह वायु के समान वेगवान मनोवेग से चलने वाला इच्छा रूप का है।

प—पकार अग्नि बीज है। लाल वर्ण का सबों को क्षण भर में भस्म करने वाला है। इससे स्त्रियों और नपुंसकों का आकर्षण होता है।

फ—फकार विद्या से भैरव है। यह रक्ताभ विजयप्रद है। महाग्रहों के कष्टों को दूर करनेवाला सभी रोगों और ज्वरों का विनाशक है।

ष—षकार अश्विनी बीज है। यह काले वर्ण का बल वर्द्धक है। यह सबों का उच्चाटन करने वाला क्रूर संग्राम विजय प्रदायक है।

भ—भकार भार्गव बीज है। लोक रक्षण का कारण है।

म—मकार ईश्वर बीज है। सबों का संहार कारक है।

य—यकार वायु बीज है। सबों का उच्चाटन कारक है।

र—रकार कृष्णाग्निबीज है। यह लाल वर्ण का सबों का विनाशक है। यह मनुष्यों का आकर्षण करनेवाला वैरियों के सेनाबल का विनाशक है।

ल—लकार शक्तिबीज है। पीले रंग का यह सर्वफल प्रदायक है। यह अग्नि स्तम्भन और जल स्तम्भन कारक है। विशेषतः स्वेच्छा से स्तम्भन करनेवाला है।

व—वकार वरुण बीज है। श्वेत वर्ण का स्वेच्छा से सिद्धि देता है। यह जल का आकर्षण किसी स्थान से अशेष करता है। यह ज्वर का विनाशक है।

आकर्षणं जलस्थानामशेषज्वरनाशनम्।
शंकारं शांकरं विद्यात् तेजः सौभाग्य वर्द्धनम्।।४७।।
अन्योन्यकलहादेव वैरिणां नाशनं भवेत्।
षकारं द्वादशादित्यं ज्योतिरारोग्य वर्द्धनम्।।४८।।
शमनं सर्वरोगाणामायुर्विद्याभिर्वर्द्धनम्।
सकारं भारती बीजं श्वेतं सारस्वतप्रदम्।।४९।।
प्रतिविद्वज्जनजयं नराणां योषितामपि।
सदाशिवो हकारः स्यात् धूम्रं ज्ञानार्थसिद्धिदम्।।५०।।
अणिमाद्यष्ट सिद्धिः स्यात् चतुःषष्टिकला अपि।
लकारं पृथिवीबीजं पीतं सिद्धिकरं परम्।।५१।।
असंभवं दोषवृद्धिर्भूमिद्रव्यस्य दर्शनम्।
क्षकारः श्रीनृसिंहः स्यात् स्फाटिकं मोक्षसिद्धिकम्।।५२।।
रिपुवर्गहरं सर्वं लोकक्षोभकरं परम्।।५३।।
इति सुमति हरेर्यो मातृका देवतानां,
द्युतिबलमहिमानामादितः स्वामिवक्त्रात्।
सकलमपि च लब्ध्वा शालुवाराधनान्ते,
जयतु विजयसिद्धेर्हेतु बीजेन मन्त्रम्।।५४।।

श—शकार शंकर की विद्या का तेज है। सौभाग्य वर्द्धक है। वैरियों में परस्पर कलह कराकर उनका विनाशक है।

ष—षकार बारह आदित्यों की ज्योति है आरोग्य वर्द्धक है। सभी रोगों का शमन करने वाला तथा आयु और विद्या को बढ़ाने वाला है।

स—सकार सरस्वती बीज है। श्वेत वर्ण का यह सारस्वतप्रद है। शास्त्रार्थ में विद्वानों पर विजय दाता है। नर नारियों पर भी विजय देने वाला है।

ह—हकार सदाशिव है। यह धूम्र वर्ण का ज्ञान और धन की सिद्धि देने वाला है। यह अणीमादि आठों सिद्धियों के चौसठों कलाओं को भी देने वाला है।

ळ—ळकार पृथ्वी बीज है। पीले वर्ण का परम सिद्धि दायक है। असंम्भव दोष वृद्धि भूमिगत द्रव्यों को दिखाने वाला है।

क्ष—क्षकार नृसिंह बीज है। स्फटिक वर्ण का मोक्ष सिद्धिदायक है। यह शत्रुओं का विनाशक सभी लोकों में क्षोभ कारक है।

दशशतमथमन्त्री सावधानः प्रहृष्टः,
प्रणमित दृढभावा प्राकृतारम्भ शून्यः।
जपविधिमपिपूर्वं काममायां च पूर्णां,
प्रथमपि नियोज्यत्वेकमेकं च कुर्यात्।।५५।।
पञ्चाशत्वर्णान्प्रथमंप्रयोज्य ,
जपेत्सहस्रंशरभेशमन्त्रम् ।
समानवःसर्वकलाप्रवीणः ,
प्रयाति तूर्णं पदमीश्वरस्य।।५६।।
अदोषवर्गसहितैः पञ्चाशद्भिः ततः परम्।
पृथक् वर्णैः ततः पश्चात् जपेत् सौभाग्यवृद्धये।।५७।।
साध्यनाम विलोमार्णं मन्त्राणाञ्चानुविध्य तत्।
त्रिसहस्त्र जपेनैव जन्तुः कालपुरं व्रजेत्।।५८।।

जो शिव भक्त द्युतिबल महिमा युक्त मातृका देवताओं की प्रारम्भ से गुरुमुख से प्राप्त करके शालुव आराधना के बाद इनके साथ मन्त्र जप करता है उसे सब कुछ प्राप्त होता है। ये जय और विजय सिद्धि के हेतु है। जो साधक सावधान प्रहृष्ट दृढ़ भाव से नमन करके प्राकृतारम्भ शून्य जप के पूर्व एक एक मातृका को जोड़कर एक हजार मन्त्र जप करता है। उसकी कामनाएँ पूर्ण होती है। पचास वर्णों को पहले जोड़कर एक हजार शरभेश मन्त्र का जप जो करता है वह मनुष्य सभी कलाओं में प्रवीण होकर ईश्वर का पद प्राप्त करता है। अदोष वर्गसहित पचास वर्णो के साथ अलग अलग मन्त्र जप से सौभाग्य की वृद्धि होती है। साध्य नाम के विलोम वर्णो से मन्त्र को अनुविध्य करके तीन हजार जप करने से साध्य मृत्युलोक में चला जाता है।

यदि नरस्तस्य देवता वर्णपूर्वकम्।
अनुविध्यविलोमेन संजपेदयुतं मनुः।।५९।।
देवताश्च प्रलीयन्ते पक्षिराजे महार्णवे।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन जपेदेवं वरानने।।६०।।

मन्त्रान्ते यो जपित्वा तु क्रिया साध्यं सपल्लवम्।
विविधेषु प्रयोगेषु प्रजपेत् सर्वसिद्धये॥६१॥
यन्त्रतन्त्रादना चापि योजयेन्मन्त्र वित्तमः।
सर्वसिद्धिर्जपादेव सहस्त्रैकं व्रजेत् शिवे॥६२॥

श्री देव्युवाच

ननु चात्र कथं शंभो नैव स्यात्यन्त्रतन्त्रकम्।
यदि स्यात्यन्त्रतन्त्राभ्यां किंप्रयोजनमादिमो॥६३॥

यदि मनुष्य देवता वर्णपूर्वक विलोम क्रम से अनुविद्ध करके दश हजार मन्त्र जप करता है तब उसे पक्षिराज के समान जानकर देवता भी महासागर में डूब जाते हैं। इसलिये हे वरानने सभी प्रयत्न से इस प्रकार से मन्त्र का जप करना चाहिये। मन्त्र के अन्त में क्रिया साध्य का पल्लव लगाकर विविध प्रयोगों में जप करने से सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती है। यन्त्र तन्त्रों में भी जो मन्त्रज्ञ इसे जोड़कर एक हजार जप करता है उसे सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती है।

श्री देवी ने कहा—जब इसी प्रकार सभी सिद्धियाँ मिल सकती है तब यन्त्र की क्या आवश्यकता है? यदि यन्त्र तन्त्र है तो उनका क्या प्रयोजन है।

शृणु साधु शिवे वच्मि पुरश्चर्या क्रियाविधिम्।
यन्त्रतन्त्रक्रियापूर्वं यदि कुर्याल्लभेत्तदा॥६४॥
चिरात्कालजपैः क्रूरैः यः करोत्यङ्गभे गणैः।
सिद्धिं सर्वमवाप्नोति यन्त्र-तन्त्रविवर्जनात्॥६५॥
पुरश्चर्याद्वयेनैव स्मरणात्सिद्धिमेतिसः।
यन्त्र तन्त्रं विना देविन फलं जायते जगत्॥६६॥
श्रद्धया मनुजो मन्त्री पुरश्चर्याद्वयं चरेत्।
स्मरणात्तेन सिद्धिः स्यान्नानाकर्मक्रियादिषु॥६७॥
सर्वेषां मन्त्रराजानां यदसाध्यं युगे युगे।
ततश्च स्मरणादेव सिद्धिर्भवति तत्त्वतः॥६८॥

श्री शिव ने कहा हे शिवे यह कथन सत्य है। अब मैं पुरश्चरण क्रिया विधि का वर्णन करता हूँ। यन्त्र तन्त्र क्रिया के पूर्व यदि मन्त्र का

पुरश्चरण किया जाय तब फल प्राप्त होते हैं। दीर्घ काल तक जप करके क्रूर गणों को अंगीकृत कर लेता है वह यन्त्र तन्त्र के विना भी सभी सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है। दो पुरश्चरण इस प्रकार करने से स्मरण करने से ही सिद्धि मिलती है। यन्त्र तन्त्र के विना ही जगत में फल मिलता है। जो साधक श्रद्धा से दो पुरश्चरण कर लेता है उसे स्मरण से ही सिद्धि मिल जाती है। नाना कर्म क्रियादि के आवश्यकता नहीं होती। सभी मन्त्र राज जो युग युग से साध्य है वे सब स्मरण मात्र से ही तत्वत: सिद्ध हो जाते है।

इति मातृकाणां देवता वर्णनम्

ओंकारं तस्य बाह्ये तदनु परिवृतं साध्यमाकर्षयेत्तां,
त्रैलोक्यस्थामदृष्टां स्त्रियमपिविबुधान् पातु भूतानि चैतम्॥१॥

त्रिदशमथ शुकाभं श्याममालावतंसं,
मुसलहलरथाङ्गं मुष्टिकाभीति हस्तम्।
गृहगण रिपुसैन्यस्तम्भ विद्वेष सिद्ध्यै,
प्रतिदिन मतिमन्त्री भावयेत् शालुवेशम्॥२॥

ॐ के गर्भ में साध्य नाम लिखे तो तीनों लोकों में कही अदृष्ट स्थित होने पर भी स्त्रियों का आकर्षण होता है। विद्वेषण और स्तम्भन सिद्धि के लिये शालुवेश का ध्यान करे कि वे सुग्गे के वर्ण के समान श्याम है। माला और शिरोभूषण भी श्याम है। उनके हाथो में मुसल हल रथांग मुट्ठी और अभय मुद्रा है। प्रतिदिन शालूवेश का ध्यान इस प्रकार करने से ग्रहों का और शत्रुसेना का स्तम्भन विद्वेषण होता है।

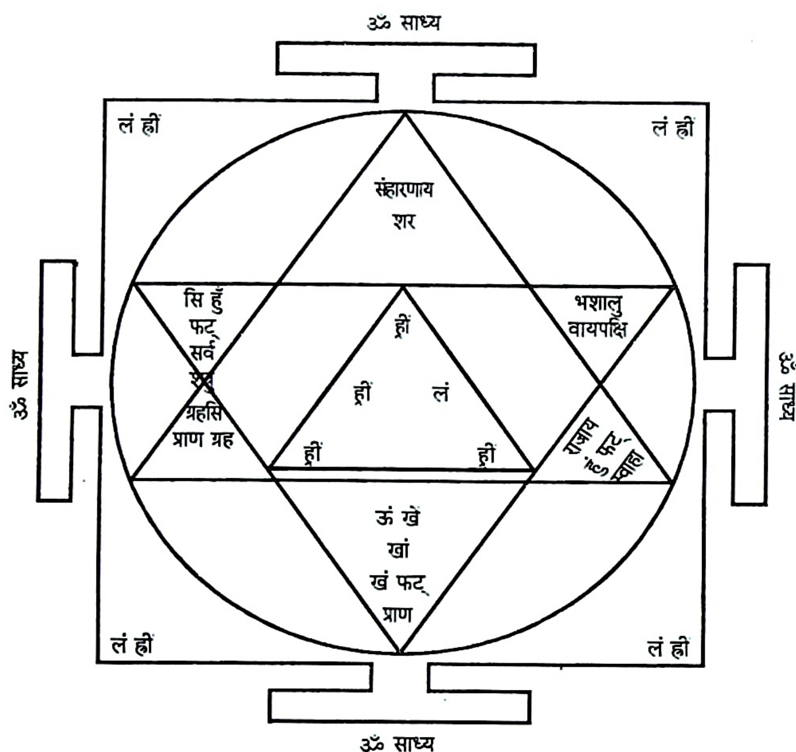
मध्ये शक्तिसमुद्भिः बहिरपि पृथिवीकोणके शक्तिबीजम्।
तद्बाह्ये कोणषट्के शरभमनुमथो बाह्यके भूमिकोणे॥
भूमिं शक्तिं च बाह्ये प्रणवमथ बहिः साधकं स्तम्भनाख्यम्।
शत्रूणामास्यदृष्टिं श्रुतिमुखहनुपत् प्राणिनां यन्त्रमेतत्॥३॥

पहले त्रिकोण बनाकर उसके मध्यमें 'ह्रीं लं' लिखे। कोनों में भी ह्रीलं लिखे। उसके बाहर षट्कोण बनाकर कोनों में वयालिस अक्षरो वाले शरभ मन्त्र के सात-सात अक्षरों को लिखे। इसके बाहर भूपुर बनाकर भूपुर के कोनों में लं ह्रीं लिखे। भूपुर के बाहर चारों दिशाओं में

ॐ के साथ साध्य का नाम लिखे। यह स्तम्भन यन्त्र शत्रुओं के मुख, दृष्टि, कान, ठुड्डी को स्तम्भित कर देता है।

शरभ मन्त्र—ॐ खें खां खं फट् प्राण ग्रहसि प्राण ग्रहसि हुंफट् सर्वशत्रु संहाणाय शरभ शालुवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।

यन्त्र

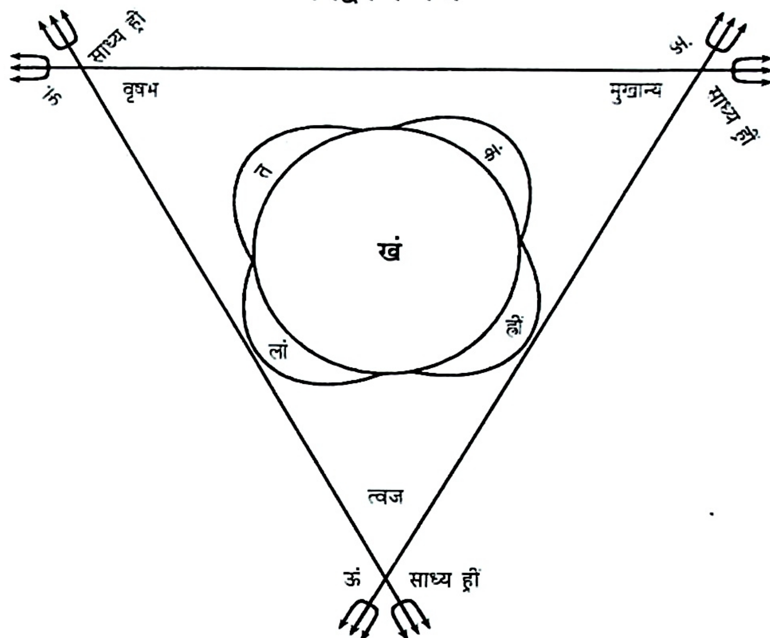


खंकारं वृत्तमध्ये तदुपरि कमले लातकं शक्तियुक्ते,
तद्बाह्ये शक्तिकोणे त्वजबृषभ मुखान्यालिखेत कोण शूले।
आलेख्यं साध्यमेतत् सकलमपि ततस्तारमायाभिवीतम्,
विद्वेषं यन्त्रमेतत् त्रिभुवनमपि किं स्वल्पकानां नराणाम्।।४।।

वृत्त के मध्य में खं लिखे। उसके बाहर कमल में शक्ति युक्त लां तकं लिखे। उसके बाहर शक्ति कोणों के त्रिशूलों में त्वज वृषभ मुखान्य लिखे। उसके बाहर ॐ ह्रीं से युक्त साध्य नाम लिखे। यह यन्त्र तीनों

लोकों को विद्वेषित कर सकता है। तब स्वल्प मनुष्यों के बारे में क्या कहा जाय।

विद्वेषण यन्त्र



मारणोच्चाटनार्थ शरभ का ध्यान—

ज्वलदनलमुखाभं सूर्यचन्द्राग्निनेत्रं,
स्वकरकलितशूलं खड्गखेटं वहन्तम्।
सकलरिपुजनानां कण्ठतश्चाविभिन्नं
स्मरतशरभमेवं मारणोच्चाटनाय।।५।।

शरभेश के मुख की आभा प्रज्वलित अग्नि के समान है। सूर्य चन्द्र और अग्नि उनके तीन नेत्र हैं। उनके हाथों में त्रिशूल खड्ग और ढाल है। सभी शत्रुओं के कण्ठों के साथ शिरों को धड़ से अलग कर रहे हैं। मारण-उच्चाटन में शरभेश्वर का ध्यान इस रूप में करे।

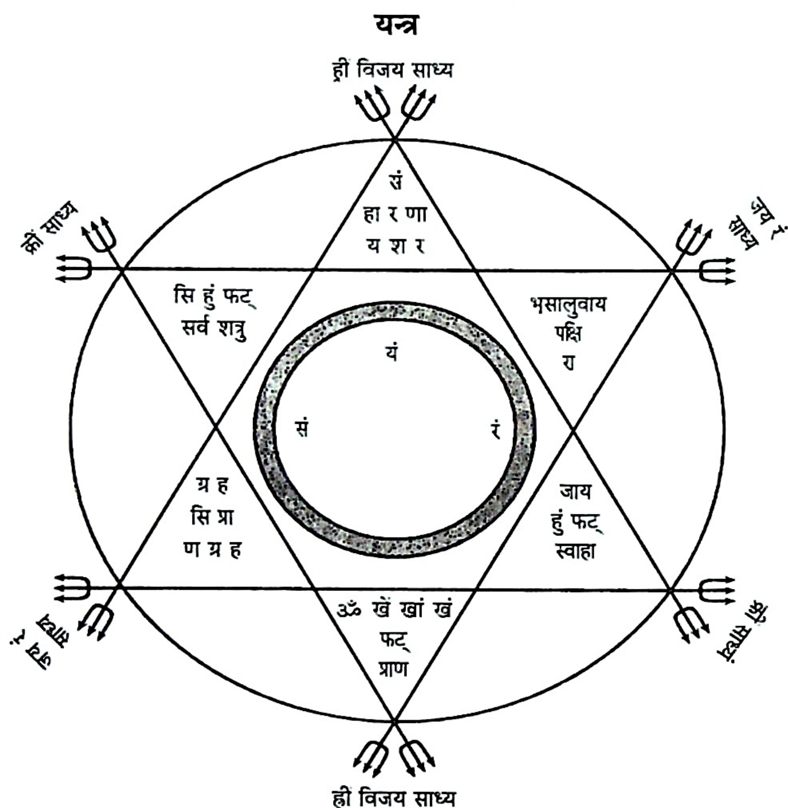
उच्चाटन यंत्र

वायुं (यु) संवृत्तमध्ये तदनु भृगुगृहे पावकं तस्य बाह्ये।
षट्कोणे शालुवेशं त्रिशिखपथबहिः स्तस्य रेखाग्रसाध्यम्।

तद्बाह्ये शक्तियुक्तं विजय-जययुतं दीपकालीति यन्त्रम्।
शत्रूणां भूतनाथग्रहगण समरोच्चाटनं यन्त्रमेतत्।।६।।

वृत्त के मध्य में यं सं रं लिखे। उसके बाहर षट्कोण बनाकर उसके कोनों में शरभ मन्त्र के सात सात अक्षरों को लिखे। षटकोण के रेखाग्रों में त्रिशूल बनावे। त्रिशूलों के आगे साध्य नाम लिखे उसके बाहर ह्रीं जय विजय रं लिखे। इस यन्त्र से शत्रु, भूत, रोग और ग्रह गण का शमन होता है। युद्ध में शत्रु का उच्चाटन होता है। यन्त्र इस प्रकार है।

यन्त्र



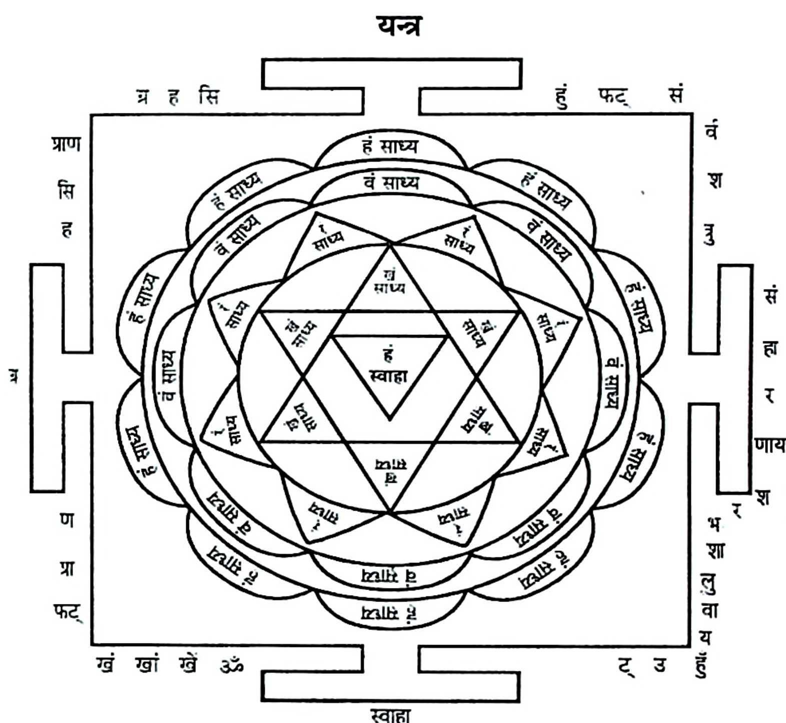
शत्रुसंहार यंत्र

बीजं स्वाहा त्रिकोणे ऋतुग्रहविवरे वायुबीजं स साध्यम्।
तद्बाह्ये नागकोणे शिखिसहितमथो साध्यनामाष्टपत्रे।
बंकारं साध्यपूर्वं क्षितिभवनमहीं साध्ययुक्तं दशारे,
व्योमाख्यं साध्ययुक्तं शरभ मनुवृतं शत्रुसंहारयन्त्रम्।।७।।

पहले त्रिकोण बनावे उसमें हं स्वाहा लिखे। उसके बाहर षट्कोण बनावे। कोनों में 'हं के साथ साध्य नाम लिखे। उसके बाहर अष्टकोण बनावे रं कोनों में और साध्य नाम लिखे। उसके बाहर अष्टपत्र बनावे और पत्रों में बं के साथ साध्य लं लिखे। इसके बाहर दश दल बनावे। दलों में हं साध्य नाम लिखे। सबों के बाहर शरभ मन्त्र के अक्षरों से वेष्टित करे। इसे शत्रु संहार यन्त्र कहते हैं।

शरभ मन्त्र–ॐ खें खां खं फट् प्राण ग्रहासि प्रणग्रहासि हुँ फट् सर्व शत्रु संहारणाय शरभशालुवाय हुं फट् स्वाहा।

यन्त्र



एतदस्त्रं महामन्त्रं जपेन्मन्त्री सदाम्बिके।
तस्य सर्वभयं नास्ति स्वप्नेऽपि ह कदाचन॥८॥
शरभास्त्रमिदं प्रोक्तममोघं जयवर्द्धनम्।
तत्प्रसादं दृशादृष्टुं न सहन्ते सुरासुराः॥९॥
कुतो नर पिशाचाश्च क्षुद्रभूताभिचारकाः।
ग्रहग्रामवृत्ता क्लिष्टा खेचरा पृथिवी चराः॥१०॥

तस्मादेवं प्रयत्नेन अष्टोत्तर शतंपुरा।
मन्त्रपूतं समाकुर्यात् कालेनापि न दृश्यते॥११॥

'शालुवेशाय विद्महे पक्षिराजाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्'। हे पार्वति! इस महा अस्त्र रुप मन्त्र का जप साधक सदैव करे तो उसे सपने में भी भय नहीं होता। इसे शरभास्त्र कहा जाता है। यह अमोघ जयवर्द्धन है। इसकी कृपा जिस पर होती है उसे देवता और राक्षस देख नहीं सकते। मनुष्य पिशाच क्षुद्र आभिचारिक भूत, ग्रह, ग्राम वृत्ता, क्लिष्टा, खेचरा भूचरा की क्या हस्ति है एक सौ आठ जप से मन्त्र पूत की ओर काल भी नहीं देख सकता।

बुद्धिमान् शरभं घोरं मन्त्रराजं महामनुम्।
न्यासाभावे जपं कुर्यादन्वहं पापमुक्तये॥१२॥

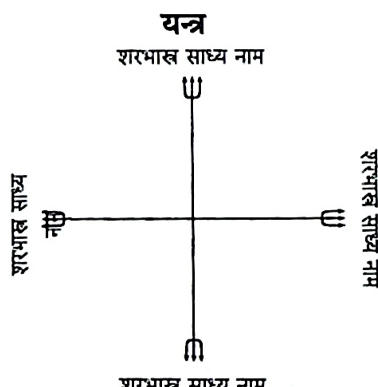
पापों से मुक्ति के लिये बुद्धिमान् साधक शरभ घोर मन्त्रराज महामन्त्र का जप प्रतिदिन न्यास के विना भी करे।

अस्त्रविशेष मन्त्रं—

बाह्येषु शूलान्चि लिखेत्ससाध्यं।
त्रैलोक्यसंहारमिदं त्वमोघम्॥१३॥

नीचे से ऊपर जाने वाली और बाएँ से दाएँ जाने वाली वेध रेखा अंकित करे। रेखाओं के चारों अग्रभागों में त्रिशूल बनावे। त्रिशूल के आगे शरभास्त्र, साध्यनाम लिखे। यह अस्त्र विशेष तीनो लोकों का संहार करनेवाला अमोघ है। शरभास्त्र शालुवेशाय..........रुद्रः प्रयोदयात।

यन्त्र



मारण कर्म

विषवृक्षे समालिख्य प्राणानाबाह्यपूज्य तत्।
अष्टोत्तराख्यसाहस्त्रं जपेदेकाग्रमानसः॥१४॥
बलिं पूर्वं क्षपामध्ये दक्षिणास्यो भवेन्निशि।
तस्मात्ततो जपेन्मन्त्रमष्टोत्तरसहस्त्रकम्॥१५॥

उपर्युक्त यन्त्र को धत्तूर के काष्ठ में लिखकर साध्य के प्राण की प्रतिष्ठा करें तब पूजा करे। एकाग्र मन से शरभास्त्र-शालुवाय विद्महे इत्यादि गायत्री का जप एक हजार आठ बार करे। पूजा जप के पहले और बीच में बलि प्रदान करे। अपने स्थान से दक्षिण दिशा में उसे गाड़ दे। तब स्नान करके शरभास्त्र का जप एक हजार आठ बार करे। हे पार्वति! ऐसा करने से शत्रु की मृत्यु अवश्य होती है।

रिपवो मरणं यान्ति संशयो नास्ति सुन्दरि।
भानुमण्डलमध्ये च वैरिणं दर्शके हरिम्॥१६॥
राहुसंग्रहणादेव कृष्णवर्णमधोमुखम्।
पुटपाकतनुं क्लान्तं निष्प्राणं विषमक्रमम्॥१७॥
चिरं ध्यावा जपेन्मन्त्रमष्टोत्तरसहस्त्रकम्।
जपान्तेऽस्य त्रिधा कुर्यात् सूर्यमालोकयन् सुधीः॥१८॥
भूयो जपेत् सहस्त्रं तु स्मृत्वा भस्मकृतं रिपुम्॥१९॥
स रिपुस्तत्क्षणादेव मरणं यात्यहेतुकम्॥२०॥

अमावस्या के दिन सूर्य ग्रहण काल में सूर्य के काले वर्ण में वैरी को अधोमुख पुट पाक तन क्लान्त निष्प्राण लटका हुआ चिन्तन करते हुए एक हजार आठ मन्त्र जप करे। जप के बाद वैरी के तन का तीन भाग करे। सूर्य को देखते हुए पुनः एक हजार आठ बार जप करे। भावना करे कि शत्रु जलकर राख हो गया। उसी क्षण में शत्रु वैरी की मृत्यु अकारण हो जाती है।

द्विषन्तमुद्दिश्यसहस्त्रवारं जप्त्वाघृतंतेनहुतेहुताशे।
दिनावसानात्पुरतोरिपूणां शरीरनाशायसुसिद्धतन्त्रम्॥२१॥

वैरी का चिन्तन करते हुए एक हजार मन्त्र जप से घी को अभिमन्त्रित करे। उस घी से अग्नि में हवन करे। ऐसा करने से सूर्यास्त के पहले ही शत्रु की मृत्यु हो जाती है। यह सुसिद्ध मन्त्र है।

बिन्दुवह्निरसकोणमयं वृत्तद्वन्दकं सचतुर्दशयन्त्रम्।
भूपुरञ्च विलिखेदथमंत्री मध्यमा वहितामस तीरमूलम्॥२२॥

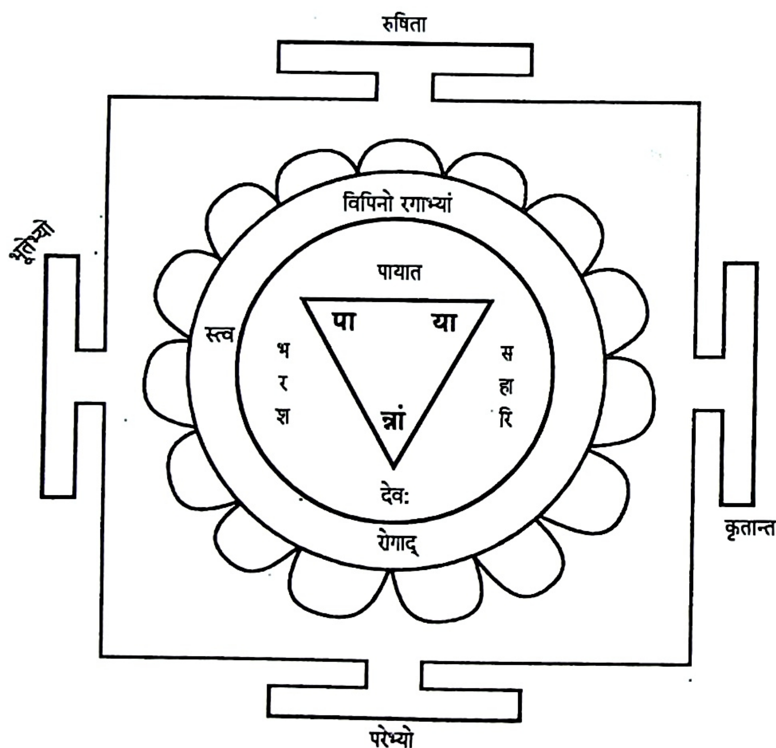
त्रिकोण में विन्दु बनाकर त्रिकोण के बाहर दो वृत्त बनावे और उसके बाहर चौदह दल बनावे। उसके बाहर भूपुर बनावे। यन्त्र के मध्य से बाहर तक ॐ के साथ वैरी के नाम के साथ मन्त्र लिखे। मन्त्र है—

पायान्नांदेवःशरभस्त्वपायात सहारिरोगाद्विपिनोरगाभ्याम्।
वैश्वानराखु-करि-रिक्षकेभ्यः परेभ्योभूतेभ्योरुषितात्कृतांतम्।।२३।।

आथर्वणमिमं मन्त्रममोघ दुरितापहम्
सर्वरक्षणं श्रेष्ठं सर्वसौभाग्यदायकम्।
एतद्यन्त्रसमालिख्य हेमपट्टादिके शुभे
विधिनाधाणेद्योऽयँ सर्वत्र विजयी भवेत्।।२४।।

इस यन्त्र मन्त्र से शरभेश्वर शत्रुओं से, रोगों से, जंगली सर्पो से अग्नि से, चूहों, हाथियों, रिक्षों आदि के साथ भूतों कृतांतो से रक्षा करते हैं। यह अथर्वणमन्त्र कष्टो दुखों को दूर करने में अमोघ है। सभी प्रकार से रक्षाकारक है श्रेष्ठ सौभाग्यदायक है। सोने के पत्र पर खुदवाकर जो विधिवत धारण करता है, वह सर्वत्र विजयी होता है।

यन्त्र



ॐ रात्रिशेषे समुत्थाय गुरुं ध्यायेच्छिरोम्बुजे
वरदाभयदं शम्भुं पक्षिराज स्वरूपकम्।
एवं ध्यात्वा पक्षिराजं गायत्र्यष्टोत्तरं जपेत्-
पक्षिराजाय विद्महे शरभेश्वराय धीमहि तन्नोरुद्रः प्रचोदयात्।

तत्रासनमास्तीर्य ॐ ह्रीं आधारशक्ति कमलासनाय नमः इत्यासनं सम्पूज्य उपविश्य भूत शुद्धि प्राण प्रतिष्ठा मातृकान्यासांतां नित्य क्रियां विधाय गुं गुरुभ्यो नमः वाम कर्णे, गं गणपतये नमः दक्षे क्षं क्षेत्रपालाय नमः पृष्ठे श्री शरभेश्वराय नमः सर्वाङ्गे। ॐ अस्य शरभेश्वर महामन्त्रस्य कालाग्नि रुद्र ऋषये नमः शिरसि, जगती छन्दसे नमः मुखे भगवत्यै शरभ देवतायै नमः हृदि, रवं बीजाय नमः गुह्ये स्वाहा शक्तये नमः पादयोः, फट् कीलकाय नमः सर्वाङ्गे, स्वेच्छा प्रयोग सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ॐ खे खां अं कं खं गं घं ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ओम् खं फट् इं चं छं जं झं ञं ई तर्जनीभ्यां नमः। ॐ प्राणग्रहासि प्राणग्रहासि फट् उं टं डं ठं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ सर्व शत्रु संहारणाय एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ शरभ शालुवाय ॐ पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ पक्षिराजाय हूँ फट् स्वाहा अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः एवं हृदयन्यासः भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः। अथ ध्यानम्—चन्द्रार्को इति अन्यच्च–

मृगस्त्वर्द्धं शरीरेण पक्षाभ्यां चञ्चुनाद्विजः।
अधोवक्त्रः चतुष्पाच्च उर्ध्ववक्त्रश्चतुर्भुजः।
कालाग्निदहनोपेतो नीलजीमूतसंनिभः।
अरिस्तद्दर्शनादेव विनष्टबलिविक्रम।

इति ध्यात्वा पञ्च पूजां कुर्यात्—

फट् कारोपदरूपाय पक्ष विक्षिप्त भूभृते।
अष्ट पादाय रुद्राय नमः शरभ मूर्तये।।

अथ जप विधिः—

अविघ्नं कुरु मालेत्वं जपकाले सदा मम।
सिद्धिं मे देहि सततं देवता प्रीतिकारकम्।।

ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः सिद्धिं कुरु कुरु इति मालां सम्पूज्य तार शब्देन सहित अष्टोत्तरशतं जपेत्।

माला मन्त्रं प्रवक्ष्यामि रहस्यं शृणु शोभने।
मन्त्र स्मरण मात्रेण करस्था सर्व सिद्धयः।।
ॐ नमः पक्षिराजायेति माला मन्त्रं जपेत्।
त्वं माले सर्व देवानां प्रीतिदा शुभदा मम।
शुभं कुरुष्व में भद्रे यशोवीर्यञ्च मे सदा।।

इति माला स्थापनम् उत्तरं न्यासान्ते–गुह्याति गुह्येति मन्त्रेण जप फलं देव दक्षिण करे समर्पयेदिति जप विधिः।

देव्युवाच–

देव देव महादेव गिरीश जगतः पते।
त्राहि मां जगतां नाथ सच्चिदानन्द विग्रह।
मन्त्राणामपि यस्सारं सर्व लोकोपकारकम्।
रक्षणं सर्व जन्तूनां ब्रूहिमे तद्विभो मम।

शिव उवाच–

त्राहि मां जगतां नाथ सच्चिदानन्दविग्रह।
मन्त्राणामपि यस्ससारं सर्वलोकोपकारकम्।।
रक्षणं सर्व जन्तुनां ब्रू हि मेतद्विभो मम।
रहस्यं शृणु देवेशि सर्व रक्षा करं नृणाम्।
यस्य स्मरण मात्रेण वैरिणां कुल नाशनम्।

शरभेश्वर मन्त्रस्य कालाग्नि रूद्र ऋषिः जगतीछन्दः देवो भगवान् शरभेश्वरः।।

खंकारं बीजमित्युक्तं स्वाहा शक्तिस्ततः परम्।
फट्कारं कीलकं प्रोक्तं नीरजायत लोचने।।
स्वेच्छाप्रयोग सिद्ध्यर्थे विनियोगस्तथाम्बिके।
मन्त्राक्षरैः करन्यासं मातृका सहितं शिवे।।
अङ्ग न्यासं ततः कृत्वा ध्यात्वा वै शरभेश्वरम्।
तारं प्रथम मुद् धृत्य खे खां खं फट् तथैव च।
प्राणग्रहासि द्वितयं हुं फट् च तदनन्तरम्।
सर्वेति पदमाभाष्य शत्रुसंहारणाय च।

शरभ शालुवायेति पक्षिराजाय तद्वदेत्।
हुं फट् स्वाहेति मन्त्रोऽयं द्विचत्वारिंशदक्षरम्॥
जपेद्वर्ण सहस्राणि समाहितेन साधकः।
दशांशं तर्पणं होमं तद्दशांशं जितेन्द्रियः॥
अभ्यङ्गस्नानशुद्धान्तः करणाद्भोजयेत् द्विजान्॥

शरभ जप विधि

सूर्योदय के पहले उठकर शिर के कमल में गुरु का ध्यान करे। गुरु का स्वरूप वर-अभय मुद्रा युक्त शम्भु पक्षिराज है। इस प्रकार का ध्यान करके पक्षिराज गायत्री का जप १०८ एक सौ आठ बार करे।

पक्षिराज गायत्री—

पक्षिराजाय विद्महे शरभेश्वराय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

तब आसन बिछाकर 'ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः' मन्त्र से आसन की पूजा करे। उस पर बैठकर भूत शुद्धि, प्राण प्रतिष्ठा, मातृका न्यास करके नित्य क्रिया के बाद न्यास करे।

गुं गुरुभ्यो नमः वामकर्णे। गं गणपतये नमः दक्ष कर्णे।
क्षं क्षेत्रपालाय नमः पृष्ठे। श्री शरभेश्वराय नमः सर्वाङ्गे।

तब विनियोग करे—

ॐ अस्य शरभेश्वर मन्त्रस्य कालाग्नि रुद्र ऋषये नमः शिरसि।
जगती छन्दसे नमः मुखे। भगवत्यै शरभ देवतायै नमः हृदि।
खं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः।
फट् कीलकाय नमः सर्वांगे। स्वेच्छा सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

करन्यास—**ॐ खें खां अं कं खं गं घं ङ आं अंगुष्ठाभ्यां नमः।**
ॐ खं फट् इं चं छं गं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ प्राण ग्रहसि प्राण ग्रहसि फट उं ठं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ सर्वशत्रुसंहारणाय एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ शरभशालुवाय ओं फं बं भं मं औ कनिष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ॐ पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ऊं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ऊः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

इसी प्रकार हृदयादि न्यास करे। ॐ भुर्भुवः स्वरोम् से दिग्बन्ध करें।

ध्यान—चन्द्रार्कौ ध्यान श्लोक से ध्यान करे।

दूसरा ध्यान—

मृगस्त्वर्द्धशरीराणां पक्षाभ्यां चंचुना द्विजः।
अधोवस्त्र चतुष्पाच्च ऊर्ध्ववक्त्रश्चतुर्भुजः।।
कालाग्नि दहनोपेतो नीलजीमूत सन्निभः।
अरिस्तद्दर्शनादेव विनष्टबलविक्रमः।।
इस प्रकार ध्यान करके पंच पूजा करे।
फट्कारो पद रूपाय पक्षविक्षिप्तभूभृते।
अष्टपादाय रुद्राय नमः शरभमूर्तये।

माला की पूजा करे—

अविघ्नं कुरु माले त्वं जप काले सदा मम।
सिद्धिं मे देहि सततं देवता प्रीतिकारकम्।।

'ॐ सिद्धयै सिद्धिं कुरु कुरु'

उपर्युक्त मन्त्र से माला की पूजा करके ॐकार सहित मन्त्र का जप एक सौ आठ बार करे। हे शोभने अब रहस्य माला मन्त्र सुनो। इस मन्त्र के स्मरण मात्र से सभी सिद्धियाँ हाथ में हो जाती हैं।

मन्त्र—ॐ नमः पक्षिराजाय। है इसी का जप करे। जप के बाद माला को रखकर प्रार्थना करें—

त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मम।
शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशोवीर्यंच मे सदा।

इसके बाद इस मन्त्र से देवता के दाएँ हाथ में जप समर्पण करे।

गुह्याति गुह्य गोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात् शरभेश्वर।।

श्री देवी ने कहा—हे देवदेव महादेव गिरीश जगत्पति सच्चिदानन्द विग्रह जगन्नाथ मेरा त्राण कीजिये। मन्त्रों का जो सार सर्वलोकोपकारक हो जिससे सभी जीवों की रक्षा हो वह मुझे बतलाइये।

श्री शिव ने कहा—हे देवेशि! मनुष्यों की सब प्रकार की रक्षा

करनेवाले रहस्य को सुनो। इसके स्मरण करने से ही वैरियों के कुल का नाश हो जाता है।

विनियोग–अस्य शरभेश्वर मन्त्रस्य कालाग्नि रुद्र ऋषिः। जगती छन्दः। देवो भगवान शरभेश्वरः। खंकार बीजम् स्वाहा शक्तिः। फट्कारं कीलकं। स्वेच्छा प्रयोग सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

करन्यास—षडंगन्यास मन्त्रवर्णों से करे।

मन्त्र वर्ण	करन्यास	हृदयादि न्यास
ॐ खे खां खं फट्	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयादि नमः।
प्राण ग्रहसि प्राण ग्रहसि हुं फट्	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा।
सर्वशत्रुसंहारणाय	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्।
शरभशालुवाय	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं।
पक्षिराजाय	कनिष्ठाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
हुं फट स्वाहा	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

मन्त्र–ॐ खे खां खं फट् प्राण ग्रहसि। प्राण ग्रहसि हुं फट् सर्वशत्रुसंहारणायं शरभशालुवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।

यह मन्त्र बयालिस अक्षरों का है। एकाग्रता से मन्त्रवर्ण पर एक हजार जप करने से बयालिस हजार मन्त्र जप होता है। उसका दशांश हवन ४२००, उसका दशांश तर्पण ४२०, इसका दशांश मार्जन ४२ उसका दशांश ५ ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये।

यन्त्रक्रम:—

भस्म मध्ये लिखेद्विद्वान् शरभेश्वर यन्त्रकम्।
रक्त पुष्पैश्च गन्धाद्यैः पूजां कुर्यात् विचक्षणः॥
सप्तरात्रं जपेन्मन्त्रं सहस्रद्वय मानवः।
तद्भस्म चैकी कृत्वा तु धारयेद्यस्तु मानवः॥
संग्रामे शत्रवो दृष्ट्वा पलायन्ते च तत्क्षणात्।
स्वर्ग भूतल पालात वासिनोऽमर्त्य मर्त्यकाः॥
शालुवस्मरणादेव मरणं यात्यहेतुकम्।

शालुवस्य प्रयोगेन त्रिमूर्तिर्नैव रक्षति।।
षट्सप्त कोष्ठेषु विलिख्य शारभं,
रेखाग्र शूलेषु तदग्र साधकम्।
बाह्येषु मायावृततारहेतुकं,
समाधितं चक्रवरं जयाभिधम्।।
पूर्वादितो जपेद्विद्वानिद्राद्रीन्परमेश्वरि।
यन्त्रस्योभयपार्श्वे तु व्याधिमृत्यू यजेत्ततः।।
भैरवं वाडवाग्निं च पुरतः परिपूजयेत्।
भद्रकाली तथा दुर्गा सिद्धिस्थाने यजेत्प्रिये।।
तत्कोष्ठेषु च देवेशि मन्त्रवर्णान् समर्चयेत्।
मध्यकोष्ठे जपेत् शालुं भावकं शरभेश्वरम्।।
आवाहनादि पूजान्तं मूलमन्त्रेण पूजयेत्।
धूपदीपैर्महादीपैः कुलदीपैर्विशेषतः।।
क्रमेणैव सरारोहे शरभं परिपूजयेत्।
इत्येतत्कथितं देवि गुह्याद् गुह्यतरं महत्।।
राज्यं देयं शिरो देयं न देयं यस्य कस्यचित्।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।।

इति पूजायन्त्रम्

शरभेश्वर यन्त्र को विद्वान भस्म मध्यमें लिखे। लाल फूलों और गन्धादि से पूजा करे। सात रातों तक दो दो हजार मन्त्र जप करे। उस भस्म को एकत्र करके जो मनुष्य धारण करता है उसे देखते ही युद्ध में शत्रु तुरत भाग जाते है। स्वर्ग भूलोक पाताल निवासी अमर और मरणशील सभी साधक के शालुव का स्मरण करने से अकारण मर जाते है। शालुव के इस प्रयोग से ब्रह्मा विष्णु शिव भी रक्षा नहीं कर सकते।

जयप्रद यन्त्र

समान दूरी पर बाएँ से दाएँ २० रेखा और ऊपर से नीचे ५ रेखा खींचकर छिहत्तर कोष्ठ बनावे। उनमें शरभ मन्त्र के वर्णों को लिखे रेखाग्रों में त्रिशूल बनावे। त्रिशूलों के आगे साध्य नाम लिखे। उसके बाहर ॐ ह्रीं हेतु लिखकर वेष्टित करे। समाराधित होने पर यह चक्र वरजयप्रद होता है। शरभ मन्त्र नीचे लिखित है कोष्ठों के मन्त्रों की पूजा करे।

ॐ ह्रीं हेतु

अ	ग्नि	फट्	ग्रा	सा	ग्र	ह	य	म	वि	ग्रा	ता	ग्र	ह	सि	हु	फट्	निर्म	ति
इ	न्द्र	खं	लु	वा	य	प	मृ	शा	या	क्षि	ग	जा	य	हु	फट्	स	अ	नल
त्र	ह्या	खां	शा	भ	र	श	ल	लु	छि	णाय	र	ह	सं	कु	श	र्व	व	रुणा
ई	शान	खे	ऊं	भै	रव	व	डवा	कुं	वरे	भ	द्र	य	दु	र्गा	स्वा	हा	वा	यु

ॐ ह्रीं हेतु

ॐ ह्रीं हेतु

ॐ ह्रीं हेतु

पूर्व दिशा से शुरु करके इन्द्रादि दश का, मृत्यु-व्याधि, भैरव वड़वाग्नि दो का, भद्रकाली दुर्गा दो का दो दो कोष्ठो में पूजा करे। मध्य के दो कोष्ठों में शरभ की पूजा करे। शेष ४२ कोष्ठो में शरभ मन्त्र के बयालिस अक्षरों की पूजा करे।

शरभ की पूजा आवाहन से लेकर आरती तक मूल मन्त्र से करे। धूप दीप महादीप कुलदीप के क्रम में शरभ की पूजा करे। हे देवि! गुप्त से गुप्त महान विधि को मैने कहा। राज्य दे दे। शिव देवे पर जिस तिस को इसे न बतलाये। गोपनीय गोपनीय गोपनीय प्रयत्नपूर्वक रखे।

इति पूजा यन्त्रम्।

अथान्यत्तु प्रकारेण पूजा यन्त्रं मयोच्यते।

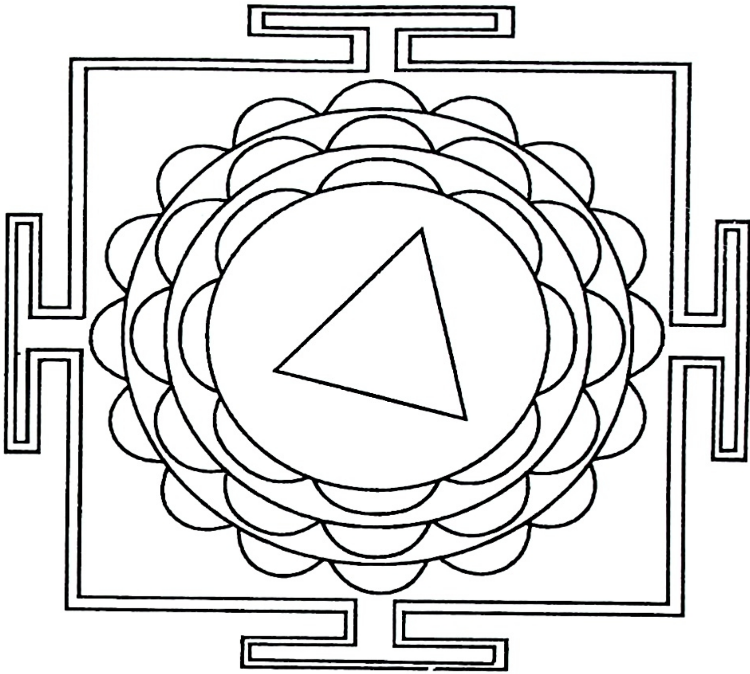
दिव्यगन्धे प्रशस्ते भस्मानि-त्रिकोणाष्टदल-द्वादशदल षोडशदल भूपुर द्वन्द्वात्मकं अरत्निचक्रमुद्धृत्य पुष्पाञ्जलित्रयं दत्वा वक्ष्यमाणरीत्या छागबलिं दत्वा स्ववामभागे सामान्यार्घ्य स्थापनं कुर्यात्। चन्दनादिना चतरस्त्रं विलिख्य हस्ताभ्यां मत्स्य मुद्रया त्रिकोणवृत्त चतुरस्त्रं मण्डलं कृत्वा ॐ आधार शक्तये नमः इति सम्पूज्य मूलमुच्चरन् श्री शरभेश्वर

पूजायाः सामान्यार्घ्याधारं स्थापयामि इति संस्थाप्य तन्मध्ये नमः इति जलेनापूर्य गंगे चेति मन्त्रेण तीर्थान्या नावाह्य ॐ इति गंगादिभिः सम्पूज्य मूलेनाष्टवारं अभिमन्त्रय धेनु मुद्रां प्रदर्शयेदिति सामान्यार्घ्य-स्थापनम्। अथ मन्त्रविशोधनम्। यथा यन्त्रात्मनो मध्ये चन्दनमुत्क्षिप्य चतरस्त्रभूमौ मस्यमुद्रयाचतरस्त्रवृत्तं षट्कोणं विधाय वामावर्तेन दक्षिणाग्रेषु सम्पूज्य षट्कोणेषु षडङ्गैं सम्पूज्य पञ्चरत्नेन चतरस्त्रकोणेषु सम्म्पूजय ग्लूं गगन रत्नाय नमः स्लूं स्वर्गरत्नाय नमः क्लूं मर्त्यरत्नाय नमः प्लूं पातालरत्नाय नमः न्लूं नागरत्नाय नमः इति चतुर्दिक्षु सम्पूज्य कं कामगिरि पीठाय नमः उं उड्यान पीठाय नमः इति सम्पूज्य अस्त्रक्षालितमाधारं गृहीत्वा श्री शरभेश्वर विशेषार्घ्याधारं स्थापयामीति संस्थापयेत्। तत्रं रं अग्नि मण्डलाय धर्मप्रदाय दशकलात्मने श्रीशर-भेश्वर विशेषार्घ्याधाराय नमः इति सम्पूजयेत्। हुं ब्रह्माण्ड चर्वकाय स्वाहेति पात्रं प्रक्षाल्य नमः धूपयित्वा मूलमुच्चरन् श्री शरभेश्वर विशेषार्घ्यं पात्रं स्थापयेत्। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं धूमार्चि कलायै नमः रं ऊष्म कलायैं नमः। लं ज्वलिनी कलायै नमः वं ज्वालिनी कलायै नमः शं विस्फु लिङ्गिनी कलायै नमः षं सुश्री कलायै नमः सं सुरूपा कलायै नमः षं सुश्री कलायै नमः सं सुरूपा कलायै नमः हं कपिला कलायै नमः। क्षं कव्य स्वाहा कलायै नमः। ऐं अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्व वेदसं अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्।। रां रीं रं रैं रौं रः र्‌मलवरयुं इत्याधारे अग्निं कलाभिः सम्पूज्य पात्रं संस्थाप्य।

दूसरे प्रकार के पूजा यन्त्र का वर्णन

शिवजी ने कहा कि मैं अब दूसरे प्रकार के पूजा यन्त्र कहता हूँ। बित्ता भर लम्बा चौड़ा भस्म बिछाकर उसमें दिव्य गन्ध से त्रिकोण, अष्टकोण और अष्टदल, द्वादश दल, षोडश दल दो भूपुर से युक्त मण्डल बनावे।

यन्त्र



पूजा यन्त्र बनाकर तीन पुष्पांजलि यन्त्र पर डाले। वक्ष्य माण रीति से छाग बलि देकर अपने वाम भाग में सामान्यार्घ्य स्थापित करे। एक हाथ लम्बा चौड़ा चतुरस्त्र चन्दनादि से बनाकर हाथों से मत्यस्य मुद्रा बनाकर त्रिकोण वृत्त चतुरस्त्र मण्डल बनावे। ॐ आधार शक्तये नमः से पूजा करे। मूल मन्त्र के साथ 'श्री शरभेश्वर पूजायाः सामान्यार्घ्याधार स्थापयामि' कहकर आधार पर जलपात्र स्थापित करे। नमः कहकर पात्र में जल भरे। उसमें, गंगे च यमुने चैव० मन्त्र से तीर्थों का आवाहन करे। ॐ गंगा आदि की पूजा करे। मूल मन्त्र के आठ जप से उसे अभिमन्त्रित करे। धेनु मुद्रा दिखावे। इति सामान्यार्घ्य स्थापन।

मन्त्र विशोधन—अपने और यन्त्र के मध्य में चन्दन छिड़ककर समतल भूमि पर मत्स्य मुद्रा से चतुरस्त्र वृत्त षटकोण बनावे। दक्षिणाग्र से वामावर्त से पूजा करे। षटकोण में षडंग पूजा करे। पंचरत्न से चतुरस्त्र के कोनों में पूजा करे। चारों दिशाओं में ग्लूं गगन रत्नाय नमः। स्लूं

स्वर्ग रत्नाय नमः। म्लूं मर्त्य रत्नाय नमः प्लूं पातालरत्नाय नमः आदि से पूजा करे। मध्य में न्लूं नाग रत्नाय नमः से पूजन करे। तब कं काम गिरि पीठाय नमः। पं पूर्ण गिरि पीठाय नमः। जं जालंधर पीठाय नमः। ॐ उड्डयान पीठाय नमः से पूजा करे। पूजा के बाद फट् मन्त्र से आधार को धोकर श्री शरभेश्वर विशेषार्घ्याधारं स्थापयामि कहकर स्थापित करे। रं अग्नि मण्डलाय धर्म प्रदाय दश कलात्मने श्री शरभेश्वर विशेषार्घ्याधाराय नमः से पूजा करे। हुं ब्रह्माण्ड चर्वकाय स्वाहा' मन्त्र से पात्र को धोकर नमः से धूप दिखावे। मूल मन्त्र कहते हुए श्री शरभेश्वर विशेषार्घ पात्र स्थापित करे। पात्र में अग्नि की दश कलाओं की पूजा करे।

१. ॐ ऐ ह्रीं श्रीं यं धूम्रार्चि कलायै नमः।
२. रं ऊष्मा कलायै नमः।
३. लं ज्वलिनी कलायै नमः।
४. वं ज्वालिनी कलायै नमः
५. शं विस्फुलिङ्गिनी कलायै नमः।
६. षं सुश्री कलायै नमः।
७. सं सुरुपा कलायै नमः।
८. हं कपिला कलायै नमः।
९. लं कृव्य वाहिनी कलायै नमः।
१०. क्षं कव्य वाहिनी कलायै नमः।
ऐं अग्निदूतं वृणीमहे होतारं विश्व वेदसे।।

अस्य यज्ञस्य सुक्रतु रां रीं रुं रैं रौं रः रमल वर यूं मन्त्र के आधार में अग्निकला की पूजा कर पात्र स्थापित करे।

अं सूर्य मण्डलाय द्वादश कलात्मने शरभेश्वर विशेषार्ध्य पात्राय नमः इति अभ्यर्च्य ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं भं तपिनी कलायै नमः। खं बं तापिनी कलायै नमः। गं फं धूम्राकलायै नमः। खं बं तापिनी कलायै नमः। गं फं धूम्राकलायै नमः। घं पं मरीचि कलायै नमः। ड़ नं ज्वलिनी कलायै नमः। चं धं रुचि कलायै नमः। छं दं सुषुम्ना कलायै नमः। जं थं भोगदा कलायै नमः झं तं विश्वा कलायै नमः। ञं णं बोधिनी कलायै नमः। टं ढ़ं धारिणी कलायै नमः। ठं डं क्षमा कलायै नमः।

क्लीं आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशय न्नमृतंम्र्त्यञ्च।
हिरण्ययेन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यत्।

ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौ ह्रः ह म ल व र यूं सूर्य कलाभिः सम्पूज्य श्री शरभेश्वर विशेषार्घ्याय नमः मूलेन हव्यमार्श्य सं सोममलाय कामप्रद षोडश कलात्मने श्री शरभेश्वर हेतुपात्रामृताय नमः इत्यभ्यर्च्य ॐ ऐं ह्री श्रीं अं अमृता कलायै नमः।

४ आं मानदा कलायै नमः ।

४ इं पूषा कलायै नमः ।

४ ईं तुष्टि कलायै नमः ।

४ ऊं पुष्टि कलायै नमः ।

४ ऊं रति कलायै नमः ।

४ ऋं धृति कलायै नमः ।

४ ऋं शशिनी कलायै नमः ।

४ लृं चन्द्रिका कलायै नमः ।

४ लॄं कान्ति कलायै नमः ।

४ एं जयोत्स्ना कलायै नमः ।

४ ऐं श्री कलायै नमः ।

४ ओं प्रीति कलायै नमः ।

४ औं अंगदा कलायै नमः ।

४ अं पूर्णा कलायै नमः ।

४ अः पूर्णा मृता कलायै नमः ।

४ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम ब्रह्मभवा वाजस्य संगथे। सां सीं सूं सैं सूँ सः समलवरयूं इति षोडश कलाभिः सम्पूज्य हेतुमभ्यर्च्य योनि मुद्रां प्रदर्श्य पूजायाः द्रव्य पञ्च शोधनं कुर्यात्।

अं सूर्य मण्डलाय द्वादश कलात्मने शरभेश्वर विशेषाघ्य। पात्राय नमः से पात्र का अर्चन करे उसमें सूर्य की बारह कलाओं की पूजा करे।

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं भं तपिनी कलायै नमः।

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं खं वं तापिनी कलायै नमः।

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं फं धूम्राकलायै नमः।

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं घं पं मरीचि कलायै नमः।

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ङं नं ज्वलिनी कलायै नमः।

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं धं रुचि कलायै नमः।

७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं छं दं सुषुम्ना कलायै नमः।

८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जं थं भोगदा कलायै नमः।

९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं झं तं विश्वा कलायै नमः।

१०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ञं णं बोधिनी कलायै नमः।

११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं ढं धारिणी कलायै नमः।

१२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ठं डं क्षमा कलायै नमः।

क्लीं आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतंमर्त्यं च।
हिरण्येन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन्।

ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हम लव र यूं से सूर्य कला की पूजा करे। श्री शरभेश्वर विशेषार्घ्याय नमः के साथ मूल मन्त्र से पूजा करे।

चन्द्रकलाओं का पूजन—

सं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्रीशरभेश्वर हेतु यात्रामृताय नमः से पात्र की पूजा करे तब उसमें कलाओं की पूजा करे।

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृता कलायै नमः।

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं मानदा कलायै नमः।

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं पूषा कलायै नमः।

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं तुष्टि कलायै नमः।

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं पुष्टि कलायै नमः।

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं रति कलायै नमः।

७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं धृति कलायै नमः।

८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं शशिनी कलायै नमः।

९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं चन्द्रिका कलायै नमः।

१०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लृं कान्ति कलायै नमः।

११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं ज्योत्सना कलायै नमः।

१२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं श्री कलायै नमः।

१३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं प्रीति कलायै नमः।

१४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं अंगदा कलायै नमः।

१५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं पूर्णा कलायै नमः।

१६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं पूर्णामृता कलायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम ब्रह्मभवा वाजस्य संगथे।

सां सिं सूं सैं सौं सः समलवरयूं से षोडश कलाओं की पूजा करे। योनि मुद्रा दिखाकर हेतु की पूजा करे। पूजा द्रव्यों का पंच शोधन करे।

अथ द्रव्य पञ्चक शोधनानन्तरं चक्रोद्धारं कृत्वा पीठपूजां कुर्यात् चक्रोद्धारः।

षोडशारं ततः पश्चात् ततो भूपुर युग्मकम्।
त्रिकोण मध्ये देवेशं शरभं शरभेश्वरम्।
चिरंध्यात्वा ततो मन्त्री गुरुपादयुगं स्मरेत्।

आवाहनादि षोडशोपचार पूजां कृत्वा चन्द्रं सूर्यं च वह्निं च त्रिकोणे विलिखेत्।

क्रमात् भैरवं वडवाग्निं च दुर्गां कालीं च पृथक् पृथक्

त्रिकोणे वृत्तमध्ये च चतुर्दिक्षु च. वि. लिखेत्। क्रमात् इन्द्रमग्नियमं चैव निर्ऋतिं वरुणं तथा

वायुं सोमं तथेशानं दलेष्वष्टासु विन्यसेत्।
पार्श्वद्वये यजेद्देवि व्याधिमृत्यू ततः परम्।
मदनां रक्तचामुण्डां मोहनीं द्राविणीं तथा॥
शब्दाकर्षणिकां वाणीं रमां मायां पुलिन्दिनीम्।
शास्तारं क्षोभिणीं ज्येष्ठां द्वादशारे यथाक्रमम्॥
षोडशारे ततः पश्चात् षोडशेश्वर देवताः।
गणेश्वरं यमं स्कन्दं भैरवञ्च महादिशाम्॥
त्वरितां वीरभद्रञ्च वडवानलैभैरवम्।
महामायां यजेद्देवीं वायव्यादि विदिक्ष्वपि।
आरभ्य चाग्रतो मन्त्री ब्राह्म् याद्याश्चाष्टमातृकाः।
परितस्तु यजेत् सर्वान् ककाराद्वर्णं देवताः॥

अणिमाद्यष्ट सिद्धींश्च, प्रादक्षिण्येन वै लिखेत्। इति यन्त्रम्।।

द्रव्य पंचक शोधन के बाद चक्रोद्धार करके पीठ पूजा करे।

चक्रोद्धार

पहले षोडश दल तब दो भूपुर तब त्रिकोण में देवेश शरभेश्वर का

कुछ देर तक ध्यान के बाद गुरुपाद युगल का स्मरण करे। आवाहनादि षोडशोपचार पूजा करे। त्रिकोण के कोनों में चन्द्र सूर्य अग्नि लिखे। त्रिकोण वृत्त के मध्य में पूर्वादि क्रम से भैरव, वड़वाग्नि, दुर्गा और काली लिखे। अष्टदल के दलों में इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण वायु सोम और ईशान लिखे। देव के पार्श्वों में व्याधि और मृत्यु की पूजा करे। द्वादश दल में इन देवताओं की पूजा करे। यथा मदना, रक्तचामुण्डा, मोहनी, द्रावणी, शब्दाकर्षिणी, वाणी, रमा, माया, पुलिन्दिनीशास्ता, क्षोभिणी ज्येष्ठा की पूजा करे। षोडश दल में षोडश स्वरों के देवताओं की पूजा करे। गणेश्वर, यम, स्कन्द, भैरव की पूजा पूर्वादि दिशाओं में करे। वायव्यादि दिशाओं में त्वरिता, वीरभद्र, वड़वानल भैरव और महामाया की पूजा करे आगे से प्रारम्भ करके ब्राह्मी आदि अष्ट मातृकाओं की पूजा भूपुर में करे। उनके बगल में ककारादि वर्ण देवताओं की पूजा करे। भूपुर की दूसरी रेखाओं में अणिमादि अष्ट सिद्धियों की पूजा प्रदक्षिणा क्रम से करे। इति यन्त्रम्।

पीठ पूजा

त्रिकोण मध्ये बीजं देवेश मूल मन्त्रं सूर्यं चन्द्रं वह्निं ध्रां ध्रीं ऐं वृत्त मध्ये भैरवं वडवाग्नि च दुर्गां कालीं मं मुं दं क्षं पार्श्वयोः व्याधिं मृत्युं ह्रां ह्रैं अष्ट दलेषु ऐं रं लं भ्यां० क्षं धं यं सं क्रीं द्वादशाक्षरे० क्लीं क्रीं हूं, सं० श्रीं डं लूं यूं क्ष्म्यां क्ष्मूं मं षोडशारे अकारादि स्वराः अधिदेवता बीजाः ओं श्रौं ह्रौं ध्रां ज्मां षं० चं यूं त्रें ॐ ऐं ओं ह्र्यों० डं हौं पूर्वादि गं० घं० स्कं०मं० वायस्यादि० त्रैं ध्रां० बं ई० इति देव बीजस्थापनं कृत्वा प्राण प्रतिष्ठामाचरणं च कुर्यात् तद्यथा अथ पीठ पूजा चक्रं प्रोक्षणी पात्रं जलेन सम्प्रोक्ष्य पीठपूजां कुर्यात्।

त्रिकोण के मध्य में बीज और देवेश के मूल मन्त्र, सूर्य, चन्द्र, अग्नि, धां धी ऐं, वृत्तमध्य में भैरव, वडवाग्नि, दुर्गा काली मं मुं दं थं, पार्श्वों में व्याधिमृत्यु ह्रां ह्रैं; अष्टदल में ऐ रं लंभ्यां क्षं धं यं सं क्रीं, द्वादश दल में क्लीं क्रीं इं सं श्रीं डं लूं यूं क्ष्म्यां क्ष्मूं मे, षोडश दल में अकारादि स्वरों के अधिदेवता बीज ओं श्रौं हौं ध्रां ध्रैं ज्यां षं० चं यूं ॐ त्रें एं ओं ह्र्यों, डं हौं, पूर्वादिके गं घं स्कं. मं. वायव्यादि त्रैं ध्रां बं ईं, इन बीज देवताओं के बीज को स्थापना करके प्राण प्रतिष्ठा करे।

पीठ की प्रासन करे पीठ पूजा करे। मं मण्डूकाय नमः। कं कालाग्नि रुद्राय नमः।

अं आधार शक्त्यै नमः। कूं कूर्माय नमः। धं धरायै नमः। सूं सुधा सिन्धवे नमः श्वे श्वेतद्वीपाय नमः। सुं सुरवृक्षेभ्यो नमः। मं माणिमय हर्म्याय नमः। यं यमपीठाय नमः। ज्ञां ज्ञानाय नमः। वैं वैराज्याय नमः। ऐं ऐश्वर्याय नमः। अं अधर्माय अः वैराऽयाय नमः। अं नैश्वर्याय नमः। मध्य में–अं अनन्ताय नमः तं तत्व मयाम्नाय नमः आं आनन्दवन्दाय नमः। सं स विन्नालाय नमः। विं विकारमय केशरेभ्यो नमः। पं० प्रकृतिमय पत्रेभ्यो नमः पं. पंचाशद्वर्णं कार्णिकायै नमः। सं सूर्यकलायै नमः। इं इन्द्रमण्डलाय नमः। पं पावकमण्डलाय नमः सं सत्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः। अं आत्मने नमः। अं अन्तरात्मने नमः पं परमात्मने नमः। वं० वामाशक्त्यै नमः। जें ज्येष्ठाशक्त्यै नमः। कां कन्तिशक्त्ये कां कलाशक्त्यै नमः। कं कलविकरिण्यै नमः वं बलविकरिण्यै नमः बं बाल प्रमथिन्यै नमः सं० सर्वं दमिन्यै नमः मं मनोमथिन्यै शक्त्यै नमः। इन मन्त्रों से पीठ पूंजा करे।

पूजन

तन्मध्ये ओम् नमो भगवते सकलगुणात्मक शक्तियुक्ता–यानन्ताय योग पीठात्मने नमः। इत्यासनं सम्पूज्य तत्र मूलेन मूर्तिं सम्पूज्य आवाहयेत्। प्राणायाम ऋष्यादि कर षडङ्ग न्यास ध्यानादिकं कृत्वा पुष्पाञ्जलिमानीय हृदय कमल मध्यस्थं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सवाहनं सशूलिनं दुर्गासवहितं श्री शरभेश्वरं आवाहयामीति यन्त्र मध्ये पुष्पांञ्जलि निक्षिप्य आवाहनादि मुद्रां प्रदर्श्य मूलमुच्चरन् चतुर्थ्यन्तेन आवाहयामि आवाहितो भव सन्निहितो भव सन्निरुद्धो भव अवगुण्ठितो भव सकली कृतो भव इत्यावाहयेदिति पीठ पूजा।

पीठ मध्य में–ॐ नमो भगवते सकल गुणात्मक शक्ति युक्तायानन्ताय योगपीठात्मने नमः। इस मन्त्र से आसन की पूजा करके मूल मन्त्र से मूर्ति कल्पित करके आवाहन करे। प्राणायाम ऋष्यादि न्यास करन्यास षडंगन्यास ध्यान आदि करे। पुष्पांजलि लेकर

हृदयकमल में स्थित शरभेश्वर का आवाहन करे। सांग सपरिवारं सायुधं सवाहनं सशूलिनं दुर्गासहितं श्री शरभेश्वरं आवाहयामि। कहकर यन्त्र मध्यमें पुष्पांजलि अर्पित करे। आवाहनादि मुद्राओं को दिखावे। मूल मन्त्र कहते हुए चतुर्थ्यन्तेन आवाहयामि आवाहितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्ठितो भव। सकली कृतो भवः इतने मन्त्रों से आवाहन करे।

अथ प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् यन्त्रे तद्यथा+लेलिहान मुद्रया हृदि हस्तं दत्वा त्रिःसम्पूज्य सन्तर्प्य मूलमन्त्रेण उपचारान् कृत्वा तत्र पाद्यार्घ्याचमनीय मधुपर्कार्घ्यं सामान्यार्घ्यं निवेदयेत्।

प्राण प्रतिष्ठा करे। जैसे—यन्त्र में लेलिहान मुद्रा से हृदय पर हाथ रखकर तीन वार पूजा करे। तर्पण करे। मूल मन्त्र से उपचार समर्पित करे। तव पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, मधुवर्क, अर्घ्य, सामान्य अर्घ्य निवेदित करे।

पात्रं स्थापयित्वा मूलान्ते पूर्ववत् इदं पाद्यं पादयोः, पुनर्मूलान्ते इदमर्घ्यं हस्तयोः इदमाचमनीयं मुखे, इदं स्नानं सर्वाङ्गे, इदं वस्त्रं इदमुपनीतम्, इदं भूषणं, इदं गन्धं, इमे अक्षताः, इमानि पुष्पाणि, इदं धूपं, इदं दीपं इदं, नैवेद्यं, इदं ताम्बूलम् इमां दक्षिणां, इदं फलं समर्पयामि नमः। इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य पुष्पाञ्जलित्रयं दत्त्वा

आवरणं पूजां कुर्यात् सा यथा मध्ये मूलेन त्रिः सम्पूज्य पुनर्मूलमुच्चार्य एताः हृदयादि षडङ्गदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सन्तर्पिताः सन्तु नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सलाः भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्। इति सामान्यार्घ्योदकेन दक्ष हस्ते जलं समर्प्य मां शान्तिदाः सुखदाः सन्तु इति पुष्पाञ्जलिं समर्प्य प्रणमेत्। इति प्रथमावरणम् ततः त्रिकोण वाम दक्षोर्ध्व कोणेषु ॐ श्रां चन्द्रं पूजयामि नमः त्रिकोणान्ते चतुर्दिक्षु भं भैरवं पू० पुरतः पश्चिम भागे भ्रूं वडवाग्नि पू० दक्षिणे भागे ॐ क्षं कालीं पू० वाम भागे उं हुं शालिनी दुर्गां पूजयामि हैं मृत्युं पू० शेषं पूर्ववत् इति द्वितीयावरणम्। अष्टदलेषु ॐ लं इन्द्रं सवज्रं पूजयामि। ॐ रं अग्नि शक्तिं पूजयामि। ॐ यं यमं सदण्डं पू०। ॐ क्षं निर्ऋतिंसखड्गं पू०। ॐ वं वरुणं सपाशं पू०।

ॐ यं वायुं सांकुशं पू०। ॐ सं सोमं सगदं पू०। ॐ ह्रीं ईशानं सत्रिशूलं पू०। इति सम्पूज्य मूलेन त्रिः सम्पूज्य पुनर्मूलमुच्चार्य शेषं पूर्ववत् अभीष्ट सिद्धिमित्यादि तृतीयावरणम्। ऐ ह्लीं श्रीं द्वादश रेफाग्रादि प्रादक्षिण्येन मदनाद्याः पूजयेत्। ॐ मदनां सावरणं पू० ॐ ह्लीं रक्त चामुण्यां सायुधां पू० ॐ हुं मोहिनीं सायुधां पू०। ॐ द्रां द्राविणीं साङ्गां सपरिवारां सायुधां सवाहनां स शिवां पू०। ॐ हैं शब्दाकर्षिणीं पू०। ॐ संवाणीं पू०। ॐ श्रीं रमां पू०। ॐ क्षूं मायां पू०। ॐ शत्रुं पुलन्दिनीं पू०। ॐ क्ष्म्रां शास्तां पू०। ॐ क्ष्म्रूं क्षोभिणीं पू०। ॐ में ज्येष्ठां पू०। इति सम्पूज्य मूलेन त्रिः सम्पूज्य पुनर्मूलमुच्चार्य एताः मदनाद्या इति पूर्ववत् अभीष्ट सिद्धिमित्यादि इति चतुर्थावरणम्।। षोडशार दले स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन यजेत्। ॐ आं ओं ब्रह्माणां साङ्गं सपरिवारं सायुधं सवाहनं सशक्तिकं पूजयामि नमः इति सर्वत्र पूजयेत्। ॐ आं सौं परां पूजयामि। ॐ हूं श्रौं विष्णुं पूजयामि। ॐ ईं ह्लीं मायां पूजयामि। ॐ हुं ध्रां वराहं पू०। ॐ उं द्रैं पृथ्वी पू०। ॐ रुं ज्यां विधिं पू०। ॐ रुं षं शिवं पू०। ॐ लं नासत्यौ पू०। ॐ लूं वैं ट्रं स्त्रं पू०। ॐ ऐं ऐं वीरभद्रं पू०। ॐ ऐं ओं भारतीं पू०। ॐ औं कं शुकं पूजयामि। ॐ औं ह्यौं शकरं पू०। ॐ अं ड़ं रुद्रं पू०। ॐ अः हीं कालरुद्रं पू० इति सम्पूज्य पुनर्मूलमुच्चार्य अभीष्ट सिद्धिमित्यादि एताः पूजिताः वरदाः भवन्तु इत्यादिना पुष्पाञ्जलिं निक्षिप्य प्रणमेदिति पञ्चमावरणम्। प्रथम भूपुरे पुर्वादि ॐ गं गणपतिं साङ्गं पू०। ॐ यं यमं पू०। ॐ स्कं स्कन्दं पू०। ॐ भं भैरवं पू०। विदिक्षु वायव्यादि ॐ मैं त्वरितां पू०। ॐ बं बडवानल भैरवं पू०। ॐ इं महामायां पू०। बाह्य भूपुरे स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन ब्राह्माद्याः पूजयेत्। ॐ आं ब्राह्मीं पू०। ॐ ईं माहेश्वरी पू०। ॐ उं कौमारीं पू०। ॐ ॠं वैष्णवीं पू०। ॐ लूं वाराहीं पू०। ॐ ऐं माहेन्द्रीं पू०। ॐ औं चामुण्डां पू०। ॐ अः महालक्ष्मीं पू०। इति सम्पूज्य मूलमुच्चार्य अभीष्टेति षष्ठावरणम्। ततः परितः वृत्त क्रमेण ब्रह्माद्याः पूजयेत्। ॐ कं ब्रह्माणं पूजयामि। ॐ खं जान्हवीं पू०। ॐ गं गणेशं पू०। ॐ घं भैरवं पू। ॐ ङं कालीं पू०। ॐ चं भद्रकालीं पू०। ॐ छं जातवेदसं पू० ॐ जं अर्द्ध नारीश्वरं पू०।

ॐ झं परमात्मानं पू०। ॐ ञं पृथ्वीं पू०। ॐ टं चं डं पू०। ॐ ठं शुक्रं पू०। ॐ डं विष्णुं पू० ॐ ढं बलभद्रं पू०। ॐ णं धनदं पू० ॐ तं परा शक्तिं पू०। ॐ थं दुर्गां पूजयामि। ॐ दं निर्विकल्पं पू०। ॐ धं नं नासत्यं पू०। ॐ पं फं दस्त्रं पू०। ॐ मं ईश्वरं पू०। ॐ मं मदनं पू० ॐ यं वायुं पू०। ॐ रं कृशानुं पू० ॐ रं शुक्रं पू०। ॐ वं वरुण पू०। ॐ शङ्करं पू०। ॐ षं द्वादशादित्यां पू०। ॐ सं भारती पू०। इति सम्पूज्य मूलेन निः सम्पूज्य पुनर्मूलमुच्चार्य एता ब्रह्माद्या अभीष्टेति च सप्तमावरणम्। इथमावरण पूजनं कृत्वा पाद्यार्घ्याचमनीयं दद्यात्। स्व गृह्योक्त विधिना विधाय।

पात्र स्थापित करके मूलमन्त्र के साथ—

ॐ खे खां खं फट् प्राण ग्रहसि० इदं पाद्यं पादयोः समर्पयामि।

ॐ खे खां खं फट् प्राण ग्रहसि० इदं अर्घ्यं हस्ते समर्पयामि।

ॐ खे खां खं फट् प्राण ग्रहसि० इदम आचमनीयं मुखे निवेदयामि

ॐ खे खां खं फट् प्राण ग्रहसि० इदं स्नानीयं सर्वांगे निवेदयामि

ॐ खे खां खं फट् प्राण ग्रहसि० इदं वस्त्रं निवेदयामि निवेदयामि

ॐ खे खां खं फट् प्राण ग्रहसि० इदं उपनीतं निवेदयामि

ॐ खे खां खं फट् प्राण ग्रहसि० इदं भूषणं निवेदयामि

ॐ खे खां खं फट् प्राण ग्रहसि० इदं गन्धं निवेदयामि

ॐ खे खां खं फट् प्राण ग्रहसि० इदं अक्षतान् निवेदयामि

ॐ खे खां खं फट् प्राण ग्रहसि० इमानि पुष्पाणि निवेदयामि

ॐ खे खां खं फट् प्राण ग्रहसि० इदं धूपं निवेदयामि

ॐ खे खां खं फट् प्राण ग्रहसि० इदं दीपं निवेदयामि

ॐ खे खां खं फट् प्राण ग्रहसि० इदं नैवेद्यं निवेदयामि

ॐ खे खां खं फट् प्राण ग्रहसि० इदं ताम्बूलं निवेदयामि

ॐ खे खां खं फट् प्राण ग्रहसि० इदमं दक्षिणां निवेदयामि

ॐ खे खां खं फट् प्राण ग्रहसि० इदं फलं समर्पयामि नमः

इस प्रकार षोडशोपचार से पूजा करके तीन पुष्पांजलि देकर आवरण पूजा करे।

प्रथम आवरण

यन्त्र मध्य में—ॐ खें खां खं फट् प्राणग्रहसि० मूल मन्त्र से तीन बार पूजा करे। तब षडंग पूजा करे।

१. ॐ खें खां खं फट् हृदयाय नमः हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि

२. ॐ प्राण ग्रहसि प्राणग्रहसि हुं फट् शिरसे स्वाहा शिरशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

३. ॐ सर्वशत्रुसंहारणाय शिखायै वषट् शिखा शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

४. ॐ शरभ शालुवाय कवचाय हुम् कवच शक्ति श्री पादुकां पूजयामि।

५. ॐ पक्षिराजाय नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

६. ॐ हुं फट् स्वाहा अस्त्राय फट् अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

मूलमन्त्र एताः हृदयादि षंडगदेवताः सांगाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः पूजिताः सन्तार्पिताः सन्तुनमः कहकर पुष्पांजलि देवे।

अभीष्ट सिद्धिमेदेहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।

यह कहकर सामान्य अर्घ्यजल से देव के दायें हाथ में पूजा समर्पण करके कहे मां शान्तिदाः सुखदाः सन्तु। पुष्पांजलि देकर प्रणाम करे। इति प्रथम आवरण।

द्वितीय आवरण

त्रिकोण के बाएँ दाएँ उर्ध्व कोण में चन्द्र सूर्य अग्नि की पूजा कर वामकोण में—

ॐ श्रां चन्द्र पूजयामि नमः।

ॐ सूर्य पूजयामि नमः।

ॐ अग्निं पूजयामि नमः।

त्रिकोण के बाहर चारों दिशाओं में

पूर्व में—भं भैरवं पूजयामि नमः।

पश्चिम में—भ्रूं वड़वाग्निं पूजयामि नमः।

दक्षिण में—ॐ क्षं कालीं पूजयामि नमः।

पूर्व वाम भाग में—उं हुं शालिनीदुर्गां पूजयामि नमः।

हैं मृत्युं पूजयामि। शेषं पूर्ववत्। इति द्वितीयावरणम्।

तृतीय आवरण

अष्टदल में—पूर्वादि क्रम में—

ॐ लं इन्द्रं सवज्रं पूजयामि नमः।

ॐ रं अग्निं सशक्तिं पूजयामि नमः।

ॐ यं यमं सदण्डं पूजयामि नमः।

ॐ क्षं निर्ऋतिं सखड्गं पूजयामि नमः।

ॐ वं वरुणं सपाशं पूजयामि नमः।

ॐ यं वायुं सांकुशं पूयजामि नमः।

ॐ सं सोमं सगदं पूजयामि नमः।

ॐ ह्रीं ईशानं सत्रिशूलं पूजयामि नमः।

इस प्रकार की पूजा के बाद मूल मन्त्र से तीन बार पूजा करे। पुनः मूल मन्त्र कहकर शेष पूर्ववत अभीष्ट सिद्धिमित्यादि। इति तृतीयावरणम्।

चतुर्थ आवरण

द्वादश दल में पूर्वादि प्रदक्षिणाक्रम से मदनादि की पूजा करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मदनां सावरणां पूजयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं रक्तचामुण्डां सायुधां पूजयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ हुं मोहिनीं सायुधां पूजयसामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ द्रां द्राविणीं सांगां सपरिवारां सायुधां सशिवां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ हैं शब्दाकर्षिणीं पूजयामि

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ संवाणी पूजयामि

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीं रमां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ क्षूं मायां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शत्रुं पुलिन्दिनीं पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ क्ष्म्रां शास्तां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ क्ष्म्रूँ क्षोभिणी पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मं ज्येष्ठां पूजयामि।

इनकी पूजा गन्धाक्षत पुष्प से करके मूलमन्त्र से तीन पूजा करे। पुनः मूल मन्त्र कहकर एता मदनाद्या० पूर्ववत् अभीष्टसिद्धिं इत्यादि इति चतुर्थ आवरण।

पंचम आवरण

षोडश दल में अपने आगे से प्रदक्षिणा क्रम में—

ॐ आं ओं ब्रह्माणां सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिं सवाहनं पूजयामि नमः।

ॐ आं सौं परां सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिं सवाहनं पूजयामि नमः।

ॐ ह्रूँ श्रौं विष्णुं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिं सवाहनं पूजयामि नमः।

ॐ ईं ह्रीं मायां सांगं सपरिवारं मायुधं सशक्तिं सवाहनं पूजयामि नमः।

ॐ हुं ध्रां वराहं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिं सवाहनं पूजयामि नमः।

ॐ उं द्रैं पृथ्वीं सांग सपरिवारं सायुधं सशक्तिं सवाहनं पूजयामि नमः।

ॐ रुं ज्यां विधिं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिं सवाहनं पूजयामि नमः।

ॐ रुं षं शिवं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिं सवाहनं पूजयामि नमः।

ॐ लं नासत्यौ सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिं सवाहनं पूजयामि नमः।

ॐ लूं वैं ट्रूं स्त्रं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिं सवाहनं पूजयामि नमः।

ॐ ऐं ऐं वीरभद्रं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिं सवाहनं पूजयामि नमः।

ॐ ऐं ओं भारतीं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिं सवाहनं पूजयामि नमः।

ॐ औं कं शुकं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिं सवाहनं पूजयामि नमः।

ॐ औं ह्यौं शंकर सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिं सवाहनं पूजयामि नमः।

ॐ अं डं रुद्रं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिं सवाहनं पूजयामि नमः।

ॐ अः ह्रीं कालरुद्रं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिं सवाहनं पूजयामि नमः।

इस प्रकार पूजा करके मूल मन्त्र बोलकर अभीष्ट सिद्धि इत्यादि एता पूजिता वरदा भवन्तु कहकर पुष्पांजलि देकर प्रणाम करे। इति पंचमावरण।

षष्ठ आवरण

प्रथम भूपुर रेखा में पूर्वादि प्रदक्षिणा क्रम से—

ऊं गं गणपतिं सांगं पूजयामि

ऊँ यं यमं पूजयामि

ॐ स्कं स्कन्दं पूजयामि।

ॐ भं भैरवं पूजयामि।

विदिसाओं में—वायव्यादि ॐ मैं त्वरितां पूजयामि।

ॐ बं बडवानल भैरवं पूजयामि

ॐ इं महामायां पूजयामि

ॐ भं भैरवं पूजयामि।

बाहरी भूपुर रेखा में अपने आगे से प्रदक्षिणा क्रम में—

ॐ आं ब्राह्मीं पूजयामि।

ॐ ईं माहेश्वरीं पूजयामि।

ॐ उं कौमारीं पूजयामि।

ॐ ऋं वैष्णवीं पूजयामि।

ॐ लृं वाराहीं पूजयामि
ॐ ऐं माहेन्द्रीं पूजयामि
ॐ औं चामुण्डां पूजयामि
ॐ अः महालक्ष्मीं पूजयामि।

पूजा करके मूल मन्त्र बोलकर अभीष्ट सिद्धि० इति षष्ठावरण।
तब भूपुर के बाहर चारों ओर वृत्ताकार में ब्रह्मा आदि की पूजा करे।

सप्तम आवरण

ॐ कं ब्रह्माणां पूजयामि।
ॐ खं जान्हवीं पूजयामि।
ॐ गं गणेशं पूजयामि।
ॐ घं भैरवं पूजयामि।
ॐ ङं कालीं पूजयामि।
ॐ चं भद्रकालीं पूजयामि।
ॐ छं जातवेदसं पूजयामि।
ॐ जं अर्द्धनारीश्वरं पूजयामि।
ॐ झं परमात्मानं पूजयामि।
ॐ ञं पृथ्वीं पूजयामि।
ॐ टं चण्डं पूजयामि।
ॐ ठं शुक्रं पूजयामि।
ॐ डं विष्णुं पूजयामि
ॐ ढं बलभद्रं पूजयामि
ॐ णं धनदं पूजयामि।
ॐ तं पराशक्तिं पूजयामि
ॐ थं दुर्गां पूजयामि।
ॐ दं निर्विकल्पं पूजयामि।
ॐ धं नं नासत्यं पूजयामि।
ॐ पं फं दस्त्रं पूजयामि।
ॐ वं भार्गवं पूजयामि।
ॐ भं ईश्वरं पूजयामि।
ॐ यं वायुं पूजयामि।

ॐ रं कृशानुं पूजयामि।

ॐ लं इन्द्रं पूजयामि।

ॐ वं वरुणं पूजयामि।

ॐ शं शंकरं पूजयामि

ॐ षं द्वादशादित्यं पूजयामि

ॐ सं भारतीं पूजयामि

ॐ हं सदाशिवं पूजयामि

ॐ लं इन्द्रं पूजयामि

ॐ क्षं नृसिंहं पूजयामि

इस पूजा के बाद मूल मन्त्र से तीन बार पूजा करे।

पुनः मूल मन्त्र बोलकर एताः ब्रह्माद्या अभीष्ट० इति सप्तमावरण।

इसप्रकार आवरण पूजा करके पाद्य अर्घ्य आचमनीय देवे। अपने गृह्य सूत्र के अनुसार विधिवत् पूजा करे।

तत्रेशानाग्नेय निर्ऋति वायव्यादि कोणेषु सामान्यार्घ्येण मण्डल चतुष्टयं कृत्वा ॐ व्यापक मण्डलाय नमः इति मण्डल चतुष्टयं सम्पूज्य ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ एह्येहि देवी पुत्र बटुकनाथ कपिलजटा भार भास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्व विघ्नान्नाशय नाशय सर्वोपचार बलिं गृह्ण स्वाहा। इति वामांगुष्ठानामिकाभ्यां धृत्वा द्वितीय खड्ग धारया बलिं हरेत्।

बलि दानेन सन्तुष्टो बटुकः सर्वसिद्धिदः।
शान्तिः करोतु मे नित्यं भूतवेतालसेवितः॥
इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात् इति बटुकबलिः।

आग्नेय मण्डले यां योगिनीभ्यो नमः। भो सर्व योगिन्याः इहागच्छन्तु इत्यावाह्य गन्धादिभिः सम्पूज्य योगिनी बलिद्रव्याय नमः इति बलिद्रव्यं पूजयेत्।

ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिविगगनतले भूतले वा तले वा
पाताले वा स्थले वा सलिल पवन योर्यत्र कुत्रस्थिता वा।
क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिकेन
प्रीता देव्यः सदा नः शुभबलिविधिना पान्तु वीरेन्द्रवन्द्याः॥

यां योगिनीभ्यो नमः स्वाहा सर्वयोगिनीभ्यः फट् इति वामांगुष्ठानामिकाभिः बलिं हरेत्। या काचिद् योगिनी रौद्राः सौम्या घोर परात्पराः खेचरी भूचरी व्योमचरी प्रीतास्तु सर्वदा इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा प्रणमेत्। इति योगिनी बलिः।

अथ नैर्ऋत्यमण्डले क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालमावाह्य। गन्धादिभिः सम्पूज्य क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः स्थान क्षेत्रपाल इहागत्य धूप दीपादि सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण गृह्ण स्वाहा इति वामांगुष्ठ तर्जनीभ्यां बलिं हरेत् योऽस्मिन् क्षेत्र निवासी क्षेत्रपालः सकिंकरः प्रीतोऽयं बलिदानेन सर्व रक्षां करोतु मे। इति क्षेत्रपाल बलिः

अथ वायव्य मण्डले गं गणपतये नमः गणपतिमावाह्य गन्धादिभिः सम्पूज्य गणपति बलिद्रव्याय नमः इति बलि द्रव्यं पूजयेत्। गां गीं गूं गैं गौं गः गणपते वर वरद सर्वान् वशमानय बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। वामांगुष्ठ मध्यमाभ्यां बलिं हरेत्–

सर्वदा सर्वकार्याणि निर्विघ्नं साधयेत् सदा।
शांतिं करोतु सततं विघ्नराजः सशक्तिकः।
इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात् इति गणपति बलिः।

ततः स्ववामभागे सर्वभूतबलिं दद्यात्। सुरगणाद्वा सर्वभूत गणा इहागच्छन्तु इत्यावाह्य गन्धादिभिः सम्पूज्य सर्वभूतबलि द्रव्याय नमः इति बलिद्रव्यं पूजयेत्। ॐ ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्व भूतेभ्यो हुँ इति वामांगुष्ठादि सर्वांगुलीभ्यः बलिं हरेत्।

भूता ये विविधाकारा दिवि भूम्यन्तरिक्षगाः।
पातालस्थल संस्था च शिवयोगेन भाविताः॥
क्रूराद्या शत संख्यैका पाखण्डाद्याः व्यवस्थिताः।
तृप्यन्तु प्रीतिमनसाः पूजां गृहणन्त्विमं बलिम्।

इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात् इति भूत बलिः ॐ सर्वेभ्यो नमः इति सर्वमभ्यर्च्य नाराच मुद्रां बध्वा।

बलिदानेन सन्तुष्टाः क्षमध्वं बलिदेवताः।
यथा सुखं चिरं रन्तुं यथेष्टं मुदिताः वराः॥
बटुकाद्या सुराः सर्वे सर्वे सिद्धि विधायिनः।

शान्तिपुष्टिं प्रयच्छन्तु ते प्रसादात्तु सदाशिवः।। स्तुत्वा मुद्रां विसर्ज्य प्रोक्षणी जलेन आत्मानं प्रोक्षयेदिति बलिदान विधिः।।

ईशान आग्नेय नैर्ऋत्य वायव्य कोनों में सामान्य अर्घ्य जल से चार मण्डल बनावे। 'ॐ व्यापक मण्डलाय नमः' चारों मण्डल की पूजा करे।

बटुक बलि

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं एह्येहि देवीपुत्रबटुकनाथकपिलजटाभारभास्वर त्रिनेत्रज्वालामुखसर्वविघ्नान् नाशय नाशय सर्वोपचारवलिं गृह्ण स्वाहा।

बायाँ अगूठा और अनामिका से पकड़कर खड्ग धार से बलि प्रदान करे। बलिदान से सन्तुष्ट बटुक सभी सिद्धियाँ देते हैं।

प्रार्थना करे—शान्तिं करोतु मे नित्यं भूतवेताल सेवितः। पुष्पांजलि देवे। इति बटुक बलिः।

योगिनीबलि

आग्नेय मण्डले यां योगिनीभ्यो नमः। भो सर्वयोगिन्याः इहागच्छन्तु से आवाहन करे। गन्धादि से पूजा करे योगिनी बलि द्रव्याय नमः से बलि द्रव्य की पूजा करे।

ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिविगगनतले भूतले वा तले वा।
पाताले वा स्थले वा सलिल पवनयोर्यत्र कुत्र स्थितो वा।
क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिकेन
प्रीता देव्यः सदा नः शुभबलिविधिना पान्तु वीरेन्द्र वन्द्याः।।

यां योगिनीभ्यो नमः स्वाहा सर्व योगिनीभ्यः फट् कहकर बायाँ अंगूठा और अनामिका से बलि प्रदान करे।

या काचिद् योगिनी रौद्राः सौम्याः घोर परात्पराः।
खेचरी भूचरी व्योमचरी प्रीतास्तु सर्वदा।।

यह श्लोक बोलकर पुष्पांजलि देकर प्रणाम करे। इति योगिनीबलि।

क्षेत्रपाल बलि

नैर्ऋत्य मण्डल में 'क्षेत्रपालाय नमः' से क्षेत्रपाल का आवाहन करे। गन्धाक्षत पुष्प से पूजा करे।

क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः स्थान क्षेत्रपाल इहागत्य धूप दीपादि सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण गृह्ण स्वाहा। इस मन्त्र से बायाँ अंगूठा और तर्जनी से बलि प्रदान करे।

योऽस्मिन् क्षेत्रनिवासीक्षेत्रपालः सकिंकरं प्रीतोऽयं बलिदानेन सर्वरक्षां करोतु मे। इति क्षेत्रपाल बलि।

गणपति बलि

वायव्य मण्डले में गं गणपतये नमः से गणपति का आवाहन करके गन्धादि से पूजा करे। गणपति बलिद्रव्याय नमः से बलि द्रव्य की पूजा करे। गां गीं गूं गैं गौं गः गणपते वरवरद सर्वान् वशमानय बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। इस मन्त्र से बायाँ अंगूठा और मध्यमा से बलि प्रदान करे।

सर्वदा सर्वकार्याणि निर्विघ्नं साधयेत् सदा।
शान्तिं करोतु सततं विघ्नराजः सशक्तिकः।।

यह श्लोक पढ़कर पुष्पांजलि देवे। इति गणपति बलि।

सर्वभूत बलि

तब अपने बाएँ भाग में सर्वभूत बलि प्रदान करे। 'सुर गणाद्वा सर्वभूत गणा इहागच्छन्तु' से आवाहन करके गन्धादि से पूजा करे। 'सर्वभूत बलि द्रव्याय नमः' से बलि द्रव्य की पूजा करे। 'ॐ ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हुं' मन्त्र से बाएँ हाथ की सभी अंगुलियों से बलि प्रदान करे।

भूता ये विविधाकारा दिवि भूम्यन्तरिक्षगाः।
पातालस्थलसंस्था च शिवयोगेन भाविता।।
क्रूराद्या शतसंख्यैका पाखण्डाद्याः व्यवस्थिताः।
तृत्यन्तु प्रीतिमनसाः पूजां गृहणन्त्विम् बलिम्।।

यह श्लोक कहकर पुष्पांजलि देवे। इतिभूत बलि।

ॐ सर्वेभ्यो नमः से सबों की पूजा करके नाराच मुद्राबोध कर कहे—

बलिदानेन सन्तुष्टाः क्षमध्वं बलिदेवताः।
यथासुखं चिरं रन्तुं यथेष्टमुदितावराः।।

बटुकाद्या सुराः सर्वे सर्वे सिद्धि विधायिनः।
शान्तिं पुष्टिं प्रयच्छन्तु ते प्रसादात्तु सदाशिवः॥

स्तुति करके मुद्रा से विसर्जन करे। प्रोक्षणी जल से अपना प्रोक्षण करे इति बलिदान विधिः।

ततः उत्तरापोषणं दत्वा नैवेद्यं विसृज्य करप्रक्षालनाचमनानि दत्वा नीराजनं कुर्यात् ततः स्वर्णादि पात्रे अष्टदलं विरच्य गोधूम पिष्ट रचितानि नव दीपानि पात्रे संस्थाप्य मूलेन प्रज्वाल्य अष्ट दिक्षु ब्राह्माद्याः मध्ये मूलेन सम्पूज्य अमृतीकृत्य अवगुण्ठ्य चक्रेण संरक्ष्य मूलेनाष्टधाभिमन्त्र्य जानुभ्यामवनिं गत्वा नीराजयेत्।

समस्तदेवदेवेश परिवारगणावृत।

आरार्तिकमिदं देव गृहाण मम सिद्धये इति आरार्तिक मन्त्रेण परिवर्त्य भूमाकारेण परिभ्रामयेत् इत्यारार्तिक मन्त्रेण परिवर्त्य भूमाकारेण परिभ्रामयेत् इत्यारार्तिक विधिः।

ततः कवचस्तोत्रसहस्रनामादिपरायणं कुर्यात्।

तब उत्तरापोषण देकर नैवेद्य का विसर्जन करे। कर प्रक्षालन आचमनादि देकर नीराजन करे। स्वर्णादि पात्र में अष्टदल बनावे।

गेहूँ के आँटे से नव दीपक बनावे। पात्र में रखे। मूलमन्त्र से जलावे। आठों दिशाओं के दीपों में ब्राह्मी आदि की पूजा करे। मध्य दीपक में मूल मन्त्र से पूजा करे। अमृती करण करे अवगुण्ठन करे। चक्र से संरक्षण करे। मूल मन्त्र के आठ जप से अभिमन्त्रित करे। ठेहुने पर बैठकर आरती करे। प्रार्थना करे।

समस्तदेवदेवेश परिवारगणा वृत्ता।
आरार्तिकमिदं देव गृहाण मम सिद्धये।

आरती मन्त्र से भूमाकार में घुमावे। इति आरार्तिक विधिः।

इसके बाद कवच स्तोत्र सहस्र नाम आदि का पारायण करे।

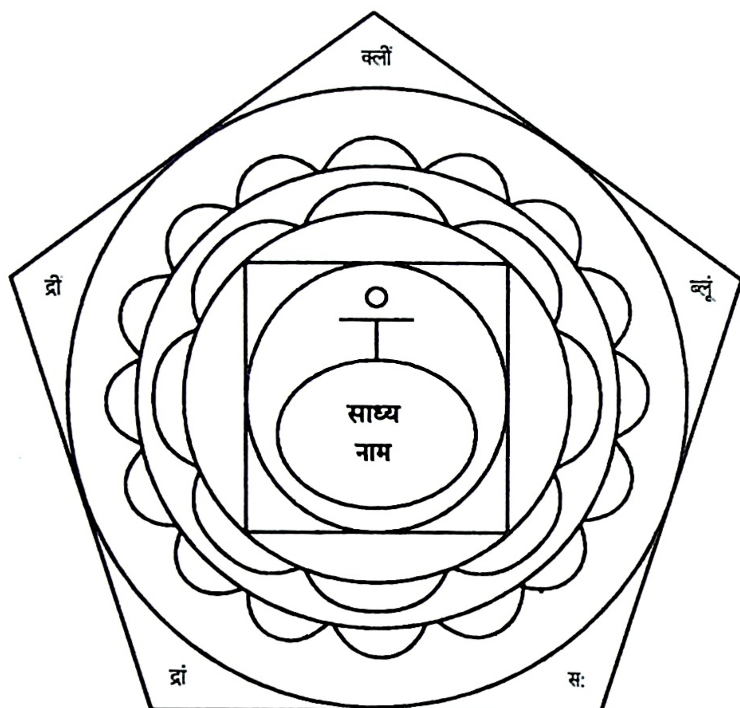
अथ काम्य प्रकरण

(आकाशभैरवकल्पोक्त)

ठकारं पूर्वमालिख्य तद्बाह्ये वर्तुलं लिखेत्।
तद्बाह्ये चतुरस्त्रं तु तद्बाह्येष्टदलं तथा।
तद्बाह्ये षोडशदलं तद्बाह्ये वृत्तमालिखेत्॥१॥
तद्बाह्ये पञ्चकोणञ्च ठकारे साध्यनाम च।
वर्तुले मूलमालिख्य स्वरान् षोडश पार्वति॥२॥
वृत्ते चाभिमंतं आर्द्धं वाणस्य पञ्च कोणके।
द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः।
एवमालिख्य यन्त्रं तु तालपत्रे प्रयत्नतः॥३॥
स्नुहीक्षीरं जले क्षिप्त्वा यन्त्रं तत्रैव निक्षिपेत्।
चुल्लोपरि चिरं स्थाप्य पाकेन सर्वशत्रवः॥४॥
गृहं त्यक्त्वा पलायन्ते प्रसादात् शालुवेश्वरः।
साधके सर्वसिद्धिः स्यात् रिपुः देशान्तरं ब्रजेत्॥५॥
शालुवं पक्षिराजानं यो ध्यायेल्लोकपूजितम्।
शत्रूणां सर्वसंघाता नोत्पद्यन्ते कदाचन॥६॥
चन्दनं च सकर्पूरं कस्तूरी कुंकुमान्वितः।
वामावर्ते लिखेन्मन्त्रं शरभं चिन्तयेन्नरः॥७॥
ललाटे तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं मोहयेत्क्षणात्।
देवांश्चापि वशीकुर्यात् किं पुनर्मानवादयः॥८॥

तत्पश्चात् सर्वप्रथम वृत्त बनावे। उसके बाहर चतुरस्त्र उसके बाहर अष्टदल उसके बाहर षोडश दल बनावे। उसके बाहर वृत्त उसके बाहर पंचकोण बनावे। ठकार में साध्य नाम लिखे। वृत्त में मूलमन्त्र लिखे। सोलह स्वरों को लिखे।

यन्त्र



वृत्त में अपना अभीष्ट लिखे पंच कोण में पंचवाण द्रां द्रीं क्लीं ब्लूँ सः लिखे। मूल् मन्त्र—ॐ खें खां खं फट् प्राण ग्रहासि प्राण ग्रहासि हुं फट् सर्व शत्रु संहारणाय शरभ शालुवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा। इस यन्त्र को स्नुही के दूध से ताड़ पत्र पर लिखे। जल में गाड़ दे। खाना बनाने के चूल्हे पर रखकर खाना पकाने से सभी शत्रु अपना घर छोड़कर भाग जाते हैं। ऐसा ही प्रभाव शालुवेश का है। साधक सभी सिद्धियों को प्राप्त करता है। शत्रु परदेश में रहता है। लोक पूजित शालुव पक्षिराज का जो ध्यान करता है उसके सभी शत्रुओं का नाश हो जाता है और दूसरे शत्रु नहीं होते। चन्दन कपूर कस्तूरी और कुंकुम से मन्त्र को वामावर्त लिखकर जो शरभ का चिन्तन करता है और ललाट में तिलक लगाता है वह क्षणभर में तीनों लोकों को मोहित कर लेता है। वह देवताओं को भी वशमें कर लेता है तब मनुष्यों के बारे में क्या कहा जाय।

गोराचनञ्च गोक्षीरं गोमयं गोघृतं तथा।
शन्यर्काङ्गारवारे तु मूलेनैव होमयेत्॥९॥
देवासुर मनुष्याणां स्त्रीपुंसां वशकृद्भवेत्।
अजा माहिषकं चैव नवनीतं तथा नरः॥१०॥
हुतेन मेले पञ्चाहे साध्यनाम पुरः सरम्।
साध्य वश्यो भवेत्सत्यं क्षिप्रमेव न संशयः॥११॥
अजा मानुष काकानां रुधिरं प्रेतवाससम्।
संवेष्ट्य पुत्तलीं कृत्वा साध्य नाम्नाक्गिर्भिताम्॥१२॥
निखनेत्तत्र प्रेतस्य हृदये च शिरसि क्रमात्।
केशान् गृहीत्वा संवेष्ट्य पुत्तली प्राणपूर्वकम्॥१३॥

गोरोचन, गोदुग्ध, गोवंर, गोधृत मिलाकर जो शनि, रवि और मंगलवार में मूलमन्त्र से हवन करता है वह देवता राक्षस मनुष्य स्त्री पुरुष सबों को वश में कर लेता है। बकरी और भैंस के मक्खन से जो मनुष्य मूलमन्त्र के पहले साध्य नाम लगाकर पाँच दिनों तक हवन करता है उसके वश में साध्य शीघ्र हो जाता है। इसमें शंका नहीं है।

बकरी मनुष्य और कौआ के खून में प्रेतवस्त्र रंगकर उससे पुत्तली बनावे। उसमें विगर्भित साध्य नाम लिखे। उसे मुर्दा के हृदय और शिर में गाड़ दे। केश पकड़कर पुतली में लपेट दे। तो शव नहीं जलता। पुत्तली निकाल लेने पर शव जल जाता है।

शववदाहस्खलेनैव निपक्षिपेदाशुचालयेत्।
शालुवं पक्षिराजानं यो ध्यायेच्च दिनेदिने॥१४॥
जपेद्दशसहस्त्रं तु शतमष्टोत्तरं तु वा।
कृष्णाष्टमीं समारभ्य यावत्कृष्ण चतुर्दशी॥१५॥
मासान्तसमये प्राप्ते वैरिवंश क्षयो भवेत्।
कारस्करं तु भल्लातैस्तैलेनाष्टशतं हुनेत्॥१६॥
मासान्ते शत्रवस्तस्य पलायन्ते न संशयः।
समोदमादौ पयसामष्टोत्तरशतं हुनेत्॥१७॥
दिनत्रयं महेशानि सर्व रोगैः प्रमुच्यते।
बिभीतक तयोप्यष्ट-प्रादेशं परिमाणकम्॥१८॥
यन्नाम धारयेद्वेदं शतमष्टोत्तरं जपेत्।
मासान्ते मृत्युमाप्नोति यदि त्राता विधिः स्वयम्॥१९॥

अपामार्गस्य समिधौ पायसं सघृतं हुनेत्।
रात्रौ यन्नाशमासास्ते नश्यन्तीह पदातिनः॥२०॥

शलुव पक्षिराज का ध्यान जो प्रतिदिन करता है और एक हजार आठ या एक सौ आठ बार जप कृष्णाष्टमी से दूसरे कृष्णचतुर्दशी तक एक महीने तक करता है उस महीने के अन्त में उसके वैरी के वंश का नाश हो जाता है।

भल्लात के तेल में कारस्कर मिलाकर एक सौ आठ हवन करे तो एक महीना के बाद उसके शत्रु भाग जाते हैं। शमी, दर्म, पायस से एक सौ आठ हवन करने पर तीन दिनों में सभी रोगों से छुटकारा मिल जाता है।

विभीतक वृक्ष की एक एक वित्ता की आठ लकड़ियों को जिसके नाम से धारण करके एक सौ आठ मन्त्र जप करें तो एक महीने में उसे मृत्यु से ब्रह्मा भी नहीं बचा सकते।

चिड़चिड़ा की समिधा की अग्नि में घी के साथ पायस का हवन रात में करने से पैदल सेना का नाश हो जाता है।

यन्त्रस्तु हि समिद्भिर्यो याम्यास्यः सर्षपैस्तिलैः।
महानिशार्द्धे साहस्त्रं जुहुयाद्दिवसेन हि॥२१॥
पञ्चाहे नामी प्रणश्यन्ति सगोत्रा शत्रवो भृशम्।
शलुवपक्षिराजानं पचयेत्साधकोत्तमः॥२२॥
साष्टविंशति संख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयेत् सुधी।
शुक्लप्रतिपदारभ्य पूर्णिमान्तं च नित्यशः॥२३॥
यो जपेदष्टसाहस्त्रं मुच्यते सर्वपातकैः।
शरभं शालुवं ध्यात्वा एतां विधिवदाचरेत्॥२४॥
पुत्तलीं च विधायाथ कुलालकरमृण्मयीम्।
वायुं सम्यग्विधानेन कृत्वास्थाप्यसमाहितः॥२५॥
स्नतुहि क्षीरे तु संक्षिप्य मृष्टस्तदयुतं जपेत्।
उन्मत्तमूले निखनेदपस्मारी भवेत्तदा॥२६॥
शालुवं शिवरूपं च ध्यात्वा सम्यक्समाहितः।
निम्ब चूर्णेन कृत्वा तु पुत्तलीं च यथाविधिम्॥२७॥

पुत्तल्यां वायुमारोग्यं स्पृष्ट्वा तामयुतं जपेत्।
श्मशाने निखनेद्देवि पुत्तलीं शत्रुचालयेत्॥२८॥
उन्मत्त मूले पुत्तल्यां वामारोप्यस्तु साधकः।

स्नुहि वृक्ष की पाँच समिधाओं में आधी रात में सरसों के तेल में और शरभ मन्त्र से एक हजार हवन करे तो पाँचवाँ दिन साध्य की मृत्यु हो जाती है।

शालुव पक्षिराज की पूजा साधकोत्तम करे। शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ करके पूर्णिमा तक प्रतिदिन २८ अठाइस ब्राह्मणों को भोजन करावे और एक हजार आठ मन्त्र का जप करे तो वह सभी पापों से मुक्त हो जाता है। शरभशालुव का ध्यान करके विधिवत आचरण करे।

कुम्हार के हाथ की मिट्टी लेकर पुत्तली बनावे। प्राण प्रतिष्ठा करे। समाहित होकर स्नुहि के दूध में छिपा दे। इष्ट मन्त्र का दश हजार जप करे। उस पुत्तली को धत्तूरा की जड़ में गाड़ दे तो साध्य को मृगी रोग हो जाता है।

शिवरूप शालुव का सम्यक् ध्यान समाहित होकर करे। नीम के चूर्ण से यथा विधि पुत्तली बनावे। पुत्तली में प्राण प्रतिष्ठा करके उसे स्पर्श किए हुए दश हजार मन्त्र जप करे। उस पुत्तली को श्मशान में गाड़ दे तो शत्रु यमपुर चला जाता है।

स्पृष्ट्वातीवायुतं मन्त्री ध्यात्वा शत्रून्वितन्वतः॥२९॥
निक्षिपेच्छत्रु देशे तु शत्रूणां चालनं भवेत्।
शन्यर्काङ्गारवारे तु जपेदयुत संख्यया॥३०॥
त्रिदिनान्ते रिपुन्वध्वा चालयेदाशु साधकः।
दूर्वांकुरैर्घृतासिक्तैः गोमये च विशेषतः॥३१॥
तिलाँ लाजा सर्षपाश्च मिश्रीकृत्य हुनेत्तदा।
त्रिदिनान्ते शत्रुसंघाः पलायन्ते न संशयः।
पिष्टेन पुंत्तली कृत्वा मूलेनैव तु पूजयेत्॥३२॥
मांसयुक्तं तु नैवेद्यं ताम्बूलन्तु निवेदयेत्।
लाक्षारसेन संलिप्य विम्बस्य च शिरोगले॥३३॥
साध्यनाम च संयुक्तां लिखित्वा पञ्च पुत्तलीम्।
सदा पचेत् ततो वह्नौ समिद्भिः पिचुमन्दकैः॥३४॥

गणिकायाङ्गणे होमं कृत्वा चैव विधानतः।
जपादयुतमात्रेण पलायन्ते न संशयः॥३५॥
अर्कमूलं समादाय पुत्तलीं च यथाविधिम्।
तस्य प्राणस्य पवनं विदधीत यथोदितम्॥३६॥
तस्याश्च हृदिदेशे तु मायाबीजं समालिखेत्।
तस्या शिरसिमालिख्य वह्नि बीजं सविन्दुकम्॥३७॥
पादयोश्च तथालिख्य पृथिवी बीजं सभैरवम्।
उभयोस्कन्धयोश्चैव वाग्बीजं चैव वाग्भवम्॥३८॥
भार्गवं वदने पृष्ठे श्रीबीजं भुवनेश्वरीम्।
पूजां च विधिवत्कृत्वा नैवेद्यं च निवेदयेत्॥३९॥
निखनेदर्कमूले च पलायन्ते च शत्रवः।
ततः शत्रुशरीरञ्च स्फोटयेत् पक्षिशालुवः॥४०॥
सप्ताहाच्च यमस्थाने नीयन्ते सर्वशत्रवः।
केवलं जपमात्रेण क्षीयन्ते शत्रवः स्वयम्॥४१॥

धतूरा की जड़ से पुत्तली बनाकर उसमें प्राण प्रतिष्ठा करे। उसमें शत्रु का नाम लिखे। उसे स्पर्श किए हुए दश हजार शरभ मन्त्र जप करे। शनिवार रविवार की रात्रि में चौराहे पर गाड़ दे। इससे शत्रु का उच्चाटन तीन महीनों में हो जाता है। घृत से सिक्त दुर्वाङ्कुर और गोबर को मिलाकर हवन करने से विशेष कार्य होता है। तिल लावा सरसों को मिलाकर हवन करने से तीन दिनों में शत्रु संघों का उच्चाटन होता है।

आँटे की पुत्तली बनाकर मूल मन्त्र से पूजा करे। मांसयुक्त नैवेद्य और ताम्बूल निवेदन करे। पुत्तली पर लाक्षा रस का लेप लगाकर पुत्तली के शिर और गले में साध्य नाम लिखे। पंच पुत्तली को सदा पिचुमन्द की प्रज्वलित अग्नि में पकावें। वेश्या के आंगन में विधिवत् हवन करे। दश हजार मन्त्र जप करे। इससे शत्रु भाग जाते हैं इसमें संशय नहीं है।

अकवन की जड़ लाकर यथा विधि पुत्तली बनावे उसमें विधिवत प्राण प्रतिष्ठा करे। पुतली के हृदय में मायाबीज ह्रीं लिखे। उसके शिर पर रं वह्निबीज लिखे पैरों में भैरव के साथ पृथ्वी बीज लं लिखे। दोनों कन्धों में वाग्वीज वाग्भव ऐं लिखे। मुख में भार्गव बीज और पीठ में श्रीं ह्रीं लिखे। विधिवत पूजा करे नैवेद्य निवेदित करे। उस पुत्तली को

अकवन वृक्ष की जड़ में गाड़ दे। इससे शत्रु भाग जाते हैं। तब शालुव शत्रु के शरीर में फोड़ा कर देते हैं। एक सप्ताह में सभी शत्रुओं को यम लोक पहुँचा देते हैं। केवल जप करने से ही शत्रु स्वयं मर जाते हैं।

चतुरंगुली विस्तारं दशांगुली समायुतम्।
श्मशान कृत्तिकायां तु पुत्तलीं कारयेद्बुधः।।४२।।
श्मशानाग्निं समादाय उन्नमत्त रससंयुतम्।
पुत्तल्युपरि खेंकारः पार्श्वे चिन्तामणीं लिखेत्।।४३।।
मस्तके कामराजं च हंसबीजं तु मूर्धनि।
स्नुहिक्षीराभिषेकं च विदधीतप्राणपूर्वकम्।।४४।।
स्नुहि वृक्षस्याधो भागे खनेत् प्रादेश मातृकम्।
शुक्लप्रतिपदारभ्य अष्टम्यन्तं जपेत्सुधीः।।४५।।
पराजिताः पलायन्ते शत्रवो नात्र संशयः।
शालुवं पक्षिराजानं शरभं शिवरूपिणम्।।४६।।
यो द्विजः सततं ध्यायेत् पलायन्ते च शत्रवः।
खादरीं पुत्तलीं कृत्वा पवनञ्च यथाविधिम्।।४७।।
तां स्पृष्ट्वा चायुतं मन्त्रं मुच्यते राज्यतस्करैः।
पुत्तली खादिरे मूले निक्षिपेत्तस्य शत्रवः।।४८।।
पुत्रमित्रकलत्रादीन् त्यक्त्वा देशान्तरं व्रजेत्।
राजवृक्षस्य पुतल्यां भूबीजं स्मर वह्निना।।४९।।

श्मशान की मिट्टी से चार अंगुल मोटी और दश अंगुल ऊँची पुत्तली बनावे। श्मशान की अग्नि लाकर उसमें धत्तूर का रस मिलावे। उस घोल से पुत्तली के ऊपर 'खें' लिखे पार्श्वों में चिन्तामणि 'क्ष्म्यौं' लिखे। मस्तक में क्लीं लिखे। मूर्धा में हंस बीज लिखे। स्नुहि के दूध से अभिषेक प्राण प्रतिष्ठा के बाद करे। स्नुहि वृक्ष के नीचे एक बित्ता गड्ढा खोदकर उसमें पुत्तली को गाड़ दे। शुक्ल प्रतिपटा से प्रारम्भ करके अष्टमी तक जप करे। इससे शत्रु पराजित होकर भाग जाते है।

शिव स्वरूप शालुव पक्षिराज शरभ का ध्यान जो द्विज सर्वदा करता है उसके शत्रु भाग जाते है। खैर की लकड़ी की पुत्तली बनाकर उसमें प्राण प्रतिष्ठा विधिवत् करे। उस पर हाथ रखकर दश हजार मन्त्र जप करे तो तस्कर राज्य छोड़कर भाग जाते है। पुत्तली को खैर वृक्ष के मूल में गाड़ने से शत्रु अपने पुत्र क्लत्रादि को छोड़कर दूसरे देश में चले जाते हैं।

प्रादक्षिण्येन वेष्टव्यं पुत्तल्योपरि लेखितः॥५०॥
मूलेन राजवृक्षस्य समिद्धोमो विधीयते।
अष्टोत्तर सहसस्त्रं च शतमष्टोत्तरं च वै॥५१॥
हुनच्च विधिवन्मन्त्रं चतुःकण्ठं विधानतः।
त्रिदिनान्ते च विद्वेषः शत्रूणां च परस्परम्॥५२॥
रिपवः संक्षयं यान्ति पलायन्ते न संशयः॥५३॥

॥इत्याकाशभैरवतन्त्रे अरिखण्डे शरभप्रयोगविधिर्नाम चतुश्चत्वारिंशत्पटलः॥

राज वृक्ष की लकड़ी से पुत्तली बनाकर उसे लँ क्लीं रं ऐं यं श्रीं ह्रीं से वेष्टित करते हुए लिखे। राजवृक्ष के मूल की समिधाओं से प्रज्वलित अग्नि में एक हजार आठ या एक सौ आठ हवन शरभमन्त्र से चौराहे पर करे। तीन दिनों के बाद शत्रुओं में परस्पर द्वेष हो जाता है। शत्रुओं का संक्षय होता है वे भाग जाते हैं।



शरभ पूजा क्रम

देव्युवाच

देवदेव महादेव गिरीश जगतां पते।
त्राहि मां दयया नाथ सच्चिदानन्द शाश्वतम्॥१॥
मन्त्राणामपि यत्सारं सर्वलोकैक साक्षिणम्।
रक्षणं सर्वजन्तूनां ब्रूहि एतद् विभोमनुम्॥२॥

श्री शिव उवाच

रहस्यं शृणुदेवेशि सर्वरक्षाकरं परम्।
यस्य स्मरणमात्रेण वैरिणां कुलनाशनम्॥३॥
भोगमोक्षप्रदं दिव्यं भक्तिमुक्तिफलप्रदम्।
राजचौरादिमृत्यूनां नाशनं जयवर्द्धनम्॥४॥
ज्वररोगघ्नमापद्घं मनुँ वक्ष्यामि तत्वतः।
शरभेश्वरमन्त्रस्य ऋषिः कालाग्निरुद्रकः॥५॥
छन्दं स्तुतिभवो देवो, भगवान् शरभेश्वरः।
खंकारं बीजमित्युक्तं स्वाहा शक्तिरतः परम्॥६॥
स्वेच्छा प्रयोगसिद्ध्यर्थं विनियोगः तथाम्बिके।
त्रिद्विद्वादशनवकं सप्तकं तु नवक्रमात्॥७॥
मन्त्राक्षरैः करन्यासं मातृकासहितं मनुम्।
केशादिकं न्यसेन्मन्त्री करवक्त्रं षडङ्गकम्॥८॥

श्रीदेवी ने कहा कि हे देवों के देव महादेव गिरीश जगत के स्वामी आप दया करके कल्याण कीजिये। नाथ आप शाश्वत सच्चिदानन्द हैं जो सभी मन्त्रों का सार, सभी लोकों का साक्षी और जीवों का रक्षक है उस मन्त्र को मुझे बतलाइये।

श्री शिव ने कहा हे देवेशि सभी का रक्षा करने वाला श्रेष्ठ सार को सुनो। इसके स्मरण मात्र से वैरियों के कुल का नाश हो जाता है। यह भोग और मोक्ष प्रदायक दिव्य मुक्ति भुक्ति फल देने वाला, राजा-चोर आदि और मृत्यु का नाशक और जय देनेवाला है। ज्वर रोग आपदा के नाशक मन्त्र को तत्वतः कहता हूँ।

विनियोग–अस्य श्री शरभेश्वर मन्त्रस्य कालाग्नि रुद्र ऋषिः स्तुति छन्दः भगवान शरभेश्वर देवता, खं बीजं, स्वाहा शक्ति स्वेच्छा प्रयोग सिद्ध्यर्थं विनियोगः।

कर हृदयादि न्यासः—

मन्त्र वर्ण	करन्यास	हृदयादिन्यास
ॐ खें खां खं फट्	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
प्राण ग्रहासि प्राण ग्रहासि हुं फट्	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सर्वशत्रुसंहारणाय	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
शरभसालुवाय	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुँ
पक्षिराजाय	कनिष्ठाभ्यां नमः	नेत्रयाय वौषट्
हुं फट् स्वाहा	करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

इस प्रकार न्यास के बाद ध्यान करे।

वियन्निभः महोक्षः कृत्तिवासो वसानः
द्रुहिणसुरमुनीन्द्रैः स्तूयमानं गिरीशम्।
स्फटिकमणिजपा स्त्रक्, पुस्तकं यत्कराब्जे,
शरभमहमुपास्ये शालुवेशं खगेशम्।।९।।
तारं प्रथममुच्चार्य खें खां खं तदनन्तरम्।
प्राणग्रहासि द्वितयं हुं फट् च तदनन्तरम्।।१०।।
स्वाहेति पदमुच्चार्य शत्रुसंहरणाय च।
शरभशालुवायेति पक्षिराजाय इत्यपि।।११।।
हुं फट् स्वाहेति मन्त्रोऽयं द्विचत्वारिंशदक्षरः।
जपेद् वर्णसहस्राणि संख्यानि च महेश्वर।।१२।।
दशांशं तर्पणं होमं शतांशं द्विजभोजनम्।
सहस्रांशमथो देवि क्रमादेवं समाचरेत्।।१३।।

उद्धार करने पर बयालिस अक्षरों का मन्त्र होता है।

मन्त्र इस प्रकार है–ॐ खें खां खं फट् प्राण ग्रहसि प्राण ग्रहसि हुं फट् सर्वशत्रु संहारणाय शरभ शालुवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।

मन्त्र के प्रत्येक अक्षर पर एक हजार जप करे अर्थात ४२००० बयालिस हजार जप करे। जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का शतांश ब्राह्मण भोजन करावे।

होमद्रव्यान्यहं वक्ष्ये अधुना शृणु पार्वति।
स्वगृहे दक्षिणे भागे कल्पिते गृह कुण्डले॥१४॥
स्वगृह्योक्त विधानेन त्याज्यभागं तदाचरेत्।
तत्र दूर्वाग्र लुञ्चाञ्च तिललाजांश्च पायसम्॥१५॥
अपूपञ्च यवं चाज्यं क्रमात् सौम्यैः समाचरेत्।
अपामार्गं च वर्हिं च खादिरं च कटुत्रयम॥१६॥
सैन्धवं सार्षपं चाज्यं क्रमात्कार्यं सुरेश्वरि।
होमेन विधिना देवि क्रूरसौम्यक्रियादिषु॥१७॥
हुतं जपं क्रियेद्भक्त्या अवश्यं क्रियतां न चेत्।
विपरीतं भवेत् तस्मादुदासीनं न कारयेत्॥१८॥
स्वयं शिवमयं ध्यात्वा पावकं शरभेश्वरम्।
होमान्ते तु जपेन्मन्त्री त्रिवारं शरभाष्टकम्॥१९॥

हे पार्वति अब हवन के योग्य द्रव्यों को कहता हूँ, सुनो। अपने घर के दक्षिण भाग में कल्पित गृह कुण्ड में स्वगृहोक्त विधान से त्याज्य भाग से आचरण करे। सौम्य कर्म में दुर्वाग्र लुंचा,तिल, लावा, पायस, पूआ, यव औरगोधृत से हवन करे। क्रूर कर्म में चिड़चिड़ा, वर्हि, खैर, कटुत्रय सन्धा नमक और गोघृत से हवन करे। हे सुरेश्वरि! क्रूर सौम्य क्रियादि में हवन जप अवश्य करे। भक्ति पूर्वक नहीं करने से विपरीत फल मिलता है इसलिये हवन कर्म न छोड़े। अपने को शिव स्वरुप मानकर अग्नि को शरभेश्वर मानकर हवन करे। हवन के बाद तीन बार शरभाष्टक का जप करे। शरमाष्टक के जप से भगवान वरद होते हैं।

तेनाष्टकेन मन्त्रेण भगवान् वरदो भवेत्।
त्रिकोणं विलिखेत्पूर्वं तद्बाह्ये च दलद्वयम्॥२०॥
द्वादशारं च तद्बाह्ये तद्बाह्ये च नखाश्रयम्।
सप्तत्रिंश्च चतुः पञ्च भूपुरञ्च क्रमाल्लिखेत्॥२१॥
पावकादापृथिव्यन्तं लिखेन्मन्त्रं यथाक्रमम्।
तद्बहिः कोणषट्के तु प्रागारभ्य मनुं लिखेत्॥२२॥
फट् फट् जहि तया छिन्धि भिन्दि रुन्धि लिखेत्क्रमात्।
अकारादि क्षकारान्तं वेष्टयेत् विन्दु संयुतम्॥२३॥

महायन्त्रमिदं पुण्यं सप्तावरणकं परम्।
सर्वरोगप्रशमनं सर्वशत्रुजयं शुभम्॥२४॥
सर्वभूतवशीकारं सर्पपापविमोचनम्।
नानाज्वरं तु यन्त्रं च नानाक्षुद्रनिवारणम्॥२५॥
य इमं धारयेद्भक्त्या नासाध्य तस्य विद्यते।
अनेनैव तु मन्त्रेण साक्षाच्छिव समोभवेत्॥२६॥

पहले त्रिकोण बनावे। उसके बाहर दो दल बनावे। उसके बाहर द्वादश दल उसके बाहर नवकोण बनावे। उसके बाहर सप्त कोण उसके बाहर पंचकोण बनावे। सबके बाहर भूपुर बनावे। यह यन्त्र पुस्तक के प्रारंभ में ही छपा है। यह धारणा यन्त्र है। इस व्याख्या के प्रारंभ ही यन्त्र बनाने और पूजा विधि का वर्णन किया जा चुका है। धारणाविधि भी बतला दी गयी है। यन्त्र धारण से मिलने वाले फलों को भी बतला दिया गया है।

अन्य यन्त्र-जय प्रद यन्त्र

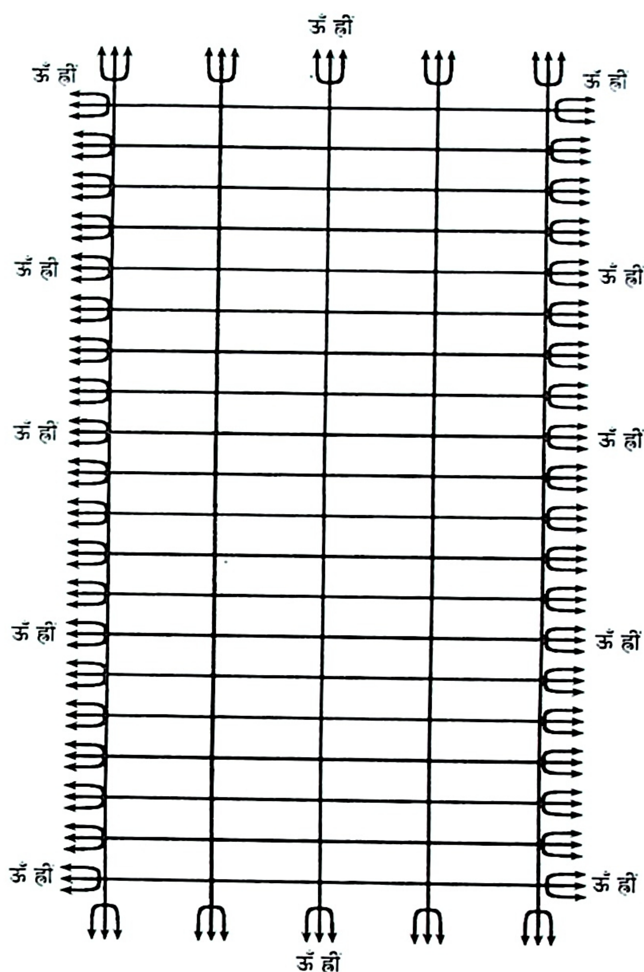
षट् सप्त कोष्ठेषु विलिख्य शारभमेकाग्रशुलं च तथाहि साध्यम्।
वाह्ये तु मायावृत तारवेष्टितं जयाकरं जपतामाशुचक्रम।।२७।।

१ दूर्वा २ गुडूची ३ चत्र्यु ४ तिल ५ लाजा ६ दुग्ध ७ अपूप ८ यव ९ घृत सौम्य क्रमः।

१ अपामार्ग २ खदिर ३ कटिम ४ सैन्धव ५ सर्षप ६ आज्य ७ क्रूरक्रमः अस्य श्री शरभेश्वर मन्त्रस्य कालाग्नि रुद्र ऋषिः अति जगती छन्दः श्री शरभेश्वरो देवता खं बीजं स्वाहा शक्ति, फट् कीलकं चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ॐ खें खां खं फट् हृदयाय नमः प्राणग्रहासि प्राणग्रहासि हुं फट् शिरसे स्वाहा सर्व शत्रु संहरणाय शिखायै वषट् शरभ शलुवाय पक्षिराजाय कवचाय हुं।

छिहत्तर कोष्ठों में शरभ मन्त्र लिखे रेखाग्रों में त्रिशूल बनाकर इस छेहत्तर कोष्ठों वाले यन्त्र के बाहर ह्रीं ॐ लिखकर उसे वेष्टित करे। यह चक्र शीघ्र विजय देता है।

यन्त्र



पूजा के बाद सौम्य क्रम में हवन सामग्री १ दूब, २ गुडूची, ३ चंचु ४ तिल ५ लाजा ६ दूध ७ पूआ ८ यव ९ घी है।

क्रूर कर्म में हवन सामग्री—१ अपामार्ग २ खैर ३ कटिक ४ सेन्धा नमक ५ सरसों ६ गोघृत होती है।

विनियोग–अस्य श्री शरभेश्वर मन्त्रस्य कालाग्निरुद्रऋृषिः। अति जगति छन्दः। श्री शरभेश्वरदेवता। खंबीजं। स्वाहा शक्ति फट् कीलकम् चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धये जपे विनियोगः।

हृदयादि न्यास—

ॐ खें खां खं फट् हृदयाय नमः।

प्राण ग्रहासि प्राण गृहासि हुँ फट् शिरसे स्वाहा।

सर्वशत्रुसंहारणाय शिखायै वषट्।

शरभशालुवाय कवचाय हुं।

पक्षिराजाय नेत्रत्रयाय वौषट्

हुं फट् स्वाहा अस्त्राय फट्।

इसी प्रकार कर न्यास भी करे। न्यास के बाद ध्यान करे।

अथ ध्यानम्

चन्द्राकौं वह्निदृष्टिः कुलिशवरनखश्चञ्चलोत्युग्रजिह्वः।
काली दुर्गा च पक्षौ, हृदयजठरग्नो भैरवो वाडवाग्निः।
ऊरूस्थौ व्याधिमृत्युशरभवरखगश्चण्डवातातित वेगः।
संहर्ता सर्वशत्रून् सजयति शरभः शाल्वः पक्षिराजः॥१॥

मृगस्त्वर्द्धशरीरेण पक्षाभ्यां चञ्चुनाद्विजः।
अधो वक्त्रश्चतुष्पाद ऊर्ध्ववक्त्रश्चतुर्भुजः॥२॥
कालान्तदहनोपम्यो नीलजीमूतनिस्वनः।
अरिस्तद्दर्शनादेव विनष्टबलविक्रमः॥३॥

ध्यान के बाद नमस्कार करे—

सटाछटोग्ररूपाय पक्षविक्षिप्तभूभृते।
अष्टापादाय रुद्राय नमः शरभमूर्तये॥४॥

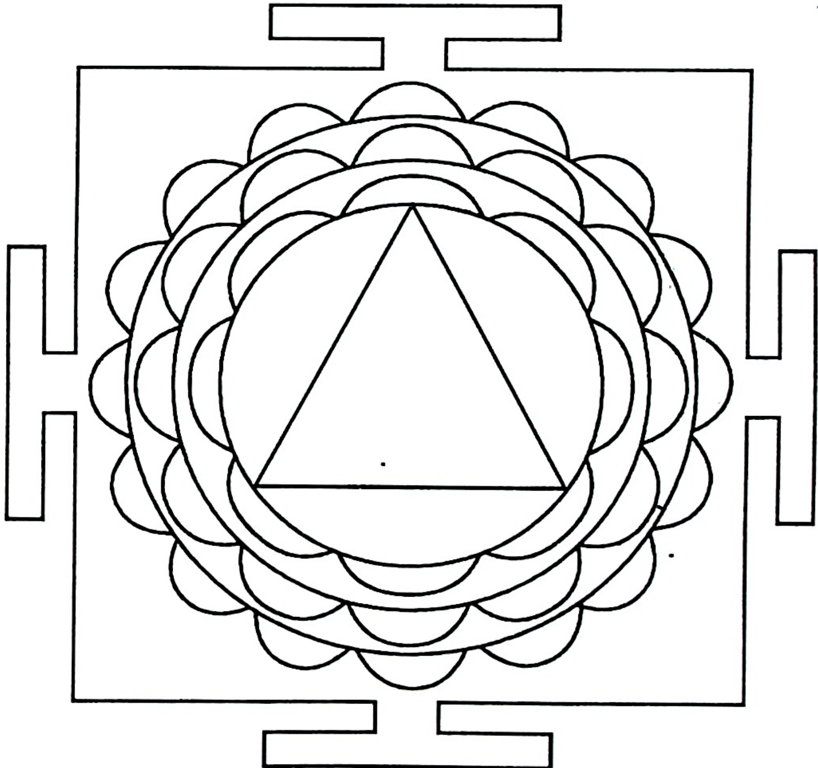
इस प्रकार नमस्कार करके मन्त्र जप करे। मन्त्र है—
४२ अक्षर का उपरोक्त शरभ मन्त्र।

अथ गन्धयुक्ते प्रशस्ते भस्मनि त्रिकोणाष्ट दल द्वादशदल षोडशदल भूपुर द्वन्द्वात्मकं अरत्निमात्रं चक्रमुद्धृत्य मन्त्रेण देवमावाह्य पूजयित्वा त्रिकोणे चन्द्र सूर्य महा वह्नि त्रिकोणान्तश्चतुर्दिक्षु भैरव वाडवाग्निर दुर्गा काली अष्टदले लोकपालान् त्रिकोण पार्श्वयोः व्याधि मृत्यु, द्वादश दले-मदनां रक्त चामुण्डां मोहिनीं द्राविणीं शब्ददाकर्षणिकां वासीं रमां मायां पुल्निदनीं शास्तारं क्षोभिणीं ज्येष्ठामिति षोडशदले ब्रह्माणं परां विष्णूं मायां बराहं पृथ्वीं विधिं शिवं, दलयोरश्विनौ वीरभद्रं भारतीं शिवं शङ्करं रुद्रं कालरुद्रं चेति अकराद्यैकैक स्वर पूर्वाः षोडश स्वर देवताः सम्पूज्य प्रथम भूपुरे दिषु गणेश यम स्कन्द भैरवान्, वायव्यादि विदिक्षु त्वरिता वीरभद्र

वडवानल भैरव महामायां पूजयेत्। वाह्यपुरे अष्टदिक्षु ब्राह्यादिमातृः सम्पूज्य परितो वृत्त क्रमेण ब्रह्माणं जाह्नवीं, गणेशं भैरवं, भद्रकालीं कालीं जात-वेदसं, धर्मं, नन्दीश्वरं, परमात्मानं, पृथिवीं चण्डशुक्रं, विष्णुं, बलभद्रं धनदं पराशक्तिं दुर्गां धर्म निर्विकल्पमग्निं भैरवं वर्णद्वयेश्विनौ भार्गवमीश्वरं वायुँ कृशानुं वरुणं शुक्र शंकरम् द्वादशादित्यान् भारतं, सदाशिवं पृथिवीं, नृसिंहं, इत्याकाशभैरवोक्तान् ककाद्यर्ण देवतास्तद्वर्णाः सम्पूज्य पुनर्मध्ये देवं सम्पूज्य, जप्त्वा स्तुत्वा हृद्युवास्य शिवोऽहमित भावयेत्। एवं यः सततंकुर्यात् स्वयमेव शिवो भवेत्। तद्भस्मागमनं श्रुत्वा कम्पन्ते विग्रहा ग्रहाः। किं पुनर्दर्शनादस्य भूतप्रेतादि राक्षसाः।

गन्ध युक्त भस्म को भूमि पर फैलाकर उसमें एक वित्ता लम्बा चौड़ा चक्र लिखे। पहले त्रिकोण बनाकर उसके बाहर अष्टदल तब द्वादश दल तब षोडश दल तब भूपुर बनावे।

यन्त्र



चक्र बनाकर चक्र मध्य में मन्त्र से देव का आवाहन करे और पूजा करे। त्रिकोण में चन्द्र, सूर्य, अग्नि, त्रिकोण और अष्टदल के अन्तराल में चारों दिशाओं में भैरव वड़वाग्नि दुर्गा काली की पूजा करे।

अष्टदल में इन्द्रादि आठ लोकपालों की त्रिकोण के पार्श्वों में व्याधि और मृत्यु की पूजा करे।

द्वादशदल में मदना, रक्त चामुण्डा, मोहिनी, द्राविणी, शब्दाकर्षिणी, वार्णी, रमा, माया, पुलिन्दिनी शास्ता, क्षोभिणी, ज्येष्ठा की पूजा करे।

षोडशदल में ब्रह्मा, परा विष्णु माया, वराह, पृथ्वी, विधि, शिव, अश्विनी, वीरभद्र, भारती, शिव शक्ति, रुद्र, कालरुद्र की पूजा अ से अः तक सोलह स्वरों के साथ करे।

भूपुर की प्रथम रेखा में पूर्वादि दिशाओं में गणेश यम स्कन्द भैरव, विदिक्षु में त्वरिता, वीरभद्र वड़वानल, भैरव, महामाया की पूजा करे।

भूपुर की बाहरी रेखा में पूर्वादि दिशाओं में ब्राह्मी आदि की पूजा करे। उसके सामने ब्रह्मा जान्हवी गणेश भैरव भद्रकाली काली जातवेदस, धर्म, नन्दीश्वर, परमात्मा, पृथ्वी, चण्डशुक्र, विष्णु, बलभद्र, धनद, पराशक्ति, दुर्गा, धर्म, निर्विकल्प अग्नि, भैरव वर्ण द्वय अश्विनी कुमार, भार्गव ईश्वर वायु कृशानु वरुण शुक्र शंकर, द्वादश आदित्य, भारत, सदा शिव, पृथ्वी, नृसिंह के साथ आकाश, भैरवी के क से क्ष तक की पूजा करे।

पुनः मध्य के देवता की पूजा करे। जप स्तुति करके हृदय में उद्वासित करे शिवोऽहम की भावना करे। इस प्रकार जो सदैव करता है वह स्वयं शिव हो जाता है। उस भस्म को धारण करने वाले का आगमन सुनकर विग्रह ग्रह काँपने लगते है। उसके दर्शन से भूत प्रेतादि राक्षस की दशा के बारे में क्या कहा जा सकता है।

ॐ नमः पक्षिराजाय निशित कुलिश नखवराय अनेक कोटि ब्रह्माण्ड कपाल मालालंकृताय सकल कुल महानाग भूषणाय सर्वभूत निवारणाय नृसिंह गर्व निर्वापकरणाय सकल रिपूणामटवी मोहनाय हयोनिजाय शरभ शालुवाय ह्रां ह्रीं ह्रूं प्रवेशय प्रवेशय आवेशय

आवेशय भाषय भाषय मोहय मोहय ह्लां स्तम्भय २ कम्पय २ घातय २ बन्धय २ भूत ग्रहबन्धय २ रोग ग्रहं बन्धय २ सूति ग्रहं बन्धय २ रोग ग्रहं बन्धय २ बालग्रहं बन्धय २ यक्षग्रहं बन्धय २ सूतिका ग्रहं बन्धय २ चातुर्थि ग्रहं बन्धय २ भीम ग्रहं बन्धय २ अपस्मार ग्रहं बन्धय २ पिशाच ग्रहं बन्धय २ आवेश ग्रहं बन्धय अनावेश ग्रहं बन्धय २ अपस्मार ग्रहं बन्धय २ पिशाच ग्रहं बन्धय २ आवेश ग्रहं बन्धय २ अनावेश ग्रहं बन्धय २ काम होम त्रोटय २ प्रैं त्रैं ह्लैं मारय २ मुञ्च २ हूं फट् इत्याकाशभैरवकल्पोक्तपूजाक्रमः। मन्त्र है।

।। इति आकाश भैरव पूजा क्रम ।।

शरभ कवच

श्री पार्वत्युवाच

देव देव महेशान सर्वात्मन् जगद्गुरो।
रहस्यं शालुवेशस्य कवचाख्यं वद प्रभो।।१।।
स ऋषि छन्दसः ध्यायेत् देवता कीलकं त्वनु।
विनियोगो नियोतॄणां सर्वदं सिद्धदं मतम्।।२।।
श्रोतुमिच्छामि तत्वत्तः कोऽन्यो वक्तु क्षमस्त्विह।
शालुवेशः पक्षिराजो हृदि ध्येयः प्रसाधकैः।।३।।

श्री पार्वती ने कहा—हे देवों के देव महेश सवों की आत्मा जगद्गुरु शालुवंश के कवच का रहस्य मुझे बताइये। कवच के ऋषि छन्द ध्यान देवता कीलक विनियोग सर्वदं सिद्धिदं मत को कहिये। इन्हें मैं सुनना चाहती हूँ। आपके अतिरिक्त और कौन कह सकता है। शालुवेश पक्षिराज साधकों के हृदय का ध्येय है।

शिव उवाच

वक्ष्यामि शृणु देवेशि सर्वरक्षणमद्भुतम्।
शारभं कवचं नाम चतुर्वर्ग फलप्रदम्।।४।।
शरभशाल्वराजाख्यकवचस्य सदाशिवः।
ऋषिः छन्दोऽस्य जगती प्रोच्यते शरभेश्वरः।।५।।
देवता प्रणवो बीजं प्रकृतिः शक्तिरुच्यते।
कीलकं पक्षिराजेति सर्व रक्षा करो विभुः।।६।।
परप्रयोगं शान्त्यर्थं सर्वं शत्रुं निवर्तये।

चतुर्वर्गार्थसिध्यर्थे विनियोगः प्रकीर्तितः॥७॥
ऋषिं शिरसि विन्यस्य मुखे छन्दः सुरेश्वरि।
देवतां हृदये न्यस्य बीजं गुह्ये न्यसेत्सुधी॥८॥
विनस्य पादयोः शक्तिं कीलकं नाभिमण्डले।
आपाद मस्तकं देवि विनियोगस्य भावना॥९॥
खां खीमित्यादिभिः षड्भिः कराङ्गन्यासमाचरेत्।
देवतां हृदये ध्यात्वा पूजयित्वा समाहितः॥१०॥

शिव ने कहा—हे देवेशि सुनो सवों की रक्षा करने वाला अद्भुत शरभ कवच को कहता हूँ। यह कवच चतुर्वर्ग फल प्रदायक है।

विनियोग–अस्य श्री शरभशाल्वाख्य कवचस्य सदा शिवऋषिः। जगती छन्दः। शरभेश्वर देवता, ॐ बीजं, प्रकृति शक्तिः पक्षिराज कीलकं। सर्व रक्षाकर विभु पक्षिराजः परप्रयोगशान्त्यर्थ सर्वशत्रुनिर्वतये चतुर्वगार्थसिध्यर्थे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास–ॐ सदाशिव ऋषये नमः शिरसि। जगती छन्दसे नमः मुखे। ॐ शरभेश्वर देवतायै नमः हृदि। ॐ खं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। आपाद मस्तक विनियोगाय नमः सर्वांगे।

हृदयादि षडंग न्यास–खां हृदयाय नमः। खीं शिरसे स्वाहा खूं शिरवायै वषट्। खैं कवचाय हुं। खों नेत्र त्रयाय वौषट्। खः अस्त्राय फट्।

करन्यास–खां अंगुष्ठाभ्यां नमः। खीं तर्जनीभ्यां नमः। खूं मध्यमाभ्यां नमः। खैं अनामिकाभ्यां नमः। खौं कनिष्ठाभ्यां नमः खः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

न्यास के बाद एकाग्रता से हृदय में देवता का ध्यान करके पूजा करे।

स्पर्शवीक्षणसंश्लिष्टं प्रतिस्थानं शनैर्जपेत्।
ध्यानमस्य प्रवक्ष्यामि समाहितमनाः श्रृणु॥११॥

स्पर्श वीक्षण संश्लिष्ट प्रत्येक स्थान में धीरे धीरे जप करे। इसका ध्यान कहता हूँ। समाहित होकर सुनो।

विनियोग–अस्य श्री शरभ शाल्व राजाख्य कवचस्य सदाशिव ऋषिः। जगती छन्दः। श्री शरभेश्वर देवता। ॐ बीजं ह्रीं शक्तिः। पक्षिराज कीलकम्। परप्रयोगशान्त्यर्थ सर्वशत्रुनिवृत्तये चतुर्वगार्थे सिध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास–शिरसि सदाशिवाय ऋषये नमः। मुखे जगत्यै छन्दसे नमः। हृदि श्री शरभेश्वर देवतायै नमः। गुह्ये ॐ बीजाय नमः। पादयोः ह्रीं शक्तये नमः। नाभौ पक्षिराजाय कीलकाय नमः। आपादतल मस्तक में विनियोग की भावना करे।

करन्यास–खां अंगुष्ठाभ्यां नमः। खीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। खूं मध्यमाभ्यां वषट्। खैं अनामिकाभ्यां हुं। खौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। खः करतल कर पृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादि न्यास—

खां हृदयाय नमः। खीं शिरसे स्वाहा।
खूं शिखायै वषट्। खैं कवचाय हुं।
खौं नेत्रत्रयाय वौषट्। खः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

रत्नाभं सुप्रसन्नं त्रिनयनममृतोन्मत्तभूषाभिरामम्
कारुण्याम्बोधिमीशं वरदमभयदं चन्द्ररेखावतंशं
शंखाध्माताखिलाशा प्रतिहत विधिना भासमानात्मभासम्
सर्वेशं शालुवेशं प्रणतभयहरं पक्षिराजं नमामि।।१।।

इस प्रकार ध्यान करके मानसिक पूजा करे।

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि।
हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि।
यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि।
रं वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं कल्पयामि।

इस प्रकार मानसोपचारों से पूजा के बाद यथा शक्ति मूलमन्त्र का जप करे। तब कवच का पाठ करे।

अथ स्पर्श वीक्षण संश्लिष्ट प्रयोगः।

कवचम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते श्री शिवाय मम पुरतः ज्वल-२ प्रज्वल-२ असाध्यं साधय-२ रक्ष-२ सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा श्री शिवः पुरतः पातु।।१।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते मायाधीशाय मम पृष्ठतः ज्वल-२ प्रज्वल-२ असाध्यं साधय-२ रक्ष-२ सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा। मायाधीशः पृष्ठतः पातु।।२।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते पिनाकिने मम दक्षिणे पार्श्वे ज्वल-२ प्रज्वल-२ असाध्यं साधय-२ रक्ष-२ सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा। पिनाकी दक्षिणे पार्श्वे पातु।।३।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते महेश्वराय मम वामपार्श्वे ज्वल-२ प्रज्वल-२ असाध्यं साधय-२ रक्ष-२ सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा वाम पार्श्वे महेश्वरः पातु।।४।।

ॐ ऐ ह्रीं श्रीं नमो भगवते शम्भवे मम शिखाग्रे ज्वल-२ प्रज्वल-२ असाध्यं साधय-२ रक्ष-२ सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा शिखाग्रे पातु मे शम्भुः।।५।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते शंकराय मम निटले ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल असाध्यं साधय-साधय रक्ष रक्ष सर्व भूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा निटलं पातु शङ्करः।।६।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते ईश्वराय मम वदने ज्वल-२ प्रज्वल-२ असाध्यं साधय-२ रक्ष-२ सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा ईश्वरो वदनं पातु।।७।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते पुरान्तकाय मम भ्रुवोर्मध्ये ज्वल-२ प्रज्वल-२ असाध्यं साधय-२ रक्ष-२ सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा भ्रुवोर्मध्ये पुरान्तकः पातु।।८।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते स्थाणवे मम भ्रुवोर्ज्वल-२ प्रज्वल-२ असाध्यं साधय-२ रक्ष-२ सर्वभूतेभ्यो हूं फट् स्वाहा भ्रुवौ पातु मम स्थाणुः।।९।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते कपर्दिने मम लोचनयोर्ज्वल-२ प्रज्वल-२ असाध्यं साधय-२ रक्ष-२ सर्वभतेभ्यो हुं फट् स्वाहा कपर्दी पातु लोचने।।१०।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते शर्वाय मम श्रोत्रयोर्ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल असाध्यं साधय-२ रक्ष-२ सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा शर्वो मे श्रोत्रयोः पातु।।११।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते वागीशाय मम लम्बिकायां ज्वल-२ प्रज्वल-२ असाध्यं साधय-२ रक्ष-२ सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा वागीशः पातु लम्बिकाम्।।१२।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते वृषारुढाय मम नासायां ज्वल-२ प्रज्वल-२ असाध्यं साधय-२ रक्ष-२ सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा नासायां मे बृषारुढः।।१३।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते बृषभध्वजाय मम नासाग्रे ज्वल-२ प्रज्वल-२ असाध्यं साधय-२ रक्ष-२ सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा नासाग्रं वृषभध्वजः।।१४।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते स्मरारये मम ताल्वो ज्वल-२ प्रज्वल-२ असाध्यं साधय-२ रक्ष-२ सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा स्मरारिः पातु मे ताल्वोः।।१५।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते भक्तवत्सलाय मम ओष्ठयोः ज्वल-२ प्रज्वल-२ असाध्यं साधय-२ रक्ष-२ सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा ओष्ठयोः भक्तवत्सलः।।१६।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते मृत्युञ्जयाय मम दन्तेषु ज्वल-२ प्रज्वल-२ असाध्यं साधय-२ रक्ष-२ सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा पातु मृत्युञ्जयो दन्तान्।।१७।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते भूतराजाय मम चिबुके ज्वल-२ प्रज्वल-२ असाध्यं साधय-२ रक्ष-२ सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा चिबुकं पातु भूतराट्।।१८।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते परमेशाय मम कपोलयोः० परमेशः कपोलो मे।।१९।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते कपालभृते मम त्रके० त्रिकं पातु कपालभृत्।।२०।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते पशुपतये मम कण्ठे० कण्ठं पशुपतिः पातुः।।२१।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते शूलिने मम हनौ० शूलीं पातु हनुं मम।।२२।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते हराय मम स्कन्ध युग्मे० स्कन्ध युग्मे हरः पातु।।२३।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते धूर्जटये मम भुजयोः० धूर्जटिः पातु मम भुजौ।।२४।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते महादेवाय मम भुजमूले० भुजमूले महादेव।।२५।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते ईशानाय प्रकूर्परयोः० ईशानो मे पातु प्रकूर्परौ।।२६।।

ॐ ऐ ह्रीं श्रीं नमो भगवते जगन्नाथाय मम सन्ध्यो० मम पातु सन्धी जगन्नाथः।।२७।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते चन्द्रशेखराय मम प्रकोष्ठे० प्रकोष्ठ चन्द्रशेखरः।।२८।।

ॐ ऐ ह्रीं श्रीं नमो भगवते त्रिनेत्राय मम मणि बन्धे० त्रिनेत्रो मे।।२९।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते भीमाय मम कर स्थले० भीमः पातु कर स्थले।।३०।।

ॐ ऐ ह्रीं श्रीं नमो भगवते मृडाय मम पृष्ठे० मृडः पातु मम पृष्ठे।।३१।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते रुद्राय ममाङ्गुष्ठ द्वये० रुद्रोऽङ्गुष्ठ द्वयं मम।।३२।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते उमा सहायाय मम तर्जन्योः० उमा सहायस्तर्जन्यौ।।३३।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते भर्गाय मम मध्यमयोः० भर्गो मे पातु मध्यमे।।३४।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते करालास्याय मम अनामिकयोः० अनामिके करालास्यः।।३५।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते कालकण्ठाय मम कनिष्ठयोः० कालकण्ठः कनिष्ठके।।३६।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते गंगाधराय ममांगुली पर्वसु० गंगाधरोऽममांगुली पर्वणि।।३७।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते अप्रमेयाय मम नखेषु० अप्रमेयो नखानि मे।।३८।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते तत्पुरुषाय मम वक्षसि० वक्षः तत्पुरुषः पातु।।३९।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते दक्षाध्वरान्तकाय मम कक्षयोः कक्षौ दक्षाध्वरान्तकः।।४०।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते अघोराय मम हृदये० अघोरो हृदयं पातु।।४१।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते वामदेवाय मम स्तनद्वये० वामदेवः स्तनद्वये।।४२।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते भाल दृशे मम जठरे० भाल दृक् जठरं पातु।।४३।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते नारायणाव्ययाय मम नाभौ० नाभिं नारायणोऽव्ययः।।४४।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते प्रजाकराय मम कुक्षौ० कुक्षिं प्रजाकरः पातु।।४५।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते महाबलाय मम कुक्षि पार्श्वयोः० कुक्षिपार्श्वे महाबलः।।४६।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते सद्यो जाताय मम कटौ० सद्यो जातः कटिं पातु।।४७।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते भैरवाय मम पृष्ठभागे० पृष्ठभागं तु भैरवः।।४८।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते मोहनाय मम जघने० मोहनो जघने पातु।।४९।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते जितेन्द्रियाय मम गुदे० मम जितेन्द्रियः।।५०।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते ऊर्ध्वरेतसे मम लिङ्गदेशे।।५१।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते वृषभध्वजाय० मम बृषणं बृषभध्वजः।।५२।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते भवाय ममोरुयुग्मे० ऊरुयुग्मं भवः पातु।।५३।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते स्मरान्तकाय मम जानु युग्मे० जानु युग्मं स्मरान्तकः।।५४।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते हुँकाराय मम जंघयोः० हुंकारः पातु मे जंघे।।५५।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते फट्काराय मम गुल्फके० फट्कारो मम गुल्फके।।५६।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते वषट्काराय मम पाद पृष्ठे० वषट्कारः पातु पृष्ठम्।।५७।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते वौषट्काराय मम अंघ्रिणोस्तले० वौषटकारोऽघ्रिणोस्तले।।५८।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते स्वाहाकाराय मम अङ्गुलिपार्श्वे० स्वाहारोऽङ्गुली पार्श्वे।।५९।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते स्वधाकाराय मम अङ्गुलीषु० स्वधाकारोंगुलीश्च मे।।६०।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते त्वरिताय मम सर्वसन्धिषु०. सर्व सन्धीनि मे त्वरितः।।६१।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते नृसिंहजिते मम रोमकूपेषु० रोम कूपान्नृसिंहजित्।।६२।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते मनोवेगाय मम त्वचिं पातु मनोवेगः।।६३।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते कालजिते मम रुधिरे० रुधिरं पातु कालजित्।।६४।।

ॐ पुष्टिदाय मम मांसे० पुष्टिदः पातु मे मांसम्।।६५।।

ॐ स्वस्तिदाय मम मेदसि० मेदो मे पातु स्वस्तिदः।।६६।।

ॐ सर्वात्मने ममास्थिचये० सर्वात्मास्थिचयं पातु।।६७।।

ॐ जगत्प्रभवे मम मज्जनि० मज्जानं मे जगत्प्रभुः।।६८।।

ॐ वृद्धिकराय मम शुक्रे० शुक्रवृद्धिकरः पातु।।६९।।

ॐ वाचामधीश्वराय मम बुद्धौ० बुद्धिं वाचामधीश्वरः।।७०।।

ॐ शरभेश्वराय मम मूलाधारे–मूलाधारेम्बुजे० मूलाधाराम्बुजं पातु भगवान् शरभेश्वरः।।७१।।

ॐ अजाय मम स्वाधिष्ठाने० स्वाधिष्ठानमजः पातु।।७२।।

ॐ हरिप्रयाय मम मणिपूरे० मणिपूरं हरिप्रियः।।७३।।

ॐ शालुवेशाय मम अनाहते० अनाहतं शालुवेशः।।७४।।

ॐ जीवनाय़काय मम विशुद्धे० विशुद्धं जीवनायकः।।७५।।

ॐ सर्वज्ञानप्रदाय देवाय सदाशिवाय मम ललाटे सर्वज्ञानप्रदो देवो ललाटं मे सदाशिवः।।७६।।

ॐ महादेवाय मम ब्रह्म रन्ध्रे० ब्रह्मरन्ध्रे महादेवः।।७७।।

ॐ नमो० पक्षिराजाय ममाखिला कृतौ० पक्षिराजोऽखिला कृतिः।।७८।।

ॐ सर्वलोक वशीकराय परवर्गजितेर्मायिये० पातु मां परवर्गजित।।७९।।

ॐ वज्रमुष्टि वराभीति हस्ताय कालाभ्र सन्निभाय विजया सहिताय मम ऐन्द्र्यां ककुभि० वज्रमुष्टि वराभीति हस्तः कालाभ्रसन्निभः विजया सहितः पातु चैन्द्रीं ककुभमग्निजित्।।८०।।

ॐ शक्तिशूलकपालासि हस्ताय सौदामिनी प्रभाय जया युताय महाभीमाय मम वैश्वनर्या दिशि० शक्तिशूल कपालासि हस्तः सौदामिनी प्रभः, जयायुतो महीभीमः पातु वैश्वानरीं दिशम्।।८१।।

ॐ दण्डासि मुसलहलपाशाङ्कुशकराम्बुजाय यमान्तकाय अजितायुक्ताय मम दक्षिणस्यां दिशि० दण्डासिमुसलहस्तपाशाङ्कुश-कराम्बुजः यमान्तिकोऽजितायुक्तो दक्षिणां पातु मे दिशम्।।८२।।

ॐ खड्ग खेटाग्नि परशुहस्ताय शत्रुविमर्दनाय अपराजिता युक्ताय मम नैर्ऋत्यां दिशि० खड्ग खेटाग्नि परशुहस्तः शत्रुविमर्दनः अपराजितायुक्तः सदाव्यान्नैर्ऋतीं दिशम्।।८३।।

ॐ पाशाङ्कुशधनुर्वाण पाणये घोरायुताय ग्रहाय हरिद्राभाय आत्मजिते मम वारुण्यां दिशि० पाशाङ्कुशधनुर्वाण पाणिर्घोरायुतो ग्रहः हरिद्राभोऽनिशं पायाद्वारुणीदिशमात्मजित्।।८४।।

ॐ ध्वजोग्रक्रकचोदारभुजाय दुर्गायुताय खगाय शिवचण्डवेगाय मम मारुत्यां दिशि० ध्वजोग्र क्रकचोदारभुजो दुर्गायुतो खगः चण्डवेगः शिवः पायात्सततं मारुतीं दिशम्।।८५।।

ॐ गदाक्ष स्त्रग्वराभीति कराम्भोजाय श्रिया युताय कनकाभाय महातेजसे मम कौबेर्यां दिशि पाशाङ्कुशधनुर्वाणगदाक्षस्त्रग्वराभीति-कराम्भोजः श्रियायुतः कनकाभो महातेजाः पातु कौवेरिकीं दिशम्।।८६।।

ॐ त्रिशुलाहिकपालाग्निदोस्तलाय विद्यायुताय भस्मोद्धूलित-सर्वाङ्गाय अपराजिताय मम ईशान्यां दिशिः० त्रिशूलाहि कपालाग्निदोस्तलः विद्यायुतः, भस्मोद्धूतसर्वाङ्गशैवीं पात्वपराजितः।।८७।।

ॐ जपाक्षपुस्तकाम्भोजकमण्डलु लसत्कराय गिरायुक्ताय सर्वभूतहितेरताय मम ऊर्ध्वायां दिशि० जपाक्षपुस्तकाम्भोजलसत्करः। ऊर्ध्वं पातु गिरायुक्तः सर्वभूत हितेरतः।।८८।।

ॐ शंखचक्रवराभीतिहस्ताय पद्मयुताय अव्ययाय नीलाञ्जनसमाय निलाय मम पाताले० चक्रवराभीति हस्तः, हस्तपद्मयुतोऽव्ययः नीलाञ्जनसमोनीलः पातालं पात्वनारतम्।।८९।।

ॐ नरसिंहजिते शालुवाय मम अनुक्तासु विदिक्षु० अनुक्ता विदिशः पातु शालुवो नरसिंहजित्।।९०।।

ॐ शरभाय मम संग्रामे० शरभः पातु संग्रामे।।९१।।

ॐ वैरिकुलान्तकाय मम युद्धे० वैरिकुलान्तकः।।९२।।

ॐ सर्व सौभाग्यदाय मम जाग्रत् सुषुप्तिषु० सर्वसौभाग्यदः पातु जाग्रत् स्वप्नसुषुप्तिषु।।९३।।

ॐ सर्वसम्पत्प्रदाय मम धनधान्यादिके सर्वसम्पत्प्रदः पातु धनधान्यादिकं मम।।९४।।

ॐ सन्तानदाय मम सुतासु० सन्तानदः सुताः पातु।।९५।।

ॐ आयुष्कराय मम पुत्रेषु० पुत्रानायुष्करोऽनिशम्।।९६।।

ॐ वृद्धिकराय मम बन्धुषु० बन्धून् वृद्धिकरः पातु।।९७।।

ॐ वशंकराय मम गृहे० गृहं मम वशंकरः।।९८।।

ॐ ग्रामेश्वराय मम ग्रामे० ग्रामेश्वरो पातु ग्रामम्।।९९।।

ॐ दिगम्बराय मम राज्ये० राज्यं पातु दिगम्बरः।।१००।।

ॐ शान्तिकराय मम राष्ट्रे० शान्तिकरः पातु।।१०१।।

ॐ धर्मशासनाय मम राज्ञि० राजानं धर्मशासनः।।१०२।।

ॐ दुःखहराय मम मार्गे० मार्गदुःखहरः पातु।।१०३।।

ॐ भैरवाय मम धर्मकर्मसु० धर्मंकर्मणि भैरवः।।१०४।।

ॐ बटुकाय मम सर्वस्मिन् अवस्था त्रितयेषु० बटुकः पातु मे सर्वमवस्था त्रितयेषु च।।१०५।।

प्रयोगकर्ता प्रत्येक नाम का पाठ करके साध्य के अंग को देखे और स्पर्श करे।

।।इति स्पर्श वीक्षण संश्लिष्ट सकामना प्रयोगः।।

इति दश वारं प्रजप्य ये ग्राम घातकाः इत्यादि पठेत् अन्ते मूलं जपेत्।

स्पृशन् पश्यन् जपं कृत्वा, प्रतिस्थानं समाहितः।

प्रार्थयेदखिलं स्वेष्टं हृदिस्थं शालुवेश्वरम्।।१०६।।

इस प्रकार श्लोक संख्या १०५ तक कवच का दश पाठ करके ग्रामघातकाः इत्यादि श्लोक संख्या १०७ से आगे १४७ तक का पाठ करे। अन्त में मूल मन्त्र का जप करे। उल्लिखित अंगों का स्पर्श करे

और उन्हें देखे। एकाग्र होकर हृदयस्थ शालुवेश से अपना अभीष्ट प्राप्ति के लिये प्रार्थना करे।

ये ग्रामघातकाः क्रूराः कपटाः दौष्टकाः नराः।
तस्कराः शत्रवः क्रुद्धा वधा सक्ताः पलाशिनः॥१०७॥
लग्नाचरा विटा भ्रष्टाः दिवाचरनिशाचराः।
ते सर्वे पक्षिराजस्य पक्षवात पराहताः॥१०८॥
स्त्री बालसहिता क्षिप्रं पितृमातृकुलान्विता।
भग्नचित्तागतस्थानायान्तु देशान्तरं स्वयम्॥१०९॥

जो ग्राम घातक, क्रूर, कपटी, दुष्ट मनुष्य, तस्कर, शत्रु, क्रुद्ध, वध में आसक्त, पलाशिन, लग्नचर, विट, भ्रष्ट, दिवाचर, निशाचर हैं वे सभी पक्षिराज के पक्षों की हवा से पराहत होकर पिता-माता के कुल स्थान को छोड़कर स्त्री, बाल-बच्चों के साथ परदेश में चले जायँ।

ये दुष्टग्रहाः रक्षः पिशाचा देवयोनयः।
चतुः षष्ठि गणाः सप्त सप्तत्युन्मादका ग्रहाः॥११०॥
अष्टाशीति महाभूता सप्तकोटि महाग्रहाः।
नवतिर्ज्वर भेदाश्च शतभेदाश्च कृत्तिका॥१११॥
पञ्चाशद् गण नाथाश्च नियुता कृत्तिभा ग्रहा।
प्रेतारुढास्त्रयस्त्रिंशद् पिण्डदान परायणा॥११२॥
अयुतं क्षुद्रं भेदाश्च चत्वारिंशच्छिवाह्वया।
द्वात्रिंशदहिं वक्राश्च विंशं मार्जारवक्रका:॥११३॥
चतुः षष्टचाखुरूपाश्च ये चान्ये क्षुद्रयोनयः।
ते सर्वे शालुवेशस्य शंख निःस्वनमोहिताः॥११४॥
विखिन्ना स्खलिताः स्वान्ताः प्राणायाम परायणाः।
गच्छन्तु सप्रयोक्तारो देशान्तरमनिच्छया॥११५॥

जो दुष्ट ग्रह राक्षस, पिशाच, देवयोनि, चौंसठ गण, सात करोड़ महाग्रह, नब्बे प्रकार के ज्वर, सौ प्रकार की कृत्तिका, पचाश गणनाथ, एक लाख कृतिभ ग्रह, प्रेतारूढ़ तैंतिस पिण्डदान परायण, दश हजार क्षुद्र भेदा, चालिस शिवाह्वया, बत्तीस अहिवक्र विंशं मार्जार वक्रव,

चौसठ मूशक रूपा अन्य क्षुद्र जन्तु हैं। वे सभी शालुवंश की शंख ध्वनि से मोहित होकर विषण्णा खिलतस्वान्त, प्राण बचाने में निरत अपने प्रयोक्ता के साथ अनिच्छा से परदेश में भाग जायें।

ये चान्ये वनजा ग्राम्या शनुकोरगवृश्चिकाः।
आशीविषा शिवा ब्याला व्याघ्रा ऋक्षेभसूकराः॥११६॥
गृद्धा श्येना खगाः काका दशकाः शशकाः मृगाः।
एते शरभहस्ताग्र नरवक्षतविमोहिताः॥११७॥
सृवद् रक्तघटा सिक्ताः शिलातल विताडिता।
सम्भिन्नतनवः शीघ्रं नश्यन्त्यखिलदुश्चराः॥११८॥

जो अन्य जंगली ग्राम्य, शुनक, सर्प, विच्छू, आशीविष, शिवा व्याल, बाघ, ऋक्ष, हाथी, शूकर, गिद्ध, वाज, चिड़िया,, कौआ, दंशक, खरगोश, मृग है। वे सभी शरभ हस्ताग्र नख से चोटिल विमोहित, खूल से लथपथ शिला तल से ताड़ित, कटे फटे शरीर से सभी दुश्चर नष्ट हो जायँ।

न दशन्त्युरगाः क्वापि नातिवातोपवीजताम्।
न दहत्य सहो वह्निरायान्त्यापो न चाधिकम्॥११९॥
न वर्षत्यति वृष्टिश्च न पतत्यशनिः क्वचित्।
ना क्रमत्यपमृत्युश्च नचोत्पाताः कथंचन॥१२०॥
न म्रियन्त्वम्भसि जनाः न भवत्यशुभं क्वचित्।
न वदन्त्यशुभं वाक्यं जन्तवो मम देशके॥१२१॥
न स्याद्वैरं च जन्तूनां अन्योन्यं राजके मम।
भवन्तु सुखिनः सर्वे सर्वाः सन्तु पतिव्रताः॥१२२॥
सर्वाः सूयन्तु सत्पुत्रान् पुत्रींश्च शुभलक्षणाः।
सर्वे सर्वाश्च नन्दन्तु सन्तु कल्याणकारकाः॥१२३॥
राजन्वती महीचास्तु राजा भवतु धार्मिकाः।
सुस्त्रवन्तु पयो गावः फलत्वोषधिकोऽधिकम्॥१२४॥
फलन्तु फलदा वृक्षाः सर्वं भवतु मेऽखिलम्।
ममास्तु तरसा नूनमात्मज्ञानमचञ्चलम्॥१२५॥

कामक्रोधमहालोभ - सम्मोहमदमत्सराः।
मा सन्तु क्वापि शरभेश भगवन्करुणानिधे॥१२६॥
गौरी वल्लभ कामारे कालकूट विषादन।
मामुद्धरापदाम्भोधे - त्रिपुरघ्नान्धकान्तक॥१२७॥
शरभेश्वर विश्वेश पक्षिराज दयानिधे।
देहि मे त्वचलां भक्तिं प्रणतोऽस्मि पुनः पुनः॥१२८॥

कभी साँप न काटे। न बहुत जोर की हवा चले। न अग्नि आग से जलावे। न अधिक जल हो। अति वृष्टि न हो, न कभी बिजली गिरे। अपमृत्यु आक्रमण न करे। कभी उत्पात न हो। कोई मनुष्य जल में डूबकर न मरे। कोई अशुभ न हो। कोई अशुभ न बोले। मेरे वंश के मनुष्यों का दूसरे राज्य के मनुष्यों से वैर न हो। सभी सुखी हों। सभी स्त्रियाँ पतिव्रता हो। सभी सत्पुत्रों को जन्म दें। शुभ लक्षणवाली पुत्री को जन्म दे। सभी सब प्रकार से आनन्दित हों। सभी कल्याणकारक हों। भूमि राजा से युक्त हो। राजा धार्मिक हों। गांयें खूब दूध दे। औषधियों में अधिक फल लगे। वृक्षों में खूब फल लगे। सबों को सब कुछ प्राप्त हो। मुझे भी अचंचल ज्ञान प्राप्त हो। काम, क्रोध, महा लोभ, सम्मोह मद, मत्सर मुझे कभी न हो शरमेश भगवन् करुणानिधे कृपा करो।

शालुवेश जगन्नाथ सर्वभूत हितेरत।
पाहि मां तरसा चौरात् दुष्टान्नाशय नाशय॥१२९॥
कालभैरव विश्वेश विश्वरक्षा परायण।
रक्षोमूषक चौरेभ्यो धान्यराशिमिमं प्रभो॥१३०॥
पक्षिराज महादेव प्रणतार्ति विनाशन।
तस्करेण हृतं वस्तु शीघ्र दापय दापय॥१३१॥
ये मर्म वादिनः क्षुद्राः क्षुद्रोपद्रव कारकाः।
सर्वाचार परित्यक्ताः मानहीनाश्च रोधकाः॥१३२॥
ते सर्वे शालुवेशस्य मुसलायुध चूर्णिता।
नश्यन्तु निमिषार्द्धेन पावकावृत्त तूलवत्॥१३३॥

गौरी वल्लभ, कामदेव के शत्रु, काल कूट विष पीने वाले मेरा उद्धार आपदाओं के सागर से करो। तुम त्रिपुरासुर को मारने वाले

अन्धक का अंन्त करने वाले हो। शरभेश्वर विश्वेश पक्षिराज दया के सागर मुझे अचलाभक्ति दो। तुम्हें बार-बार प्रणाम करता हूँ।

शालुवेश जगन्नाथ सब का कल्याण करने वाले अपने वेग से चोरों से मुझे बचाओ। दुष्टों का नाश करो। काल भैरव विश्व रक्षा परायण मेरे अन्न भण्डार की रक्षा मूशक और चोरों से करो। पक्षिराज महादेव आप शरणागतों के दुखों का नाश करते हैं। तस्करों द्वारा अपहृत वस्तुओं को शीघ्र ला दीजिये। जो मर्मवादी क्षुद्र है और क्षुद्र उपद्रव करने वाले हैं जो सभी आचारों से रहित है, मानहीन और रुकावट करने वाले हैं वे सभी शालुवेश के मुशल आयुध से धूल मे मिल जायँ। आधे क्षण में उनका नाश अग्नि से घिरे रुई के समान हो जाय।

ये जनाद्रोहिणोऽल्पाशा त्वकालोचितभाषिणः।
सत्कर्मविघ्नकर्तारः शान्तिभर्त्साः परायणाः॥१३४॥
ते शालुवेश हस्ताग्र खड्ग निर्भिन्न देहिनः।
पतन्तु भूतले याम्यां प्राणास्तेषां प्रयान्तु वै॥१३५॥
त्वदंघ्रि ध्यान निर्दग्ध पापकोशाय मन्त्रिणे।
मह्यं द्रुह्यन्ति ये तेषां विभवानि क्षयं त्वरम्॥१३६॥
सदाचार परं नित्यं साधकं मां विवेकिनम्।
ये चाक्रामन्ति संग्रामे ते गच्छन्तु पराहताः॥१३७॥
त्वदीये नैव मार्गेण संचरन्तं जयातुरम्।
ये वदन्ति परीवादं भ्रान्ताः। शीघ्रं भवन्तु ते॥१३८॥
त्वदागम परं धीरं ये मां तर्जयितुं बलात्।
मनसाप्यनु मन्यन्ते तस्यान्तं भवतु क्षणात्॥१३९॥
मनसा कर्मणा वाचा ये इच्छन्त्यति दुःसहम्।
ते मोहशोकरोगाब्धौ पतन्त्वाशु शिवाज्ञया॥१४०॥

जो जनद्रोही है, श्लाघा से कालोचित भाषण करते हैं, सत्यकर्म में विघ्न करने वाले हैं शान्ति भंग करने वाले हैं वे शालुवेश के हाथों के खड्ग से छिन्न शिर होकर भूतल पर गिर जायें और तत्क्षण उनके प्राण प्रयाण कर जायँ। तुम्हारे चरणों के ध्यान से जिन साधकों के पापकोश नष्ट हो चुके हैं उनके द्वेषियों का वैभव नष्ट हो जाय। जो साधक नित्य सदाचार निरत है उन पर जो अविवेकी युद्ध में आक्रमण

करता है वह पराहत हो जाय। जो विजय के लिये आतुर तुम्हारे मार्ग से नहीं चलते हैं और परिवाद बोलते हैं। वे शीघ्र भ्रान्त हो जाय। तुम्हारे आगम के अनुसार चलनेवाले जिस धीर को बलपूर्वक डाँटते हैं या मन से भी उसका विरोध करते हैं उनका अन्त तत्क्षण हो जाय। तुम्हारे भक्त के विरुद्ध मन कर्म वचन से जो दुःसह इच्छा करते हैं वे मोहशोक रोग सागर में शिव की आज्ञा से गिर पड़े।

मदीयानि पदार्थानि ग्रहीतुं योऽवलोकते।
तत्क्षणादेव नष्टाक्षो भवत्वेव शिवाज्ञया॥१४१॥
मदीयं द्रव्यमादाय ये गच्छन्तीह तस्कराः।
सिंहारिपाशसम्बद्धास्ते गच्छन्तु प्रदक्षिणम्॥१४२॥
सीमान्तगाश्च ये चौरा ग्रहीत द्रव्या संचयाः।
अवशावयवास्ते तु आगच्छन्तु शिवाज्ञया॥१४३॥
तस्करा निम्नगाः गीताः खातधान्य-धनादिकाः।
पक्षिराजाङ्कुशाकृष्टाः समागच्छन्तु ते द्रुतम्॥१४४॥
समाहृताः पदार्थाः देशातीताश्च तस्कराः।
शरभेश हलाकृष्टास्ते आगच्छन्तु शानुगाः॥१४५॥
चौराः ग्रहीतुमुद्युत्काः समागच्छन्ति मद्गृहे।
ते शालुवेशपक्षोग्र-वातैर्गच्छन्तु सत्वरम्॥१४६॥
शान्तं विवेकिनं भक्तं त्वदंघ्रिध्यान तत्परम्।
ब्रुवन्ति येऽसहं प्रांणास्तेषां यान्तु यमीपुरम्॥१४७॥

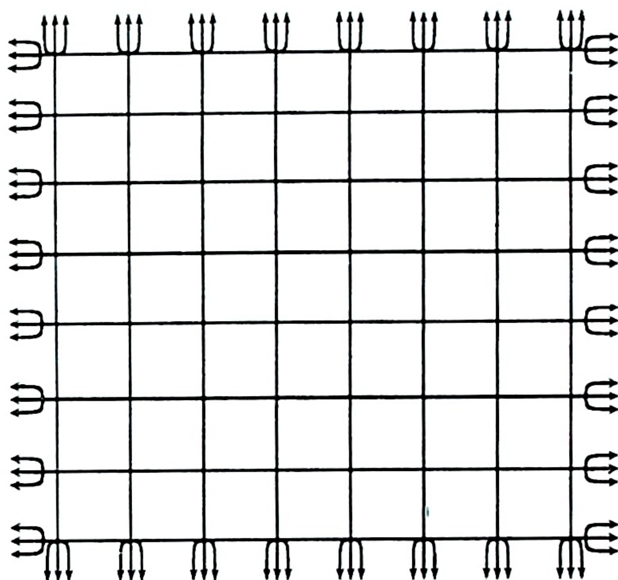
अपने पदार्थों को ग्रहण करते हुए मुझे जो देखे वह शिवाज्ञा से तत्क्षण अन्धा हो जाय। जो तस्कर मेरा धन लेकर जाय उसे मार्ग में सिंह खा जाय, या शत्रु उसे रस्सी से बाँधकर ले जाय, मेरे संचित धन को लेकर जो चोर सीमान्त में चला जाय वह शरीर से अवश होकर शिव की आज्ञा से लौट आये। जो तस्कर अतीत में धान्य आदि लेकर गाड़ दिया हो वह धन पक्षिराज के अंकुश से आकृष्ट होकर तुरत वापस मेरे पास आ जाय। जो तस्कर धन लूट कर दूसरे देश में चले गये हों वे सब शरभेश के हल से आकृष्ट होकर मेरे पास चले आये। जो चोर

मेरे घर में चोरी करने के लिये आये वे सब शालूवेश के पंखों की हवा से तुरत उड़ जाय। शान्त-विवेकी तुम्हारे चरणों के भक्त को जो असह्य बात कहे उसके प्राण यम लोक में चले जायँ।

षट् त्रिंशत् कोष्टके यन्त्रे रेखाशूलाग्रमध्यगे।
स्वेच्छा मन्त्रं लिखित्वा तु जपेदाराध्यसाधकः॥१४८॥

छत्तीस कोष्ठों का यन्त्र बनाकर उसके रेखाग्रो में त्रिशूल बनावे। उसमें स्वेच्छा मन्त्र लिखकर आराध्य का ध्यान करते हुए जप करे।

यन्त्र



उदङ्मुख सहस्त्रं तु स्वरक्षायै जपेन्निशि।
नष्टाहरणके पञ्चरात्रं पश्चिमदिङ्मुखः॥१४९॥
मारणे सप्तरात्रं तु दक्षिणाभिमुखो जपेत्।
रोगानिग्रहणं चाष्ट रात्रमाग्नेय दिङ्मुखः॥१५०॥
इति गुह्यं महामन्त्रं परमं सर्वार्थसिद्धिदम्।
शरभेश्वराख्यकवचं चतुर्वर्गफलप्रदम्॥१५१॥
प्रत्यहं प्रतिपक्षं तु प्रतिमासमथापि वा।
यो जपेत्प्रतिवर्षं वा वरेण्यं सशिवो भवेत्॥१५२॥

एवं च जपतः पुंसः पातकञ्चोपपातकम्।
सर्वं विलयमाप्नोति रविणा तिमिरं यथा॥१५३॥
दशाब्दं यो जपेन्नित्यं प्रातरुत्थाय साधकः।
सर्वं सिद्धिसमाश्रित्य देहान्ते स शिवो भवेत्॥१५४॥
त्रिकालं ध्यान पूर्वं तु जपेत् द्वादश वार्षिकम्।
कायेनानेन वै देवि जीवन्मुक्तो भवेत्तु सः॥१५५॥

अपनी रक्षा के लिये रात में उत्तर की ओर मुख करके एक हजार जप करे। नष्ट वस्तु प्राप्ति के लिये पाँच रातों में पश्चिम दिशा में मुख करके एक हजार मन्त्र जप करे। मारण के लिये दक्षिण की ओर मुख करके सात रातों तक जप करे। रोग निग्रह के लिये आग्नेय दिशा में मुख करके, आठ रातों तक जप करे। ये गुह्य महामन्त्र परम सर्वार्थ सिद्धिदायक है। शरभेश्वर नामक कवच चतुर्वर्ग फल देने वाला है। इस कवच का पाठ प्रतिदिन या प्रतिपक्ष अथवा प्रत्येक माह अथवा प्रत्येक वर्ष में जो करता है वह शिव के समान वरेण्य हो जाता है।

इस प्रकार जो मनुष्य जप करता है उसके पातक या उपपातक सभी सूर्योदय के बाद अन्धकार के समान भाग जाते हैं। दश वर्षों तक सवेरे उठकर जो साधक प्रतिदिन जप करता है। उसे सभी सिद्धियाँ मिल जाती है और देहान्त होने पर वह शिव हो जाता है। बारह वर्षों तक तीनों सन्ध्याओं में जो ध्यान करके जप करता है, वह इसी शरीर से जीवन मुक्त हो जाता है।

शतवारं जपेन्नित्यं मण्डलं यो वरानने।
सोऽणिमादि गुणान्प्राप्य विचरेत्स्वेच्छया सदा॥१५६॥
अतलादिधरण्यादि भुवनानि चतुर्दश।
विचरेत्कामवत्सर्वैः पूज्यमानो यथा सुखम्॥१५७॥
त्रिमासं यो जपेन्नित्यमष्टोत्तरसहस्रकम्।
सहसा शरभेशस्य स्वरुपं लभतेऽम्बिके॥१५८॥
संण्माष यो जपेन्नित्यं प्रयतः सुदृढ़व्रतः।
मद्रूपधारकैर्मर्त्यैः सह सिद्धिप्रदायकः॥१५९॥

मम लोके च सम्पूज्यो विष्णुलोके तथैव च।
ब्रह्मलोके च रमते सर्वत्र न निर्वायते॥१६०॥
इन्द्राग्नियमयक्षेश जलेश पवनैस्सदा।
सोमेशानन्त लक्ष्मीशैर्दिशां पालैश्च पूज्यते॥१६१॥
आदित्य सोम पृथ्वीज बुध श्रीगुरुभार्गवैः।
पूज्यते सग्रहैस्सर्वै सशनिराहुकेतुभिः॥१६२॥
क्रत्वंगिरः पुलस्त्यैश्च पुलहात्रिमरीचिभिः।
दश काश्यप भृग्वादि योगिभिश्च प्रपूज्यते॥१६३॥
भैरवैर्वसुभिर्रुद्रैरादित्यै गणपत्यकैः।
दिग्गजैश्च महानागैर्दिव्यास्त्रैर्दिव्यवाहनैः॥१६४॥
माहेश्वरैर्महारत्नैः कामधेनु सुरद्रुमैः।
सरिद्भिस्सागरैः शैलैर्देवताभिस्तपोधनैः॥१६५॥
दानवैः राक्षसैः क्रूरैः सिद्धगन्धर्व किन्नरैः।
राक्षैर्विद्याधरैर्नागैरप्सरोभिश्च पूज्यते॥१६६॥

जो प्रतिदिन इस कवच का पाठ सौ बार चालिस दिनों तक करता है वह अणिमादि आठ सिद्धियों से युक्त होकर इच्छानुसार विचरण करता है। अतलादि-भूलोकादि चौदह भुवनों में इच्छानुसार विचरण करता है और सभी लोकों में पूज्य हो जाता है।

हे पार्वती! तीन महीनों तक प्रतिदिन जो एक हजार आठ पाठ करता है वह अचानक शरभेश्वर का रूप प्राप्त कर लेता है। छ महीनों तक जो प्रातः सुदृढ़ व्रत होकर एक हजार आठ जप करता है वह मनुष्य मुझ शिव के समान सिद्धि प्रदायक हो जाता है। वह मेरे शिव लोक में जो पूज्य होता ही है विष्णु लोक और ब्रह्म लोक में भी सर्व. निर्वाध रमता रहता है। इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, सोम, ईशान, अनन्त, विष्णु, दिशा के पालक उसकी पूजा करते हैं। सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु सभी पूजते हैं। क्रतु, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, अत्रि, मरीचि, दश काश्यप भृगु आदि योगी भी पूजा करते है। भैरव वसु, रुद्र, आदित्य, गणपति, दिग्गज, महानाग दिव्यास्त्र दिव्य वाहन माहेश्वर महारत्न, कामधेनु कल्प वृक्ष

सरिता सागर पर्वत देवता तपस्वी, दानव, राक्षस, क्रूर, सिद्ध, गन्धर्व, किन्नर, राक्षस, विद्याधर, नाग और अप्सराएँ भी उसकी पूजा करते हैं।

अपस्मारग्रहैर्भीमैः　हर्म्यस्थैर्ब्रह्मराक्षसैः।
वैतालैर्खेचरैर्मर्त्यैः　कूष्माण्डैः　राक्षसग्रहैः॥१६७॥
ज्वालावक्रैस्तमोहारैः　स्त्रीग्रहैः　पापसंग्रहैः।
भूतप्रेतपिशाचाद्यैः　ग्रहैः　सर्वैः　संपूज्यते॥१६८॥
ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैः शूद्रैरन्यैश्च जातिभिः।
पशुपक्षिमृगैर्व्यालैः　पूज्यते　सर्वजन्तुभिः॥१६९॥
किमन्य बहुनोक्तेन तव वक्ष्ये यथातथम्।
मया च विष्णुना चैव विश्वकर्ता च पाल्यते॥१७०॥
भवान्या च गिरा लक्ष्म्या ब्रह्माण्याद्यष्ट मातृभिः।
गणेश्वरादियोगीन्द्रैः योगिनीभिः स पाल्यते॥१७१॥
य इदं पूजते भक्त्या नासाध्यं तस्य विद्यते।
कवचेन्द्रं　महामन्त्रं　जपेदस्याः　अनुत्तमम्॥१७२॥
उच्चाटने　मरुद्वक्त्रो　विद्वेषो　राक्षसाननः।
प्रागाननोऽभिबृद्धौ तु सर्वेष्वीशानजिङ्मुखः॥१७३॥
पठेत् स कवचं देवि ध्याननिष्ठं तु पूर्वकम्।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति　सहसा　साधकोत्तमः॥१७४॥
देव　देव　महादेव　शिव　कारुण्यवारिधे।
पाहि मां प्रणतं स्वामिन् प्रसीद सततं मम॥१७५॥
यत्कृतं तन्न कृत्यं, यदकृत्यं, तदकृत्यवदाचरितम्।
उभयोः प्रायश्चित्तं शिव तव नामाक्षर द्वयोच्चरितम्॥१७६॥

भयंकर अपस्मार ग्रह, हर्म्यस्थ ब्रह्मराक्षस, वेताल खेचर, मर्त्य, कुष्माण्ड राक्षस, ग्रह, ज्वालामुख, तमोहारी स्त्री ग्रह, पाप संग्रह भूत-प्रेत, पिशाच आदि ग्रह सभी उसकी पूजा करते हैं। ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र और अन्य जाति के पशु, पक्षी, मृग, व्याल आदि सभी जन्तु उसकी पूजा करते हैं। बहुत क्या कहा जाय तुमसे यथा तथ्य कहता हूँ। वह शरभेश्वर मेरा, विष्णु का और विश्वकर्ता ब्रह्मा का भी पालन करता है। भवानी सरस्वती लक्ष्मी ब्राह्मी आदि अष्ट मातृकाओं, गणेश्वरादि,

योगी राजाओं और योगिनियों का भी पालन करते हैं। जो भक्ति से इस कवचेन्द्र महामन्त्र अत्युत्तम का जप करता है। उसके लिये कुछ भी असाध्य नहीं है। उच्चाटन में वायव्य मुख, विद्वेषण में नैऋत्य मुख, उन्नति के लिये पूर्वमुख, सभी सिद्धियों के लिये ईशान दिशा में मुख करके पाठ करे। ध्यान पूर्वक निष्ठा से जो साधकोत्तम कवच का पाठ करता है उसे अचानक सभी सिद्धियाँ मिल जाती है। प्रार्थना करे कि देवों के देव महादेव शिव करुणासागर मेरी रक्षा करो। मैं आपको प्रणाम करता हूँ। मुझ पर सर्वदा प्रसन्न रहिये। जो किया सो नहीं किया जो दिया वह आचरित है। दोनों का प्रायश्चित शम्भो तुम्हारे दो अक्षर के 'शिव' नाम के कहने से हो जाता है।

॥ *इति आकाशभैरवकल्पे शरभ कवच सम्पूर्णम्* ॥



आकाश भैरव कल्पः

गुरुं गणपतिं देवीं भैरवं शरभेश्वरम्।
नमस्कृत्य प्रवक्ष्यामि मन्त्रशास्त्रं विभूतये॥१॥
साङ्गं सलक्षणं वेदं सारभूतमभीष्टदम्।
ज्ञानदं जीवनं ज्ञानं साधकानां सुखावहम्॥२॥

गुरु गणपति देवी भैरव शरभेश्वर को नमस्कार करके मन्त्र शास्त्र का वर्णन विभूति प्राप्ति के लिये करता हूँ। यह अंगों और लक्षणों के सहित वेदो का सार अभीष्ट प्रद है। यह ज्ञानप्रद जीवन ज्ञान और साधकों के लिये सुखावह है।

श्री देव्युवाच

श्री शिवेशान देवेश श्रीनाथ जगतांपते।
श्री कुलाकुल चिद्रूप श्रीमते भवते नमः॥३॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुण्य भावेन रक्ष रक्ष महेश्वर॥४॥
यद् गुह्यं परमं लोके यच्छास्त्रमखिलप्रदम्।
यद्धितं साधकेन्द्राणां तद्वदस्व दयानिधे॥५॥

श्री देवी ने कहा—हे श्री शिव ईशान देवेश श्रीनाथ संसार के स्वामी श्रीकुल, अकुल के चित्त रूप श्रीमान आपको प्रणाम है। मेरे लिये अन्य कोई कारण नहीं है। तुम ही अकेले मेरा कारण हो। इसलिये करुणा भाव से महेश्वर मेरी रक्षा करो। जो संसार में परम गुह्य हो, जो शास्त्र सब कुछ देनेवाला हो, जिसे सभी श्रेष्ठ साधक धारण करते हों। हे दयासागर! उसे आप कहिये।

श्री शिव उवाच

श्रीमत्परम सौभाग्ये मन्त्रयन्त्रागमादिनाम्।
त्रयीणामुपवेदानां शृणु गुह्यतमं परम्॥६॥
महामन्त्रक्रियाशास्त्रं महासिद्धिप्रदायकम्।
सर्वदोषप्रशमनं पावनं लोकजीवनम्॥७॥

धर्मार्थकाममोक्षाणां फलदानं प्रगल्भितम्।
सर्वज्ञानप्रदं ब्रह्म ज्ञानदं ब्रह्मसम्मतम्॥८॥
तादृशं कल्पमागोप्यं सर्वदेवागमोद्भवम्।
शीघ्रं सिद्धिप्रदं श्रेष्ठं श्रृणु सर्वमथाम्बिके॥९॥
वक्ष्यमाणं महाशास्त्रं श्रृण्वतां पठतामपि।
तथा लोके यथा पुण्योपनीतानां विशेषतः॥१०॥
क्षिप्रसिद्धि प्रदं दिव्यं कथयामि जगन्मयम्।
प्रणम्य परया भक्त्या व्याख्यं यो वाऽवलोकते॥११॥
सहसा तस्य सौभाग्यं प्रश्रितं ज्ञानञ्च भूयकम्।
लब्धशिष्यः समुत्थाय विभाते देशिकं स्मरेत्॥१२॥
वक्ष्यमाणेन शास्त्रेण साध्यकर्म समाप्य सः।
यथा तथं पुरायुक्त एकान्ते भवते शुभे॥१३॥
यथाविधि समाविश्य भूतोच्चाटं चरेत् स्थितः।
अपसर्पन्तु ते भूताः ते भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥१४॥
इति जप्त्वा करास्फोटं त्रिधाघातं ततस्तथा।
ततो मन्त्र नमस्कृत्य लोकपालांश्च मण्डपम्॥१५॥
मुक्ता विद्रुम रत्नकान्त रुचिरं, हैमं विचित्रं परम्।
नाना दिव्यसुगन्धगन्धिनिवहं, नाना प्रसूनार्चितम्॥
पञ्चाशल्लिपिशोभितं परसुधा धाराभिरासेचितम्।
पञ्चानन्दमयं प्रपन्न सुखदं भद्रञ्च पीठं नुमः॥१६॥

श्री शिव ने कहा—मन्त्र, यन्त्र, आगमादि में तीनों वेदों और उपवेदों में श्री मत्परम सौभाग्य में जो गुह्यतम है उसे सुनो। यह महामन्त्र क्रिया शास्त्र महासिद्धि प्रदायक, सभी दोषों को दूर करने वाला, पवित्र, लोक जीवन तथा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष फलदान प्रगल्लभित, सर्वज्ञानप्रद ब्रह्मज्ञान, ब्रह्म सम्मत, उसी के समान गोप्य कल्प, सभी देवागमों से उत्पन्न, शीघ्र सिद्धिप्रद और श्रेष्ठ जो है वह सब सुनो। इस शास्त्र को संसार में जैसे सुना जाता है और पढ़ा जाता है और विशेषकर पुण्यात्माओं के द्वारा जैसे किया जाता है उस शीघ्र सिद्धिदायक दिव्य जगन्मय शास्त्र को कहता हूँ। पराभक्ति से प्रणाम करके इस व्याख्या का

जो अवलोकन करते है उनका सौभाग्य प्रश्रित ज्ञान सहसा हो जाता है। इस ज्ञान को प्राप्त करके शिष्य प्रात: उठकर गुरु का स्मरण करे। वक्ष्यमाण शास्त्र के अनुसार साध्य कर्म समाप्त करके वह यथा तथा पुरा युक्त एकान्त शुभ भवन में यथा विधि बैठकर भूतोत्सारण करे। भूतोत्सारण के लिये यह मन्त्र पढ़े—

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया।।

इस मन्त्र को पढ़ने के बाद तीन चुटकी बजाकर बायीं एँड़ी को पृथ्वी पर तीन बार पटके। तब मण्डप में लोक पालों को मन्त्र से प्रणाम करे। तब मण्डप में मोती, मूँगा, रत्नकान्त, रुचिर, स्वर्णयुक्त परम विचित्र, नाना दिव्य सुगन्ध से सुगन्धित, नाना फूलों से अर्चित, अं से क्षं तक पचास अक्षरों से युक्त, पर सुधा धारा से सिंचित, पाँचो आनन्द से युक्त, प्रसन्न सुखद पीठ को प्रणाम करे।

ब्रह्म नमाम्यहं, ब्रह्मरन्ध्रे यजेन्नाथ ब्रह्मानन्दमय विभुम्।
परं पराक्रमेणैव गन्धपुष्पाक्षतादिभिः।।१७।।
चिरं ध्यात्वा ततो देवीं भूतशुद्धिं यथाविधिः।
ऋषिं न्यासादिकंक कुर्यात् प्रसन्नात्मा यथाविधि।।१८।।
सर्वंकार्यार्थ सिद्धयेच सर्व विघ्न निवृत्तये।
पञ्चधार्णोकविंशेन यजेद् वैनायकं पुनः।।१९।।

ब्रह्मरन्ध्र में ब्रह्मानन्दमय विभु नाथ को 'ब्रह्म नमाम्यहं' मन्त्र से प्रणाम करे। परम पराक्रम से गन्ध पुष्प अक्षत से यजन करे। देर तक ध्यान करके यथाविधि भूत शुद्धि करे। ऋष्यादि न्यास करे। सभी कार्यों की सिद्धि और विघ्न निवृत्ति के लिये प्रसन्नता से यथा विधि गणेश का अर्चन एकइश नामों से पाँच बार करे।

।।इत्याकाशभैरवकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसम्वादे शंकरेण विराजित उल्लास प्रकरणे नाम प्रथमोऽध्यायः।।



श्री गणेश पूजन

अथ विघ्नविनाशाय मन्त्रिणां सर्वसिद्धये।
गणेशाराधनं वक्ष्ये सर्वकामफलप्रदम्।।
पीठासने अष्टपत्रेऽब्जे नवशक्तिगणेशितुः।
प्रागादितो यजेद्देवीं नवमीकर्णिकान्तरे।

विघ्न विनाश और साधकों की सर्व सिद्धि के लिये गणेश पूजन को कहता हूँ। पीठ पर अष्टदल कमल बनाकर गणेश की नव शक्तियों की पूजा पूर्वादिक्रम में दलों में और कणिका में नवमी शक्ति की पूजा करे।

श्री शिव उवाच !

अथ विघ्नविनाशाय मन्त्रिणां सर्वसिद्धये।
तीव्रं च ज्वालिनीं नन्दां भोगतां कामरूपिणीम्।।१।।
उग्रां तेजोवतीं सत्यान्ततो विघ्नविनाशिनीम्।
रक्तांगरासवसनां माल्याभरणभूषिताम्।।२।।
वराभीति करास्सर्वाप्रसूनादिभिरर्चयेत्।
तस्योपरि महाचक्रं कल्पयित्वा यथाविधि।।३।।

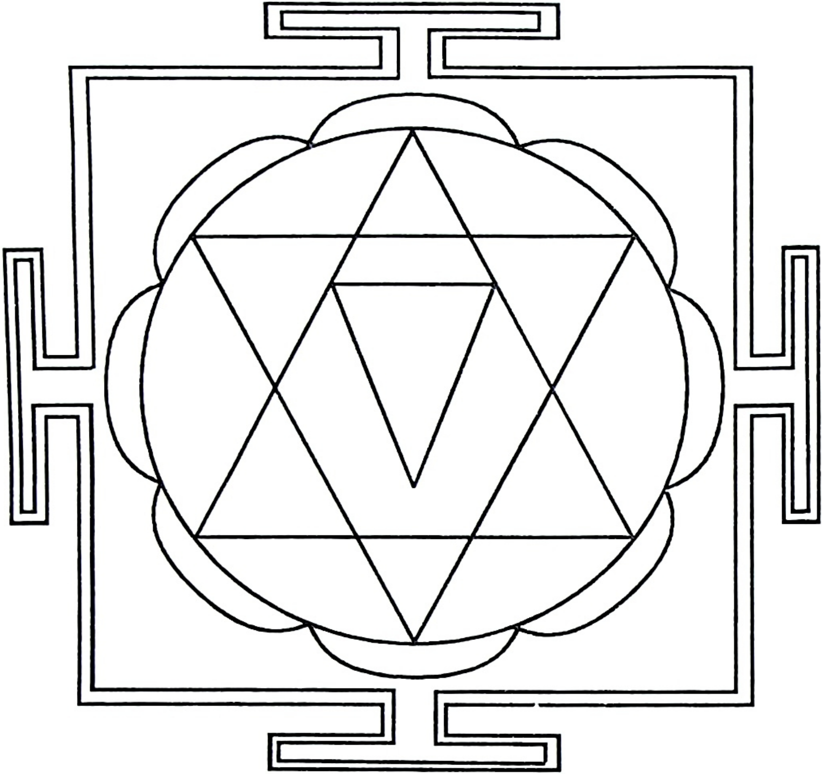
अष्टदलों में तीव्रा, ज्वालिनी, नन्दा, भोगदा, कामरूपिणी, उग्रा, तेजोवती और सत्या, इन आठ की पूजा करे। नवमी विघ्नविनाशिनी की पूजा कर्णिका में करे।

इनका ध्यान—

रक्तां रागवसनां माल्याभरणभूषिताम् वराभीति करास्सर्वा।

इनकी पूजा गन्धाक्षत पुष्पों से करे उसके ऊपर गणेश महाचक्र को विधिवत् बनावे।

पूजन यन्त्र



आवाहनादिपूजान्तं कृत्वा नत्वाथ पञ्चधा।
गुरुं प्रथममाराध्य पारम्पर्यविधानतः॥४॥
विघ्नेश्वरं सावरणं विभुं सच्चिन्मयं यजेत्।
आराध्य योऽखिलान्देवान् एक चत्वारि पञ्चभिः॥५॥
जपेदस्य त्वरं सिद्धिं तन्वन्त्यखिलदेवताः।
बिम्बौ गणेश्वरं लक्ष्मीं त्रिकोणाद्दिक्षुबाह्यतः॥६॥
श्रियञ्च श्रीपतिं पूर्वे अम्बिकामम्बिकापतिम्।
दक्षिणेऽथ रतिं कामं पश्चिमे चोत्तरे ततः॥७॥
मही महिपतिं चैव भूयो लक्ष्मीं गणेश्वरम्।
परितो ऋतु कोणाग्रमादितस्तान्यसेत्क्रमात्॥८॥

ऋद्ध्यामोदौ समृद्धिं च प्रमोदं कान्ति सौमुखौ।
मदनं रतिञ्च सम्पूज्य दुर्मुखञ्च ततः परम्॥९॥
मद द्रुवामपि विघ्नद्रावणीं विघ्नकारकम्।
वसुधारां शंखनिधिं बाह्ये दक्षिण पार्श्वके॥१०॥
वसुमतीं पद्मनिधिं वाम पार्श्वे यजेत्ततः।
पावकेशान दैतेय पवमान मुखाः शिवाः॥११॥
पीठासनेष्टपत्रेतु नवशक्तिर्गणेशितुः।
प्रागादितो यजेद्देवं नवमं कर्णिकान्तरे॥१२॥
अङ्गजेवीर्यजे चाष्ट पत्रे प्रागादि मातृकाः।
लोक पालान्ततः पश्चात् यजेद्दिक्षु यथा क्रमम्॥१३॥
पञ्चाशदक्षराधीशान् ततः पाशांकुशे यजेत्।
चक्रराजं महीकोण द्वन्देन परिवेष्टितम्॥१४॥

यन्त्र के मध्य विन्दु में गणपति की आवाहनादि पूजा करे। पाँच बार प्रणाम करें। पहले गुरु की पूजा करे। प्रथम आराध्य परम्परा विधान से आवरणों सहित विघ्नेश्वर विभु सच्चिन्मय की पूजा करे जो सभी ५४१ पाँच सौ एकतालिस आराध्य देवता है उनकी पूजा करे। शीघ्र सिद्धि सभी देवता देते है।

त्रिकोण के मध्य बिन्दु में गणेश लक्ष्मी की पूजा करे। त्रिकोण के बाहर दिशाओं में से पूर्व में लक्ष्मी लक्ष्मीपति विष्णु की, दक्षिण में पार्वती शिव की, पश्चिममें रति-काम की और उत्तर में भूमि और भूमिपति वराह रूपी लक्ष्मी गणेश्वर की पूजा करे।

इसके बाहर षटकोण में अपने आगे से शुरू करके क्रमशः ऋद्धि आमोद, समृद्धि, प्रमोद, कान्ति, सुमुख, मदनावति, दुर्मुख, मदद्रवा विघ्न और द्राविणी विघ्नकारक की पूजा करे।

त्रिकोण के बाहर दक्षिण पार्श्व में वसुधारा शंख निधि और वाम पार्श्व में वसुमति पद्मनिधि की पूजा करे। अग्नि, ईशान, नैर्ऋत्य, वायव्य, पूर्व आदि दिशाओं में षडंग पूजन करे।

अष्टदल में पूर्वादि क्रम से ब्राह्मी आदि आठ मातृकाओं की पूजा करे। भूपुर की प्रथम रेखा में इन्द्रादि लोकपालों की पूजा करे।

भूपुर की दूसरी रेखा में पचाश अक्षरों के अधिदेवताओं की पूजा करे। तब पाशांकुश की पूजा करे।

चिरं ध्यात्वा गणेशं च गणेशाभिमुखस्थितः।
गन्धमाल्यैस्समभ्यर्च्य धूपदीपादिभिर्यजेत्॥१५॥
हृत्वा तदर्घ्यमात्माग्नौ शतवाराभिमर्षितम्।
आत्मन्युद्वास्यदेवेशं मस्तकाराधनं यजेत्॥१६॥
सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो विनायकः॥१७॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
वक्रदन्तः लम्बकर्णो हेरम्बस्स्कन्दपूर्वजः॥१८॥

देर तक ध्यान करके गणेश के सामने बैठकर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य से पूजा करे। आत्म अग्नि में हवन करके अर्घ्य आदि देकर उस जल से सौ बार अपने को अभिमर्जित कर देव का उद्वासन अपने हृदय में करके शिर की पूजा गणेश के निम्नलिखित नामों से करे।

सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो विनायकः॥१७॥
धूम्रकेतुः गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
वक्रतुण्डः लम्बकर्णो हेरम्बः स्कन्दपूर्वजः॥१८॥
षोडशेतानि नामानि यः पठेत्छृणुयादपि।
एवं स्तुत्वाविघ्नराजं देवीमिष्ट्वा यथाविधि॥१९॥
सवने तत्रतस्ताने यजेदाकाशभैरवम्॥२०॥

इति आकाश भैरव कल्पे यजन विधानं नाम द्वितीयोऽध्यायः।

इन सोलह नामों का जो पाठ करता है या सुनता है उसे विघ्न नहीं होते। इस प्रकार विघ्न राज की स्तुति करके आकाश भैरव की पूजा करे।

॥इति गणेशयजन॥



आकाश भैरव कल्प में उत्साह यजन

श्री शिव उवाच

रहस्यं शृणु कल्याणि भैरवस्य महात्मनः।
सर्वलोकैक रक्षार्थं तव वक्ष्यामि तत्वतः॥१॥
यदा लोकहितार्थाय लीलयाकाशभैरवः।
त्रिधा विभज्य चात्मानं रक्षते सर्वदाखिलम्॥२॥
आकाशभैरवं पूर्वं द्वितीयञ्चाशुगारुडम्।
शरभं तु तृतीयं स्यात् रूपत्रयमिहोच्यते॥३॥
तत्र तार्तीय रूपस्य त्रिधा रूपविशेषतः।
शरभं शालुवञ्चैव पक्षिराजं तृतीयकम्॥४॥
तत्र मूलत्रिरूपेषु यजेदेकं यथादृढम्।
आदिदेवोऽस्य मन्त्रस्य विद्यादिरिहोच्यते॥५॥
तथा छन्दस्तु जगती देव आकाशभैरवः।
प्रणवं मां च मायाञ्च बीजशक्तिश्च कीलकम्॥६॥
स्वेच्छा कार्यार्थ सिद्ध्यर्थे विनियोगोऽथ मायया।
कराङ्गन्यासजालानि क्रमात् कृत्वाथ ध्यायताम्॥७॥

श्री शिव ने कहा—हे कल्याणी! भैरव महात्मन का रहस्य सुनो। सभी लोकों की रक्षा के लिये इसे तत्वतः कहता हूँ। सभी लोकों के कल्याण के लिये आकाश भैरव ने लीला में अपने को तीन रूपों में प्रकट किया। उनका पहला रूप आकाश भैरव है, दूसरा रूप आशु गरुड़ है तथा तीसरा रूप शरभ का है। तीसरे रूप से उन्होंने तीन रूप बनाया। पहला रूप शरभ है। दूसरा रूप शालुव है और तीसरा रूप पक्षिराज है। यहाँ मूल तीन रूपों में से एक ही रूप की पूजा दृढ़ता से करे।

विनियोग–अस्य आदि देवस्य मन्त्रस्य विद्या ऋषिः। जगती छन्दः देव आकाश भैरवः। ॐ मां, ह्रीं बीज, शक्ति कीलकम् स्वेच्छाकार्यसिद्ध्यर्थे विनियोगः। ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः से करन्यास और हृदयादि षडंग न्यास करे। तब ध्यान करे।

अथ ध्यानम्

नाना हेति सहस्रबाहुसहितं नानायुधैः शोभितम्।
नानावर्णसहस्रपादकमलं नाना वसालंकृतम्।
नानानागविभूषणं पृथुतरग्रीवं सहस्राननम्।
नानारातिहरं करालवसनं नौम्यावसानं शिवम्।।८।।

नाना अस्त्रों से युक्त हजार हाथों में नाना प्रकार के आयुध हैं। नाना वर्ण के हजार चरण कमल हैं। नाना वस्त्रों से अलंकृत हैं। विविध नागों से विभूषित हैं। गर्दन मोटे हैं। हजार मुख हैं। विविध दुखों को दूर करनेवाले भयंकर मुख हैं। ऐसे अवसान शिव को हम प्रणाम करते हैं।

एवं ध्यात्वा ततो मन्त्रं षोडशाक्षररूपकम्।
जपेद्गुरुमुखाल्लब्ध्वा लक्षं सर्वाङ्गसंयुतम्।।९।।

इस प्रकार का ध्यान करके गुरुमुख से लब्ध सोलह अक्षरों के सर्वांग संयुत मन्त्र का एक लाख जप करे।

भूकोण वृत्तान्तर वह्निकोणं संपादितं कल्पयथा विधानम्।
आराधितत्स्थानखिलोपचारैराराधयेतद्दिशिवाह्यदेशे ।।१०।।
तत्कोणमध्ये सकलोपचारैस्ततो जपेन्मन्त्रमभीष्टसिद्धये।
यामार्धकालार्जितकार्यजाते प्रादुर्भवत्यम्बरभैरवस्वयम्।।११।।
निवेद्यतस्याखिलमात्मनाथं कृत्वाथदास्यं प्रणिपत्य तिष्ठन्।
श्रीरुद्र सूक्तं प्रजपेत्त्रिवारं तथाखिलेशः परितुष्ट हृत्स्यात्।।१२।।

चतुष्टयेन तं पश्येद पाङ्गेन दयापरः।
सप्तकेन लभेत्पूर्ण वीक्षणं भाषणं तथा।।१३।।
एकादशेन वाक् सिद्धिर्षोडशेनामरत्वकम्।
अष्टादशेन सौभाग्यं चतुर्विंशेन निग्रहम्।।१४।।
अष्टाविंशेन देवत्वं त्रिंशेनेन्द्रत्वमाप्नुयात्।
चत्वारिंशेन वेधस्त्वं स्वर्गभेदञ्च सर्वसु।।१५।।
पञ्चाशतारमेशत्वं अष्टाशीत्यथ रौद्रकम्।
शतेन शिव सालोक्यं सहस्रेण स्वरूपकम्।।१६।।
सामीप्यमयुतेनैव नियुतेन विशेषतः।
लक्षेण शिवसायुज्यं चमकं तत्परं जपेत्।।१७।।

चमकोक्ताखिलं भाग्यं ददस्वाकाशभैरव।
सन्तुष्टहृदयस्तस्मै ददात्येव न संशयः॥१८॥
तेन श्रीरुद्रसूक्तेन शिवलिंगाभिषेचनम्।
कृत्वैकादशधा मन्त्रो पूजयेत्सर्वसिद्धये॥१९॥

इति आकाश भैरवकल्पे उत्साह यजनं नाम तृतीयोऽध्यायः॥

भूपुर में वृत्त बनावे वृत्त में त्रिकोण बनावे। कल्पोक्त विधान के अनुसार त्रिकोण में आकाश भैरव की पूजा आवाहनादि अखिल उपचारों से करे। तब अभीष्ट सिद्धि के लिये मन्त्र जप करे। आधा प्रहर जप के बाद स्वयं भैरव आकाश में प्रादुर्भूत हो जाते हैं। उनसे अपनी सभी इच्छओं को कहें, अपने को उनका दास मानकर बैठे। श्री रुद्र सूक्त का पाठ तीन बार करे। इससे अखिलेश सन्तुष्ट हो जाते हैं। रुद्रसूक्त के चार पाठ से साधक भैरव को देखता है। सात बार पाठ करने से उनका दर्शन होता है। बातचीत होती है। ग्यारह पाठ से वाक्सिद्धि और सोलह पाठ करने से अमरत्व की प्राप्ति होती है। अठारह पाठ से सौभाग्य मिलता है और चौबिस पाठ से निग्रह होता है। अठारह पाठ से देवत्व प्राप्त होता है। तीस पाठ से इन्द्रत्व प्राप्त होता है। चालिस पाठ से स्वर्ग और सर्वभेद प्राप्त होता है। पचाश पाठ से अमरत्व प्राप्त होता है। अठासी पाठ से रुद्रत्व प्राप्त होता है। सौ पाठ से शिव लोक प्राप्त होता है। एक हजार पाठ से शिवरूपत्व प्राप्त होता है। एक लाख पाठ से शिव सायुज्य प्राप्त होता है। इसके बाद चमकाध्याय पाठ करे तो इससे उसके उक्त सभी भाग्य आकाश भैरव देते हैं। पाठक के हृदय में सन्तोष मिलता है। इसमें कोई संशय नहीं है। रुद्र रूक्त से शिवलिंग का अभिषेक ग्यारह बार करके मन्त्रों से पूजा करे तो सभी सिद्धियों की प्राप्ति होती है।

॥इति उत्साह यजन॥



रुद्राभिषेक विधि

श्री शिव उवाच

अथ रुद्राभिषेकस्य विधिं वक्ष्यामितेऽम्बिके।
येनाखिलापराधं च क्षमते शृणु भैरवः॥१॥
समाप्य सान्ध्यकं कर्म ब्रह्मग्नीन्द्रमुपासकम्।
संगमानन्तरं गेहं मनोरम्यं प्रविश्य सः॥२॥
पूर्ववत्सकलं कृत्वा नमस्कृत्वा महेश्वरम्।
ततः पौरुषसूक्तेन पादार्चनशिखादिकम्॥३॥
मातृका सहितेनैव न्यसेत्सव्यापकं क्रमात्।
मण्डपं विरचेत् पश्चात् यत्नेनेति ऋचाक्षतम्॥४॥
सुगन्धगन्धिपयसा पूर्णकुम्भमलकृंतम्।
संस्पर्शन् प्रजपेन्मन्त्री व्याहृतीयुताम्॥५॥
वेदादिश्चतुरो मन्त्रान् आपोहिष्ठेति मन्त्रकम्।
आपोहेति महासूक्तं जप्त्वाभ्यर्च्य सुमादिभिः॥६॥

श्री शिव ने कहा—हे अम्बिके अब मैं तुम्हें अभिषेक की विधि बतलाता हूँ। इसके करने से सभी अपराध भैरव क्षमा करते हैं। साध्य ब्रह्मयज्ञ उपासना कर्म को समाप्त करके अपने मनोरम घर में प्रवेश करे। पूर्ववत सभी कर्म करके महेश्वर को प्रणाम करे। तब पुरुष सूक्त से पॉव से शिखा तक मातृकाओं के साथ न्यास करे। तब व्यापक न्यास करे। इसके बाद मण्डप में ऋचा पाठ करते हुए अक्षत छींटे। सुगन्धित द्रव्यों के साथ जल पूर्ण कलश को अलंकृत करे। उसे स्पर्श करके व्याहृति युक्त गायत्री का जप करे। वेदादि चार मन्त्र और आपोहिष्ठेत्यादि० नव, शन्नइन्द्रेति सूक्त, एतोन्विन्द्र ऋचो, तरत्समंदी चार पवस्व सोम सूक्त, आपो हेति महा सूक्त का जप करके अर्चन करे।

आपूर्य शंखमभ्यर्च्य इमम्मे गङ्ग इत्यृचं जपेत्।
ऋतं चेति ऋचं पश्चात्॥७॥
गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन्सन्निधौ भव॥८॥

इति जप्त्वा त्रिधामन्त्रं प्रोक्ष्योपकरणानि च।
ततः सह शीर्षेति देवमाबाह्यलिङ्गके।।९।।
यत्पुरुषेण हविषा मधुपर्कं ततश्चरेत्।
ततो विशेषं सूक्तेन स्नानं यज्ञमित्यृचा।।१०।।
श्रीरुद्र चमके नैव पञ्चशान्तिरतः परम्।
तस्मादिति ततो वस्त्रं तस्मादौतर्यकं तथा।।११।।
तस्मादित्युपवीतं च मूलेनाभरणानि च।
तत्पुरुषं इति गन्धं ब्रह्मा यज्ञेति पष्पकम्।।१२।।
चन्द्रमा मनसो धूपं नान्भ्यासीच्च दीपकम्।
सप्तास्या सन्निति ऋचख नैवेद्यमखिलाम्बितम्।।१३।।
अहमस्मि इति सक्तेन स्पृशञ्जप्त्वा ततः परम्।
परिषेचन मुख्यानिकृत्वा पुष्पेन संस्पृशन्।।१४।।
निवेदयेत्ततः पश्चात् मधुवात ऋते ऋचम्।
धरसि इति ततो धूपं श्रिये जातस्यु दीपकम्।।१५।।
यज्ञेनेति च ताम्बूलं त्र्यम्बकेन प्रसूनकम्।
सद्योजातेन छत्रन्तु वामदेवेति चामरम्।।१६।।
त्वमापो वषडिति च शंखं तीर्थं निवेदनम्।
व्यजनञ्च त्वघोरेभ्यो नीराजनं तदित्यथा।।१७।।
सर्वं समाचरेदेवं ईशान इति तर्पणम्।
नमस्कृत्वा ततस्तुत्वा त्रिधा स्वाद्यैरभिषेचनम्।।१८।।

शंख में जल भरकर इमम्मे गंगे ऋचा का जप करे। इसके बाद 'ऋतं चेति' ऋचा का जप तीन बार करे।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन्सन्निधि कुरु।

इस मन्त्र का तीन बार पाठ करे। पूजा उपकरणों का प्रोक्षण करे। तब सहस्रशीर्षेत्यादि से देव का आवाहन लिंग में करे। यत्पुरुषेण हविषा० से मधुपर्क अर्पण करे। यज्ञमित्य ऋचा से विशेषस्नान करावे श्री रुद्र पंचक और पंचशान्ति से स्नान करावे। तस्मादिति से वस्त्र तस्मादिति से उपवीत और मूलमन्त्र से आभरण समर्पण करे। तत्पुरुष से गन्ध, ब्रह्मा यज्ञेति से पुष्प, चन्द्रमा मनसो से धूप नाभ्यासीच्च से दीपक, सप्तास्या सन्निति ऋचा से नैवेद्य समर्पण करे। अहमस्मि सूक्त से

स्पर्श करके जप करे। मुख्य परिसेचन करके पुष्प से स्पर्श करे। उसे पुष्प को मधुवात ऋते ऋचा से निवेदित करे। धूरसि से धूप, श्रिये जातस्यु से दीपक यज्ञेनेति से ताम्बूल ताम्बक० से फूल, सद्योजात से छत्र, वामदेव से चामर त्वमापो वर्षदिति से शंख जल निवेदित करे। अघोरेभ्यो से आरती करे। इस प्रकार सब करके ईशान से तर्पण करे। नमस्कार करके स्तुति करे। घी, मधु, शक्कर से अभिषेक करे।

यथेष्टं प्रार्थ्य देवेशं स्वात्मन्युद्वास्य भैरवम्।
चिरं ध्यात्वा ततो मन्त्रीं सोऽहंसोऽहं मिति स्मरन्॥१९॥
गुरौः समीपमागत्य गन्धपष्पाक्षतादिभिः।
अभ्यर्च्य तत्पद द्वन्दं प्रक्षाल्य शुभवारिणा॥२०॥
तत् कं चरण सक्तेन प्रापेक्ष्येच्च स्वमूर्द्धनि।
ततस्तत्तीर्थमादाय स्मरन्मन्त्रं त्रिधा पिबेत्॥२१॥
श्रीसूक्तं घृतसूक्तं च भूसूक्तं पुरुषसूक्तकम्।
ब्रह्मसूक्तं विष्णुसूक्तं पञ्चरौद्रमतः परम्॥२२॥

यथेष्ट प्रार्थना के बाद अपने हृदय में देव का उद्वासन करे। देर तक ध्यान करके साधक सोऽहं सोऽहं का स्मरण करे। तब गुरु के समीप आकर गन्ध पुष्प अक्षत से पूजा करे। गुरु के दोनों पैरों को शुद्ध जल से धोकर उसके पैरों को पोछे। उस चरणोदक को अपने मस्तक पर छींटे। मन्त्र स्मरण करके तीन बार पान करे। श्री सूक्त, घृत सूक्त, भू सुक्त, पुरुष सूक्त, ब्रह्मसूक्त, विष्णु सूक्त, और पंच रौद्र का पाठ करे। अविद्या की जड़ के नाश के लिये जन्मकर्म से निवृति के लिये, ज्ञान सौभाग्य प्राप्ति के लिये गुरुचरणोदक शुभ है। तब गन्ध पुष्प आदि से देशिक की पूजा करे। जैसे धान से चावल अलग होता है वैसे ही गुरु चरणों को पूज कर सभी कल्मषों से रहिंत हो जाये।

॥इति अभिषेक विधि॥



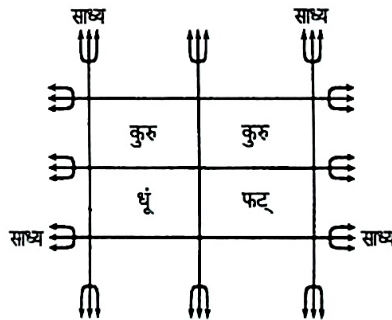
यन्त्र मन्त्र प्रयोग

श्री शिव उवाच

अथ यन्त्र प्रयोगं तु कल्याणि शृणुवच्मियहम्।
नाना सिद्धिप्रदं श्रेष्ठं नाना कार्यं जयप्रदम्॥१॥
विद्धयैनं तू त्रिमूर्द्धानां परिलिख्याभिवेष्ट्य तत्।
ऊर्ध्वं मूलं तन्मध्ये लिखेत्डिं कुरुटीति फट्॥२॥
सम्पूज्य विधिवद्देवमांबाह्याकाशभैरवम्।
तद्दलेष्विष्टमालिख्य स्थापयेत्तदविकोष्ठके॥३॥
तद्वाचकप्रकारेणं सिद्धयन्त्याश न संशयः।
निग्रहेऽनुग्रहे चैव तथा रोगहरे ज्वरे॥४॥
भूतप्रेतपिशाचेषु वैरिष्वपि च संकटे।

श्री शिव ने कहा—हे कल्याणि सुनो अब मैं यन्त्र प्रयोग कहता हूँ। ये श्रेष्ठ यन्त्र विविध सिद्धियों को देनेवाले है। अनेक कार्यों में विजय प्रदायक है। यन्त्र ऐसे बनाये।

यन्त्र



समान दूरी पर बाएँ से दाएँ तीन ओर ऊपर से नीचे परस्पर काटती हुई तीन रेखाओं को खीच कर चार कोष्ठ बनाये। रेखाओं के अग्रभाग में त्रिशूल बनावे। उसमें आकाश भैरव का आवाहन के लिए विधिवत पूजा करे। त्रिशूलों के आगे साध्य लिखे और स्थापित करे। इस स्थापित यन्त्र से निग्रह अनुग्रह सभी प्रकार के मनोरथों की सिद्धि होती है। इससे रोग ज्वर भूत प्रेत पिशाच और वैरियो का नाश होता है।

मरीचिं काश्यपं भानुतारकं वन्हिमारुतौ॥५॥
शंकराशुकरञ्चैव विन्दुञ्च तदनन्तरम्।
चिन्तामणिरिरिति ख्यातं सप्तकूट महामनुम्॥६॥

इन श्लोकों के उद्धार करने पर चिन्तामणि सप्तकूट मन्त्र बनता है। मन्त्र है 'क्ष्म्यों'। इस मन्त्र को कुछ टीकाकारों ने क्ष्म्यरयौं और कुछ ने क्ष्मरयीं, कुछ न क्ष्मर्यैं और कुछ ने क्ष्म्यां कहा है। यह चिन्तामणि मन्त्र; तन्त्र शास्त्रों में बहुत प्रसिद्ध यह सभी चिन्तित कामनाओं को पूरा करता है। इस एक रक्षामन्त्र के विविध संख्या में जप प्रयोगादि करने से नाना कार्य सिद्ध होते हैं।

हेमपत्रे तमालिख्य बाह्ये सम्पूज्य भैरवम्।
जप्त्वा सह कं कुर्यात् रक्षाबन्धं यथाविधिः॥७॥
तेन सर्वसमृद्धिं च सर्वकार्यजयं लभेत्।
अयुतेन वशीकारं नियुतेन धनागमम्॥८॥
चत्वारिंशेन वाक्सिद्धिं मोहनञ्चतुरुत्तरात्।
पञ्चाशता जगच्छोभं षष्ठ्या कर्षणमद्भुतम्॥९॥
उच्चाटनन्तु सप्तत्या नवत्यास्तम्भनं भवेत्।
निग्रहं षण्णवत्यातु लक्षेणाखिल दर्शनम्॥१०॥
सप्त लक्षेण देवेशि सर्वाभीष्टं लभेत्ध्रुवम्।
चिंतामणि महामन्त्रं चिन्तितार्थ प्रदायकम्॥११॥
एकाक्षरं महावीर्यं यत्नेनापि जपाम्बिके।
यन्त्ररूपेण मन्त्रञ्च मन्त्ररूपेणयन्त्रकम्॥१२॥
मन्त्रयन्त्राक्षरं तस्मात् क्षिप्रं सिद्धिप्रदं भवेत्।

स्वर्ण पत्र पर इस मन्त्र को लिखकर भैरव की पूजा करके एक हजार जप कर रक्षाबन्धन करे तो सभी प्रकार की समृद्धि मिलती है। और सभी कार्यों में जीत होती है। दश हजार जप से वशीकरण होता है। एक लाख जप से धन मिलता है। चालिस हजारजप से वाक्सिद्धि होती है। चौवालिस हजार जप से मोहन होता है। पचाश हजार जप से संसार में क्षोभ होता है। साठ हजार जप से अद्भुत आकर्षण होता है। सत्तर हजार जप से उच्चाटन होता है। नब्बे हजार जप से स्तम्भन होता है। छयानबे हजार जप से निग्रह होता है। एक लाख जप से सब कुछ

देखने की शक्ति मिलती है। सात लाख जप से सभी मनोरथ पूरे होते है यह निश्चित है। चिन्तामणी मन्त्र चिन्तितार्थ प्रदायक है। एकाक्षर मन्त्र महावीर्यवान होता है। अतः यत्नपूर्वक जप करना चाहिये। यह यन्त्र रूप का है मन्त्र है और मन्त्र रूप का यन्त्र है। मन्त्र यन्त्राक्षर होने के कारण शीघ्र सिद्धि प्रदायक है।

कामराज मन्त्र क्लीं

ब्रह्माणं वसुधां विष्णुं मायां विन्दुं समुद्धरेत्॥१३॥
कामराजमिति ख्यातं चतुष्कूटमनुत्तमम्।
महामनुं तु तेनैव विद्धि तं यन्त्ररूपकम्॥१४॥
तस्मिन्मन्त्रे महायन्त्रे देवमाकाशभैरवम्।
आवाहनेन सम्पूज्य जपेदेकाग्रमानसः॥१५॥
चतुः सहस्रं वश्याय भर्तृस्त्रीणामथायुतम्।
सेनापुरयुतं राज्ञः प्रयुतन्तुविधिर्नृणाम्॥१६॥
देवतानां चतुः षष्ठि मुनीनां सप्त सप्ततिः।
हरेरशीतिं नवतिं विष्णोर्लक्ष तु वेधसम्॥१७॥
चतुर्लक्षं महेशस्य सर्वंयजन पूर्वकम्।
सर्वेह्यनेनमन्त्रेण प्रीता सिद्धिप्रदा नृणाम्॥१८॥

श्लोक तेरह के उत्तरार्द्ध का उद्धार करने पर चतुष्कूटात्मक कामराज मन्त्र 'क्लीं' होता है। इस महामन्त्र को भी यन्त्ररूप माने। इस मन्त्र रूपी महायन्त्र में देव आकाश भैरव का आवाहन करके पूजा करके एकाग्र मन से चार हजार जप करने से पति का वशीकरण होता है। दश हजार जप करने से स्त्री का वशीकरण होता है। सेना सहित राजा को वश में करने के लिये दश लाख जप विधिवत करे। चौंसठ हजार जप से देवता, सत्तर हजार जप से मुनि का, अस्सी हजार जप से शिवजी, नब्बे हजार जप से विष्णु, एक लाख जप से ग्रहों को देखने की शक्ति, चार लाख जप से महेश को वश में करने की शक्ति प्राप्त होती है। ये सभी कार्य पूजन पूर्वक जप से होते हैं। यह मन्त्र मनुष्यों के लिये सभी का प्रीति दायक और सिद्धि देनेवाला है।

अनन्तञ्च बृहद्भानुर्नारायणमथापरम्।
महामायां ततो विन्दुं संयोज्याशेषुद्धरेत्॥१९॥

महामायेति विख्याता चतुष्कूटाक्षरात्मिका।
तत्कूटं मन्त्र यन्त्राख्यं सर्वकार्यार्थ सिद्धिदम्॥२०॥
तस्मिन्नावाह्य देवेशमिष्ट्वा पञ्चसहस्रकम्।
मोहनाय जपेन्मन्त्रं जन्तूनामयुतं नृणाम्॥२१॥
स्त्रीणां द्वादश साहस्रं नियुतं रोगशान्तये।
पञ्चविंशति साहस्रं द्रव्यलाभाय मानुषः॥२२॥
त्रयस्त्रिंशत्सहस्रं तु पुत्रलाभाय योषिताम्।
सप्तत्रिंशत्सहस्रं तु महावैरस्य शान्तये॥२३॥
षट्चत्वारिंशत्सहस्रं तु सर्वाकर्षणसिद्धये।
अष्टाशीति सहस्रं तु देवताकर्षसिद्धये॥२४॥
सप्तनवति साहस्रं सर्वं सौभाग्यसिद्धये।
सर्वस्तम्भाय लक्षं तु मारणाय द्विलक्षकम्॥२५॥
चतुर्लक्षं प्रसादाय पञ्चलक्षं विशेषतः।
इन्द्रत्वं दशलक्षेण त्रिंशल्लक्षेण तत्वकम्॥२६॥
षष्ठि लक्षेण विष्णुत्वं रुद्रत्वं शतलक्षतः।
चतुः शतेन लक्षेण महामाया त्वमम्बिके॥२७॥

महामाया ह्रीं—श्लोक उनईस का उद्धार करने पर चतुष्कूटात्मक महामाया मन्त्र 'ह्रीं' होता है। यह विख्यात मन्त्र है। यह कूट मन्त्र यन्त्रात्मक सभी कार्यार्थ सिद्धि प्रदायक है। इस यन्त्रात्मक मन्त्र में आकाश भैरव का आवाहन करके पूजा करे। तब मोहन के लिये पाँच हजार जप करे। जन्तुओं को मोहित करने के लिये दश हजार जप करे। पुरुष और स्त्रियों को मोहित करने के लिये बारह हजार जप करे। रोगों की शान्ति के लिये एक लाख जप करे। धन प्राप्ति के लिये मनुष्य पच्चीस हजार जप करे। पुत्र प्राप्ति के लिये स्त्रियों को तैंतिस हजार जप करना चाहिये। महाबैर की शान्ति के लिये सैंतिस हजार जप करे। सर्वाकर्षण सिद्धि के लिये छियालिस हजार जप करे। देवता को आकर्षित करने के लिये अठासी हजार जप करे। संतानबे हजार जप से सभी प्रकार के सौभाग्य की प्राप्ति होती है। सर्वांश स्तम्भन करने के लिये एक लाख जप करे। दो लाख जप से मारण होता है। प्रसन्नता कृपा प्राप्ति के लिये चार लाख जप करे। पाँच लाख जप से इन्द्रत्व की प्राप्ति

होती है। तीस लाख जप से तत्वों का ज्ञान होता है। साठ लाख जप से विष्णुत्व प्राप्त होता है। एक करोड़ जप से रुद्रत्व की प्राप्ति होती है। चार करोड़ जप से तुझ अम्बिका महामाया की प्राप्ति होती है।

रुद्रं वैश्वानरं विष्णुं मायां विदुमतः परम्।
उद्धरेदखिलं योज्य चतुष्कूटं परात्परम्॥२८॥
लक्ष्म्ं बीजमिति ख्यातं सर्वसंपत्समृद्धिदम्।
महामायावदखिलं विशेषाद्राज्यसिद्धिदम्॥२९॥

लक्ष्मी बीज स्त्रैं या श्रीं—श्लोक २८ का उद्धार करने पर चतुष्कूटात्मक लक्ष्मी बीज 'श्रीं' होता है। यह विख्यात मन्त्र या विख्यात बीज मन्त्र सभी समृद्धियों को देनेवाला है। महामाया बीज ह्रीं के समान सब कुछ के साथ विशेषत: राज्य देनेवाला है।

अश्विनमिन्द्रमुद्धृत्य महामायाञ्च बिन्दुकम्।
द्रावणीयमिति ख्यातं त्रिकूटं द्रावकारणम्॥३०॥
एतन्मन्त्रमये यन्त्रे विधिवत्पूज्य पूर्ववत्।
लक्षत्रयं जपं कुर्यादखिलं कामराजवत्॥३१॥

द्रावण बीज सां—श्लोक ३० का उद्धार करने पर विख्यात द्रावण कारक त्रिकूट बीज मन्त्र 'सां' होता है। इस मन्त्र रूपी यन्त्र में आकाश भैरव की पूजा पूर्ववत् विधि से करके तीन लाख जप करने से काम राज मन्त्र क्लीं के समान सभी कुछ की प्राप्ति होती है।

ईशनं पावकं विष्णुं नारायणमतः परम्।
विन्दुद्वयं च संयोज्य उद्धरेद्भास्करद्वयम्॥३२॥
चतुष्कूटं महामन्त्रं सर्वव्याधिहरं परम्।
चिन्तामणिवदखिलं द्विलक्षात्कुष्ठनाशनम्॥३३॥

सूर्य मन्त्र 'ह्रां'

श्लोक ३२ का उद्धार करने पर चतुष्कूट सूर्य मन्त्र 'ह्रां' होता है। यह मन्त्र सभी रोगों का नाश करने वाला है। चिन्तामणी मन्त्र 'क्ष्म्रयों' के समान सब कुछ देनेवाला है। दो लाख जप करने से कोढ़ का नाश होता है। तीन लाख जप करने पर टी०बी० रोग ठीक होता है। चार लाख जप करने से सभी रोगों का नाश होता है।

॥इति मन्त्र यन्त्र प्रयोग॥



चित्रमाला प्रयोग

श्री शिव उवाच

चित्रमालां प्रवक्ष्यामि शीघ्रसिद्धिप्रदायिनीम्।
सर्वसौभाग्यदां कुर्यात् चतुर्वर्गफलप्रदाम्॥१॥
आकाशभैरवस्यास्य मन्त्रस्यानन्दभैरवः।
ऋषिश्छन्दस्तु गायत्री देवताकाशभैरवः॥२॥
ह्रींकारों बीजमित्युक्तं हुंकारः शक्तिरुच्यते।
सर्वाभीष्टार्थ सिद्ध्यर्थे विनियोगस्तु मात्रया॥३॥

श्री शिव ने कहा—अब मैं शीघ्र सिद्धि देनेवाली चित्रमाला को कहता हूँ। यह सभी सौभाग्य को देनेवाली और धर्म अर्थ काम मोक्ष पुरुषार्थ चतुष्टय देने वाली है।

विनियोग—अस्य आकाश भैरव मन्त्रस्य आनन्दभैरव ऋषिः। गायत्री छन्दः। देवता आकाश भैरव। ह्रीं बीजं हुं शक्तिः सर्वाभीष्टार्थ सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ह्रा ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः से कर न्यास और अंग न्यास करे। इसके बाद ध्यान करे।

अथ ध्यानम्

सहस्त्रं पाणिवद्वक्त्रं सहस्त्रत्रय लोचनम्।
सर्वाभीष्टप्रदं देवं स्मरेदाकाशभैरवम्।

ध्यान के बाद माला मन्त्र का जप करे।

मन्त्र

ॐ नमो भगवते आकाशभैरवाय निखिललोकप्रियाय प्रणतजन-परितापमोचनाय सकलभूतनिवारणाय सर्वाभीष्टप्रदाय नित्याय सच्चि-दानन्दविग्रहाय सहस्त्रबाहवे सहस्त्रत्रिलोचनाय सहस्त्रमुखाय सहस्त्र-चरणाय करालाय अखिलरिपुसंहारकारणाय अनेक कोटिब्रह्मकपाल-मालालंकृताय नररुधिरं मांसभक्षणाय महाबल पराक्रमाय महदन्त-रायविमोचनाय परमन्त्रतन्त्रविद्याच्छेदनाय प्रसन्नवदनाम्बुजाय एहि एहि आगच्छ ममाभीष्टकमाकर्षय आकर्षय आवेशय- २ मोहय- २ भ्रामय- २ द्रावय- २ पातय- २ सिद्धय- २ बन्धय- २ भाषय- २ क्षोभय- २

भूतप्रेत पिशाचान् मर्दय- २ कूर्ट्य- २ पाटय- २ मोटय- २ शुम्भय- २ कम्पय- २ ताडय- २ मोटय- २ भेदय- २ छादय- २ चण्डवेगातिवेगाय सततगम्भीरजृम्भणाय संकर्षय- २ संक्रामय- २ प्रवेशय- २ स्तोभय- २ स्तम्भय- २ तोदय- २ खेदय- २ तर्जय- २ गर्जय- २ नोदय- २ रोदय- २ घातय- २ वेधय- २ सकल रिपून् छिन्दय- २ भिन्दय- २ अन्धय- २ रुन्धय- २ नन्दय- २ वन्दय- २ श्रीं ह्रीं क्लीं कल्याण कारणाय अनवरतानन्द महाभोग प्रियाय देवदत्तमानय आनय दूनय- २ केलय- २ मेलय- २ प्रपन्नवत्सलाय प्रतिवदन प्रतिवदन तपन दहनामृत किरणाय सहस्रकोटि वेताल परिवृताय मम रिपून् उच्चाटय- २ वेपय- २ तापय- २ सेचय- २ मोचय- २ लोटय- २ स्फोटय- २ ग्रह ग्रह ग्रह ग्रह अनन्तवासुकितक्षक कर्कोटक पद्म महापद्म शंखमहानाग भूषणाय स्थावरजंगमानां विषं नाशय- २ त्रासय- २ भस्मीकुरु- २ भक्तजन वल्लभाय सर्गस्थिति संहारकारणाय कथय- २ सर्वशत्रून् द्रावय- २ विद्वेषय विद्वेषय उत्साहय- २ उत्पातय उत्पातय वाधय- २ साधय- २ दह- २ पच- २ शोषय- २ पेषय- २ दूरय- २ मारय- २ भक्षय- २ समस्तभूतं शिक्षय- २ श्रीं ह्री क्लीं क्ष म र यूं अनवरतताण्डवाय आपदुद्धारणाय साधु जनं सन्तोषय- २ भूषय- २ पालयद्य- २ शीलय- २ कामक्रोध लोभमद मात्सर्यं शमय- २ दमय- २ त्रासय- २ क्षिति जल दहन मारुति गगन तरणि सोमात्मक शरीराय शमदमोपरारितितिक्षा समाधान श्रद्धान् दापय- २ प्रापय- २ विघ्न विच्छेदं कुरु- २ रक्ष- २ क्ष् म् र् यूं क्लीं ह्रीं श्रीं ब्रह्मणे स्वाहा।

इति गोप्यं महामन्त्रं परमाकाश भैरवम्।
यस्य स्मरणमात्रेण नमन्त्यखिलदेवताः।।
शतवारमिमं मन्त्रं जपेत्सर्वार्थसिद्धये।
त्रिवारं कार्यसिद्ध्यर्थं जपेदेकाग्रमानसस्त्र।।
प्रथमन्तु त्रिधा मन्त्र्य गुरु श्रेष्ठं हृदि स्मरेत्।
तत्कार्यं सिद्धये शक्तो जुहुयात् स्वात्मपावके।।

आकाश भैरव का महामन्त्र परम गोप्य है। इस मन्त्र के स्मरण मात्र से सभी देवता साधक को नमस्कार करते हैं। सौ बार जप से सर्वार्थ सिद्धि होती है। तीन बार जप से कार्य सिद्ध होता है। एकाग्र मन से जप

करे। पहले तीन बार मन्त्र स्मरण करके अपने इष्ट और गुरु का स्मरण करे। उस कार्य की सिद्धि के लिये शक्ति होने पर आत्माग्नि में हवन करे।

इति चित्रमाला प्रयोग

वश्याकर्षण प्रयोग

श्री शिव उवाच

श्रृणु देवि क्रिया भेदं शीघ्रसिद्धिप्रदायकम्।
नाना कर्मसमोपेतं साधकानां विवेकिनाम्॥१॥

श्री शिव ने कहा—देवि! सुनो शीघ्र सिद्धि प्रदायक क्रियाभेद कहता हूँ। यह विविध कर्मों से समर्पित साधकों और विवेकियों के उपयुक्त हैं।

अथ आकाश भैरव ध्यानम्

रक्ताम्बरं समालेपं भूषणं रक्तलोचनम्।
रक्तवर्णं लसद्ग्रीवं रक्तकुण्डलं संयुतम्॥२॥
रक्तकेयूर मुकुटं लसच्चन्द्रार्द्ध शेखरम्।
प्रसन्नममृतोन्मत्तं प्रणताभीष्टिसिद्धिदम्॥३॥
इक्षुकोदण्डपुष्पेषु पुण्ड्रचापसहस्त्रकम्।
कार्मुकेन शरैर्दिव्यैः पूरिताशावकाशकम्॥४॥

देव का वस्त्र लेप भूषण लाल है। आँखें भी लाल है। लाल वर्ण का गर्दन और कानों में कुण्डल लाल है। केयूर और मुकुट लाल है। मस्तक पर अर्द्ध चन्द्रशोभित है। अमृत पान से प्रसन्न उन्मत्त है। शरणागतों को इच्छित सिद्धि देने वाले हैं। एक हजार हाथों में ईख के धनुष और फूलों के बाण है। धनुष और बाण से सारा आकाश पूर्ण है।

चिरं ध्यात्वा जपेद्देवं जगद् वश्यायसाधकः।
काममादौ ततो मन्त्रं पुनः कामं सपल्लवम्॥५॥
त्रिसहस्त्रं ततो मौनी देशिकाज्ञामनुस्मरन्।
तस्य सर्ववशीकारं साध्ययुक्तं विशेषतः॥६॥

देर तक ध्यान के बाद वश्य के लिये इस प्रकार से मन्त्र जप करे। पहले क्लीं तब मन्त्र पुनः क्लीं के साथ पल्लव लगावे। मौन होकर तीन हजार जप करे। मौन होकर गुरु की आज्ञा का स्मरण करे। इस प्रकार

सवों का वर्णकरण होता है। मन्त्र के साथ साध्य का नाम लगाने से विशेष सिद्धि मिलती है।

आकर्षणे तदा ध्यानं पाशबाहुसहस्त्रकम्।
तत्पाशपूरिताशेष आशाकुम्भोक्षिताकुलम्।।७।।
ध्यात्वा जपेत्तथा मन्त्रं साधकस्थिर मानसः।
आकारं च ततो मन्त्रं पुनराञ्च सपल्लवम्।।८।।
आकर्षयेद्विशेषज्ञः ससाध्यं तस्य सिद्धये।
राजचोरारिनारीणां देवतानां विशेषतः।।९।।
चेतना चेतनानाञ्च भूतप्रेतगणादिनाम्।
अस्य शीघ्रं लभेद्देवि सर्वाकर्षणमद्धुतम्।।१०।।
सर्वलोकवशीकारं सर्वकार्य जयन्ततः।
ते सर्वे तद्वशं प्राप्य दास्यभूता भवन्ति हि।।११।।

आकर्षण में ध्यान करे कि देव के हजारो हाथों में पाश है। उन पाशों से सारा आकाश पूर्ण है वे सवों का आकर्षण कर रहे हैं। इस प्रकार का ध्यान करके स्थिर मन में इस प्रकार के मन्त्र का जप करे। आं तब मन्त्र पुनः आं के साथ पल्लव लगाकर जप करे। आकर्षण के लिये विशेष है कि साध्य का नाम पल्लव में जोड़े। राजा चोर शत्रु नारी देवता विशेष, चेतन अचेतन, भूत प्रेत गणादि का आकर्षण शीघ्र होता है। सभी लोकों का वशीकरण तथा सभी कामों में विजय होती है। वे सभी साधक के वश में दास के समान रहते हैं। साधक मन में जिसका चिन्तन करता है वे सभी पूरे होते हैं। वे सभी उसके वश में होते है। दास के समान रहते है।

वश्याकर्षण प्रयोग समाप्त।

स्तम्भन विद्वेषण प्रयोग

श्री शिव उवाच

श्रृणु देवि क्रिया भेदं शीघ्रसिद्धिप्रदायकम्।
नानाकर्म समोपेतं साधकानां विवेकिनाम्।।

श्री शिव ने कहा—देवि! सुनो मैं शीघ्र सिद्धि दायक क्रिया भेद को कहता हूँ। साधकों विवेकियों के लिये यह अनेक कर्म से युक्त है।

वक्ष्यामि श्रृणु देवेशि स्तम्भविद्वेषकर्मणि।
जङ्गमस्थावराणां च क्षिप्राश्चर्य निदर्शनम्॥१॥

श्री शिव ने कहा—देवेशि सुनो मैं स्तम्भन विद्वेषण कर्म कहता हूँ। यह चर और अचरों में शीघ्र आश्चर्य निदर्शक है। पहले ध्यान करे।

अथ ध्यानम्

महाकालं घनश्यामं वक्रदन्तं मुखाम्बुजम्।
कपिलाख्यं बृहत्स्कन्धं करालं कृष्णवाससम्॥२॥
गङ्गास्थभालं चन्द्रार्धं शेखरं विषमेक्षणम्।
महाकायं महावेगं व्यालयज्ञोपवीतिनम्॥३॥
वामहस्ते रिपोरास्यन्ताऽयन्तं प्रदक्षिणम्।
सत्वरं दक्षहस्ताग्रैर्ताडयन्तमुरस्थले॥४॥

इति ध्यानम्

एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्री चिरमाकाशभैरवम्।
पूर्वसंख्या महामन्त्रमर्धरात्रौ यथाविधिं॥५॥
चराचरगतिस्वान्तंमलोचनास्यकरां घ्रिणाम्।
गुह्यलिङ्गश्रुतिस्तम्भं सम्भवन्ति न संशयः॥६॥
वासवं मूलमन्त्रञ्च पुनरिन्द्रं सपल्लवम्।
रुद्रं मन्त्रं पुना रुद्रं पल्लवद्वेषसिद्धये॥७॥
विद्वेषणं प्रभावेतु स्वप्रभावपराक्रमे।
वैरिणां मन्युमन्योन्य मेधयन्तमहैतुकम्॥८॥
तयोरैश्वर्य ज्वालानां क्षयं कुर्वन्तमाशुवै।
तयोर्दश दिनात्पश्चात् महद् युद्धं भवेद्ध्रुवम्॥९॥

इस प्रकार का ध्यान करके आधी रात में पूर्व कथित संख्या में यथा विधि मन्त्र जप करे। इससे चराचर की गति स्वान्त नेत्र, मुख, हाथ, पैर, गुह्य, लिंग और कानों का स्तम्भन होता है। इसमें संशय नहीं है।

स्तम्भन के लिये मूलमन्त्र को लं से सम्पुटित करके पल्लव जोड़कर जप करे। विद्वेषण के लिये रुद्रमन्त्र हँ से सम्पुटित पल्लव जोड़कर जप करे। विद्वेषण के प्रभाव से वैरि आपस में लड़कर मर जाते

हैं। इसकी ऐश्वर्य ज्वाला उनका नाश कर देती है। इसके दश दिनों के बाद भयंकर युद्ध होता है।

इति स्तम्भ विद्वेष।

उच्चाटन निग्रह प्रयोग

श्री शिव उवाच

निग्रहोच्चाटने वक्ष्ये नितरां परबन्धिनाम्।
महाक्रूरतरं गुह्यं शृणु सर्व वरानने।।१।।

श्री शिव ने कहा—हे वरानने! सुनो अब मैं वैरियों के निग्रह उच्चांटन के लिये महाक्रूर गुह्य कूर्मों को कहता हूँ। इस प्रकार आकाश भैरव का ध्यान करे।

अथ ध्यानम्

करालमुग्रदृक्दंष्ट्रं कालानलसमप्रभम्।
अनेककोटिब्रह्मास्थिमुण्डमाला विभूषितम्।।२।।
घोराट्टहासं ब्रह्माण्डं गोलकं कृत्तिवाससम्।
सहमुखंतु हस्तांघ्रिमुकुटं नागभूषितम्।।३।।
सहस्त्रकोटि वेताल गणसंघ समावृतम्।
नानाविध शिलाभेदैर्वर्षयन्तं स्वकिङ्करैः।।४।।
महावीर्यमतिक्रुद्धमतिभीमपराक्रमम् ।
भक्षयन्तं निजैर्भूतैः परबन्धि कुलं बहु।।५।।

इति ध्यानम्

चिरं ध्यात्वैवमाकाशं भैरवं संस्मरन् गुरुम्।
दशरात्रं जपन्मन्त्रो दशपञ्चशत् मनुम्।।६।।
उच्चाटनं च संहारं दशाहात्पुरतो लभेत्।
वायुबीजं च मन्त्रं च पुनर्वायुं स पल्लवम्।।७।।
हुङ्कारञ्च ततो मन्त्रं पुनर्हुंकार पल्लवम्।
इति प्रयोगद्वितयं कुर्याद्यत्नेन चाम्बिके।।८।।
सहसा लभते सिद्धिं संशयो नास्ति चाम्बिके।।९।।

देर तक आकाश भैरव का ध्यान करके गुरु का स्मरण करे। प्रत्येक रात में पन्द्रह सौ मन्त्र जप करे। इससे दश दिनों के अन्दर ही वैरी का उच्चाटन और संहार हो जाता है। मूलमन्त्र को वायु बीज 'यं' संम्पुटित करके पल्लव लगाकर जप करने से उच्चाटन होता है। मूल मन्त्र को 'हुं' से सम्पुटित करके पल्लव जोड़कर जप करे तो शत्रु का संहार होता है। इस प्रकार मन्त्र जप से अचानक सिद्धि मिलती है।

॥इति उच्चाटन निग्रह॥



भोग मोक्ष प्रयोग

श्री शिव उवाच

मोक्षं सरस्वतीं वक्ष्ये सर्वेषामपि यत्नतः।
समाहितेन मनसा शृणु कल्याणि शोभने॥१॥

श्री शिव ने कहा—हे कल्याणि सुन्दरि! अब मैं मोक्षप्रद सरस्वती के मन्त्र को कहता हूँ; मन को एकाग्र समाहित करके यत्न से सुनो।

अथ ध्यानम्

स्फटिकाभं महादेवं प्रसन्नं वदनाम्बुजम्।
अमृतांशुकलाचूडं अग्निसूर्येन्दुलोचनम्॥२॥
व्याघ्रचर्माम्बरधरं व्यालयज्ञोपवीतिमम्।
वैडूर्यहारं शोभाढयं मन्दस्मितमनोहरम्॥३॥
मुक्ताविद्रुमरत्नाङ्गं बद्धाङ्गदविभूषणम्।
स्वर्णनूपुरपादाब्जं श्वेतकुण्डलमण्डितम्॥४॥
वीणां व्याख्यानमुद्राञ्च पुस्तकं स्फटिकस्त्रजम्।
पद्महस्तं गदापद्मं सुधाकुम्भं कराम्बुजे॥५॥
विभूषणामलं ब्रह्मज्ञानमुद्रास्वरूपिणम्।
चन्द्रमण्डलमध्यस्थं सच्चिदानन्दमव्ययम्॥६॥

इति ध्यानम्

ध्यात्वा ततो जपेन्मन्त्रमयुतं तत्ववित्तमः।
विजृम्भते महावाणी वियद् गंगा प्रवाहवत्॥७॥
तद्वाणीं दूरतः श्रुत्वा तस्य मोक्षश्च जायते।
मुक्तिः भुक्तिश्च भक्तानां सर्वार्थाश्चैव लभ्यते॥८॥
भूतले पूज्यते सर्वैर्भुक्त्वा भोगान्यथेप्सितान्।
अनैनैव शरीरेण जीवन्मुक्तो भवेच्छिवे॥९॥

इस प्रकार का ध्यान करके तत्वज्ञ दश हजार मन्त्र जप करे। इससे साधक की वाणी गंगा प्रवाह के समान निकलती है। उसकी वाणी के दूर से ही सुनकर कवीश्वर कम्पित हो जाता है। भक्तों को भोग-मोक्ष और

सर्वार्थ की सिद्धि होती है। पृथ्वी पर पूजित होकर इच्छित भोगों को भोगकर इसी शरीर में जीवन्मुक्त हो जाता है।

भाषामन्त्रपुनर्भाषां स्वाहान्ते मन्त्रमुच्यते।
चिन्तामणिं ततो मन्त्रं पुनश्चिन्तामणिं नमः॥१०॥
मोक्षाय प्रणवाद्यन्तं धारणाय विशेषतः।
श्रियै श्रिया सम्पुटितं घृणिरारोग्यवर्द्धकः॥११॥
ल्रं ल्रं रोगविनाशाय विषनाशाय ठं युतम्।
इति गुह्यतमं शास्त्रं लघुसिद्धिप्रदायकम्॥१२॥
यत्नेनापि जयदेवी सर्वकामार्थसिद्धये।

वाणी और वाक्सिद्धि के लिये श्री आकाश भैरव महामन्त्र को 'वँ' बीज से सम्पुटित करके 'स्वाहा' जोड़कर जप करे।

इच्छित सिद्धि प्राप्ति के लिये चिन्तामणि 'क्ष्म्रयों' से सम्पुटित करके जप करे।

मोक्ष के लिये ॐ से सम्पुटित मन्त्र का जप करे।

समृद्धि प्राप्ति के लिये 'श्री' से सम्पुटित मन्त्र का जप करे।

आरोग्य प्राप्ति के लिए 'घृणिः' से सम्पुटित मन्त्र का जप करे।

रोग नाश के लिये 'स्वौं' से सम्पुटित मन्त्र का जप करे। विष नाश के लिये "ठं' से सम्पुटित मन्त्र का जप करे।

इस प्रकार थोड़े प्रयास से साधक मनोवांछित फल प्राप्त करता है। यदि प्रयत्न से इसप्रकार मन्त्र जप किया जाय, तो सभी प्रकार के इच्छित कार्य सिद्ध हो सकते हैं।

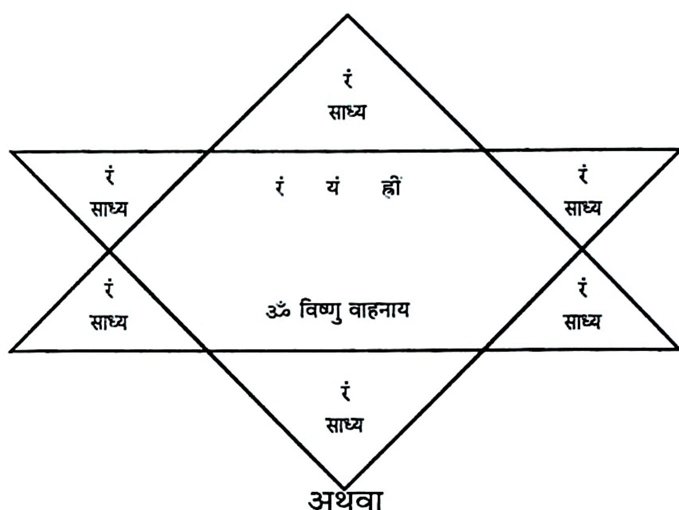
इति भोग-मोक्ष प्रयोग।

आशु गरुड़ यन्त्र कल्प

षट्कोणान्तरिताग्निवायुलिखितं मायाञ्च सप्तार्णकम्।
कोणे दिक्षु च साध्यवन्हिसहितं सर्वान् ग्रहादीन्हरेत्॥१॥

पहले षटकोण बनावे। उसके मध्य में अग्निबीज रं वायुबीजं यं और माया बीज ह्रीं, तब सप्तार्ण ॐ विष्णुवाहनाय लिखे। षट्कोण के कोनों में 'रं' के साथ साध्य नाम लिखे। इससे सभी ग्रह दोषों का नाश होता है।

यंत्र



अथवा

षटकोण के मध्य में रं यं के साथ 'ॐ पक्षिराजाय विष्णु वाहनाय' मन्त्र बारह अक्षर लिखे। कोनों में 'ॐ विष्णुवाहनाय' के छै अक्षरों को लिखे।

षट्कोणान्तरिताग्निवायुमनुना संयुक्तमध्याक्षरम्।
द्वादशकोणेषु इति पाठ विशेषः॥
एतच्चक्रं तु सम्पूज्य जपेदष्टोत्तरं शतम्।
प्रयोगकाले सम्प्राप्ते ध्यात्वा भूतं विलोकयेत्॥२॥

इस यन्त्र की पूजा करके एक सौ आठ मन्त्र जप करे। प्रयोगकाल में ध्यान जप के समय भूत दिखायी पड़ते है। उन्हें देखने पर शीघ्र सिद्धि मिलती है।

अन्य प्रकार—षट्कोण में साध्य नाम के साथ अग्नि बीज 'रं' लिखकर उसके कपालों में ॐ क्षूं ॐ चिन्तामणि बीज लिखे, इसके बाद आं ह्रीं क्रों ॐ से वेष्टित करे। पूजा करके जप करे तो सिद्धि मिलती है।

द्विरष्टकोष्ठमालिख्य प्रत्येकं दशवर्णकम्।
त्रिशिखं चतुरेखाग्रे तदरेखाग्रनामकम्॥
भस्म पांशुना संलिख्य प्राणानाबाह्यतत्रतु।

शत्रवोस्तु दिङ्मुखो भूत्वा जपेदष्टोत्तरं शतम्।।
तद् भस्म दर्शनादेव रिपुर्याम्यं च गच्छति।

सोलह कोष्ठ बनाकर प्रत्येक कोष्ठ में मूलमन्त्र को ग्यारह वर्णों में बाँटकर लिखे। चार रेखाओं के आगे त्रिशूल बनावे। उस रेखाग्र में साध्य का नाम लिखो इसे भस्म से लिखकर उसमें शत्रु की प्राण प्रतिष्ठा करे। शत्रु के निवास स्थान की ओर मुख करके एक सौ आठ मन्त्र जप करे। उस भस्म को देखते ही शत्रु यमलोक चला जाता है।

अन्य यन्त्र—

शिखि ऋतु वसु कोणं चाष्ट पत्रं वसुं च ऋतुशत शशि चाग्निर्भास्करं व्योमकंच। सकल मनल वायु स्तद्वहिः साध्य शक्तिः।। धृत मृत सुत मन्त्राः गर्भ दं ताक्ष्र्य मेतत्।

अस्यार्थ–प्रथम त्रिकोणं तद् वहिः षट्कोणं तद् वहिरष्ट दलं तद्वहिश्चतुरस्त्रं त्रिकोणे इन्द्र बीजं लीं इति लिखेत षट् कोणेषु वं इति अग्नि बीजं विलिख्य अष्ट दलेषु ह्रीं मिति विलिखेत्। भूपुर कोणेषु चतुरस्त्रकेषु हमिति आकाश बीजं विलिखेत्। पूनस्त्रिकोणेषु भू पुरेषु अग्नि बीजं वायु बीजं सर्वत्र विलिखेत् अस्ति अन्योपदोः प्रथम अनिलं विलिख्य तदन्तर वायु बीजं विलिख्य तदन्तः तत्राक्षराणि भुवनेशीमिति विलिखेत् तद्वहिः साध्यनाम वर्णैर्वेष्टयेत् यन्त्रान्तरम्।

पहले त्रिकोण बनावे। उसके बाहर षटकोण, उसके बाहर अष्टदल उसके बाहर चतुरस्त्र बनावे। त्रिकोण में इन्द्रबीज लं लिखे। षट्कोण के कोनों में अग्नि बीज रं लिखे। अष्टदल के दलों में ह्रीं लिखे। चतुरस्त्र भूपुर के कोनों में आकाश बीज 'हं' लिखे। पुनः त्रिकोण में अग्निबीज रं और भुपुर में वायु बीज 'यं' लिखे। पहले अग्निबीज रं तब वायुबीज यं तब ह्रीं लिखकर उसके बाहर साध्य नाम के अक्षरों से वेष्टित करे।

अन्य यन्त्र—

षट्कोणं विलिखेत्पूर्वं तदग्रे शूलमालिखेत्।
तन्मध्ये वर्तुलं च तन्मध्ये वायु बीजकम्।।
षट्कोणे तु खिे द्वह्नि शूलाग्रेष्वथ नामकम्।
अभिमन्त्र्य चतुर्वारं तत्तोये नाभिषेचयेत्।।
तोय दर्शनमात्रेण धावति ध्रुवमम्बिके।

पहले षट्कोण बनावे। षट्कोण के रेखाग्रों में त्रिशूल बनावे षट्कोण के मध्य में वृत्त बनाकर उसमें वायु बीज यं लिखे। षट्कोण के कोनों में अग्निबीज रं लिखे। त्रिशूलों के आगे साध्यनाम लिखे। जल से इसका चार बार अभिषेक करे। उस जल को देखते ही साध्य दौड़ने लगता है।

अन्य यन्त्र—

यन्त्रान्तरम्। अर्द्ध चन्द्राकृतिं कृत्वा मध्येवारुणमालिखेत्—

कोणद्वये तु जुँ सं च श्रं कारेण तु वेष्टयेत्।
एतद् यन्त्रं महावीर्यं दर्शनात्पावनं परम्॥
यन्त्रकीलाल मन्त्राग्नि प्रव्रजेन्नात्र संशयः।
अस्य यन्त्रस्य पूजा वैष्णवपीठे समावाह्य॥
अङ्गैः प्रथमावृत्तिः। ॐ सुं सुपर्णाय नमः।
ॐ गुं गरुडाय नमः। ॐ विं वैनतेयाय नमः।
ॐ तां तार्क्ष्याय नमः। ॐ लं लक्ष्म्यै नमः।
ॐ किं कीर्त्यै नमः। ॐ जं जयायै नमः।
ॐ मं मायायै नमः। इति दिग्दलेषु द्वितीयावृत्तिः।
ॐ कुं कुमुदाक्षायै नमः। ॐ पुं पुण्डरीकाक्षायै नमः।
ॐ कुं कुमुदाक्षायै नमः। ॐ वां वामदेवाय नमः।
ॐ सं सनकाय नमः। ॐ सं सनत्कुमाराय नमः।
ॐ शं शंकुकर्णाय नमः। ॐ सं सर्वनेत्राय नमः।
ॐ सुं सुमुखायै नमः। ॐ सुं सुप्रतिष्ठायै नमः।

इत्येतैर्दशभिस्तृतीयावृत्तिः। इन्द्राभिश्चतुर्थावृत्तिः। हस्तौ तु विमुखौ कृत्वा ग्रथयित्वा कनिष्ठका। तर्जन्यौ प्रश्रितेश्लिष्टे श्लिष्टौ अंगुष्ठकौ तथा। मध्यमानामिके द्वेतु द्वौ पक्षौ इह चिन्तयेत्। एषा गारूडमुद्रा-स्यादशेष फलदा भवेत्।

अर्द्धचन्द्र की आकृति बनाकर उसके मध्य में वरुणबीज वं लिखे। दोनों कोनों में जुं सं लिखकर पूरी आकृति को 'श्रं' से वेष्टित करे। यह यन्त्र बहुत शक्तिशाली है। दर्शन से ही पवित्र करनेवाला है। इस यन्त्र में मन्त्र की अग्नि का वास रहता है। इसमें संशय नहीं है। इस यन्त्र की पूजा वैष्णव पीठ में करे।

आवाहन करके षडंग पूजा करे। यह प्रथम आवरण है।

द्वितीय आवरण में—आठों दिशाओं में पूजा पूर्वादि क्रम से करे।

१. ॐ सुं सुपर्णाय नमः

२. ॐ गं गरुडाय नमः

३. ॐ विं वैनतेयाय नमः

४. ॐ तां ताक्ष्र्याय नमः

५. ॐ लं लक्ष्म्यै नमः।

६. ॐ किं कीर्त्यै नमः।

७. ॐ जं जयायै नमः।

८. ॐ मं मायायै नमः।

इति द्वितीयावरण

तृतीय आवरण—दशों दिशाओं में।

१. ॐ कुं कुमुदायै नमः।

२. ॐ पुं पुण्रीकाक्षायै नमः।

३. ॐ कुं कुमुदाक्षायै नमः।

४. ॐ वां वामदेवाय नमः।

५. ॐ सं सनकाय नमः।

६. ॐ सं सनत्कुमाराय नमः।

७. ॐ शं शंकुकर्णाय नमः।

८. ॐ सं सर्वनेत्राय नमः।

९. ॐ सुं सुमुखायै नमः।

१०. ॐ सुं सुप्रतिष्ठायै नमः।

इति तृतीयावरण।

चौथा आवरण—भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों की पूजा करे। गारुड़ मुद्रा दिखावे तो सिद्धि मिलती है। हाथों को विपरीत रखकर कनिष्ठाओं को ग्रथित करे। तर्जनियों के प्रतिश्लिष्ट श्लिष्ट करे। अंगूठों को मिलावे। मध्यमा और अनामिकाओं को दो पंखों के रूप में चिन्तन करे।

●

आशु गरुड़ कवच

साधु साधु महाप्रज्ञे यत्तु पृच्छसि शाङ्करि।
आशु ताक्ष्र्याख्यकवचं महामन्त्रं वदाम्यहम्॥१॥
भोगमोक्षदमज्ञान तिमिरान्धस्य चाञ्जनम्।
भुक्तिमुक्तिप्रदं श्रेष्ठं स्वस्तिदं सर्वसिद्धिदम्॥२॥
ऋषिन्यासं महाध्यानं शंकरादि च मन्त्रवित्।
समाहितेन मनसा जपेन्मन्त्रोत्तमोत्तमम्॥३॥

श्री शिव ने कहा—हे पार्वति! महाप्रज्ञे तुम्हारा प्रश्न उत्तम है। आशु ताक्ष्र्य नाम के कवच महामन्त्र को कहता हूँ। यह कवच भोगमोक्षप्रद है। अज्ञान तिमिरान्धो के लिये अंजन है। यह भुक्ति-मुक्ति दायक श्रेष्ठ स्वस्ति कारक और सभी सिद्धियों को देनेवाला है। ऋष्यादि न्यास शंकरादि का महाध्यान करके एकाग्रता से उत्तमोत्तम मन्त्र का मानसिक जप करे।

कवच

ताक्ष्र्यो मे पुरतः पातु गरुडः पातु पृष्ठतः।
सोमपा पातु मे हर्म्ये वामके दक्षिणे तथा॥४॥
शिखायां गरुडः पातु शिरः पातु अहिरन्तकः।
नासिकाग्रे विभुः पातु नेत्रयोर्बिनतासुतः॥५॥
तेजिष्ठः श्रोत्रयोः पातु मुखं संतापमोचनः।
ओष्ठयोः पातु नागारिः पातु तालुप्रभाकरः॥६॥
जिह्वां खगेश्वरः पातु दन्तान्यात्वरुणानुजः।
शीरुकश्चिबुकं पातु कण्ठो पात्वसुरान्तकः॥७॥
सुमुखो मे मुखं पातु अनामिक्यां त्रिलोचनः।
कनिष्ठिकां महोत्साहः स्वात्मज्ञः पातु दोस्तलम्॥८॥
दोर्मूले विष्णुवाहश्च हस्तयोः कृत विक्रमः।
करयोः पातु रक्ताक्षः कराग्रे तु महाबलः॥९॥
करपृष्ठं कलातीतो नरवान्पातु नरवायुधः।
कटिं पातु महावीरो नाभिं पातु सुरेश्वरः॥१०॥

उरस्थलं कलासारः पातु मे जठरं परः।
परात्परः कटिं पातु पातु नाभिं हरिप्रियः॥११॥
जितेन्द्रियो गुदं पातु मेढ्रं बलविवर्द्धनः॥१२॥
कूपाराणि च मे पातु मातृबन्धविमोचनः।
स्वाहाकारः समे पातु रुधिरं वेदपारगः॥१३॥
ऊरूपातु पतिः पातु जानुनी भक्तवत्सलः।
जंघौ पातु वषट्कारः सर्वलोकवशंकरः॥१४॥
गुल्फौ निरशिलः पातु पादपृष्ठं मुरारिधृत्।
धीरः पादतलं पातु चाङ्गुली परमन्त्रजित्॥१५॥
शोभनः पातु मे मज्जां भुक्तिमुक्ति वरप्रदः।
मूलाधारं खगः पातु स्वाधिष्ठानमथात्मवित्॥१६॥
मणिपूरक मत्युग्रः मलधी पात्वनाहतम्।
विशुद्धिं पदमः पातु आज्ञामाखण्डलः प्रियः॥१७॥
द्रुतताक्ष्र्यो महाभीमो ब्रह्मरन्ध्रं प्रपातु मे।
ऐन्द्रीञ्च फणिभुग्पातु चाग्नेयीं कलि दोषभित॥१८॥
याम्यं लघुपतिः पातु नैर्ऋतं सुर वैरिजित्।
पश्चिमं पातु लोकेशः धौतोरुः पातु मारुतम्॥१९॥
गुलिकाशी तु कौवेरं पात्वैशान्यमितौजसः।
ऊर्ध्वं पातु सदा नादः गीतनृत्त सदा प्रियः॥२०॥
गरुडः पातु पातालं गरुत्वान् च तनुं ततः।
धनधान्यादिकं सर्व ताक्ष्र्यो राक्षस वैरिधृत्॥२१॥
भीषणः कन्यकां पातु भार्यामुल्काग्निकेक्षणः।
त्वरितः पातु चात्मानं धर्मकर्म कृतोत्तमः॥२२॥
पुत्रानायुष्करः पातु वंशं रिपुनिषूदनः।
संग्रामे विजयः पातु मार्गे शत्रुविमर्दनः॥२३॥
सिद्धिं पातु महादेवो भगवान् भुजगाशनः।
सततं पातु मां श्रेष्ठः स्वस्तिदः साधकात्मवान्॥२४॥
जाग्रत् स्वप्न सुषुप्तौ च कुंकुमारुणवक्षसः।
सर्वा मे स्वापदः पातु स्तुतिमन्त्रप्रसिद्धिषु॥२५॥

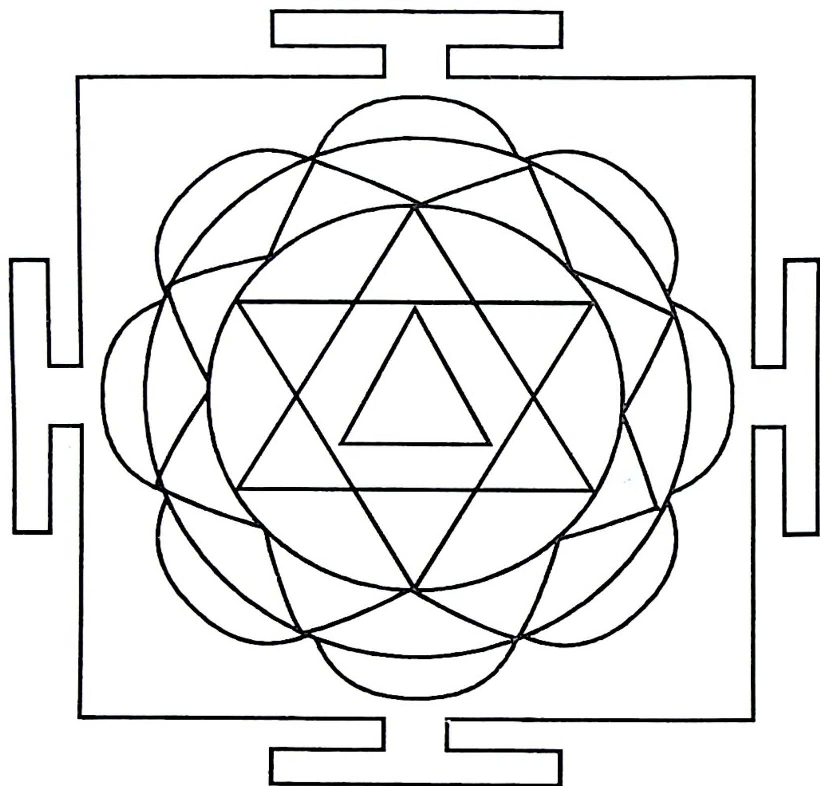
इदं तु तार्क्ष्य कवचं पुरुषार्थप्रदं परम्।
स्वस्तिदं पुत्रदं सर्वरक्षाकरमनुत्तमम्॥२६॥
युद्धे वारिभये चैव राजचोरसमागमे।
महाभूतादि संघहे प्रजपेत्कवचं शिवे॥२७॥
स्मरणादेव नश्यन्ति प्रचण्डानिलतूलवत्।
आशु तार्क्ष्याख्य कवचं परमं पुण्यवर्द्धनम्॥२८॥
पावनं परमायुष्यं पाप पाश प्रमोचनम्।
महागुह्यं महामन्त्रं महामोहन तर्जनम्॥२९॥
सर्वदेवमयं मन्त्रं सर्वायुधकरं परम्।
सर्वमृत्यु प्रशमनं सर्वसौभाग्य वर्द्धनम्॥३०॥
पावनं परमायुष्यं पापराशि प्रधूननम्।
दिगीश्वरैः स्वयं भक्त्या तथाजाद्यमरैः परैः॥३१॥
गुह्यकैः सिद्धगन्धर्वैः स्तूयमानं महोज्वलम्।
त्रिकालं जपेत्ध्यान पूर्वकं कवचं शिवे॥३२॥
सहस्रेणैव सिद्धिः स्यात् वाग्विभूतिर्विशेषतः।
मुनीनामपि संपूज्यः कवचेनावृतः पुमान्॥३३॥
चतुर्दशेषु कोष्ठेषु विचरेद्गरुडो यथा।
अनेनैव तु कालेन भूतले बहु सम्पदम्॥३४॥
चिरं प्राप्यतु देहान्ते विष्णुसायुज्यमाप्नुयात्॥३४.५॥

यह गरुड़ कवच परम पुरुषार्थ दायक है। यह कल्याणप्रद और पुत्रप्रद सभी प्रकार से रक्षाकारक उत्तम मन्त्र है। युद्ध में, जल भय में, राजा, चोरों से संकट होने पर, महाभूतों के प्रकोप होने पर इस कवच का पाठ करना चाहिये। इस कवच को स्मरण करने से सभी संकट प्रचण्ड अग्नि में रूई के समान नष्ट हो जाते हैं। आशु तार्क्ष्य नामक कवच परम पुण्य को बढ़ाने वाला है। यह पवित्र है। परम आयु को देनेवाला है। पाप पाशों का विनाशक है। यह महामन्त्र परम गुह्य महामोह का विनाशक है। यह मन्त्र सर्वदेवमय है। सभी आयुधों का कारक है। सभी प्रकार की मृत्यु का प्रशमन करनेवाला सभी सौभाग्य को देनेवाला है। पावन परमायु प्रदायक पापराशि को नष्ट करनेवाला है। दिक्पाल और ब्रह्मादि देवता, गुह्यक सिद्ध, गन्धर्व आदि उसकी स्तुति करते हैं। ध्यानपूर्वक तीनों सन्ध्याओं में कवच का पाठ करना चाहिये।

कवच के एक हजार पाठ से वाग्विभूति की सिद्धि होती है। इस कवच से आवृत्त मनुष्य मुनियों से भी पूज्य है। चौदहों भुवनों में गरुड़ के समान विचरण करता है। समय होने पर इससे पृथ्वी पर बहुत धन प्राप्त करता है। देहान्त होने पर श्री विष्णु से सायुज्य हो जाता है।

इति आशुगारुड़।

आशुगारुड़ यन्त्र



शिखि ऋतु वसुकोणं चाष्टपत्रं भुवं च।

पहले त्रिकोण बनाकर उसके बाहर षटकोण बनावे। उसके बाहर अष्टकोण बनावे। उसके बाहर अष्टदल बनावे। उसके बाहर भूपुर बनावे।

कृतशतसलिलाग्निर्भास्करं व्योमकञ्च।
सकालमनिलयुक्तं तद् बहिःसाध्य शक्तिः।।

यन्त्र में लं वं रं ह्रां हं ह्रीं उसके बाहर ह्रीं के साथ साध्य नाम लिखे।

घृतमृतसुतवन्ध्या गर्ब्भदं तार्क्ष्यमेतत्।।
इदं चक्रं मयाख्यातं सर्व चक्रोत्तमोत्तमम्।
महागुह्यं महाभीमं महासिद्धिकरं परम्।।
शुक्रवासरमारभ्य पूजां दत्त्वा दिनत्रयम्।
अनेन कवचेनैव जपेदष्टोत्तरं शतम्।।
तज्जले नाभिषिञ्चाथ होमं हुत्वाथ रूक्षकैः।
निमज्य तज्जले देवि बध्नीयात्पुत्रकामिनाम्।।

मृत्वत्सा बन्ध्या को गर्भ देनेवाला है। यह चक्र सभी चक्रों से श्रेष्ठ और विख्यात हैं। यह महा गुप्त महाभीम और महासिद्धि दायक श्रेष्ठ शुक्रवार से प्रारम्भ करके तीन दिनों तक इसकी पूजा करे।

इस कवच का पाठ प्रतिदिन एक सौ आठ बार करे। यह जप नाभि तक जल में खड़े होकर करे। इसके बाद हवन करे। उस जल से स्नान कराकर पुत्र कामियों को यह यन्त्र धारण करा दे।

इति आशु गरुड़ कल्प।



आकाश भैरव कल्पः

शरभ शालुव पक्षिराज हृदय स्तोत्र

भगवन् देवदेवेश सर्वशास्त्रार्थवादकः।
ब्रूहि मे सर्वपापघ्नं किं मन्त्रं चेष्टदायकम्॥१॥
तेन पुण्यप्रभावेन शत्रूणां प्राणनाशनम्।
सर्वपापप्रशमनं धन्यमायुष्यवर्द्धनम्॥२॥
ब्रूहि मे कृपया शम्भो त्वत्पादकमले नमः।
श्रृणु वक्ष्यामि देवेशि सर्वपापहरं परम्॥३॥
सर्वशत्रुहरं दिव्यं हृदयं शरभस्य च।
शालुवं सर्वरोगघ्नं हृदयं परमाद्भुतम्॥४॥
गुह्याद्गुह्यतमं गुह्यं गोपनीयं स्वयोनिवत्।
पुरा नारायणः श्रीमान् क्षीराब्धौ मंथने कृते॥५॥
तस्य प्रारम्भसमये हृदयं शरभस्य च।
प्रातःकाले पठेन्नित्यं विंशदावर्तिकं मुदा॥६॥
एवं मासत्रयं कृत्वा प्रादुर्भवति शालुवः।
ततश्च दण्डवद्भूमिं प्रणम्य च पुनः पुनः॥७॥
तमुत्थाप्य महातेजा मूर्ध्नि च चाघ्राय शालुवः।
सन्तुष्टः प्रत्युवाचैनं निर्विघ्नेनाभृतं भवेत्॥८॥
इत्युक्त्वा प्रददौ तस्मिन् रक्षणं सर्वविघ्नकम्।
ततो नारायणो देवः प्रणनामाब्रवीद्वचः॥९॥
देव देव महादेव पक्षिराज महाप्रभो।
हृदयं तव देवेश तस्य को वा ऋषिर्वद॥१०॥
छन्दः किं बीजशक्तिं च पल्लवं वद मे प्रभो।
श्रृणु वक्ष्याम्यहं विष्णुं हृदयं मम शालुवम्॥११॥
सर्वपापक्षयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्।
सर्वक्लेशविनाशञ्च सर्वसन्तोषकारणम्॥१२॥

सर्वसौभाग्यदं शान्तं सर्वमंगल वर्द्धनम्।
ऋषिः कालाग्निरुद्रस्तु जगती छन्द ईरितम्॥१३॥

पार्वती ने कहा—देव देवेश सभी शास्त्रों के अर्थ को कहनेवाले मुझे उस मन्त्र को बतलाइये जों मन्त्र पापों का नाशक हो और जो सभी इच्छाओं को पूरा करनेवाला हो। जिसके जप के पुण्य प्रभाव से शत्रुओं का नाश हो। जो सभी पापों का शमन करनेवाला और धन, धान्य, आयु की वृद्धि करनेवाला हो। हे शम्भो! आपके चरणकमलों में प्रणाम है। कृपया बतलाइये।

श्री शिव ने कहा—हे देवेशि सुनो मैं शरभ के दिव्य हृदयस्तोत्र को कहता हूँ, जो सभी पापों का विनाशक, सभी शत्रुओं का संहारक सभी रोगों का नाशक अद्भुत है। यह गुह्य से गुह्य अपनी योनि के समान गोपनीय है।

पुराने जमाने में श्री नारायण ने क्षीरासागर का मन्थन किया था। मन्थन प्रारम्भ करने के पहले वे शरभ हृदय का पाठ प्रतिदिन प्रातः समय बीस बार करते थे। इस प्रकार तीन महीनों तक पाठ करने से शालुव प्रकट हुए। भूमि पर दण्डवत लेटकर नारायण ने उन्हें बार बार प्रणाम किया। तब महातेजस्वी शालुव ने उन्हें उठाकर उनके माथे को सूंघा। सन्तुष्ट होकर शालुव ने कहा कि तुम्हारा कार्य निर्विघ्न पूरा होगा। यह कहकर उन्होंने विष्णु को सारे संसार के रक्षण का प्रभार दिया। तब नारायण ने प्रणाम करके कहा कि हे देव देव महादेव पक्षिराज महाप्रभो आपके हृदय स्तोत्र के ऋषि कौन है कहिये। कौन छन्द है? क्या बीज शक्ति है? और पल्लव क्या है? यह सब कहिये।

तब शालुवेश ने कहा कि हे विष्णु सुनो अब मैं हृदय स्तोत्र को कहता हूँ जो सभी पापों का नाशक पुण्य प्रद और सभी शत्रुओं का विनाशक है। यह सभी दुखों का नाशक और सब सन्तोषों को देनेवाला है। यह सर्व सौभाग्यदायक शान्त तथा सभी कल्याणों का वर्द्धक है।

विनियोग–अस्य मन्त्रस्य ऋषिः कालाग्नि रुद्रः। छन्दः जगती, रवां बीजं, देवता महादेव, शक्ति स्वाहा, नमः कीलकम् इष्टसिद्धयर्थे विनियोगः।

खां बीजं तु महादेव शक्तिः स्वाहेत्युदीरितम्।
कीलकं नम इत्याहुः इष्टार्थे विनियोगकम्॥१४॥
मूलन्यासादिकं कृत्वा ध्यायेच्छरभशालुवम्।
प्रथमं पक्षिराजं च द्वितीयं शरभं तथा॥१५॥
तृतीयं शालुवं प्रोक्तं चतुर्थं लोकनायकम्।
पञ्चमं रेणुकानाथं षष्ठं कालाग्निरुद्रकम्॥१६॥
सप्तमं नरसिंहघ्नं अष्टमं विश्व लोचनम्।
श्रीं ह्रीं क्लीं नवमं चैव हुं हुं हुं दशमं तथा॥१७॥
क्लीं श्रीं क्लीं एकादशं च द्वादशं सर्वमन्त्रवित्।
त्रयोदशं तु यन्त्रेशं चतुर्दश भहाबलम्॥१८॥
पञ्चदशं पापनाशं षोडशञ्च करालकम्।
सप्तदशं महारौद्रं भीममष्टादशं तथा॥१९॥
एकोनविंशं साम्बं च विंशकं शंकरं तथा।
विशोत्तरेकं सर्वेशं द्वाविंशं पार्वती पतिः॥२०॥
हुं हुं हुं च त्रयोविशं चतुर्विंशमनन्तकम्।
पञ्चाविशं वृषारूढं षड्विशं विश्वलोचनम्॥२१॥
त्रिलोचनं सप्तविशं अष्टाविंशं खगेन्द्रकम्।
पं पं पं नवविंशं च त्रिंशद्भुजगभूषणम्॥२२॥
लं लं लमेक त्रिंशञ्च द्वात्रिंशं पञ्चवक्त्रकम्।
त्रयस्त्रिंशञ्च नन्दञ्च चतुस्त्रिशमतः परम्॥२३॥
भं भं भं भं पञ्चत्रिशं षट्त्रिशं शत्रुनाशनम्।
सप्तत्रिंशं स्वयभूञ्च विश्वेशमष्टत्रिंशकम्॥२४॥
शूलपाणिं नवत्रिंशं चत्वारिंशत्कलाधरम्।
एकचत्वारिंशत् सं सं सं द्विचत्वारिंशहासकम्॥२५॥

मूल मन्त्र से न्यासादि करके शरभ शालुव का ध्यान करे। प्रथम पक्षिराज, द्वितीय शरभ, तृतीय शालुव चतुर्थ लोक नायक पंचम रेणु का नाथ, षष्ठ कालाग्नि रुद्र, सप्तम नरसिंह, अष्टम विश्वलोचन, नवम श्रीं ह्रीं क्लीं, दशम हुं हुं हुं, एकादश क्लीं श्रीं क्लीं, द्वादश सर्वमन्त्रवित्, त्रयोदश यन्त्रेश, चतुर्दश महाबल, पंचदश पाप नाशक,

षोडश करालकम्, सप्तदश महारौद्र, अष्टादश भीम, एकोनविंश साम्ब, विंश शंकर, एकविंश सर्वेश, द्वाविंश पार्वती पतिः, त्रयोविशं हुं हुं हुं, चतुर्विंश अनन्त, पंचविंश वृषारुढ, षडविंश विश्वलोचन, सप्तविंश त्रिलोचन, अष्टाविंश खगेन्द्र नवविशं पं पं पं, त्रिंश भुजग भूषण, एक त्रिंश लं लं लं, द्वात्रिंश पंचवक्त्र त्रयस्त्रिंश नन्द, चतुस्त्रिश भं भं भं पंचत्रिंश भं। षट्त्रिशं शत्रुनाशन, सप्तत्रिशं स्वयम्भू, अष्टत्रिंश विश्वेश, नवत्रिंश शूलपाणि, चत्वारिंश कलाधर, एकचत्वारिंश सं सं सं, द्विचत्वारिंश हासकम।

एतं यशस्यमायुष्यं मन्त्रं सर्वार्थदायकम्।
अनेकरत्नलम्बानि जटामुकुटधारिणम्॥२६॥
अनेकरत्नसंयुक्तं सुवर्णाञ्चितमौलिनम्।
तक्षकादि महानाग कुण्डलद्वयशोभितम्॥२७॥
कालीं लिखित दुर्गा च पक्षद्वयविराजितम्।
दशायुधधरं दीप्तं दशबाहुं त्रिलोचनम्॥२८॥

ये यश आयु के मन्त्र सर्वार्थदायक हैं।

अथ ध्यानम्—

अनेकरत्नलम्बानि जटा मुकुट धारिताम्।

***

वज्रतुण्डमहादीप्तं कालकालं कृपानिधिम्॥
त्रिपञ्चनयनं पञ्चवक्त्रतुण्डधरं प्रभुम्।
नीलकण्ठामराभोग सर्पहारोपशोभितम्॥२९॥
विशालाक्षं च विश्वेशं विश्वमोहनमव्ययम्।
त्रिपुरारिं त्रिशूलादिं धारिणं मृगधारिणम्॥३०॥
करालभृकुटिं भीमं शंखतुल्य कपोलकम्॥३१॥
व्याघ्रचर्माम्बरधरं वाडवाग्निस्थितोदरम्।
मृत्यु व्याधिस्थितोरुं च वज्र जानु प्रदेशकम्॥३२॥
पादपङ्कजयुग्मञ्च तीक्ष्णवज्रनखाग्रकम्।
रणन्नूपुर मञ्जीर झणत्किंकिंणि कूजितम्॥३३॥
वज्रतुण्डं महादीप्तं कालकालं कृपा निधिम्।

इति ध्यानम्

एवं ध्यात्वा च हृदयं त्रिंशदावृत्तिकं क्रमात्॥३४॥
नित्यं जप्त्वा शालुवेशं हृदयं सर्वकामदम्।
सर्वपुण्यफलं श्रेष्ठं सर्वशत्रुविनाशनम्॥३५॥
सर्वरोगहरं दिव्यं भजतां पापनाशनम्।
इहैव सकलान् भोगानन्ते शिवपदं ब्रजेत्॥३६॥
इत्युक्त्वान्ते तदा देवः शरभः पक्षिराजसौ।
ततो नारायणो ध्यात्वा दृष्ट्वा रूपञ्च विस्मितः॥३७॥
एतत्ते सुभ्रु कथितं हृदयं शरभस्य च।
पठतां श्रृण्वताञ्चैव सर्वमन्त्रादि सिद्धिदम्॥३८॥

इस प्रकार का ध्यान करके हृदय स्तोत्र का पाठ प्रतिदिन तीस बार करे तो सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं। इस पाठ से सभी पुण्य प्राप्त होते हैं और सभी शत्रुओं का नाश होता है। सभी रोगों का नाश होता है। इस दिव्यं भजन से सभी पापों का नाश होता है। इस संसार में सभी भोगों को भोगकर अन्त में शिव लोक में वास होता है। देव पक्षिराज शरभ के ऐसा कहने पर नारायण ने ध्यान किया तो रूप देखकर आश्चर्य युक्त हो गये। शिव ने कहा हे शुभ्रु इस शरभ हृदय स्तोत्र को मैने कहा। इसके पाठ से और पाठ सुनने से सभी मन्त्रादि सिद्ध होते हैं।

इति पक्षिराज हृदय स्तोत्र।

शरभार्चन पद्धति

श्री गणेशाय नमः

तद्विष्णुपदमानभ्य भुवनेन्दु प्रपूरितम्।
श्रीरामकृष्णः कुर्वेऽहं शरभार्चन पद्धतिम्॥
विष्णोः पदं सद्भवनेन्दु पूजितम्
शक्रं त्रिवृद् यद्धृदयेन भावितम्।
समायकं तं हृदि भावते शिवं
शिवाय नित्यं धिषणा भवाय॥

भुवनेन्द्र प्रपूरित विष्णु पद को प्रणाम करके मैं रामकृष्ण शरभार्चन पद्धति को कहता हूँ। सदभवन चन्द्र में पूजित उस विष्णु चरण को

नमस्कार करता हूँ, जिसका इन्द्रादि देवता अपने हृदय में ध्यान करते है। उस चरण का ध्यान देवता अपने हृदय में बृहस्पति के साथ लोक कल्याण के लिये करते हैं।

तत्र श्रीमान् साधकेन्द्रो ब्राह्मे मुहूर्त्ते उत्थाय कृतावश्यक क्रियो रात्रि वासस्त्यक्त्वा शिरस्थ सहस्रदल कमल कर्णिकायां वराभयकरं स्वशक्त्यालिंगितं वामाङ्गतन्न्यासपूर्वकं गुरूं स्मृत्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य ऐं अमुकानन्द नाथ अमुकी देव्यम्बा श्री पादुका पूजयामि नमः इति दशधा जपित्वा अखण्ड मण्डलाकार मित्यादिना प्रणम्य श्वासानु सारेण भूमौ पादं निधाय स्वामिनी जगदम्बिकामिति कुण्डलिनीं ध्यात्वा यथा शक्ति मूलं जपित्वा गुरु पङ्क्ति नमः स्वकृत्य समुद्रमेखले इति भूमिं प्रार्थ्य दन्तधावनान्तकं कृत्वा तडित्कोटि प्रतीकाशां विष तन्तु तनीयसीं इति कुण्डलिनीं ध्यात्वा अशेष व्यवहाराय शरभेषाष्टकं त्रिवारं मनसा जपेत्।

श्रीमान साधकेन्द्र ब्राह्म मुहूर्त में उठकर आवश्यक नित्यकर्म करे। रात में पहने वस्त्र को त्याग कर स्वच्छ वस्त्र धारण करे।

शिरस्थ सहस्रदल कमल कर्णिका में अपने गुरु का ध्यान करे। अपनी शक्ति से आलिंगित वामांग वाले गुरु के हाथ में वर और अभय मुद्रा है। नाम से गुरु का स्मरण करके मानसोपचारों से पूजा करे।

तब 'ऐं अमुकानन्दनाथ अमुकी देव्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि नमः' का जप दश बार करे।

अखण्ड मण्डलादि मन्त्र से प्रणाम करे। जो श्वास प्रवहमान हो उसी तरफ के पैर को भूमि पर रखकर स्वामिनी जगदम्बिका कुण्डलिनी का ध्यान करे।

यथा शक्ति मूल मन्त्र का जप करे। गुरु पंक्ति को प्रणाम करे। समुद्र मेखले मन्त्र से भूमि की प्रार्थना करे। तब दतुवन करे। 'तड़ित कोटि प्रतीकाशां विषतन्तु तनीयसी' के रुप में कुण्डलिनी का ध्यान करे। सभी व्यवहारों को करने के बाद शरभेशाष्टक का मानसिक जप तीन बार करे।

विनियोग–अस्य श्री शरभेशाष्टक मन्त्रस्य कालाग्नि रुद्र ऋषिः। जगती छन्दः। भगवान श्री शरभेश्वरो देवता। खं बीजं। स्वाहा शक्तिः। चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास—कालाग्निरुद्र ऋषये नमः शिरसि। जगती छन्दसे नमः मुखे। भगवते श्री शरभेश्वराय देवतायै नमः हृदि खं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः।

मन्त्राक्षरों से षडंग न्यास करे। तब ध्यान करे।

अथ ध्यानम्

ज्वलनकुटिलकेशं सूर्यचन्द्राग्निनेत्रम्।
निशितकरनखाग्रैर्धूम्रहेमादिदेहम् ॥
शरभमथ मुनीन्द्रैः स्तूयमानं सितांगं।
प्रणतभयविनाशं भावये पक्षिराजम्॥

इस प्रकार का ध्यान करके वक्ष्यमाण रीत से मानसोपचार पूजा करे तब शरभेशाष्टक स्तोत्र का पाठ करे। इस शरभेशाष्टक में २६ श्लोक है। वैसे अष्टक में आठ ही श्लोक होते हैं जैसे रुद्राष्टक आदि।

शरभेशाष्टक स्तोत्र

इति ध्यात्वा वक्ष्यमाणरीत्या मानसोपचारैराराध्य पठेत्।
ॐ देवाधिदेवाय जगन्मयाय शिवाय नालीकनिभाननाय।
शर्वाय भीमाय शराधिपाय, नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय॥१॥
हराय भीमाय हरिप्रियाय भवाय शान्ताय परात्पराय।
मृडाय रुद्राय त्रिलोचनाय नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय॥२॥
शीताँशुचूडाय दिगम्बराय, सृष्टिस्थितिध्वंसनकारणाय।
जटाकलापाय जितेन्द्रियाय नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय॥३॥
कलंककण्ठाय भवान्तकाय, कपालशूलाढ्य कराम्बुजाय।
भुजङ्गभूषाय पुरान्तकाय नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय॥४॥
शमादिषट्काय यमान्तकाय यमादियोगाष्टकसिद्धिदाय।
उमाधिनाथाय पुरातनाय नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय॥५॥
घृणादिपाशाष्टकवर्जिताय, लेखीकृतास्मिन् पथिपुङ्गवाय।
गुणादिहीनाय गुणत्रयाय नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय॥६॥
कलादिवेदामृत कन्दलाय कल्याणकौतूहलकारणाय।
स्थूलाय सूक्ष्माय सुरूपकाय नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय॥७॥
पञ्चाननायाखिलभासनाय पञ्चाशदर्णाय पराक्षराय।
पञ्चाक्षरेशाय जगद्धिताय नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय॥८॥

नीलकण्ठाय रुद्राय शिवाय शशिमौलिने।
भवाय भवनाशाय पक्षिराजाय ते नमः॥९॥
परात्पराय घोराय शम्भवे परमात्मने।
शर्वाय निर्मलाङ्गाय शालुवाय नमो नमः॥१०॥
गङ्गाधराय साम्बाय परमानन्दतेजसे।
सर्वेश्वराय शान्ताय शरभाय नमोनमः॥११॥
वरदाय गाङ्गेयाय वामदेवाय शूलिने।
गिरिशाय गिरीशाय गिरिजापतये नमः॥१२॥
कनक जठर कोद्यद्रक्त पानोन्मेदन,
प्रथित निखिल पीडा नारसिंहेन जाता।
शरभ हर शिवेश त्राहि नः सर्वपापा-
दनिशमिह कृपालु शालुवेश प्रभो त्वम्॥१३॥
शरभेशशर्वाधिकशान्तमूर्ते कृतापराधानमरानपायान्।
विनीतविश्वद्धिविधायतेन नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय॥१४॥
दंष्ट्राननोग्रः शरभः सपक्षश्चतुर्भुजश्चाष्टभुजश्चतुर्विधः।
कोटीर गङ्गेन्दु धरोनृसिंह क्षौभायह्यास्मद्रिपुहास्तु शम्भुः॥१५॥
हुंकारीशरभेश्वरोऽष्टचरणः पक्षी चतुर्बाहुकः
पादाकृष्टनृसिंह विग्रहधरः कालाग्निकोटिद्युतिः।
विश्वक्षोभहरः सहेतिरर्निशं ब्रह्मेन्द्र मुख्यैः
स्तुतो गङ्गा चन्द्रधरः पुरत्रयहरः सद्यो रिपुघ्नोस्तुमः॥१६॥
मृगाङ्गलाङ्गलसुचञ्चुपक्षो दंष्ट्राभिरष्टांध्रि भुजा सहस्त्रः।
त्रिनेत्रगङ्गेन्दुधरः प्रभाढ्यः पायादपायाच्छरभेश्वरोनः॥१७॥
नृसिंहमत्युग्रमदिव्यतेजः प्रकाशिनं दानवभङ्ग दक्षम्।
प्रशान्तमन्त विदधाति योऽमुँ सोऽव्यादपायाच्छरभेश्वरोनः॥१८॥
योऽभूत् सहस्त्रांशु, शतप्रकाशः सपक्षिसिंहाकृतिरष्टपादाः
नृसिंहसंक्षोभशमात्तरूपः पायादपायाच्छरभेश्वरोनः॥१९॥
त्वां मन्युमन्तं प्रवदन्ति वेदाः त्वां शान्तिमन्तं मुनयो गृणन्ति
दृष्टे नृसिंहे जगदीश्वरेते सर्वापराधं शरभः क्षमस्व॥२०॥
करचरणकृतं वा कायजं कर्मजं वा
श्रवण नयनजं वा मानसं वापराधम्।

विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
शिव शिव करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो॥२१॥
रुद्रः शङ्कर ईश्वरः पुरहरः स्थाणुः कपर्दी शिवो
वागीशो वृषभध्वज स्मर हरो भक्ति प्रियस्त्र्यम्बकः।
भूतेशो जगदीशश्वरश्च शरभो मृत्युञ्जयश्रीपति-
रस्मान्कालगलोऽवतात् पशुपतिः शम्भुः पिनाकी हरः॥२२॥
योऽस्मान्याहि भगवन्नः प्रसीद च पुनः पुनः।
इति स्तुतो महादेवः प्रसन्नो भक्तवत्सलः॥२३॥
यतो नृसिंहं हरसे हर इत्युच्यसे बुधैः।
यतो विभर्ति सकलं विभज्यतनुमष्टधा॥२४॥
सुरान्नाह्लादयामास वरदानैरभीप्सितैः।
प्रसन्नोऽस्मि स्तवेनाहमनेन विबुधेश्वराः॥२५॥
मयिरुद्रे महादेवे भजध्वं भक्तिपूरिताः।
ममाँशोऽयं नृसिंहोऽपि मयि भक्ततमोऽस्त्विह॥२६॥
इमं स्तवं पठेद्यस्तु शरभेशाष्टकं नरः।
तस्य नश्यन्ति पापानि रिपवपश्च सुरोत्तमाः॥२७॥
नश्यन्ति सर्वरोगाणि क्षयरोगादिकानि च।
अशेषग्रहभूतानि कृत्रिमाणि ज्वराणि च॥२८॥
सर्पचौरादिशार्दूलगजपोत्रिमुखाणि च।
अन्यानि च वनस्थानि नास्ति भीतिर्न संशयः॥२९॥
इत्युक्त्वान्तर्दधे देवि देवान्सर्वशालुवः।
ततस्ते स्वस्वधामानि गताश्चाह्लाद पूर्वकम्॥३०॥
एतच्छारभकं स्तोत्रं मन्त्रभूतं जपेन्नरः।
सर्वान्कामानवाप्नोति शिवलोकञ्च गच्छति॥३१॥

इस शरभाष्टक स्तोत्र का पाठ जो मनुष्य करता है उसके पापों का नाश हो जाता है। शत्रु और असुरों का नाश होता है। उसके सभी रोग, क्षय रोगादि का नाश होता है। उसके सभी दुष्ट ग्रहों का प्रभाव नहीं रहता। भूत, प्रेत, कृत्रिम ज्वरों का नाश होता है। उसे सर्प, चोर, व्याघ्र हाथी, सूअर और अन्य जंगली जानवरों का भय नहीं रहता। हे देवि! यह कहकर शरभ शालुव अन्तर्धान हो गये। इसके बाद सभी देवता

अपने अपने धामों में प्रसन्नता पूर्वक गये। जो मनुष्य इस मन्त्र रूप शरभ स्तोत्र का पाठ करता है वह सभी मनोरथों को प्राप्त करके शिवलोक में जाता है।

इति जपित्वा गणेशं शरभं च नमस्कृत्य स्नान सामग्रीमादाय नद्यादौ गत्वा तीर्थं नमस्कृत्य जलेन मुखनासाक्षिशोधनं मूल मन्त्रेण विधाय मलापकर्षण स्नानोत्तरं स्वशाखोक्तं स्नानविधाय मन्त्रस्नानं कुर्यात्। अद्येत्यादिः श्रीमच्छरभ प्रीतये स्नानमहं करिष्ये। इति संकल्प्य जले चतुर्हस्तात्मकं क्षेत्रं विचिन्त्य तत्र पूजाप्रकरणोक्तं यन्त्रं विचिन्त्य प्राणायाम षडङ्गौ कृत्वा अङ्कुश मुद्रया अर्कात् तिर्थानि गङ्गे च यमुने चेत्यादिना आवाह्य मूलं त्रिर्जपित्वा त्रिरुन्मज्जेत् ततो वैदिकीं सन्ध्यां विधाय मूलेन त्रिराचम्य त्रिधा प्रोक्ष्य त्रिः जलमभिमन्त्र्य प्राशयेत्। ततो वाम हस्ते जलं गृहीत्वा दक्षेणाच्छाद्य यं रं लं वं इति संजप्य गलितोदकविन्दुभिः सप्तवारं मूर्द्धानभिषिञ्च्य तदुदकं दक्षिण हस्तेगृहीत्वा इडयाकृष्य देहान्तः पापं प्रक्षाल्य पिङ्गलया विरेच्य पुरः कल्पित वज्र शिलायां क्षिपेत्। ततो देवर्षि पितृन् सन्तर्प्य गुरुं परमगुरुं परापत्रगुरुं परमेष्ठिगुरुञ्च त्रिः त्रिः सन्तर्प्य मूलान्ते श्रीमच्छरभपादुकां तर्पयामि नमः इति त्रिः तर्पयेत्।। ततो हंसः मार्तण्डभैरवाय प्रकाशशक्तिसहिताय श्री सूर्याय इदमर्घ्यं समर्पयामि नमः स्वाहा। इति अर्घ्यं सूर्याय दत्वा मूलान्ते सूर्यमण्डलस्थाय श्रीमच्छरभाय इदमर्घ्यं नमः स्वाहा त्रिरर्घ्यं दत्वा मूलेन त्रिवारं भस्माभिमन्त्र्य ललाटादिषु धारयेत् अथवा भस्म धारणं कृत्वा सान्ध्यं कर्म समाचरेत् तत उपस्थानात्मक ध्यानं कुर्यात् यथा–

सूर्य मण्डल मध्यस्थं ज्योतिर्मय मुखाम्बुजम्।
चारु कुण्डल संयुक्तं चन्द्रमालावतंसितम्।
दशबाहुं महाकायं सुवर्णसदृशप्रभम्।
चक्रशूलगदा खड्ग वाणकार्मुकखेटकैः।।
घण्टाकपाल शंखैश्च भासमान कराम्बुजम्।
दिव्याभरणसंयुक्तं दिव्यवासं त्रिलोचनम्।
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रमष्टोत्तरशतं सुधीः।
द्वि चत्वारिंशदथवा कृत्वा चावश्यकं सुधी।।
ततो दश कृत्वो गायत्री जपेत्।

इस प्रकार शरभेश्वराष्टक का पाठ करके गणेश को प्रणाम करके स्नान सामग्रियों को लेकर नदी आदि पर जायँ। तीर्थ को प्रणाम करके जल से मुख नाक आखों का शोधन मूल मन्त्र से करे। मलापकर्षण करे। स्नान के बाद अपनी शाखा के अनुसार स्नान करे। तब मन्त्र स्नान करे। संकल्प करे—अद्येत्यादि श्रीमच्छरभ प्रीतये स्नानमहं करिष्ये।

इस प्रकार का संकल्प करके जल में चार हाथ लम्बे चौड़े क्षेत्र का चिन्तन करे। उसमें पूजा प्रकरण में उक्त यन्त्र का चिन्तन करे। प्राणायाम करके षडंग न्यास करे। अंकुश मुद्रा में सूर्यमण्डल से तीर्थों को आकर्षित करे 'गंगे च यमुने चैव' इत्यादि मन्त्रों से आवाहन करे। मूल मन्त्र का तीन जप करे। तीन डूबकी लगाकर वैदिकी-सन्ध्या करे। मूल मन्त्र से तीन आचमन करके तीन बार अपना प्रोक्षण करे। जल को तीन जप से अभिमन्त्रित करके पी जाय।

तब बाएँ हाथ में जल लेकर दाएँ हाथ से ढककर यं रं लं वं का जप करे। हाथ से चूने हुए जल बिन्दुओं से अपने मस्तक का प्रोक्षण सात बार करे। तब उस जल को दाएँ हाथ में लेकर इड़ा नाड़ी से भीतर ले जाये शरीर के सभी पापों को स्वच्छ करे। उस जल को पिंगला नाड़ी से बाहर निकाल कर कल्पित वज्र शिला पर पटक दे। तब देवर्षि पितरों का तर्पण करे।

तब गुरु परमगुरु परात्पर गुरु परमेष्ठि गुरु को तीन तीन जलांजलि देकर तर्पण करे।

मूल मन्त्र के साथ श्रीमच्छरभ पादुकां तर्पयामि नमः कहकर तीन बार तर्पण करे। इसके बाद हंसः मार्तण्ड भैरवाय प्रकाशशक्तिसहिताय श्रीसूर्याय इदमर्घ्यं समर्पयामि नमः स्वाहा' मन्त्र से सूर्य को अर्घ्य दे। तब मूल मन्त्र 'सूर्य मण्डलस्थाय श्रीमच्छरभाय इदमर्घ्यं' नमः स्वाहां से तीन अर्घ्य देवे। मूल मन्त्र के तीन जप से भस्म को अभिमन्त्रित करके ललाट आदि में लगावे। भस्म धारण करके सान्ध्य कर्मकरे। तब उपस्थानात्मक ध्यान करें। जैसे—

सूर्यमण्डलमध्यस्थं ज्योतिर्मयमुखाम्बुजम्।
चारुकुण्डलसंयुक्तं चन्द्रमालावतंसितम्॥
दशबाहुं महाकायं सुवर्णसदृशप्रभम्।
चक्रशूलगदाखड्गबाणकार्मुकखेटकैः ॥
घण्टाकपालशंखैश्च भासमानकराम्बुजम्।
दिव्याभरणसंयुक्तं दिव्यवासं त्रिलोचनम्।

इस प्रकार का ध्यान करके एक सौ आठ बार मन्त्र जप करे। अथवा समय में कमी होने पर ४२ बयालिश बार ही जप करे। इसके बाद दश बार गायत्री जप करे।

ॐ पक्षि शाल्वाय विद्महे वज्रतुण्डाय धीमहि तन्नः शरभः प्रचोदयात् ॐ।

इति एतदुद्धारो वातुले—

तारमादौ वरेद्देवी पक्षिशाल्वाय वै पदम्।
विद्महेति पदं चोक्त्वा वज्र तुण्डाय धीमहि।
तन्नः शब्दं समुचार्य शरभेति ततोच्चरेत्।
प्रचोदयात् पद् चोक्त्वा तारञ्चैव पुनर्वदेत्।।
एषा शालुव गायत्री जपतां सर्वकामदा।

ततो जलसम्भृतं पात्रमादाय यागमण्डप द्वारमागत्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य सामान्यार्घ्यं संस्थाप्य द्वां द्वारदेवताभ्यो नमः इति द्वारदेवताः सम्पूज्य वामाङ्ग संकोचेन दक्षिणपादपुरस्सरं गृहं प्रविश्य नैऋत्यां वास्तुपुरुषाय नमः ब्रह्मणे मूलमन्त्रेण दिव्यदृष्ट्या दिव्यान् विघ्नानुत्सार्य फडिति जलेनान्तरिक्षगान् फडितिवामपार्ष्णिघातत्रयेण भौमांश्च विघ्नानुत्सार्य अपसर्पन्त्विति सर्वविघ्नानुत्सारयेत्।

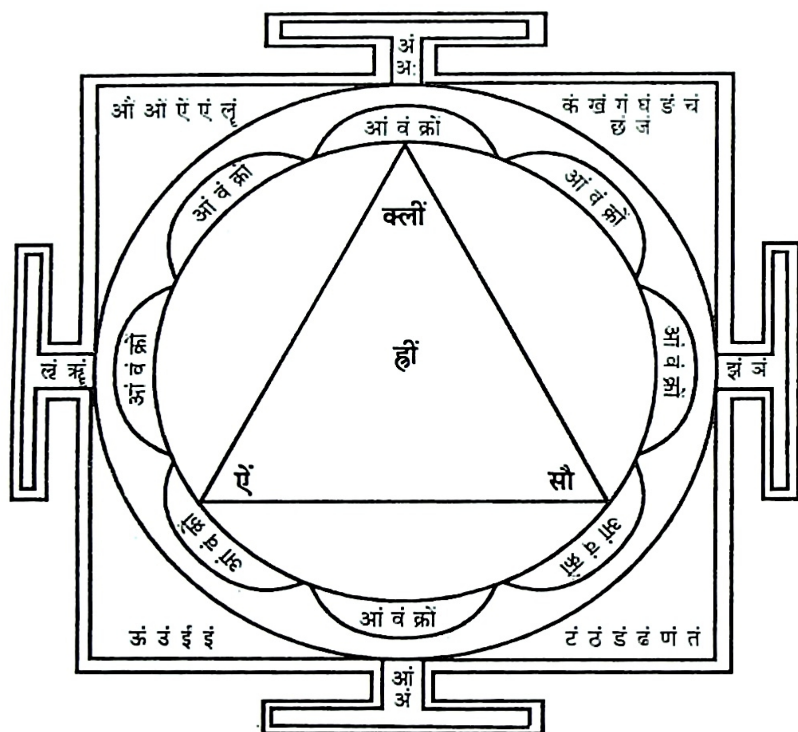
शरभ गायत्री मन्त्र–ॐ पक्षिशाल्वाय विद्महे वज्र तुण्डाय धीमहि तन्नः शरभः प्रचोदयात ॐ।

इसका उद्धार इस प्रकार हुआ है। पहले तार ॐ तब पक्षिशाल्वाय तब विद्महे तब वज्र तुण्डाय धी महि तब तन्नः तब शरभ तब प्रयोदयात् पद तब पुनः ॐ है। शालुव गायत्री जप करने पर सभी कामनाओं को पूरी करती है।

जलपूर्ण पात्र लेकर यागमण्डप के द्वारपर आये। हाथ पैरों को धोकर सामान्यार्घ्य स्थापित करे। द्वां द्वारेभ्यो नमः से द्वार देवता की पूजा करे। वामांग को संकुचित करके दक्षिण पैर को आगे बढ़ाकर गृह में प्रवेश करे। नैऋत्य में वास्तु पुरुषाय नमः से पूजा करे। मूल मन्त्र बोलकर दिव्य दृष्टि से देखकर दिव्य विघ्नों का उत्सारण करे। फट् कहकर जल के छीटें से अन्तरिक्ष के विघ्नों का उत्सारण करे। पृथ्वी पर तीन बार एँड़ी पटक कर पृथ्वी पर के विघ्नों का उत्सारण कर ॐ अ पसर्पन्तु मन्त्र से सभी विघ्नों का उत्सारण करे।

ततः त्रिकोणाष्टदल वृत्त भूपुरद्वयात्मकं यन्त्रं निर्माय त्रिकोण मध्ये शक्तिबीजं लिखित्वा कोणत्रये बालाबीजत्रयं लिखेत् ततोऽष्टदलेषु पाशाङ्कुशमध्यगममृतबीजं लिखित्वा वृत्तं मातृकयाऽऽवेष्टय तत्रासनं स्थापयेत्। एतदाधारयन्त्रं सर्व विघ्न निवारणं सर्व सिद्धिदं चेति वातुल तन्त्रादव धार्यम्। ततो ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः इत्यासनं सम्पूज्य पृथिवीतयादिनाऽऽसनं संस्थाप्य स्वस्तिकादिक्रमेणोपविशेत् ततो वामे ॐ गुरुभ्यो नमः। दक्षिणे ॐ गणेशाय नमः।

यन्त्र



त्रिकोण अष्टदल वृत्तात्मक दो भूपुर से यन्त्र बनावे। मध्य में शक्तिबीज ह्रीं लिखे त्रिकोण के कोनों वाला बीज ऐं क्लीं सौः लिखे। अष्टदल में आं वं क्रों और वृत्त की मातृका आं से वेष्टित करे। उस पर अपना आसन बिछावे। यह आधार यन्त्र सर्व विघ्न निवारक सर्व सिद्धिप्रद है वातुल तन्त्रादि का यह मत है।

ह्रीं आधार शक्ति कमलासनाय नमः से आसन की पूजा करे। पृथिवी त्वयाधृता० आदि से आसन स्थापित करे। स्वस्तिकादि आसन में बैठे। बाएँ ॐ गुरुभ्यां नमः दाएँ ॐ गणेशाय नमः से प्रणाम करे।

मध्ये श्री शरभाय नमः ततः फडिति गन्धपुष्पाभ्यां करौ संशोध्य ऊर्ध्वं तालत्रयं दत्त्वा छोटिकाभिर्दश दिग्बन्धनं कृत्वार्वामति जलधारया अग्नि प्राकारं विचिन्त्य भूत शुद्धिं समाचरेत् यथा आसने दृढ़ आसनः कनिष्ठिनामिकाङ्गुष्ठै नासापुटं धृत्वा षोडशवारं यमित्युच्चार्य वामेनापूर्य पुनर्वायुबीजं द्विरावृत्या कुम्भयित्वा दक्षिणेन रेचने वाम कुक्षिस्थं पाप पुरुषं कज्जलप्रभं ब्रह्म हत्या शिरस्कं स्वर्णस्तेय भुजद्वयं सुरापान हृदयं गुरु तल्प कटिं तत्संयोगि पद द्वन्द अङ्ग प्रत्यङ्ग पातकमुपपातक रोमाणं रक्त श्मश्रु विलोचनं खड्ग चर्म धरं क्रुद्धं पापं कुक्षौ चिन्तयित्वा पाप सहित पाप पुरुष तनुं संशोष्य तां च शुष्कान्ते एवं क्रमेण रं बीजेन संदह्य पाप रहित स्व शरीरं बं इति जलेनाप्लाव्य लमिति भूम्या दृढी कृत्य पञ्चाशद्वर्ण संख्यावयवान देहे निष्पन्नान विभाव्य तं देहं स्थिरी कुर्यात्। ततः हृदि हस्तं दत्वा आं सोऽहमिति त्रिजपेन देहे जीवं संयोज्य तथाविध देहं स्थिरीकृत्य लिपिं न्यासं कुर्यात् मातृका मन्त्रस्य ब्रह्माऋषिर्गायत्री छन्दो मातृका सरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः लिपिन्यासे विनियोगः।

इति स्मृत्वा ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि गायत्री छन्दसे नमः मुखे सरस्वती देवतायै नमः हृदि अल् बीजाय नमः गुह्ये विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे इति अस्य षडङ्गं कुर्यात्।

उस यन्त्र के मध्य में श्री शरभाय नमः से प्रणाम करे। 'फट्' से गन्ध पुष्प से हाथों का शोधन करे। ऊपर की ओर तीन ताली बजावे। चुटकी बजाकर दशो दिशाओं में दिग्बन्ध करे। वं से जलधार गिराकर अग्नि के घेरे का चिन्तन करे। भूशुद्धि करे। दृढ़ आसन में बैठे। कनिष्ठा अनामिका और अंगूठे को नासापुट पर रखकर सोलह बार 'यं' जप से वायाँ छिद्र में पूरक करे और ६४ बार 'यं' जप से कुम्भक करे। बत्तीस बार 'यं' जपते हुए दाएँ नासाछिद्र से रेचक करे। कुक्षि स्थित काले पाप पुरुष जिसका शिर ब्रह्महत्या, सोने की चोरी हाथ, सुरपान हृदय, गुरुधन चोरी कमर है और पैर, अंग प्रत्यंग पातक-उपपातक रोम रक्त

दाढ़ी लोचन है। तलवार ढाल हाथों में है। क्रुद्ध पाप पुरुष का कुक्षि में चिन्तन करके पाप सहित उसके शरीर को सुखा दे। उसके सूखे सूखे शरीर को 'रं' अग्नि बीज से जला दे। पाप रहित अपने शरीर को वं अमृतबीज के जल से आप्लावित करे। भूमिबीज 'लं' से शरीर को मजबूत करे। पचाश वर्ण न्यास स्थान के अंगों से निष्पन्न अपने शरीर को सुदृढ़ करे।

तब हृदय पर हाथ रखकर 'आं सोऽहम्' का जप तीन बार करके देह में जीव को जोड़ दे। उसी प्रकार शरीर को स्थिर करके मातृका न्यास करे।

विनियोग—

मातृका मन्त्रस्य, ब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः। मातृका सरस्वती देवता हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः लिपिन्यासे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास—

ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। सरस्वती देवतायै नमः हृदि। हूं बीजाय नमः गुह्ये विनियोगाय नमः सर्वांगे।

कर न्यास—

अं कं खं गं घं ङ आं अंगुष्ठाभ्यां नमः।

इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः।

उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः।

एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः।

ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठाभ्यां नमः।

अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

इसी प्रकार हृदयादि षडंग न्यास करे।

अकारादि सोलह स्वरों का न्यास कण्ठस्थ विशुद्धि चक्र में करे।

क से ठ तक बारह वर्णों का न्यास हृदयस्थ अनाहत चक्र कें १२ दलों में करे।

ड से फ तक दश वर्णों का न्यास नाभि में दशदल मणिपूर चक्र में करे।

वं से लं तक आठ का न्यास लिंग देश के षडदल में करे।

व से स तक चार का न्यास चतुर्दल मूलाधार में करे।

हं क्षं दो का न्यास भ्रूमध्य के द्विदल में करे। तब ध्यान इस प्रकार से करे।

पञ्चाशल्लिपिभिर्विभक्तमुखदोर्यन्मध्यवक्षस्थलाम् ।
भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रशकलामापीनतुङ्गस्तनीम् ॥
मुद्रामक्षगुणं सुधाढ्यकलशं व्याख्यां च हस्ताम्बुजैः।
विभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये॥

इस प्रकार से ध्यान करके न्यास करे।

सृष्टि मातृका न्यास—

अं नमः ललाटे।
आं नमः मुख वृत्ते।
इ नमः दक्षनेत्रे।
ईं नमः वाम नेत्रे।
उं नम दक्षकर्णो।
ऊँ नमः वामकर्णो।
ऋं नमः दक्षनसि।
ॠं नमः वामनसि।
ऌ नमः दक्ष गण्डे।
ॡं नमः वाम गण्डे।
एं नमः ओष्ठे।
ऐं नमः अधरे।
ओं नमः ऊर्ध्व दन्तपंक्तौ।
औं नमः अधो दन्तपंक्तौ
अं नमः मूर्ध्नि।
अः नमः मुखे।
कं नमः दक्ष बाहु मूले
खं नमः कूर्परे।
गं नमः मणिबन्धे।
घं नमः अंगुलि मूले।
ङं नमः अंगुल्यग्रे।
चं नमः वामबाहु मूले।

छं नमः कूर्परे।

जं नमः मणिबन्धे।

झं नमः वाम-अंगुलि मूले।

ञं नमः वामाङ्गुल्यग्रे।

टं नमः दक्ष पाद मूले।

ठं नमः जानुनि।

डं नमः गुल्फे।

ढं नमः अंगुलि मूले।

णं नमः अं गुल्यग्रे।

तं नमः वाम पाद मूले,

थं नमः वाम जानुनि

दं नमः वाम गुल्फे।

धं नमः वाम पादांगुलिमूले।

नं नमः वाम अंगुल्यग्रे।

पं नमः दक्षपार्श्वे।

फं नमः वामपार्श्वे।

बं नमः पृष्ठे।

भं नमः नाभौ।

मं नमः जठरे।

यं नमः त्वगात्मने हृदि।

रं नमः असृगात्मने दक्ष स्कन्धो

लं नमः मांसात्मने ककुदि।

वं नमः मेदसात्मने वाम स्कन्धे।

शं नमः अस्थ्यात्मने हृदादि दक्षकरे।

षं नमः मज्जात्मने हृदादि वामकरे।

सं नमः शुक्रात्मने हृदादि दक्षपादे।

हं नमः जीवात्मने हृदादि वामपादे।

लं नमः प्राणात्मने हृदादि नाभौ

क्षं परमात्मने नमः हृदादि मुखे।

इति सृष्टि मातृका न्यास।

स्थितिमातृका न्यास

ऋषि छन्दादि पूर्वोक्त देवता विश्वपालिनी अपने प्रियतम के अंक में बैठी हुई देवी का ध्यान करे।

ध्यान—मृगबालं वरं विद्यामक्ष सूत्रं दधत् करैः।

माला विद्या लसद् हस्ता वहन्ध्येयः शिवोनिरम।।

इस प्रकार का ध्यान करके डं दं णं तं थं दं धं नं..........टं ठं तक का न्यास पूर्ववत् यथा स्थान करे।

अथ संहार

ऋषिश्छन्दश्च पूर्ववत्। शत्रु संहारणि मातृका सरस्वती देवता शेषं पूर्ववत्। अथ ध्यानम्ः–

अक्षसृक् टंक सारङ्ग विद्या हस्तां त्रिलोचनाम्।
चन्द्रमौलि कुचानम्रां रक्ताब्जस्थां गिरां भजे।।

इति ध्यात्वाक्षाद्यां अकारान्तानु विलोमान् वर्णान् न्यसेत्। इति संहारः। पुनः सृष्टि स्थितिं कुर्यात्।

ऋषि छन्द पूर्ववत्। शत्रु संहारिणी मातृका सरस्वती देवता है। शेष पूर्ववत्।

ध्यान—

अक्षसृक् टंक सारंग विद्या हस्ताम् त्रिलोचनाम्।
चन्द्रमौलि कुचानम्रां रक्ताब्जस्थां गिरां भजे।।

इस प्रकार का ध्यान करके क्षं से लेकर अं तक विलोम क्रम से वर्णों का न्यास करे। इति संहार न्यास। पुनः सृष्टि स्थिति न्यास करे।

अथ श्री कण्ठादि न्यास

विनियोग–अस्य श्री कण्ठादि मातृकाया दक्षिणामूर्ति ऋषिः शिरसि गायत्री छन्दः मुखे अर्द्धनारीश्वरो देवता हृदि हलो बीजानि गुह्ये स्वराः शवृतयः पादयोः।

करन्यास–हनां अंगुष्ठाभ्यां नमः। हनीं तर्जनिभ्यां नमः। हनूं मध्यमाभ्यां नमः। हनैं अनामिकाभ्यां नमः। हनौ कनिष्ठाभ्यां नमः। हनः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास–हनां हृदयाय नमः। हनीं शिरसे स्वाहा। हनूं शिखायै वषट्। हनैं कवचाय हुं। हनौं नेत्रत्रयाय वौषट्। हनः अस्त्राय फट्।

ध्यान—

पाशांकुशवराक्षसृक् वाणीं शीतांशुशेखरम्।
त्र्यक्षं रक्तं सुवर्णाभमर्द्धं नारीश्वरं भजे।।

ध्यान के बाद न्यास करे।

हनौं अं श्री कण्ठेशपूर्णो दरिभ्यां नमः ललाटे।
हनौं आं अनन्तेश विरजाभ्यां नमः मुखवृत्ते।
हनौं इं सूक्ष्मेश शाल्मलीभ्यां नमः दक्ष नेत्रे।
हनौं ईं त्रिमूर्तीश लोलाक्षीभ्यां नमः वामनेत्रे।
हनौं उं अमरेश वर्तुलाक्षीभ्यां नमः दक्षकर्णे।
हनौं ऊं अर्द्धीश दीर्घघोराभ्यां नमः वामकर्णे।
हनौं ऋं भारभूतेशदीर्घमुखीभ्यां नमः दक्षनसि।
हनौं ॠं तिथीश गोमुखीभ्यां नमः वामनसि।
हनौं ऌं स्थाण्वेश दीर्घजिह्वाभ्यां नमः दक्षगण्डे।
हनौं ॡं हरेश कुण्डोदरीभ्यां नमः वामगण्डे।
हनौं एं भिन्टीश-ऊर्ध्वकेशीभ्यां नमः ओष्ठे।
हनौं ऐं भौतिकेश विकृतमुखीभ्यां नमः अधरोष्ठे।
हनौं ओं सद्योजातेश ज्वालामुखीभ्यां नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ।
हनौं औं अनुग्रहेश-उल्का मुखीभ्यां नमः अधोदन्त पङ्क्तौ।
हनौं अं अक्रूरेश श्री मुखाभ्यां नमः मूर्ध्नि।
हनौं अः महासेनेश विद्यामुखीभ्यां नमः मुखे।
हनौं कं क्रोधेश महाकालीभ्यां नमः दक्षबाहुमूले।
हनौं खं चण्डेश सरस्वतीभ्यां नमः कूर्परे।
हनौं गं पंचान्तकसर्वेशसिद्धिगौरीभ्यां नमः माणिबन्धे।
हनौं घं शिवोत्तमेश त्रैलोक्यविद्याभ्यां नमः अंगुलिमुले।
हनौं ङं एकरुद्रेश मन्त्रशक्तिभ्यां नमः अंगुल्यग्रे।
हनौं चं कूर्मेश-आत्मशक्तिभ्यां नमः वामबाहुमूले।
हनौं छं एकनेत्रेशभूतमातृभ्यां नमः कूर्परे।
हनौं जं चतुराननेश लम्बोदरीभ्यां नमः मणिबन्धे।
हनौं झं अजेश द्राविणीभ्यां नमः अंगुलिमूले।
हनौं ञं सर्वेश नागरीभ्यां नमः अंगुल्यग्रे।

हनौं टं सोमेश खेचरीभ्यां नमः दक्षपादमूले।
हनौं ठं लांगलीश मंजरीभ्यां नमः जानुनी।
हनौं डं दारुकेश रुक्मणीभ्यां नमः गुल्फे।
हनौं ढं अर्द्धनारीशवाणीभ्यां नमः अंगुलिमूले।
हनौं णं उमाकान्तेश काकोदरीभ्यां नमः अंगुल्यग्रे।
हनौं तं आषाढ़ीश पूतनाभ्यां नमः वामपादमूले।
हनौं थं चण्डीश भद्रकालीभ्यां नमः जानुनी।
हनौं दं अत्रीश योगिनीभ्यां नमः गुल्फे।
हनौं धं निमेष शंखनीभ्यां नमः अंगुलि मूले।
हनौं नं मेषेश तर्जनीभ्यां नमः अंगुल्यग्रे।
हनौं पं लोहितेशकालरात्रीभ्यां नमः दक्षपार्श्वे।
हनौं फं शिखीश कुब्जिनीभ्यां नमः वामपार्श्वे।
हनौं बं छगलण्डेश कपर्दनीभ्यां नमः पृष्ठे।
हनौं भं द्विरण्डेशवज्राभ्यां नमः नाभौ।
हनौं मं महाकालेश जयाभ्यां नमः जठरे।
हनौं यं त्वगात्मभ्यां वालीश सुमुखीभ्यां नमः हृदि।
हनौं रं असृगात्मभ्यां भुजंगेश रेवतीभ्यां नमः दक्षांशे।
हनौं लं मांसात्मभ्यां पिनाकीशमाधवीभ्यां नमः कुकुदि।
हनौं वं मेदात्मभ्यां खड्गीश वारुणीभ्यां नमः वामांशे।
हनौं शं अस्थ्यात्मभ्यां बकेश वायवीभ्यां नमः हृदयादि दक्ष करे।
हनौं षं मज्जात्मभ्यां श्वेतेशरक्षो विदरिणीभ्यां नमः हृदयादि वाम करे।

हनौं सं शुक्रात्मभ्यां भृग्वीश सहजाभ्यां नमः हृदयादिदक्ष-पादान्ते।

हनौं हं जीवात्मभ्यां लकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः हृदयादि वाम-पादान्ते।

हनौं लं शक्त्यात्मभ्यां शिवेश व्यापिनीभ्यां नमः नाभौ।
हनौं क्षं क्रोधात्मभ्यां संवर्तकेश महामायाभ्यां हृदयादि मुखे।

इति श्री कण्ठादिन्यासः।

अथ प्राणायामः

मन्त्राद्यबीजं षोडशवारं जपन् वामेन वायुमापूर्य चतुष्षष्ठि वारं जपेन कुम्भयित्वा दक्षिणेन रेचयेत् पुनर्दक्षिणेनापूर्य उभाभ्यां कुम्भयित्वा दक्षिणेन रेचयेत् पुनर्दक्षिणेनापूर्य उभाभ्यां कुम्भयित्वा वामेन रेचयेत् पुनर्वामेनापूर्योभाभ्यां कुम्भयित्वा दक्षिणेन रेचयेदित्येकः प्राणायामः एवं त्रिः।

मन्त्र के आद्य वर्ण को सोलह बार जपते हुए वाम नासाछिद्र से पूरक करे। चौंसठ बार जपते हुए कुम्भक करे। दक्षिणा नासा छिद्र से बत्तीस बार जपते हुए रेचक करे। पुनः दक्षिण से पूरक तब कुम्भक और बाएँ से रेचक करे। पुनः बाएँ से पूरक तब कुम्भक तब दाएँ से रेचक करे। यह एक प्राणायाम होता है। इस प्रकार तीन प्राणायाम करे।

अथ पीठ न्यासः

आधारे मण्डूकाय नमः। स्वाधिष्ठाने कालाग्निरुद्राय नमः। नाभौ कुर्माय नमः। हृदि ॐ आधारशक्तये नमः। अनन्ताय नमः। पृथिव्यै नमः। क्षीर समुद्राय नमः। श्वेत द्वीपाय नमः मणि मण्डपाय नमः। कल्प वृक्षाय नमः। मणिवेदिकायै नमः। रत्नसिंहासनाय नमः दक्षिणस्कन्धे धर्माय नमः। वामस्कन्धे ज्ञानाय नमः। वामौरौ वैराग्याय नमः। दक्षोरौ ऐश्वर्याय नमः। मुखं अधर्माय नमः। वाम पार्श्वे अज्ञानाय नमः। नाभौ अवैराग्याय नमः दक्ष पार्श्वे अनैश्वर्याय नमः। पुनः हृदि अनन्ताय नमः। पद्माय नमः। अं सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः। ओं चन्द्रमण्डलाय केशकलात्मने नमः। मं वाहने मण्डलाय दशकलात्मने नमः। सं सत्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः। आं आत्मने नमः। पं परमात्मने नमः। ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। सर्वत्र प्रणवादि नमोऽन्तता।

हृदयस्थ कमल के केसरों में पूर्वादि प्रदक्षिण क्रम—

ॐ वामायै नमः। ॐ ज्येष्ठायै नमः। ॐ रौद्रायै नमः। ॐ काल्यै नमः। ॐ कल विकिरिण्यै नमः। ॐ बल विकिरिण्यै नमः ॐ बल प्रमथिन्यै नमः। ॐ सर्वभूतदमिन्यै नमः। मध्यमे मनोजमन्यै नमः। उसके ऊपर ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्तायान्नताय योगपीठात्मने नमः।

इति पीठ न्यास

अथ ऋष्यादिन्यासः। शरभेश्वरः मन्त्रस्य कालाग्नि रुद्र ऋषिः। जगती छन्दः भगवान् शरभेश्वरो देवता खं बीजं स्वाहा शक्तिः स्वेच्छा प्रयोग सिद्धयर्थं विनियोगः। इति स्मृत्वा यथा स्थानं न्यस्य षडङ्गं कुर्यात्। वातुलेतु। वाम देवा कालाग्नि रुद्र ऋषिः अति जगती छन्दः देवता सु पक्षा तरम्। ॐ खें खां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ खं फट् तर्जनीभ्यां नमः प्राणग्रहासि हुं फट् मध्यमाभ्यां नमः। सर्वशत्रु संहारणाय शरभ शालुवाय कनिष्ठाभ्यां नमः। पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः। पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः। पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादि। मुष्ठि विनिर्गतांगुष्ठौ हृदि। निस्तर्जनी तादृशौ शिरसि। निरंगुष्ठ कनिष्ठौ तु शिखायाम्। निरंगुष्ठप्रदेशिनी प्रथग्भूतौ स्कन्धाद् हृदयानतर वर्मणि। तर्जन्यादि त्रयं नेत्रे। तालस्फोटो अस्त्रं। षडङ्गान्ते ॐ इति दिग्बन्धः। इति प्रपञ्च सार संग्रहे ध्यानम्–

चन्द्रार्काग्निस्त्रिदृष्टिः कुलिशवरनखश्चञ्चलोऽत्युग्रजिह्वः।
काली दुर्गा च पक्षौ हृदयजठरगो भैरवो वाडवाग्निः।
ऊरुस्थौ व्याधिमृत्यु शरभवरखगश्चण्डवाताऽतिवेगः।
संहर्ता सर्वशत्रून् सजयति शरभः शालुवः पक्षिराजः।
किंच विमल निभ महोद्यत्कृत्तिवासोवसानम्
द्रुहिणमुखमुनीन्द्रैस्तूयमानं गिरीशम्।
स्फटिक मणिजपासृक् पुस्तकोद्यत्कराब्जम्।
शरभमहमुपासे शालुवेशं खगेशम्॥

अन्यच्च—

मृगस्त्वर्द्धं शरीरेण पक्षाभ्यां चञ्चुना द्विजः।
अधो वक्त्रश्चतुस्पाद ऊर्ध्वं वक्त्रश्चतुर्भुजः॥
कालान्तदहनप्रख्यो नीलजीमूतनिस्वनः।
अरिस्तद्दर्शनादेव विनष्टबलविक्रमः॥
सटाछटोग्ररूपाय पक्षविक्षिप्तभूभृते।
अष्टापदाय रुद्राय नमः शरभमूर्तये॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैर्देवमाराध्येत् यथा लं पृथिव्यात्मने परमात्मने गन्ध तन्मात्र प्रकृत्यानन्दात्मने गन्धं समर्पयामि नमः कनिष्ठाभ्यां हं आकाशात्मने शब्द तन्मात्रात्मने श्रीशरभेश्वराय नमः पुष्पं समर्पयामि अङ्गुष्ठाभ्यां यं वायव्यात्मात्मने स्पर्श तन्मात्रात्मने धूपं समर्पयामि नमः तर्जनीभ्यां रं वह्न्यात्मने रूपतन्मात्रात्मने दीपं समर्पयामि नमः मध्यमाभ्यां बं रसात्मने अमृतात्मने रस तन्मात्रात्मने नैवेद्यं समर्पयामि नमः अनामिकाभ्यां सं शक्त्यात्मने सर्व तन्मात्रात्मने ताम्बूलं समर्पयामि नमः कर सम्पुटाभ्यां।

स्वागतं देवदेवेश सन्निधो भव शङ्करा।
गृहाण मानसीं पूजां यथार्थ परिभाविताम्।
इति मनसा सम्पूज्य पात्रं स्थापयेत्।

ऋष्यादि न्यास—

विनियोग–शरभेश्वरमन्त्रस्य कालाग्निरुद्र ऋषये नमः। शिरसि। जगती छन्दः मुखे भगवान् शरभेश्वरो देवता हृदि खं बीजं गुह्ये स्वाहा शक्ति पादयः स्वेच्छा प्रयोग सिद्धयर्थे विनियोगः। वातुल के अनुसार वामदेवकालाग्निरुद्रऋषि अति जगती छन्दः देवता सुपक्षा तरम।

करन्यास—ॐ खे खां अंगुष्ठाभ्याम् नमः। ॐ खं फट् तर्जनीभ्यां नमः। प्राण ग्रहसि हुंफट् मध्यमाभ्यां नमः सर्व शत्रुसंहारणाय अनामिकाभ्यां नमः। शरभशालुवाय कनिष्ठाभ्यां नमः। पक्षिराजाय हुं फट्स्वाहा करतल्ल कर पृष्ठाभ्यां नमः। इसी प्रकार षडंग न्यास भी करे। मुट्ठी से बाहर अंगूठो से हृदय् में। तर्जनी के विना उसी प्रकार शिर में। विना अंगूठों के कनिष्ठों से शिाखा में, विना अंगूठों व तर्जनी का स्कन्धों से हृदय तक कवच में। तर्जनी आदि से त्रिनेत्रों में। ताली बजाकर अस्त्राय फट् करे। षडंग के बाद दिग्बन्ध ॐ से करे। यह प्रपंच सार संग्रह के अनुसार है।

अथ ध्यानम्

चन्द्रार्काग्निस्त्रिदृष्टिः कुलिशवरनाखश्चञ्चंलोऽत्युग्रजिह्वः।
काली दुर्गा च पक्षौ हृदय जठरगो भैरवो वाड़वाग्निः॥
उरुस्थौ व्याधि मृत्यु शरभवर खगश्चण्ड वातातिवेगः।
स हर्ता सर्व शत्रून् सजयति शरभः शालुवः पक्षिराजः॥

किचविमलनिममहोद्यत्कृत्तिवासो वसानम्।
द्रुहिणमुख मुनीन्द्रैः स्तूयमानं गिरीशम्
स्फटिकमणिजपासृक् पुस्तकोघत्कराव्जम्।
शरभमहमुपासे शालुवेशं खगेशम्
अन्यच्च मृगस्त्वर्द्ध शरीरेण पक्षाभ्यां चंचुना द्विजः।।
अधो वक्त्रश्चतुस्पाद ऊर्ध्व वक्त्रश्चतुर्भुज
कालान्तदहनप्रस्थो नीलजीमूतनिस्वनः
अरिस्तद्दर्शनादेव विनष्टबलविक्रमः।
सटाछटोग्ररूपायपक्षविक्षिप्तभूभृते
अष्टपादाय रुद्राय नमः शरभमूर्तये।।

इस प्रकार का ध्यान करके शरभदेव की पूजा मानसोपचारों से करे। लं पृथिव्यात्मने परमात्मने गन्ध तन्मात्र प्रकृत्यानन्दात्मने गन्धं समर्पयामि नमः कनिष्ठा से।

हं आकाशात्मने शब्द तन्मात्रात्मने श्री. शरभेश्वराय नमः पुष्पं समर्पयामि। अंगूठा से।

यं वायव्यात्मने स्पर्श तन्मात्रात्मने धूपं समर्पयामि नमः तर्जनी से।

रं वह्नयात्मने रूप तन्मात्रात्मने दीपं समर्पयामि नमः मध्यमा से।

वं रसात्मने अमृतात्मने रस तन्मात्रात्मने नैवेद्यं समर्पयामि नमः अनामिका से।

सं शक्त्यात्मने सर्व तन्मात्रात्मने ताम्बूलं समर्पयामि नमः दोनों हाथों के सम्पूट से।

स्वागतं देवदेवेश सन्निधो भव शंकर।
गृहाणि मानसी पूजां यथार्थ परिभावितम्।।

इस प्रकार मानस पूजा के बाद पात्र स्थापन करे।

पात्र स्थापन

तत्रास्त्रक्षालितमाधारं संस्थाप्य मं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने शरभकलशाधाराय नमः इति सम्पूज्य तत्रास्त्रक्षालितं गन्धादि चर्चितं सुधूपितं कलशं प्रतिष्ठाप्य अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने शरभ कलशाय नमः इत्यभ्यर्च्य मूलेन विलोम मातृका चोच्चरन् तथोदकैः कलशमापूर्य ॐ सोममण्डलाय षोडश कलात्मने शरभ कलशामृताय

नमः इति सम्पूज्य तद्दक्षिणतो जलेन चतरस्त्रं कृत्वा मध्ये गन्धादिना वृत्तषट्कोणं त्रिकोणञ्चोर्ध्वग्रं कृत्वा आग्नेयादि षट्सु कोणेसु षडङ्गानि सम्पूज्य तत्रास्त्रक्षालितमाधारं संस्थाप्य मं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने शरभार्घ्यपात्रासनाय नमः।

इति सम्पूज्य स्वाग्रादि वृत्ताकारेण वह्नेर्दश कलाः पूजयेत्। यं धूमार्चिषे नमः। रं ऊष्मायै नमः। लं ज्वलिन्यै नमः। वं ज्वालिन्यै नमः। शं विस्फुलिंगिन्यै नमः। षं संश्रियै नमः। सं सुरूपायै नमः। हं कपिलायै नमः। लं हव्यवाहायै नमः। क्षं कव्यवाहायै नमः।

इति सम्पूज्य फडिति क्षालितं पात्रं तदुपरि निधाय अं सूर्य मण्डलाय द्वादश कलात्मने शरभार्घ्य पात्राय नमः।

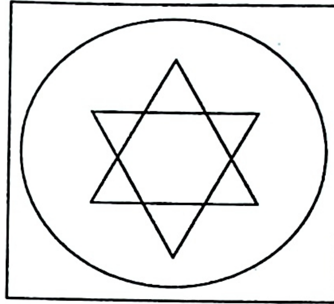
इति सम्पूज्य तत्र वृत्ताकारेण प्रागादि कं भं तपिन्यै नमः। खं बं तापिन्यै नमः। गं फं धूम्रायै नमः। घं पं मरिच्यै नमः। ङं पं ज्वालिन्यै नमः। चं धं रुच्यै नमः छं दं सुषुम्णायै नमः। जं थं भोगदायै नमः। झं तं विश्वायै नमः। ञं णं बोधिन्यै नमः। टं ढं धारिण्यै नमः। ठं डं क्षमायै नमः।

इति सम्पूज्य मूलं विलोममातृकांचोच्चरन् कलशामृतेनापूर्य तस्मिन् शैव गन्धाष्कमालोड्य ॐ सोम मण्डलाय षोडश कलात्मने शरभार्घ्या मृताय नमः।

इति सम्पूज्य तत्र वृत्ताकारेण। अं अमृतायै नमः। आं मानदायै नमः। इं पषायै नमः। ईं तुष्टायै नमः। उं पुष्टयै नमः। ॐ रत्यै नमः। ऋं धृत्यै नमः। ॠं शशिन्यै नमः। ऌं चन्द्रिकायै नमः। ॡं कान्त्यै नमः। एं ज्योत्स्नायै नमः ऐं रियै नमः। ओं प्रीत्यै नमः। औं अन्नदायै नमः। अं पूर्णायै नमः। अः पूर्णामृतायै नमः। इति सोमकलाः पूजयेत्।

'फट्' से आधार को धोकर स्थापित करे। 'मं बह्नि मण्डलाय दश कलात्मने शरभ कलशाधाराय नमः' से पूजा करे। तव 'फट्' से धुले गन्धादि से चर्चित धूपित कलश को आधार पर स्थापित करे। 'अं अर्क मण्डलाय द्वादश कलात्मने शरभ कलशाय नमः' से पूजा करे। मूल मन्त्र के साथ विलोम मातृका क्षं से अं तक बोलकर कलश में जल भरे। ॐ सोममण्डलाय षोडश कलात्मने शरभ कलशामृताय नमः से पूजा करे।

कलश के दाएँ भाग में जल से चतुरस्र बनावे। उसमें गन्धादि से वृत्त और षट्कोण ऊर्ध्वग्र त्रिकोण बनावे।



अग्नि आदि छवो कोनों में षडंग पूजा करे। उस पर फट् से धुले आधार स्थापित करे। रं वह्निमण्डलाय दश कलात्मने शरभार्ध्य पात्रासनाय नमः से पूजा करे। अपने आगे से वृत्ताकार में अग्नि की दश कलाओं की पूजा करे। जैसे—

१. यं धूम्रार्चिषे नमः।

२. रं ऊष्मायै नमः।

३ लं ज्वलिन्यै नमः।

४. वं ज्वालिन्यै नमः।

५. शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः।

६. षं सुश्रियै नमः।

७. सं सुरूपायै नमः।

८. हं कपिलायै नमः।

९. लं हब्य वाहायै नमः।

१०. क्षं कव्य वाहायै नमः।

पूजा के बाद 'फट्' से धुले पात्र को उस पर रखे। अं सूर्य मण्डल द्वादश कलात्मने शरभार्घ्यं पात्राय नमः, से पूजा करे। तब पूर्वादि क्रम से वृत्ताकार में कलाओं की पूजा करे।

१. कं भं तपिन्यै नमः।

२. खं बं तापिन्यै नमः।

३. गं फं धूम्रायै नमः।

४. घं पं मरिच्यै नमः।

५. डं नं ज्वलिन्यै नमः।

६. चं धं रुच्यै नमः।

७. छं दं सुषुम्नायै नमः।

८. जं थं भोगदायै नमः।

९. झं तं विश्वायै नमः।

१०. ञं णं बोधिन्यै नमः।

११. टं ढं धारिण्यै नमः।

१२. ठं डं क्षमायै नमः।

इसके बाद मूल के साथ विलोम मातृका बोलकर कलश को जल से भर दे। उसमें शैव गन्धाष्टक मिलावे।

ॐ सोममण्डलाय षोडशकलात्मने शरभार्घ्यामृताय नमः, से पूजा करे। जल में वृत्ताकार में कलाओं की पूजा करे।

१. अं अमृतायै नमः।

२. आं मानदायै नमः।

३. इं पूषायै नमः।

४. ईं तुष्टायै नमः।

५. उं पुष्टायै नमः।

६. ऊं रत्यै नमः।

७. ऋं धृत्यै नमः।

८. ॠं शशिन्यै नमः।

९. ऌं चन्द्रिकायै नमः।

१०. ॡं कान्त्यै नमः।

११. एं ज्योत्स्नायै नमः।

१२. ऐं श्रियै नमः।

१३. ओं प्रीत्ये नमः।

१४. औ अन्नदायै नमः।

१५. अं पूर्णायै नमः।

१६. अः पूर्णामृतायै नमः।

यहाँ शैवं गन्धाष्टक में चन्दन, अगर, कपूर, तमाल, जल, कुंकुम कुसीत और कूठ होते हैं।

चन्दनागरु कर्पूर तमाल जल कुंकुमम्।
कुसीतं कुष्ट संयुक्तं शैवं गन्धाष्टकं स्मृतम्।

ततोऽर्घ्य जले गंगे चेत्यादिना क्रों इत्यङ्कुश मुद्रया सूर्यात्तीर्थान्यावाह्य स्वहृदयाद्देवमावाह्य जलं स्पृष्ट्वा अष्टशो मनुं जपेत्। अप्सु चाङ्गानि विन्यस्य हृदा सम्पूजयेदथ मूलमष्टशो जपित्वा मत्स्य मुद्रयाच्छाद्य अस्त्रेण छोटिका मुद्रया संरक्ष्य हुँ इत्यवगुण्ठ्य वं इत्यमृतीकृत्य सन्निरोधिन्या सन्निरुध्य शंख मुशल चक्र मुद्राः प्रदर्श्य महा मुद्रां दर्शयन् योनि मुद्रां दर्शयेत्। इति सामान्यार्घ्यं विधिः।

ततस्तद्दक्षिणे पाद्यार्घ्याचमनीय मधुपर्क पात्राणि सामान्यार्ध्यविधिना संस्थाप्य अर्घ्यामृतं प्रोक्षणीपात्रं किञ्चिदुद्धृत्य मूलमुञ्चरन् तेनात्मानं पूजा द्रव्याणि च त्रिरभ्युक्ष्य सर्वं ब्रह्ममयं भावयेत् अथ शरीरे न्यासक्रमेण मण्डूकादि पीठमन्वन्तान्सम्पूज्य हृदये श्री शरभं नैवेद्यादिना गन्धाद्यैः पूजयेत् कुण्डलिनीमथोत्थाप्य द्वादशान्ते परं नीत्वा तदुत्थामृतधाराभिरिष्टदेवतां सन्तर्प्य यथाशक्तिमूलं मनस्येव जपित्वा गुह्याति जपं समर्प्य मूर्धहृन्मूलाधारपादसर्वाङ्गेषु क्रमेण पुष्पाञ्जलीन्दद्यात् सर्वमेतत्प्रोक्षणीपात्रस्थ जलेन कुर्यात् ततः प्रोक्षणि जलं विसृज्य सम्पूज्य वहिः पूजामारभेदित्यन्तर्यागः।

तब अर्घ्य जल में 'गंगे च यमुने इत्यादि से 'क्रों' अंकुश मुद्रासे और सूर्य मण्डल से तीर्थों का आवाहन करे। अपने हृदय में देव का आवाहन करते हुए जल का स्पर्श करे और आठ मन्त्र जप करे। जल में अंगों का न्यास करके हृदयादि की पूजा करे। मूल मन्त्र का आठ जप करके मत्स्य मुद्रा से आच्छादित करे। चुटकी बजाकर संरक्षण करे। अवगूँठन वं अमृतीकरण सन्निरोधन करे। सन्निरोधिनी मुद्रा से सन्निरुद्ध करके शंख मुशलचक्र मुद्रा दिखाकर महामुद्रा और योनि मुद्रा दिखावे। इति सामान्यार्घ्य विधि।

अन्य पात्र स्थापन। सामान्य अर्घ्य के दाएँ भाग में पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, मधुपर्क पात्रों को स्थापित कर सामान्यार्घ्य स्थापन के समान करे। अर्घ्यामृत से कुछ प्रोक्षणी में डाले। मूल मन्त्र बोलते हुए उससे अपना और पूजा द्रव्यों का प्रोक्षण तीन बार करे। सवों को ब्रह्मभय होने की भावना करे।

अपने शरीर में न्यास-क्रम में मण्डूक से पीठ मन्त्र के मन्त्रों से पूजा करे। हृदय में श्री शरभ की पूजा गन्ध से और नैवेद्य तक के उपचारो से करे। कुण्डलिनी को उठाकर द्वादशान्त में लाकर उससे उत्पन्न अमृत धारा से इष्ट देवता का तर्पण करे। यथा शक्ति मूलमन्त्र का जप करके गुह्याति गुह्य० से समर्पण करे। मूर्धा हृदय मूलाधार पैर तक के सभी अंगों में क्रम से पुष्पांजलि देवे। यह सब प्रोक्षणी पात्र के जल से करे। इसके बाद प्रोक्षणी जल को पूजनकर बाहर पूजा प्रारम्भ करे। इति अन्तर्याग।

गृहस्थ को अन्तर्याग और वहिर्याग सर्वदा करना चाहिये। ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और यति अन्तर्याग को करे—

अन्तर्यागौ वहिर्यागौ गृहस्थः सर्वथा चरेत्।
आद्यमेव ब्रह्मचारी वानप्रस्थो यतिस्तथा।।

इसके बाद यन्त्र में, शिवलिंग में अथवा शालिग्रामादि में वाह्यपूजा करे।

तत्र यन्त्र रचना—

त्रिकोणं विलिखेत्पूर्वं तद्वहिर्वृत्तमालिखेत्।
तद्बहिश्चाष्टपत्रं तु द्वादशारं ततः परम्।।
षोडशारं ततः पश्चात् ततो भूपुरयुग्मकम्।
त्रिकोणमध्ये देवेशं शरभं शालुवेश्वरम्।।
चिरं ध्यात्वा ततो मौनी गुरुपादयुगं स्मरेत्।

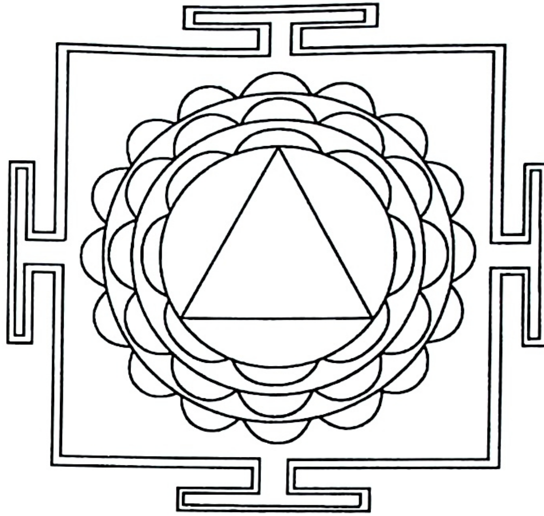
इति भस्मन्येतद् विलिखेत्। अथ मूलेन प्राणानायम्य पीठस्योत्तरे वायव्यादीशपर्यन्तं क्रमेण गुरून् पूजयेत् दक्षिणे गणेशाय नमः पीठमध्ये तु मण्डूकाय नमः। कालाग्नि रुद्राय नमः। कूर्माय नमः। आधार शक्तये नमः। अनन्ताय नमः। पृथिव्यै नमः। क्षीर समुद्राय नमः। श्वेत द्वीपाय नमः। मणिमण्डपाय नमः। कल्पवृक्षाय नमः। मणि वेदिकायै नमः। रत्नसिंहासनाय नमः। अग्निकोणे धर्माय नमः। एवं नैर्ऋत वायव्येशानेषु ज्ञानवैराग्यैश्वर्यान् पूजयेत्। पूर्वादिचतुर्दिक्षु अधर्माज्ञानावैराग्यानैश्वर्यान् पूजयेत् मध्ये अनन्ताय नमः। पद्माय नमः। अं सूर्य मण्डलाय द्वादश कलात्मने नमः। उं चन्द्रमण्डलाय षोडश कलात्मने नमः। मं वह्निमण्डलाय दश कलात्मने नमः। सं सत्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः। अं आत्मने नमः। अं अन्तरात्मने

नमः। पं परमात्मने नमः। ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। पूर्वादि केशरेषु। ज्येष्ठायै नमः। रौद्र्यै नमः। काल्यै नमः। कल विकिरिण्यै नमः। बल विकिरिण्यै नमः। बलप्रमथिन्यै नमः। सर्व भूतदमिन्यै नमः। मनोन्मन्यै नमः। तदुपरि ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्ति युक्तायानन्ताय योग पिङ्गलात्मने नमः। इति सम्पूज्य अथ पूर्वोक्त रूपं देवं स्वहृदये स्वैक्येन ध्यात्वा सुषम्णावर्त्मना पुष्पाञ्जलौ देवं समाबाह्य तामञ्जलिं कल्पितमूर्ते शिरसि दत्त्वा देवं मूर्तौ समागतं भावयेत्। मूलं श्रीशरभेश्वर इहागच्छ इत्यावाहनीं मुद्रां प्रदर्श्य मूलान्ते स्थापितो भवेति स्थापिनीम् ततो लेलिहान मुद्रया देवस्य हृदयं स्पृशन् ओं आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोऽहं श्री शरभेश्वरस्य प्राणाः पुनरर्बीजान्युच्चार्य श्री शरभेश्वरस्य जीव इहस्थितः सर्वेन्दियाणि वाङ् मनश्चक्षुः श्रोत्रजिह्वा घ्राणादीनि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा इति प्राण प्रतिष्ठां विधाय मूलान्ते सर्वान्तर्यामिणे श्री शरभेश्वराय आसनं कल्पयामि अत्रासने त्वं प्रतिष्ठितो भवेत्यासनं दत्त्वा मूलान्ते सन्निहितो भवेति सन्निधापिनीं प्रदर्शयेत् मूलान्ते श्री शरभेश्वर त्वां सन्निरुणध्मि इति सन्निरोधिनीम् मूलान्ते श्रीशरभेश्वराभिमुखो भवेति सम्मुखी करणीं दर्शयेत्। मूलान्ते श्री शरभेश्वर त्वां प्रार्थयामीति। प्रार्थिनीम्। मूलान्ते श्री शरभेश्वर त्वं स्थिरो भवेति स्थिरीकरणीम्। देव शरीरे षडगन्यासं कुर्यादिति सकलीकरणम्। मूलान्ते श्रीशरभेश्वरत्वां अवगुण्ठयामीत्यवगुण्ठनीम्। मूलान्ते श्री शरभेश्वर परमीकृतो भवेति परमीकरणीम्। मूलान्ते महामुद्रां विरचयन् श्रीशरभेश्वर स्वागतन्ते सुस्वागतम्। इति स्वागतम्। प्रत्युपचार सामान्यार्घ्य जलेन समर्पणं कुर्यात्। ततस्ताम्रादिपात्रे मापाद्य जलं कृत्वा तत्र श्यामाक विष्णु क्रान्तायवदूर्वाछित्या मूलान्ते श्री शरभेश्वरायैतत्पाद्यं कल्पये स्वाहेति पादाम्बुजे दद्यात्। दूर्वा तिल दर्भाग्र सर्षप यव पुष्पाक्षतयुतं जलं गृहीत्वा मूलान्ते श्री शरभेश्वरायेदमर्घ्यं कल्पये स्वाहेति मूर्ध्नि अर्घ्यं दद्यात् पुनर्लवंग जाति कंकोल युतं जलं गृहीत्वा मूलान्ते श्री शरभेश्वरायैतदाचमनं कल्पये इत्याचमनं मुखे दद्यात्। दध्याज्यमधूनि पात्रे गृहीत्वा मूलान्ते श्री शरभेश्वरायेमं मधुपर्कं कल्पये सुधेति मधुपर्कं दद्यात् पूर्ववत्पुनराचमनीयं दद्यात् स्नानवस्त्रोपवीतान्ते नैवेद्यं समर्पयेत्। पाद्यादि द्रव्याभावे तु तत् स्मरन्

अक्षतान् निक्षिपेत् मूलान्ते श्री शरभेश्वरायेदं सुगन्ध तैलं समर्पयामि इति तैलं दत्वा हरिद्राद्यैः मूलान्ते श्री शरभेश्वराय स्नानीयं निवेदयामि इति स्नानीयं दत्त्वा शतरुद्रियेण पुरुष सूक्तेन च स्नापयित्वा आचमनीयं दद्यात्। एवं वस्त्रं यज्ञोपवीतं भूषणानि शैवाष्टगन्धं यथासम्भवं वा चन्दनं दत्त्वा गन्ध मुद्रां प्रदर्शयेत् पुष्पाणि दत्त्वा पुष्पमुद्रा प्रदर्शयेत् धूप पात्रस्थितांगारे गुग्गुलं क्षिप्त्वा पात्रमस्त्रेण संप्रोक्ष्य हृदा पुष्पं तत्र क्षिप्त्वा तत्पात्रं वाम तर्जन्या संस्पृशन् मूलं श्री शरभेश्वराय धूपं समर्पयामि। धूपमुद्रां दर्शयामि। ततस्तर्जन्यंगुष्ठयोगेन घण्टां जयध्वनि मन्त्र मातः स्वाहेति सम्पूज्य वामहस्तेन तां वादयन् नाभि पर्यन्तं देवं दक्ष हस्तेन धूपयेत् एवं दीपं नेत्र पर्यन्तं भ्रामयेत् जलं पुष्पाञ्जलिं चान्तरा दद्यात्। दीपमुद्रां च दर्शयेत्। घृतदीपं दक्षिणे वामेऽन्यं स्थापयेत्। सितवर्तिस्तैलदीपो दक्षिणे रक्तवर्तिर्घृत दीपोऽपि वामे ततः स्वर्णादि निर्मित पात्रस्थमाषान्न पायसान्न धूपात्मकं मन्त्रं अस्त्रेण सम्प्रोक्ष्य चक्रमुद्रां प्रदर्श्य द्वादशवारं वायुबीजं मन्त्रितैस्तोयैः प्रोक्ष्य तज्जातैर्वायुभिः नैवेद्य दोषं संशोष्य दक्षिण हस्ते रं बीजं विभाव्य तं नैवेद्योपरि कृत्वोत्सृष्टे वामकरतलं न्यस्य रं बीजोत्पन्नाग्निना नैवेद्य दोषं दहेत् ततो वाम करेऽमृतं विभाव्य तत्पृष्ठे दक्षिणं दत्वा नैवेद्योपरि दर्शयेत् अमृतबीजोत्थाऽमृतधारया तमाप्लावितं विभाव्य मूलेन प्रोक्ष्य मूलमष्टशो जपित्वा धेनु मुद्रां प्रदश्र्य गन्धपुष्पैः तदर्चयेत्। देवे पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा देवमुखोच्छ्रितं वामांगुष्ठेन तत्पात्रं स्पृष्ट्वा दक्ष हस्ते जलं धृत्वा मूल श्रीधरभेश्वरेदं नैवेद्यं गृहाण स्वाहा इति जलमुत्सृजेत्। अंगुष्ठानामिकाभ्यां नैवेद्य मुद्रां प्रदर्श्य सपुष्पकराभ्यां वित्रिनैवेद्यपात्रमुद्धरन् निवेदयामि भवते तुषाणेदं हबिर्हर इति ग्रास मुद्रां प्रदर्शयेत् प्राणाद्याः पञ्चमुद्राः प्रदर्श्य भगवतो भोजनं भावयित्वा मध्ये पानीयं दत्त्वा आचमनीयं करोत्द्धर्तनकं आचमनीयं फलं ताम्बूलञ्च दत्त्वा पुष्पाजलिं दद्यात्।

पूजन यन्त्र

पहले त्रिकोण बनावे। उसके बाहर वृत, उसके बाहर अष्टदल तब द्वादश दल और तब षोडश दल तथा तब दो भूपुर बनावे।



यन्त्र

त्रिकोण के मध्य में शरभ शालुवेश्वर का देर तक ध्यान करें। तब गुरुपाद युगल का स्मरण करे। इस यन्त्र को भस्म से बनावे। मूल मन्त्र से तीन प्राणायाम करे। पीठ के उत्तर दिशा में वायव्य से ईशान तक क्रम से गुरुओं की पूजा करे। दक्षिण में गणेशाय नमः, पीठ मध्य में मण्डूकायं नमः। कालाग्नि रूद्राय नमः। कूर्माय नमः। आधारशक्तये नमः। अनन्ताय नमः। पृथिव्यै नमः। क्षीरसागराय नमः। श्वेतद्वीपाय नमः। मणिमण्डपाय नमः। कल्प वृक्षाय नमः। मणिवेदिकायै नमः, रत्न सिंहासनाय नमः से पूजा करे।

अग्निकोण में धर्माय नमः। नैर्ऋत्य वायव्य ईशान में क्रमशः ज्ञान वैराग्य और ऐश्वर्य की पूजा करे। पूर्वादि चारों दिशाओं में अधर्म अज्ञान, अवैराग्य अनैश्वर्य की पूजा करे। मध्य में अनन्ताय नमः से अनन्त की पूजा करे। तब पद्माय नमः। अं सूर्यमण्डलाय द्वादश कलात्मने नमः। ॐ. चन्द्रमण्डलाय षोडशकलात्मने नमः। मं वाहने मण्डलाय दशकलात्मने नमः। सं सत्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः। अं आत्मने नमः। ॐ अन्तरात्मने नमः। पं परमात्मने नमः। ह्रीं ज्ञानात्मने नमः।

पूर्वादि केशरों में–ज्येष्ठायै नमः। रौद्रयै नमः। काल्यै नमः। कल विकिरिण्यै नमः। बल विकिरिण्यै नमः। बल प्रमथिन्यै नमः। सर्व भूत दमिन्यै नमः। मनोन्मन्यै नमः। सवों के ऊपर ॐ नमो भगवते सकल गुणात्मशक्तप्रतायानन्ताय योगपिंगलात्मने नमः।

इस प्रकार की पूजा के बाद पूर्वोक्त रूप के देव का अपने हृदय में ऐक्य भावना से ध्यान करे। सुषुम्ना मार्ग से पुष्पांजली में देव का आवाहन करे। उस अंजली में कल्पित मूर्ति को मस्तक पर रख कर भावना करे कि उसमें देव का समागम हो गया।

मूल मन्त्र के साथ 'श्री शरभेश्वर इहागच्छ' कहकर आवाहनी मुद्रा दिखावे। मूलमन्त्र के साथ 'स्थापितो भव' कहकर स्थापनी मुद्रा दिखावे। तब लेलिहान मुद्रा से देव के हृदय का स्पर्श करके प्राण प्रतिष्ठा करे। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोऽहं श्री शरभेश्वरस्य प्राणा इह स्थितः। पुनः बीजों का उच्चारण करके कहे कि शरभेश्वरस्य जीव इह स्थितः।

सर्वेन्द्रियाणि वाङ् मनश्चक्षुश्रोत्रजिह्वाघ्राणादीनि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। इति प्राण प्रतिष्ठा।

आसन—प्राण प्रतिष्ठा के बाद मूल मन्त्र कहकर कहे—

सर्वान्तर्यामिने श्रीशरभेश्वराय आसनं कल्पयामि।

अत्रासने त्वं प्रतिष्ठितो भव।

मूलमन्त्रसन्निहितो भव सन्निधापिनी मुद्रा दिखावे।

मूल मन्त्र श्रीशरभेश्वरत्वं सन्निरुद्धो भव सन्निरोधिनी दिखावे।

मूल मन्त्र श्रीशरभेश्वरत्वं अभिमुखो भव सम्मुखीकरणी दिखावे।

मूल मन्त्र श्रीशरभेश्वरत्वां प्रार्थयामि प्रार्थिनी दिखावे।

मूल मन्त्र श्री शरभेश्वर त्वं स्थिरो भव स्थिरीकरणीम् दिखावे। देव के शरीर में षडंग न्यास करके सकलीकरण करे। मूलमन्त्र श्री शभेश्वर एवं अवगुंठिता भव अवगुण्ठनी दिखावे। मूलमन्त्र श्री शरभेश्वर परमी कृतो भव परमीकरणी दिखावे। मूल मन्त्र से महामुद्रा बनाकर दिखावे और बोले श्री शरभेश्वर स्वागतम् सुस्वागतम्। प्रत्युपचार सामान्यार्घ्य जल से समर्पण करे।

पाद्य—तब ताम्रादि पात्र में पाद्य जल भरे। उसमें साँवाँ विष्णुकान्ता दूर्वा डाले। मूल मन्त्र श्री शरभेश्वराय एतत्पाद्यं कल्पये स्वाहा। चरणकमलों में देवे।

अर्घ्य—अर्घ्य पात्र जल में दूब, तिल, कुश, सरसो, यव, फूल, अक्षत आदि डाले। मूलमन्त्र सहित श्री शरभेश्वर इदं अर्घ्यं कल्पये यै स्वाहा। मूर्धा पर अर्घ्य डाले।

आचमन—आचमन पात्र में लवंग, जायफल, कं कोल डालकर मूल मन्त्र सहित श्री शरभेश्वराय एतदं आचमनीयं कल्पये। आचमन मुख में देवे।

मधुपर्क—मधुपर्क पात्र में दही गोघृत मधु डालकर मूल मन्त्र सहित श्री शरभेश्वराय मधुपर्कं कल्पये सुधा। मधुपर्क देवे। पूर्ववत आचमनीय देवे।

स्नानीय समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि। उपवस्त्रं समर्पयामि। यज्ञोपवीतं समर्पयामि। नैवेद्यं समर्पयामि। पाद्यादि द्रव्य न होने पर उनका स्मरण करके अक्षत चढ़ावे। मूल मन्त्र सहित श्री शरभेश्वराय इदं सुगन्धतैलं समर्पयामि। हरिद्रादि अनुलेपन देवे।

मूल मन्त्र सहित श्री शरभेस्वराय स्नानीय निवेदयामि। स्नानीय देवे। स्नानीय देकर शतरुद्री और पुरुषसूक्त से अभिषेक करे। आचमनीय देवे। वस्त्र यज्ञोपवित आभूषण शैवाष्ट गन्ध यथा सम्भव या चन्दन देकर गन्ध मुद्रा दिखावे। फूल देकर पुष्प मुद्रा दिखावे। धूप पात्र के अंगार में गुग्गुल डाले पात्र को अस्त्रमन्त्र से प्रोक्षित करे। उस पर फूल डाले। उस पात्र को वाम तर्जनी से स्पर्श करके मूल मन्त्र श्री शरभेश्वराय धूपं समर्पयामि धूप मुद्रा दिखावे। तब तर्जनी अंगूठे से घण्टा जय ध्वनि मन्त्र मातः स्वाहाः से घण्टा की पूजा करे। बाएँ हाथ से बजाते हुए देव के नाभि तक दाएँ हाथ से धूपित करे। नेत्रों तक दीपक घुमावे। तब जल पुष्पांजलि देकर दीप मुद्रा दिखावे। घी का दीपक दाएँ और अन्य दीपक बाएँ रखे। उतली बत्ति के दीपक को दायें, लाल बत्ती के दीपक बायें रखे। तब सोने आदि के पात्र में उड़द भात को धूप मन्त्र के साथ फट् लगाकर प्रोक्षण करे चक्र मुद्रा दिखावे। वायु बीज 'यं' मन्त्र के बारह जप से अभिमन्त्रित जल से प्रोक्षण करे। प्रोक्षण से उत्पन्न वायु से नैवेद्य

के दोषों को दूर करे दाएँ हाथ को रं बीज की भावना करके नैवेद्य पर रखकर बाएँ करतल रखे। रं बीज से उत्पन्न अग्नि से नैवेद्य के दोष को जला दे। तब बाएँ हाथ में अमृत की भावना करके उसके पीठ पर दायां हाथ रखकर नैवेद्य के ऊपर दिखावे। अमृत बीज से उत्पन्न अमृत धार से उसे आप्लावित होने की भावना करे। मूल मन्त्र से प्रोक्षण करे। मूल मन्त्र का आठ जप करके धेनुमुद्रा दिखावे। गन्ध पुष्प से पूजा करे। देव को पुष्पांजलि देवे। देव कुरवोच्छ्रित उप पात्र को बाएँ अंगूठे से स्पर्श करे। दाएँ हाथ में जल लेकर मूल मन्त्र श्री शरभेश्वर नैवेद्यं गृहाण, स्वाहा कहकर जल देवे। अंगूठा अनामिका से नैवेद्य मुद्रा दिखावे। हाथों में फूल के साथ नैवेद्य पात्र लेकर कहे—निवेदयामि भवेत तुषा णादे हविर्हर ग्रास मुद्रा दिखावे प्राणादि पाँच मुद्राओं को दिखावे। भावना करे कि देव भोजन कर रहे है। मध्य में पानीय दे। आचमनीय करोद् वर्तनीय आचमनीय फल ताम्बूल देकर पुष्पांजलि देवे।

आवरण पूजा

पूजितोऽसि यथाशक्ति यथा लब्धोपचारकैः।
अनुज्ञां भगवन्देहि परिवारार्चनाय मे।।

प्रथम आवरण—ऐसी आज्ञा लेकर यन्त्र के मध्य त्रिकोण के पूर्वादि कोणों में पूजा करे। चन्द्राय नमः। सूर्याय नमः। अग्नये नमः।

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।

आवरण पूजा निवेदित करके 'मूलमन्त्र' से श्री शरभाय सपरिवाराय नमः' कहकर पुष्पांजलि देवे। गीर्वाणाय नमः से प्रणाम करे। प्रथमावरण में विशेष पूजा—त्रिकोण के मध्य में और चारों दिशाओं में इनकी पूजा करे—भैरवाय नमः। वड़वाग्नये नमः। दुर्गायै नमः। काल्यै नमः।

द्वितीय आवरण—अष्टदल में

१. लं इन्द्राय नमः।

२. रं अग्नये नमः।

३. यं यमाय नमः।

४. क्षं निर्ऋतये नमः।

५. वं वरुणाय नमः।

६. यं वायवे नमः।

७. सं सोमाय नमः।

८. हं ईकारनाय नमः।

अभीष्ट सिद्धि०। इति द्वितीय।

तृतीय आवरण—देव के दक्षिण पार्श्व में व्याधये नमः। वाम पार्श्व में मृत्यवे नमः। अभीष्टसिद्धि। इति तृतीय।

चतुर्थ आवरण—द्वादश दल में पूर्वादिक्रम में।

१. मं मदनायै नमः।

२. रं रक्तचामुण्डायै नमः।

३. मं मोहिन्यै नमः।

४. द्रां द्राविण्यै नमः।

५. शं शब्दाकर्षिण्ये नमः।

६. वां वाण्यै नमः।

७. रं रमायै नमः।

८. मां मान्यायै नमः।

९. पुं पुल्लिन्दिन्यै नमः।

१०. शं शास्ताय नमः।

११. क्षं क्षोभिण्यै नमः।

१२. जं ज्येष्ठायै नमः।

अभीष्टः। इति चतुर्थ।

पंचम आवरण—षोडश दल में सोलह स्वर देवताओं की पूजा करे। शरभ तन्त्र के अनुसार अं अकार देव्यै नमः। आं आकार देव्यै नमः। कुछ के मत से—आ अहंकार देव्यै नमः। गीर्वाण तन्त्र के अनुसार।

१. अं ब्रह्मणे नमः।

२. आं परायै नमः।

३. इं शक्त्यै नमः।

४. ईं विष्णवे नमः।

५. उं मायायै नमः।

६. ऊँ वराहाय नमः।

७. ॠं पृथिव्यै नमः।

८. ॠं विधये नमः।

९. लृंशिवाये नमः।

१०. लॄं अश्विभ्यां नमः।

११. एं वीरभद्राय नमः।

१२. ऐं भारत्यै नमः।

१३. ओं शिवाय नमः।

१४. औं शंकराय नमः।

१५. अं रुद्राय नमः।

१६. अः कालरुद्राय नमः।

षोडश दलों में क्रम से सोलह स्वर पूर्वका देवता की पूजा करे। यहाँ पर स्वगुरु और अपने सम्प्रदाय के अनुसार पूजा करे। अभीष्ट।

षष्ठ आवरण—भूपुर की प्रथम रेखा के पूर्वादि दिशाओं में—

१. गणेशाय नमः।

२. यमाय नमः।

३. स्कन्दाय नमः।

४. भैरवाय नमः।

वायव्यादि विदिशाओं में—

१. त्वरितायै नमः।

२. वीर भद्राय नमः।

३. बड़वानल भैरवाय नमः।

४. महामायायै नमः।

अभीष्ट०। इति षष्ठ।

सप्तम–बाह्य भूपुर में पूर्वादि दिशाओं में—

१. ब्राह्म्यै नमः।

२. माहेश्वर्यै नमः।

३. कौमार्यै नमः।

४. वैष्णव्यै नमः।

५. वाराह्यै नमः।

६. इन्द्राण्यै नमः।

७. चामुण्डायै नमः।

८. महालक्ष्म्यै नमः।

अभीष्ट०। इति सप्तम।

अष्टम आवरण—भूपुर के बाहर चारों ओर सभी ककारादि वर्ण देवताओं की पूजा करो, यह शरभ तन्त्र के अपने मत के अनुसार से। 'कं कंकार देव्यै नमः से क्ष क्षंकार देव्यै नमः तक पूजा करे।

गीर्वाण तन्त्र के अनुसार क से क्ष तक के वर्ण देवताओं की पूजा करे। जैसे—

१. कं ॐ ब्रह्मणे नमः।

२. खं ॐ जाह्नव्यै नमः।

३. गं ॐ गणेशाय नमः।

४. घं ॐ भैरवाय नमः।

५. ङं ॐ कालाय नमः।

६. चं ॐ भद्रकाल्यै नमः।

७. छं ॐ भीमकाल्यै नमः।

८. जं ॐ जातवेदसे नमः।

९. झं ॐ अर्द्धनारीश्वराय नमः।

१०. ञं ॐ परमात्मने नमः।

११. टं ॐ पृथिव्यै नमः।

१२. ठं ॐ चन्द्राय नमः।

१३. डं ॐ शुक्राय नमः।

१४. ढं ॐ विष्णवे नमः।

१५. णं ॐ वलद्राय नमः।

१६. तं ॐ धनदायै नमः।

१७. थं ॐ पराशक्त्यै नमः।

१८. दं ॐ दुर्गायै नमः।

१९. धं ॐ धर्माय नमः।

२०. नं ॐ निर्विकल्पायै नमः।

२१. पं ॐ अग्नये नमः।

२२. फं ॐ भैरवाय नमः।

२३. बं ॐ आश्विभ्यां नमः।

२४. भं ॐ भार्गवाय नमः।

२५. मं ॐ ईश्वराय नमः।

२६. यं ॐ वायवे नमः।

२७. रं ॐ कृशानवे नमः।

२८. लं ॐ शवृत्ताय नमः।

२९. वं ॐ वरुणाय नमः।

३०. शं ॐ शंकराय नमः।

३१. षं ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः।

३२. सं ॐ भारत्यै नमः।

३३. हं ॐ सदाशिवाय नमः।

३४. लं ॐ पृथिव्यै नमः।

इन क़ से क्ष तक के वर्ण देवताओं की पूजा करे।

इतना कहा गया तथापि पूर्व दिशा अवगन्तव्य है। सर्वत्र प्रणवादि नमोन्तन प्रादक्षिण्य क्रम से पूजा करे।

अभीष्ट०। इति अष्टम।

पुनः मूल मन्त्र से पुष्पांजलि देकर धूप दीप नैवेद्य पूर्ववत देवे। यहाँ पर 'शरभाय सांगाय सपरिवाराय जोड़े। इति आवरणपूजा।।

पूजा के अन्तर्गत ग्रन्थ के अनुसार मै भी अन्यथाभिधायी का अवसान करता हूँ। तब मूलमन्त्र से पानीय देकर नित्यहवन करे।

हवन

स्थण्डिल या कुण्ड बनाकर कुश से सम्मार्जन करे। तब तूष्णी में अग्नि स्थापित करके परिसमूहन परिष्तरण परिसिंचन करे। अग्नि देवता से ऐक्य की भावना करे। मूल मन्त्र के साथ प्राणादि पाँच मन्त्रों को जोड़ कर पाँच आहुति देवे। षडंग मन्त्रों से छै आहुतियाँ देवे। यह हवन घी अन्न, पायस, तिल, चावल, सुगन्धि, पुष्प और अन्य द्रव्यों से करे। परिस्तरण का विसर्जन करके प्रदक्षिणा करके अग्नि का विसर्जन करे। तान्त्रिक अग्निमुख मन्त्र नहीं है। अग्न्याधानादि नित्य कर्म हवन में नहीं होते।

श्री निवास कृत वसिष्ठ संहिता के वचन को चरु होम के पक्ष में चरु को कुण्ड में ही पकावे। पक्व चरु को ग्रहण करे।

इति नित्य होमः।

बलि विधान

ततः स्ववामभागे आसनान्तरे उपविश्य वृत्तत्रिकोण चतुरस्रमण्डलमालिख्य व्यापकमण्डलाय नमः इति सम्पूज्य तस्यैव ईशानाग्नेय निर्ऋतिवायुकोणेषु सामान्यार्घ्य जलेन त्रिकोणवृत्त चतुरस्रात्मक मण्डलचतुष्टयं विधाय बं वटुकमण्डलाय नमः यां योगिनी मण्डलाय नमः क्षं क्षेत्रपाल मण्डलाय नमः गं गणेश मण्डलाय नमः।

इति सम्पूज्य तत्र सान्नोदकोपचारं साधारपात्रचतुष्टयं निधाय बटुकादिभ्यो बलिं दद्यात्-एह्येहि देवि पुत्रबटुकनाथकपिलजटाभार भासुरत्रिनेत्रज्वालामुखसर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वोपचार सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहेति सामान्यजलेन वामाङ्गुष्ठानामाभ्यांमुत्सृजेत्।

ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा।
पाताले वा तलेवा सलिलपवनयोर्यत्र कुत्रस्थिता वा।
क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूप दीपादिकेन।
प्रीता देव्यः सदा नः शुभबलि विधिना पान्तु वीरेन्द्र वन्द्याः॥

यां योगिनीभ्यः स्वाहा। सर्व योगिनीभ्यो हुँ फट् स्वाहा इति वामाङ्गुष्ठ तर्जनीभ्यां मध्यमोपरि बलिं दद्यात्।

अपने बाएँ भाग में आसन के पास वृत्त, त्रिकोण, चतुरस्र, मण्डल बनावे। व्यापक मण्डलाय नमः से पूजा करे। उसके ईशान आग्नये नैऋत्य वायव्य कोण में सामान्यार्घ्यं जल से त्रिकोण वृत्त चतुरस्र युक्त चार मण्डल बनावे। इनकी पूजा वं वटुकमण्डलाय नमः यां योगिनी मण्डलाय नमः, क्षं क्षेत्रपाल मण्डलाय नमः। गं गणेश मण्डलाय नमः मन्त्रों से करे। उन पर चार आधारों पर चार जल पूर्ण पात्रों में रखे। वटुक आदिको बलि प्रदान करे।

वटुक—एह्येहि देवि पुत्र वटुक नाथ कपिल जटाभार भासुर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्व विध्नान् नाशय नाशय सर्वोपचार सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। सामान्य जल से वाम अनामा अंगूठा से उत्सर्जित करे।

योगिनी—ऊर्ध्व ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा।

पाताले वा तले वा सलिलपवनयोर्यंत्र कुत्र स्थिता वा।
क्षेत्रे पीठोपपीठे च कृत पदा धूपदीपादिकेन प्रीता देव्यः।

सदा नः शुभ बलि विधिना पान्तु वीरेन्द्र वन्द्या। यां योगिनीभ्यः स्वाहा। सर्वयोगिनीभ्यो हुं फट् स्वाहा। बाएँ अंगूठे और तर्जनी को मध्यमा पर रखकर बलि देवे।

क्षेत्रपाल—क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः स्थान क्षेत्रपाल धूप दीपादि सहित बलिं ग्रह्ण गृह्ण स्वाहा। वाम मुट्ठी से तर्जनी को सीधी रखकर बलि विसर्जन करे।

गणेश बलि—गां गीं गूं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय बलिं गृह्ण-गृह्ण स्वाहा। वाम मुट्ठी से मध्यमा को सीधा करके गणपति बलि का उत्सर्जन करे।

सर्वभूत बलि—ॐ ह्रीं सर्वविघ्नकृदभ्यः, सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा को तीन बार बोलकर तत्व मुद्रा से सर्व भूत बलि का उत्सर्जन करे।

इति वलि विधि।

ततो हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य आचम्य प्राणानायम्य स्वासने उपविश्य ततो मूलेन उत्तराचमनं चन्दनादि करोद्वर्तनकं हस्तप्रक्षालनं पुनराचमनीयं दत्त्वा कर्पूरैला लवङ्गादियुतं ताम्बूलं दद्यात् मूलेन पुष्पाञ्जलिं नीराजनं च कृत्वा छत्रचामरादि दर्शयन् श्लोकान् पठेत्।

बुद्धिः शवासनाक्लृप्ता दर्पणं मङ्गलानि च।
मनो वृत्तिर्विचित्रा ते नृत्यरूपेण कल्पिता।।
ध्वनयो गीतरूपेण शब्दावाद्य प्रभेदतः।
छत्राणि तव पद्मानि कल्पितानि मया प्रभो।।
सुषम्नाध्वज रूपेण प्राणाश्चामरात्मना।
अहङ्कारो गजत्वेन वेगः क्लृप्तो रथात्मना।।
इन्द्रियाण्यश्वरूपाणि शब्दादीन् रथवर्त्मना।
मनः प्रगट रूपेण बुद्धिः सारथिरूपतः।।
सर्वमन्यत्तथाक्लृप्तं तवोप करणात्मना।

इति साष्टाङ्गं प्रणमेत्।।

तथा षडङ्गन्यासं पूर्ववद् विधाय ध्यात्वा अष्टोत्तरं सहस्रं मूलमन्त्रं

जपेत्। मूलमन्त्र. जपेन्मन्त्री अष्टोत्तर सहस्त्रकमितयुक्तेः। पुनः षडङ्गन्यासं विधाय ध्यात्वा चुलुके उदकमादाय–

गुह्याति गुह्य गोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान् महेश्वर।

इति देव दक्षिण हस्ते जपं निवेदयेत्। ततो ऐशान्यां चतुरस्त्रमण्डलं कृत्वा तत्र चण्डेश्वराय नमः इति निर्माल्यं विसृज्य देवं दण्डवत् प्रणिपत्य प्रदक्षिणी कृत्य क्षमापयेत्।

अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे।
कोऽपरः क्षमते लोके केवलं स्वामिनं विना।।

इति क्षमाप्य तव पादाम्बुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे। इति सम्प्रार्थ्य चुलुके उदकमादाय ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेह धर्माधिकारतः जागृतस्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पदभ्यामुदरेण शिश्ना यद् स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा। मां मदीयं सकलं शरभाय ते समर्पये। ॐ तत्सत् इति देव दक्षिण हस्ते समर्प्य शंखमुद्धृत्य देवोपरि परितः परिभ्राम्य मूलान्ते

साधु वा साधु वा कर्म यद्यदा चरितं मया
तत्सर्वं कृपया देव गृहणाराधनं मम।

इति किंचित् शंखजलं देव दक्ष हस्ते दत्त्वा शंखं यथा स्थाने संस्थाप्य तत्सलिलेनात्मानमभ्युक्ष्य आवरणदेवताः शरभांगे लीनाः सन्तु इति पुष्पाञ्जलिनावरणदेव देवताः शरभांगे नीलाः विभाव्य याहि।

याहि परमस्थानं स्वस्थानं परमेश्वर।
यद्ब्रह्म प्रमुखा देवाः न विदुः परमं पदम्।।

इत्युच्चार्य संहारमुद्रया निर्माल्यपुष्पमाघ्राय तदद्वारा परमं महः स्वहृदये नीलं भावयेत् ततः पादोदकं पीत्वा नैवेद्यमन्यस्मै भक्ताय किञ्चिद् दत्त्वा किञ्चिद् स्वयं स्वीकृत्य निर्माल्यं शिरसा धृत्वा यन्त्राधिकरण भस्म भूतादि निवारणाय पात्रान्तरे धारयेत् यन्त्राधिकारण भस्मना फलमाह–

भस्मनागमनं श्रुत्वा कम्पन्ते विग्रहग्रहाः।
किं पुनर्दर्शनादार्ये भूतप्रेतादि राक्षसाः।।

ततो यथा सुखं विहरेदिति शिवः शरभार्चा पारिजाते रामकृष्ण

विनिर्मिते नित्यार्चन नामोदभुतः प्रथम स्तवकोऽगमत्। इति श्रीमद्वाय देवसूरिसूनुरामकृष्णदेवकृते शरभार्चा पारिजाते प्रथमः स्तवकः।

इसके बाद हाथ पैरों को धोकर आचमन प्राणायाम करके अपने आसन पर बैठे। तब मूल मन्त्र से उत्तराचमन चन्दनादि से करोद्वर्तन हस्त प्रक्षालन पुनराचमनीय देकर कपूर इलायची लवंग युक्त ताम्बूल देवे। पुष्पांजलि नीराजन करे। छत्र चामर आदि दिखावे। श्लोकों का पाठ करे।

बुद्धिः शवासनाक्लृप्ता दर्पणं मंगलानि च।
मनोवृत्ति विचित्रा ते नृत्यरूपेण कल्पिता॥
ध्वनयो गीतरूपेण शब्दा वाद्य प्रभेदतः।
छत्राणि तव पद्मानि कल्पितानि मया प्रभो॥
सुषुम्ना ध्वज रूपेण प्राणाद्याश्चामरात्मना।
अहंकारो गजत्वेन वेगः क्लृप्तो रथात्मना॥
इन्द्रियाण्यश्व रूपाणि शब्दादीन् रथवर्त्मना।
मनः प्रगटरूपेण बुद्धिः सारथिरूपतः॥
सर्वमन्यत्तथा क्लृप्तं तवोपकरणात्मनः॥

श्लोक पाठ के बाद साष्टांग प्रणाम करे। इसके बाद षडंगन्यास पूर्ववत् करे। मूल मन्त्र का एक हजार आठ जप करे। पुनः षडंग न्यास करके ध्यान करे। चुल्लू में जल लेकर यह श्लोक पढ़े—

गुह्याति गुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान् महेश्वर॥

देव के दाएँ हाथ में जल के साथ जप निवेदित करे।

इसके बाद ईशान में चतुरस्त्र मण्डल बनावे। वहाँ पर चण्डेश्वराय नमः से निर्माल्य विसृजित करे। दण्डवत् प्रणाम करे। प्रदक्षिणा करके क्षमा मांगे। इस श्लोक का पाठ करे।

अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे।
को परः क्षमते लोके केवलं स्वामिनं विना॥

इस प्रकार क्षमा मांग कर कहे कि 'तव पादाम्बुजे नित्यं निश्चलो भक्ति रस्तु मे। इस प्रकार की प्रार्थना के बाद चुल्लू में जल लेकर कहे—ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतः जागृत स्वप्न सुषुप्त्यवस्थासु

मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पदभ्यां उदरेण शिश्ना यद् स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मणार्पणं भवतु स्वाहा। मां मदीयं सकलं शरभाय ते समर्पये। ॐ तत्सत् कहकर देव के दाएँ हाथ में जल समर्पण करे।

शंख में जल लेकर देव के ऊपर घुमावे।

मूल मन्त्र सहित साधु वा साधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया तत्सर्व कृपयादेव गृहणाराधनं मम।

यह कहकर शंख मे से कुछ जल देव के दाएँ हाथ में देकर शंख को यथास्थान रख दे। शंख, जल से अपना प्रोक्षण करे। 'आवरण देवता शरभांगे लीना सन्तु' कहकर पुष्पांजलि देकर भावना करे कि देवता शरभ के अंग में लीन हो गये। प्रार्थना करे—

याहि याहि परम स्थानं परमेश्वर।
यद ब्रह्म प्रमुखा देवाः न विदुः परमं पदम्।।

यह कहकर संहार मुद्रा से निर्माल्य पुष्प को सूँघे और भावना करे कि सभी परम मह मेरे हृदय में लीन हो गये। इसके बाद चरणामृत पीकर नैवेद्य अन्य भक्तों को देवे कुछ अपने खाये। निर्माल्य को शिर पर रखकर यन्त्राधिकरण भस्म भूतादि निवारण के लिये दूसरे पात्र में रखे। यन्त्राधिकारण भस्म का फल कहा गया है—

भस्मनागमनं श्रुत्वा कम्पयन्ते विग्रहग्रहाः।
किं पुनर्दर्शनादार्ये भूतप्रेतादिराक्षसाः।।

इसके बाद इच्छानुसार विहार करे।

शिवशरभार्चा पारिजाते रामकृष्णविनिर्मिते नित्यार्चन नाम अद्भुत प्रथम स्तवकः अगमत्। इति श्री मद्वाय देव सूरि सूनु रामकृष्ण देवकृते शरभार्या पारिजते प्रथम स्तवकः।

अथ नित्यार्चनस्य मन्त्रमूलमुक्त्वा तदनुक्तौ अपरितोषः इति तत्परिहाराय मन्त्राः विब्रियन्ते शरभतन्त्रे।।

तारं प्रथममुच्चार्य खें खां खं फडनन्तरं।
प्राणग्रहासि द्वितयं हुं फटतु तदनन्तरम्।
शरभेति पदमुक्त्वा तु शत्रुसंहारणायुत।
शरभ शालुवायेति पक्षिराजाय इत्यपि।
हुं फट् स्वाहेति मन्त्र तु द्विचत्वारिंशदक्षरम्।

जपेद्वर्ण सहस्राणि संख्ययातु महेश्वरि।
दशांशं तर्पणं होम शतांश द्विज भोजनम्।
सहस्रांशं यथा देवि क्रमादेवं समाचरेत्।।

अस्यार्थः–तारः प्रणवः स्पष्टमन्यत् जपेद्वर्ण सहस्रांणि इत्यादिनां चतुरंगं पुरश्चरणं सूचितं अतः पुरश्चरणस्य जपः प्रथममंगं तर्पणं द्वितीयं होमस्तृतीयं ब्राह्मण भोजनं चतुर्थ अन्यत्र पञ्चांगं तद्धेतुरंगता इति विशेष बोधयितुं जपाद्दशांशं तर्पणम्। तद्दशांशो होमः इत्यपि बोधयितुं दशांशं तर्पणं इत्याद्युत्पस्यते। शतांशं द्विज-भोजनं इत्यस्य तर्पणस्यातिशयो बोध्यः। सहस्रांशमिति तु अशक्तस्यानुकल्पः। स्पष्टश्चैतद् अभ्यधायि शवासनं नवम् पटले पुरश्चरण द्वयोत्तरं प्रयोग सिद्धः तदुक्तं तत्रैव एवं प्रयोग सिद्धार्थ पुरश्चर्याद्वयं चरेत्।। ततः स्वेच्छया प्रयोगांश्च भूत वैरिषु कारयेत् इति।

नित्यार्चन के मूल मन्त्र कहने में जो अनुक्त रह गया उससे सन्तुष्ट नहीं होने के कारण उसके परिहार के लिये शरभ तन्त्र के मन्त्रों को कहता हूँ।

पहले ॐ कहकर खें खां खं के बाद फट् कहे। प्राणग्रहासि दो बार कहकर हुं फट् कहे। सर्व पद कहकर शत्रु संहारणाय के साथ शरभशालुवाय पक्षिराजाय कहे। तब हूं फट् स्वाहा कहे। इस प्रकार उद्धार करने पर मन्त्र प्राप्त होता है।

ॐ खें खां खं फट् प्राण ग्रहसि प्राण ग्रहसि हुं फट् सर्वशत्रु संहारणाय शरभ शालवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा। इसमें बयालिस ४२ अक्षर हैं।

जपेद्वर्ण सहस्राणि संख्ययातु महेश्वरि।
दशाशं तर्पणं होमं शतांशं द्विज भोजनम्।।

इसका अर्थ यह है कि तार प्रणव स्पष्ट है। जपेद्वर्ण सहस्राणि इत्यादि से चतुरंग पुरश्चरण सूचित होता है। अतः पुरश्चरणों का प्रथम अंग जप है। द्वितीय अंग तर्पण, तृतीय हवन, चतुर्थ ब्राह्मण भोजन है। अन्यत्र पुरश्चरण के पाँच अंग कथित है। इससे बोध होता है कि जप का दशांश तर्पण करे। उसका दशांश हवन का बोध होता है। शतांश द्विज भोजन यह भी तर्पण से अतिशय बोध होता है। यह सहस्रांश अशक्त

होने पर यह अनुकल्प है। नवम पटल में यह स्पष्ट है। पुरश्चरण के बाद प्रयोग सिद्धि के लिये यह उक्त है। वहीं पर प्रयोग सिद्धि के लिये दो पुरश्चरणं दूषित है। इससे स्वेच्छा से प्रयोग करना भूतों को वैरी बनाता है।

हवन विशेष

स्वगृहे दक्षिणे भागे कल्पिते अस्त्रकुण्डे स्वसूत्रोक्त विधानेन आज्यभागान्तमाचरेत् तत्र दूर्वां, गुडं, चित्रां, तिलं, लाजं, पायसं, अपूप, यवाज्यं च क्रमात् सौम्ये समाहुँनेत्।

अपमार्गञ्च वह्निं च खदिरञ्च कटुत्रयम्।
सैन्धवं सर्षपं चाज्यं हुनेत् क्रौर्ये क्रमात् सुधीः।
इति पुरश्चरणे तदा तस्य शर्करायूत पायस होमः।

तद्दशांश हुनेत् देवि पायसं घृत शक्ररा। इति वातुलात् त्रिभिः पुरश्चरणैः सर्ववश्यं चतुर्भिः महाबुद्धिः लक्ष जपेन सर्वस्त्रीणामाकर्षणम्। लक्षचतुष्केन बृहस्पतिसाम्यं पञ्चभिर्लक्षैः स्मरणादेव रिपुसर्पादीनां नाशः। षड्भीरिपुरोग नाशः। सप्तभिर्वरुणतवम्। अष्टभिर्धनदत्वं नव लक्ष जपेनासाध्य साध्यकत्वं दशभिर्लक्षैः सुरेशत्वं एकादशलक्षं जपतो निग्रहानुग्रहो वादिनः स्यात्। द्वादश लक्षेण दाशरथित्वं षोडशलक्षैर्नारायणत्वं तत्कोपादर्धयामेन भूतादयः स्थावराः जंगमाश्च नश्यन्ति। पञ्चविंशति लक्षेण पञ्चवक्त्रो भवेत्। पञ्चाशल्लक्ष जपेन साक्षात् बह्मस्वरूपो भवेत् अतः परंफलं नास्ति। स्वात्मलाभादिति श्रुतेः। गीर्वाणेड्यां तु मन्त्रान्तरमुक्तम् ॐ नमोष्टापादाय सहस्त्रबाहवे द्विशिखे त्रिनेत्राय द्विपक्षाय अग्निवर्णाय मृग विहंगरूपाय वीर शरभेश्वराय ॐ ऋष्यादि पूर्ववत् त्रयोदशाष्ट चतुः पञ्चाष्ट नव वर्णाः अंगानि ध्यानम्–

अष्टांघ्रिश्च सहस्त्रबाहुरनलप्रख्यः शिरोयुग्मभृत्।
विःत्र्यक्षोऽति जवो द्विपुच्छ उदितः साक्षान्नृसिंहापहा।
अर्द्धेनापि मृगाकृतिः पुनरथाप्यर्द्धेन पक्ष्याकृतिः।
श्री वीरः शरभः स पातु सुचिरं नीत्वा सदा मां हृदि॥

पुरश्चरणं पूर्ववत् क्षीरौदनेन होमः इति। वातुले मन्त्रान्तरान्—

आदौ तारं समुच्चार्य खें कारत्रय संयुतं।
खकारविन्दुयुक्तञ्च ग्रसौः शब्दं तथोच्चरेत्।
ग्रसिं शब्द समुच्चार्य कवचास्त्रं तथोच्चरेत्।
शरभेति पदमुच्चार्य पुनः सर्व पदं वदेत्।
पुनः शत्रु पदं चोक्त्वा संहारेति पदं वदेत्।
कारिणे पदमुच्चार्य शरभ शब्दं तथोच्चरेत्॥
शालुवायेति पदं चोक्त्वा पक्षीति पदमुच्चरेत्।
राजायेति पदं चोक्त्वा हुं फट् स्वाहा समन्वितम्॥
मन्त्रोऽयं शालुवाख्यस्य सर्व काम फलप्रदः।
एकोन चत्वारिंशद्वर्णात्मकोऽयं महामनुः।
छन्दोऽति जगती प्रोक्तं वामदेवो ऋषिस्तथा।
कवचास्त्र हुं फट् अन्यत् पूर्ववत्।

अपने घर के दक्षिण भाग में कल्पित त्रिकोणात्मक कुण्ड में अपने सूत्र में उक्त विधान से आज्य भाग के अनुसार हवन करे। दूब, गुड़, चित्रा, तिल, लावा, खीर, पूआ, यव, गोघृत बराबर भाग सौम्य कर्म के हवन द्रव्य है। क्रूर कर्म में चिड़चिड़ा की प्रज्वलित अग्नि में, खैर कटुत्रय, सेन्धा नमक, सरसो, गोघृत से हवन करे। इति पुरश्चरण।

उसके बाद शक्कर युक्त पायस से हवन करे। उसका दशांश पायस, घी, शक्कर से हवन करे।

वातुल तन्त्र के अनुरुप तीन पुरश्चरणों से सवों का वशीकरण होता है।

चार पुरश्चरण से महाबुद्धि होती है।

एक लाख जप से सभी स्त्रियों का आकर्षण होता है।

चार लाख जप करने से वृहस्पति के समान ज्ञानी होता है।

पाँच लाख जप के बाद स्मरण मात्र से शत्रु और सर्पों आदि का नाश होता है।

छह लाख जप से शत्रुओं और रोगों का नाश होता है।

सात लाख जप से वरुणात्व प्राप्त होता है।

आठ लाख जप से कुबेर के समान धनी हो जाता है।

नव लाख जप से असाध्य को साध्य करने की शक्ति मिलती है।

दश लाख जप से इन्द्रत्व प्राप्त होता है।

ग्यारह लाख जप से निग्रह अनुग्रह करने वाला होता है।

वारह लाख जप से दाशरथित्व प्राप्त होता है।

सोलह लाख जप से नारायणत्व मिलता है। नारायणत्व की प्राप्ति के बाद उसके क्रुद्ध होने पर आधे पहर में भूतादि स्थावर जंगमों का नाश होता है।

पच्चीश लाख जप से पंचमुख सदाशिव हो जाता है।

पचास लाख जप से साक्षात् ब्रह्म स्वरूप हो जाता है। इसके अतिरिक्त कोई फल नहीं है। श्रुति के अनुसार आत्मदर्शन होता है।

गीर्वाण तन्त्र में अन्य मन्त्र का कथन है; मन्त्र ४७ अक्षरों का इस प्रकार है—ॐ नमो अष्टापादाय सहस्र वाहवे द्विशिखे त्रिनेत्राय द्विपक्षाय अग्निवर्णाय मृगविहंगरूपाय वीर शरभेश्वराय ॐ। ऋष्यादि न्यास पूर्ववत है। मन्त्र के तेरह, आठ, चार, पाँच, आठ, नव वर्णों से अंगन्यास होते है।

ध्यान—

अष्टांघ्रिश्च सहस्त्रबाहुः अनलप्रख्यः शिरोयुग्मभृत्।
विःत्र्यक्षोऽऽतिजवो द्विपुच्छ उदितः साक्षान्नृसिंहापहा।।
अर्द्धेनापि मृगाकृतिः पुनरथाप्यर्द्धेन पक्ष्याकृतिः।
श्री वीरः शरभः सः पातु सुचिरं नीत्वा सदा मां हृदि।।

पुरश्चरण पूर्ववत् हवन दूध भात से होता है। वातुल तन्त्र के अनुसार अन्य प्रकार का मन्त्र है जिसमें उनचालिस ३९ अक्षर हैं—ॐ खें खें खें खं घ्रसौः घ्रसिं हुं फट् शरभ सर्वशत्रुसंहारकारिणे शरभ शालुवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा। शरभशालुव का यह मन्त्र सर्वकाम फलदायक है। उनचालिस अक्षर इस मन्त्र में है। छन्द जगती, ऋषि वामदेव कवचास्त्र हुं फट् है। अन्य पूर्ववत है।

मन्त्रान्तरम्—

तारं सकारान्त सरेफयुक्त वामेन कर्णेन च बिन्दुयुर..म्।
एतन्महारौद्रमयं सुवीजं पाशाकुशेनान्तरितं च कृत्वा।।
हुंकारश्च पुनस्तारो मन्त्रश्चैव षडक्षरः। सकारान्तो हकारः स इति

वरूप रेफश्च तैर्युक्तं वा कर्ण षष्ठस्वरः विन्दुश्च त युक्त तेन ह्यमितिकेचित् अन्येतु सकारान्तेन हकारेण सह सहिते रेफेण च युक्तमित्यादि व्याचक्षते तन्मते हुं इति पूर्वेण प्रणवः इति पाशबीजम् ततो रौद्रवीजम्, ततो अंकुश बीजं ततो हुं प्रणवस्येति षडक्षर इत्यर्थः ब्रह्मा ऋषिः छन्दो गायत्री पक्षिरूपिशालुवो देवता ॐ बीजं हुं शक्तिः क्रौंक्रीलकं षड्भिर्वर्णैषडंगानि।

इसका उद्धार करने पर अक्षरों का मन्त्र ॐ हुं आं हौं क्रौ हुं होता है।

अस्य मन्त्रस्य ऋषि ब्रह्मा। छन्दः गायत्री। पक्षिरूपिशालुवो देवता ॐ बीजं हुं शक्तिः कौं कीलकम्। इन वर्णों से षडंगन्यास करे।

ध्यान—

उग्राकारोग्रदृष्टि प्रकटित भयदं कोटि दम्भोलिघोषं।
ज्वालामाला पटाग्रे ज्वलदनल समं हारकेयूर भूषम्।।
हालाहालकलंकरन्ध्रसहितं हंसात्मकं केशरम्।
वन्देऽहं हरिपार्वतीपति विरंच्यात्मं चिरं शालुवम्।।

एवं ध्यात्वा महेशानि ऋतु लक्षं जपेत् प्रिये।
तिलाक्षतेन साज्येत हुनेत्कुने करात्मके।।
जपाद्दशांशं च सतर्पणं तथा,
हुनेद्दशांशं च सतर्पणैस्तथा
विप्रानन्दः षड्रस युक्तभोजनैः
शतं सषट्कं समभक्ति पूर्वकम्।

हे महेशानि इस प्रकार का ध्यान करके इस मन्त्र का जप छह लाख करे। तिल चावल, गोघृत से हवन जप का दशांश करे। दशांश तर्पण करके एक सौ आठ ब्राह्मणों को षट्रस भोजन भक्ति पूर्वक करावे।

एवं कृतं मन्त्र सिद्धिः ततः षट्कर्माणि साधयेत। माघे कपिला क्षीर भुक् लक्षं जपेत् गोघृतेन होमः क्षीरान्नैर्विप्र भोजनम् एवं कृते चिन्तितार्थप्राप्तिः। कार्तिके अर्कं लक्ष जपात् दशांश बिल्व फल होमाद् विप्र भोजनादतीतानागत ज्ञानम्। आश्विने चतुर्विशति लक्ष जपात् पूर्वोक्त

होमार्दिना यक्ष गन्धर्वादीनां दर्शनम्। तैः सह संवादश्च माघमारभ्य श्रावण पर्यन्तं कोटि जपादिनाशालुवः प्रसन्नो भवति अखिलां सिद्धिं विन्दति।

इस प्रकार के विधान से मन्त्र सिद्ध होता है। तब षटकर्मों को करे माघ के महीने में केवल कपिला गाय के दूध का भोजन करके एक लाख जप करे। गोघृत से हवन करे। खीर का भोजन विप्रों को करावे। इससे चिन्तित अर्थ की प्राप्ति होती है।

कार्तिक महीने में बारह लाख जप करे। दशांश हवन वेल फल से करे। ब्राह्मणों को भोजन करावे तो भूत, भविष्य का ज्ञान प्राप्त होता है।

आश्विन महीने में चौबिस लाख जप के बाद पूर्वोक्त हवनादि करे तो यक्ष-गन्धर्व आदि के दर्शन होते हैं और उनसे बात चीत होती है।

माघ से प्रारम्भ करके श्रावण महीने तक एक करोड़ जप से शालुव प्रसन्न होते है और सभी सिद्धियों को देते हैं।

मन्त्रान्तर

तारं पाशं रुद्र एकाक्षरीं तां माया बीजं क्रोड बीजस्य युग्मं वर्मास्त्रान्ता शालुवाष्टाक्षरीयं इति परा ॐ माया ह्रीं क्रोड बीजं हुं वर्मास्त्रे हुं फट् बह्मात्रृषिरनुष्टुप् छन्दः पक्षिरूपी शालुवः सदाशिवो देवता हुं बीजं ह्रीं शक्तिः हुं कीलकं इति।

ओंकार मुर्ध्नि विन्यस्य माशं मूर्ध्नि ततोन्यसेत् रुद्र बीजं शिखां न्यस्य माया बीजेन कवचम् वराहत्रयं त्रिनेत्रेषु अस्त्रे अस्त्रं प्रकल्पयेत्।

ध्यानम्

चन्द्रार्कायुतकोटिकान्तिसहितं चण्डीशसंसेवितं।
खण्डेन्दूज्वलशारदापतिसंदाससेव्यमानं मुदा।
हृत्पद्मान्तर कर्णिकान्तर चरद्धासं महाभीषणं।
संसेवे सकलार्थदं मुनिपतिं श्री शालुवं सिद्धिदम्।
एवं ध्यात्वा महेशानि अष्ट लक्षं जपेन्मनुं।
पूर्वोक्तं नियमेनैव पूर्वोक्ताचार संयुतम्।।
गोमूत्रेण चरुं कृत्वा भक्षयेच्च समान्त्रिकः।
एवं कृत्वा पुरचर्यां हुनेत् विल्व फलेन तु।
ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चात् दक्षिणाभिश्च तोषयेत्।
मन्त्र सिद्धिर्भवेत्तस्य शिवस्य वचनं यथा।

उद्धार करने पर शालुव अष्टाक्षर मन्त्र होता है—

ॐ आं हं ह्रीं हुं हुं हुँ फट्।

अस्य शालुव मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। अनुष्टुप छन्दः पक्षिरूपी शालुवः सदाशिवो देवता। हुं बीजं। ह्रीं शक्तिः। हुं कीलकम्।

ॐ का न्यास मूर्धा में करे। पाश आं का न्यास भी मूर्धा में ही करे। रुद्र बीज हँ का न्यास शिखा में करे। माया बीज ह्रीं का न्यास कवच में करे। वराह त्रय हुं हुं हुं करन्यास तीनो नेत्रों में करे। अस्त्र फट् का न्यास अस्त्र में करे। तब ध्यान करे।

चन्द्रार्कायुतकोटिकान्तिसहितं चण्डीशसंसेवितं।
खण्डेन्दूज्ज्वल शारदापति संदाससेव्यमानं मुदा।।
हृत्पद्मान्तरं कर्णिकान्तर चरद्भासं महा भीषणं।
संसेवे सकलार्थदं मुनिपतिं श्रीशालुवं सिद्धिदम्।।

हे महेशानि! ऐसा ध्यान करके आठ लाख मन्त्र जप करे। पूर्वोक्त नियमों और पूर्वोक्त आचार के साथ गोमूत्र में चरु पकाकर मन्त्र सहित भोजन करे। इस प्रकार रहते हुए पुरश्चरण का हवन बेल फलों से करे। इसके बाद ब्राह्मणों को भोजन कराकर दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करे। ऐसा करने से शिव के वचन के अनुसार मन्त्र सिद्ध होता है।

मन्त्रान्तर

ॐ नमः पादमाभाष्य ततो भगवते पदम्
खेंकारत्रयमुच्चार्य घ्रसीं शब्दं तथोच्चरेत्।
घ्रसौः शब्दं तथोच्चार्य शरभेति पदं वदेति।
शालुवाय पदं चोक्त्वा पक्षिराजाय चोच्चरेत्।
सर्वशत्रुपदं चोच्चरेत् संहार पदमुच्चरेत्।
कारिणे पदमुच्चार्य तत्पुरुषाय पदं वदेत्।
अघोर पदमुच्चार्य सद्योजात पदं वदेत्।
वामदेव पदं चोक्त्वा ईशानपदमुच्चरेत्।
कालशब्दं तथोच्चार्य कालकण्ठेति चोच्चरेत्।
चकारं च तथोच्चार्य गरं शब्दं तथोच्चरेत्।
हुं कारत्रयमुच्चार्य प्रस्फुरद्वितयं वदेत्।
उग्रोग्र तममुच्चार्य चटद्वयमथोच्चरेत्।

प्रचट प्रचटेत्यक्त्वा बन्धयुग्मं ततो वदेत्।
घातय द्वितयं चोक्त्वा विदारय युगं वदेत्।
शरभशालुवेत्युक्त्वाय कारस्तदनन्तरम्॥
पक्षिराजाय उच्चार्य हुं फट् स्वाहा समन्वितं।
शतोत्तर षड्विंशद्वर्णात्मकं महामनुः।

कालकण्ठाय इतिच्छेदः। एवमग्रेऽपि यकारात्पूर्वभागस्य उद्धारयेदिति वेदितव्यम् ऋषिर्ब्रह्मा पङ्क्तिश्छन्दः शरभशालुवो देवता प्रणवो बीजं स्वाहा शक्तिः हुं त्रयं कीलकं द्रामित्यादिषडंगः पञ्च ब्रह्म पदैः पञ्चाङ्गं कुर्यात् तद्यथा तत्पुरुषाय नमः हृदयाय नमः अघोराय नमः शिरसे स्वाहा सद्योजाताय शिखायै वषट् वामदेवाय कवचाय हुं ईशानाय अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

स्फटिकाभं चतुर्वाहुं ज्वालापदसमन्वितं।
पञ्चवक्त्रं महाभीमं त्रिपञ्च नयनैयुर्तुम्।
प्रथमं शालुवं वक्त्रं द्वितीयं शङ्करस्य तु।
तृतीय वैष्णवं वक्त्रं चतुर्थं ब्रह्म संभवं।
अघोरं पञ्चमं वक्त्रं महाशम्भु स्वरूपिणम्।
एवं ध्यात्वा महेशानं जपं कुर्याद्विधानतः।
अयुतन्तु पुरश्चर्या वीरभद्रालये प्रिये।

ततो लक्ष जापि वीक्षणादेव भूत प्रोतादि दुष्टान् नाशयति। दुर्गालये द्विलक्षजपात् त्रैलोक्य वशम्।

उद्धार करने पर एक सौ छब्बीस अक्षरों का मन्त्र होता है।

ॐ नमो भगवते खें खें खें घ्रसिः घ्रसौः शरभ शालुवाय पक्षिराजाय सर्व शत्रु संहारकारिणो तत्पुरुषाय अघोराय, सद्योजाताय वामदेवाय, ईशानाय कालाय काल कण्ठाय गरं हुं हुं हुं प्रस्फुर प्रस्फुर उग्रोग्रतम चट चट प्रचट प्रचट बन्ध बन्ध घातय घातय विदारय विदारय शरभ शालुवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।

अस्य मन्त्रस्य ऋषिः ब्रह्मा, पंक्ति छन्दः शरभशालुवा देवता, ॐ बीजं, स्वाहा शक्ति, हुं हुं हुं कीलकं जपे विनियोगः द्रां द्रीं द्रूं दैं द्रौं द्रः से षडंगन्यास करे। पंच ब्रह्म पदों से पंचांग न्यास करे। जैसे—

तत्पुरुषाय नमः हृदयाय नमः। अघोराय नमः। शिरसे स्वाहा सद्योजाताय नमः शिखायै वषट। वामदेवाय नमः कवचाय हुं। ईशानाय नमः, अस्त्राय फट्। न्यास बाद ध्यान करे।

स्फटिकाभं चतुर्बाहुं ज्वालापदसमन्वितं।
पंचवक्त्रं महाभीमं त्रिपंचनयनैर्युतः।।
प्रथमं शालुव वक्त्रं द्वितीयशंकरस्य तु।
तृतीयं वैष्णवं वक्त्रं चतुर्थं ब्रह्मसम्भवे।।
अघोर पंचमं वक्त्रं महाशम्भु स्वरूपिणम्।।

महेश का इस प्रकार ध्यान करके विधिवत जप करे। वीरभद्र के मन्दिर में दश हजार जप से पुरश्चरण होता है। इसके बाद एक लाख जप करने वाला अपनी दृष्टि में ही भूत प्रेतादि दुष्टों का नाश कर देता है। दुर्गामन्दिर में दो लाख जप करने से तीनों लोक वश में होते हैं।

अपरमन्त्र

ॐकारं पूर्वमुच्चार्य बालायास्त्र्यक्षरी तथा।
वितरिणी त्रयो वर्णा हुंकाराणां त्रयं तथा।
शालुवाय ततोच्चार्य हुंकारत्रयमेव च।
वह्निजाया समायुक्तो मन्त्रो ज्वरहरस्तथा।
पूर्व प्रयोग शान्त्यर्थं नित्यं दशशतंजपेत्।

अस्य प्रयोगः–माष, मुद्ग, मसूर, कुलत्थ, चणक, शालि, गोधूम, कार्पाश्मस्थि, यावनाला, इति धान्य नवकं संगृह्य तत्समं भस्म चादाय मिश्रीकृत्य तत्सर्वं ताम्र पात्रे स्थापतित्वा अष्टोत्तर सहस्रं अष्टोत्तर शतं वाभिमन्त्र्य ज्वर भूत प्रेत ग्रहादि गृहीतं धारयित्वा आवेशय आवेशय रुद्रो ज्ञापयति इति मन्त्रं भूर्ज पत्रे ताम्र पात्रे वा लिखित्वा तदासनाधः शिप्वा तदासने भूतादि गृहीतमुपवेश्य धान्य निसृद् भस्म तच्छरीरे सिञ्चन् अष्टोत्तर सहस्रमष्टोत्तर शतं वा जपेत् यदि आवेशो भवति मुच्यते।

उद्धार करने पर ज्वरहर मन्त्र होता है—ॐ ऐं क्लीं सौः तरिणी हुं हुं हुं शालुवाय हुं हुं हुं स्वाहा। प्रयोग के पहले शान्ति के लिये प्रति दिन एक हजार जप करे।

अस्य प्रयोगः—

उड़द, मुंग, मसूर, कुल्थी, चना, शालिचावल, गेहूँ, कपासअस्थि, यावनाला इन नव धान्यों को बराबर लेकर उनके बराबर भस्म लेकर सवों को मिला दे। ताम्बे के पात्र में स्थापित करे। एक हजार आठ या एक सौ आठ जप से मन्त्रित करे। भूत प्रेत, ग्रहादि से पीड़ित को धारण करावे। आवेशय आवेशय रुद्राज्ञापयति, मन्त्र को भोजपत्र पर लिखे। या ताम्र पत्र पर लिखे। उसे रखकर उस पर आसन बिछावे। उस आसन पर भूतादि से पीड़ित को बैठाये। धान्य निसृत भस्म उसके शरीर में लगावे। एक हजार आठ या एक सौ आठ मन्त्र जप करें। इससे आवेशित होने वाला आवेश से मुक्त हो जाता है।

मन्त्रान्तर

आदौ प्रणवमुच्चार्य लक्ष्मी बीजं तथोच्चरेत्।
भूवराहमथोच्चार्य वह्निजायामथोच्चरेत्।
शरभेति पदं चोक्त्वा शालुवाय पदं वदेत्।
पुनर्मूर्ध्वं समुच्चार्य भूवराहमथोच्चरेत्।
लक्ष्मी वीजं समुच्चार्य वाराहं बीजमुच्चरेत्।
भुवनेशीं तथोचार्य प्रणवान्तं तथोद्धरेत्।

एवं शावर शाल्वाख्यं महामन्त्रं कुलेश्वरि देवः शरभशाल्वाख्यः साक्षाच्च त्रिपुरान्तकः।

न्यासध्यानादि रहितः सर्वसिद्धिप्रदस्तथा।
पूर्वमेवायुतं जप्त्वा ततः सिद्धिर्भवेत् ध्रुवम्।

भूवराहं हूं लूँ वराहं हूं मूर्धा स्वाहा ॐ श्रीं हं लूँ स्वाहा शरभ शालुवाय स्वाहा हूँ श्रीं हूं ह्रीं ॐ। न्यास ध्यानाद्यष्य नास्ति सिद्ध मन्त्रत्वात्। एतस्य संजीवानार्थं अयुत जपः। कृष्णाङ्गार चतुर्दश्यामारभ्य भौमवार पर्यतं रात्रौ वृष शून्य शिवालये कार्यः पुनः प्रयोग सिद्ध्यर्थमयुतं जपेत् अष्टोत्तर शतवारमभिमन्त्रित भस्म मिश्र शालिना शरीरे शत कृत्वः पक्षेपात् भूत प्रेतादिनाशः नद्यादि जलं ताम्र पात्रे गृहीत्वा वाम हस्ते कृत्वा अष्टोत्तर शत कृत्वः त्रिंशत् कृत्वः त्रिसप्तकृत्वो वाभिमन्त्र्य पानात् गुल्मोदर गत शूलादि व्याधिनाशः। पञ्च वाराभिमन्त्रित जलेन नेत्रं क्षालनात् तद्रोग नाशः। ज्वरार्तं मूर्ध्नि हस्तं

दत्त्वा अर्के भौमे भृगौवा सन्ध्या काले ध्यान पूर्वकं त्रिदिनमष्टोत्तर जपाज्ज्वर नाशः एवं मध्याह्ने सूर्योदये वा त्रिदिनं करणाच्छीतज्वर नाशः। एवमेकादश लवङ्गानि चतुर्दशीमारभ्य प्रातःकाले शतवाराभि-मन्त्रितानिभक्षयित्वा तदुपरिपलमात्रमुष्णं जलं प्राशयेत्। यथायथं सपताहात् पक्षात् मासात् मण्डलाद्वा सर्वे दुष्ट वातरोगाः नश्यन्ति त्रिकालमेकंकालं अभिमन्त्रणात् पक्षेण व्रणरनाशः। ताम्र पात्रेण नवं जलमानीय ध्यान पूर्वं शतावृत्याभिमन्त्र्य सर्प दंष्ट्रं प्राशयेत् अभिमन्त्रितं भस्म च धारयेत् स्वस्थो भवति। नील्यर्काकोलजं मूलं पेषये-द्वारिणाप्रिये। त्रिसप्तधाभिमन्त्र्यार्थ प्राशयेत् विषवान्नरः। तत्क्षणान् नाशमाप्नोति गरं दारुण सर्पजम्। बदरी काष्ठं द्वि सहस्रवारमभिमन्त्र्य तत् स्पर्शनात् वृश्चिकादि विषय नाशः।

शावर शाल्व मन्त्रेण ब्राह्मे मुहूर्त्ते च पार्वति।
अश्वत्थं कोमलं पर्णं मौनी भूत्वा तु भक्षयेत्।
एवं सत्यर्क वारं तु विधिवद्भक्षयेत्प्रिये॥
तस्य वाक्येन भोदेवि वृश्चिकस्य विषं हरेत्।
देवागारे श्मशाने च जीर्णे कूपे नदी तटे॥
वृक्षाग्रे सन्ति ये सर्पास्तद्दंशे नैव भेषजम्।
धन्वन्तरिर्हरिर्ब्रह्मा न जानन्ति प्रतिक्रियाम्॥
पादे षृष्ठे च मेढ्रे च नाभि नासिकयोरपि।
ब्रह्म स्थाने च जिह्वाया यदि सर्पश्च दंशति।
न कुर्यात्तस्यकृत्यञ्च न जीवति कदाच्चन॥

विंशति वाराभिमन्त्रित जल प्राशनादजीर्ण नाशः। गुहे एक विंशति वाराभिमन्त्रित भस्म प्रक्षेपान्मशक नाशः। अथ फल विशेषावात्तये ऋृग्विशेषा उच्यन्ते–

यस्मान्नरो धनाकांक्षी तत्समीपे जपेदिमाम्।
केतुं कृण्वन् ऋचं मन्त्रं शतोत्तर सहस्रके।
स्वयमेव स सन्तुष्टः तस्मै सर्वं ददाति च॥
धनं स सहसालब्ध्वा सुखी भवति निश्चितम्।

विजने कानने घोरे राज चौरादि संकटे।
अभि व्यये स्वेति ऋचं जपेत्तदभीति शान्तये।।
संग्रामे तुमुले बलं धेहीत्यृच जपेत्।
संक्रन्दनं बलं प्राप्य सहसा विजयी भवेत्।।

उद्धार करने पर मन्त्र होता है ॐ श्रीं हूं स्वाहा शरभ शालुवाय स्वाहा हूं श्रीं हुं ह्रीं ॐ।

इस शरभ शाल्वाख्य मन्त्र के देवता शरभ शालुव साक्षात् त्रिपुरान्तक हैं। न्यास ध्यान के विना ही सर्वसिद्धि दायक है। प्रयोग के पहले दश हजार जप से सिद्धि अवश्य मिलती है। यह सिद्धमन्त्र है। इसमें न्यास ध्यान आवश्यक नहीं है। इसके संजीवन के लिये दश हजार जप आवश्यक है।

कृष्ण पक्ष के मंगलवार की चतुर्दशी में आरम्भ करके अगले मंगलवार तक रात में नन्दी रहित शिवालय में कार्य करे। फिर प्रयोग सिद्धि के लिये दश हजार जप करे। एक सौ आठ जप से अभिमन्त्रित भस्म में चावल मिलाकर पीड़ित के शरीर पर एक सौ बार फेके। इस प्रक्षेप से भूत प्रेत आदि का नाश होता है। नदी आदि का जल ताम्र पात्र में बाएँ हाथ में लेकर एक सौ आठ बार जप करे अथवा तीस वार या एकइश बार जप से मन्त्रित करके पीड़ित को पिलाने से उदर के गुल्म रोग से उत्पन्न पीड़ा व्याधि का नाश होता है। पाँच जप से मन्त्रित जल से आँखों को धोने से आँख पीड़ा का नाश होता है। ज्वर ग्रस्त रोगी के शिर पर हाथ रखकर रवि मंगल या शुक्रवार के सन्ध्या काल में ध्यान पूर्वक तीन दिनों तक एक सौ आठ जप करने से बुखार छूट जाता है। इसी प्रकार मध्य दिन में या सूर्योदय काल में तीन दिनों तक जप करने से शीत ज्वर का नाश होता है।

इसी प्रकार ग्यारह लवंग को सौ बार जप से अभिमन्त्रित करके चर्तुदशी के प्रात:काल से प्रारम्भ करके खाकर गर्म जल पीने से एक सप्ताह पन्द्रह दिन तीस दिन या चालिस दिनों में सभी दुष्ट वात रोगों का नाश होता है। सवेरे दोपहर शाम तीनों समय में या केवल एक ही समय में अभिमन्त्रित लवंगों के खाने से घव ठीक हो जाता है। ताम्र पात्र में ताजा जल लेकर ध्यान पूर्वक सौ बार जप से अभिमन्त्रित करे

और साँप के दंश से पीड़ित को खिलावे और अभिमन्त्रित भस्म लगावे तो सर्पदंश से पीड़ित स्वस्थ होता है। नीली अकवन के कोल मूल को जल में पीसे। एकइश जप से अभिमन्त्रित करके विषाक्त मनुष्य को पिलावे, तो भयंकर विषधर सर्प के विष का नाश तत्क्षण हो जाता है। हजारजप से अभिमन्त्रित वैर की लकड़ी को छुलाने से विच्छू आदि के विष का नाश हो जाता है।

हे पार्वती ब्राह्म मुहूर्त में शावर शाल्व मन्त्र से पीपल के कोमल पत्ते को मौन रहकर खाये। इस प्रकार सात रविवार में विधिवत खाये तो उसके वाक्य से ही विच्छू के विष के पीड़ा समाप्त हो जाती है। देवालय, श्मशान, जीर्ण कूप, नदी किनारे और वृक्ष पर रहने वाले सर्पों के देश की कोई दवा नहीं है। धन्वन्तरी विष्णु और ब्रह्मा को भी इसकी प्रतिक्रिया ज्ञात नहीं है। पैर में पीठ में लिंग में नाभि में नाक में ब्रह्मरन्ध्र स्थान में और जीभ में यदि साँप काटे तो उसके लिये कोई उपाय करने से वह नहीं बचता।

बीस जप से अभिमन्त्रित जल पीने से अजीर्ण का नाश होता है। एकइश बार जप से अभिमन्त्रित भस्म को घर में छींटने से मच्छरों का नाश होता है। विशेष फल प्राप्ति के लिये विशेष ऋच्चा को कहता हूँ। जिससे धन लेना हो उसके समीप धनाकांक्षी 'केतुं कृण्वन्' ऋचा मन्त्र को ग्यारह सौ बार जप करे तो वह सन्तुष्ट होकर स्वयं सब कुछ दे देता है। एक हजार जप से धन पाकर वह सुखी हो जाता है।

निर्जन स्थान में घोर जंगल में, राजा और चोरों के संकट में 'अभि व्यये स्वेति' ऋचा का जप करने से भय का नाश होता है। घोर युद्ध में होने पर 'वलं धेहि' ऋचा का जप करे। इससे बल प्राप्त करके सहसा विजयी हो जाता है। उल्लिखित ऋचाओं का पूर्ण स्वरूप—

केतुं कृण्वन् कीकटेषु गॉवो नाशिरे दुह्लेन तपंति धर्मम्।
आनो भर प्रभगंदस्य वदो नैचा शाखं मघवन रन्धया नः॥
अभिव्ययस्व खदिरस्य सारभोगो धेहि स्पन्दने शिशपायाम्।
अंक्षवोलो वीलति वीलयस्व मा यामादस्मादव गिहिषोनः॥२॥
बल धेहि तनुषु नो बलमिन्द्रानलुत्सुनः।
बलं तोकाय तनयाय जीवसे त्वंहि बलदा असि॥

संग्रामे च तथा युद्धे शत्रूणां माययावृते।
वयः सुपर्णेति ऋचं जपेदष्टोत्तरं शतम्।।
तरसा वैरिणां मायां क्षपां सूर्य इवोदये।
जपित्वा स्वभावेन स मन्त्री विजयी भवेत्।।
निम्नगातरणे काले उदगादित्यृचं जपेत्।
महाग्राहयुतां घोरां नदीं तीर्त्वा सुखं व्रजेत्।।
विजिहीर्षेति शूक्तेन शतवाराभि मन्त्रितं।
तत्तैलं पाययेद्देवि सा नारी सूयते द्रुतम्।।
प्रथमे पञ्चमे मासि तृतीये सप्तमे तथा।
यदा पीते तदा नारी तत्क्षणादेव सूयते।।
व्यतीत काले संप्राप्ते विपिने निवसेद्यदि।
यूयमस्मानिति ऋचं जप्त्वा शय्या निवेशने।।
तत्रैव काननाधीशो रक्षत्वनिशमम्बिके।
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन लभेत्सौख्यं जपेत्सदा।।
विष्णुरित्यादि सूक्तेन नारीणां पुत्रसिद्धये।
सहस्रवारं संमन्त्र्य तदाज्यं प्राशयेच्छिवे।।
एवं दिनत्रयं कुर्यात् मासादत्र फलं लभेत्।
तदादि रक्षा कर्त्तव्या नारीणां गर्भ वृद्धये।।
गणानांत्वेत्यृचं जपेद्विघ्नं निवृत्तये।
तस्य विघ्नभयं नास्ति जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु।।
वृहत्सामेत्सृचा मन्त्र्य रक्षां सम्मार्ज्य पार्वति।
तद्रक्षाधारणं कुर्यात् जङ्गमाङ्गे वरानने।।
तथा विधं समालोक्य यक्ष गन्धर्व राक्षसाः।
बहुसोयमितिमाशङ्क्य सन्निकर्षं न यान्ति ते।।
भूत प्रेत पिशाचानां किं सर्व ग्रहादिनाम्।
नाराणां हीतराणां च जङ्गमानां वरानने।।

इति एताश्च ऋचः सिद्ध मन्त्रस्य फलदाः
महापुरश्चरणानन्तरं मुक्तत्वादिति शिवम्।

संग्राम में युद्ध में और शत्रुओं की माया से घिरने पर निम्नलिखित ऋचा का एक सौ आठ जप करे।

वयः सुपर्णा उपसेदुरिन्द्र प्रियमेधा ऋषयो नाद्यमानाः।
अप ध्वांतमूर्णाहि ब्रूधिं चक्षुमुमुग्ध्य स्मान्निधयेव वद्धाव॥

'तरसा वैरिणां भायां क्षपाः सूर्य इवादये' का जप करने से मन्त्री विजयी होता है। नदी में नाव डूबने लगे निम्नलिखित ऋचा जपने से भयंकर ग्राह युक्त नदी से पार होकर सुख से जीवित रहता है।

उदगायमादित्यो विघ्वेन सहसा सह।
द्विषन्तं मध्यं रंधयन्मी अहं द्विषतेरधम॥

निम्नलिखित सूक्त के एक सौ जप से अभिमन्त्रित तेल प्रसवपीड़िता को पिलाने से शीघ्र प्रसव हो जाता है—

विजिहीष्व वनस्पते योनि सूष्यन्त्या ऽव।
श्रुतं मे अश्विना हव सप्तवघ्रि च मुंचतम्॥

जो गर्भवती स्त्री पहले महीने में पाँचवें, तीसरे, सातवें माह में इस तेल को पीती है उसे तत्क्षण प्रसव हो जाता है। चौथे पन में यदि वनवास में हो तो सूयमस्मावीर्ति ऋचा को जपकर शय्या पर सोने से काननाधीश उसकी रक्षा करते है। इसलिये सदा जप करे तो सौख्य होता है। पुत्र प्राप्ति के लिये नारियों को विष्णुरित्यादि सूक्त के हजार जप से अभिमन्त्रित गोघृत तीन दिनों तक पिलाने से एक महीने में इसका फल मिलता है। ऋचा है—

विष्णुर्योनि कल्पयतु त्वष्टारूपाणि विंशतु।
आ सिंचतु प्रजापति धाता गर्भ दधातु ते॥

उस गर्भ की रक्षा के लिये और नारी की गर्भ वृद्धि के लिये निम्नलिखित ऋचा का जप करे। इससे विघ्न की निवृत्ति होती है।

गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुप मश्र वास्तमम्।
ज्येष्ठ राजं ब्रह्मणा ब्रह्मशस्पत आ नः शृण्वन्नूतिमि सदिसादनम्।।

इस ऋचा के जप से जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति में भी विघ्नों का भय नहीं रहता। बृहत्साम० ऋचा से रक्षा को अभिमन्त्रित जल से मार्जन करके जंगमांग में धारण करे। उसी प्रकार से पक्ष गन्धव राक्षस दिखायी देते है। इस प्रकार के बहुत से प्रयोग है। शंका न करे। इससे सन्निकर्ष

नहीं होता। भूत प्रेत पिशाच भाग जाते हैं। तब सभी ग्रहों मनुष्यों और औरों के बारे में क्या कहा जाय। ये सभी ऋचा सिद्धमन्त्र का फल पुरश्चरण के बाद मिलता हैं। यह शिव की उक्ति है।

शरमार्चा पारिजाते रामकृष्णविनिर्मिते मन्त्र भेदामोदभृतो द्वितीय स्तवकोऽगमत्। इति आर्यदेव सूरि सूनु कृते शरमार्चा पारिजाते द्वितीय स्तवकः।

अंग आवरण देवता मन्त्र

अथ सङ्गदावरणदेवता मन्त्राः केचन लिख्यन्ते तत्रादौ भैरवप्रपञ्चसारसंग्रहे अघोर ऋषिःविराट् छन्दः भैरवो देवता भं बीजं फट् शक्तिः भामित्यादि षडङ्गः–

कालाम्बुदश्यामलमानतास्यं करालमव्याहतप्रमेयम्।
लोलालकं लोक विनाश हेतुं लुण्ठद्रिपुं नौमि धृताट्टहासम्।

ॐ नमो भगवते उग्र भैरवाय सर्व विघ्नान् नाशय ठः, ठः, स्वाहा। चतुर्विंशति सहस्त्र जपः।

अनलभुवनमध्ये शक्ति बीजं फडर्णं।
हरिहरजप हुं फट् चाष्टकोणे ससाध्यम्।।
वहिरपि वसुपत्रे मूलमन्त्रत्रिवर्णान्।
भुवमथलिपिवीतं भैरवं वैरि वज्रम्।।

अस्यार्थः–प्रथमं त्रिकोणं तन्मध्ये ह्रीं फडिति तद्वहिरष्ट कोणं तत्कौणेषु। हरि हर जपा हुं फडितिम लिखेत् तद्वहिरष्टदलेषु मूलमन्त्रस्य त्रीन् त्रीन् वर्णान् तद्वहिः चतुरस्त्रं मातृकया वेष्ट्य भैरवं वह्नि कोणे समर्थयेत् अष्ट कोणेषु भैरव्यै नमः, अघोराय नमः स्कन्दाय नमः विष्णवे नमः। दक्षिणवे नमः। दक्षिणामूर्त्तये नमः। चण्डोदण्ड गणेशाय नमः आपदुद्धारणाय नमः यथाक्रमचर्ययेत् दलान्ते अष्ट मातरः यजेत्। नरान्तकाय नमः भीमाय नमः विजयाय नमः रक्त भैरवाय नमः इति प्रतीच्यादि दिक्षु पूजयेत् इति भैरवार्चाविधिः।

अंग आवरण देवता के कुछ मन्त्रों को नहीं लिखा गया। इसलिये पहले भैरव प्रपंचसार संग्रह के अनुसार लिखता हूँ।

विनियोग—अघोर ऋषिः, विराट् छन्दः, भैरवो देवता, भं बीजं फट् शक्तिः। भां भीं भूं भैं भौं भः से षडंगन्यास करे।

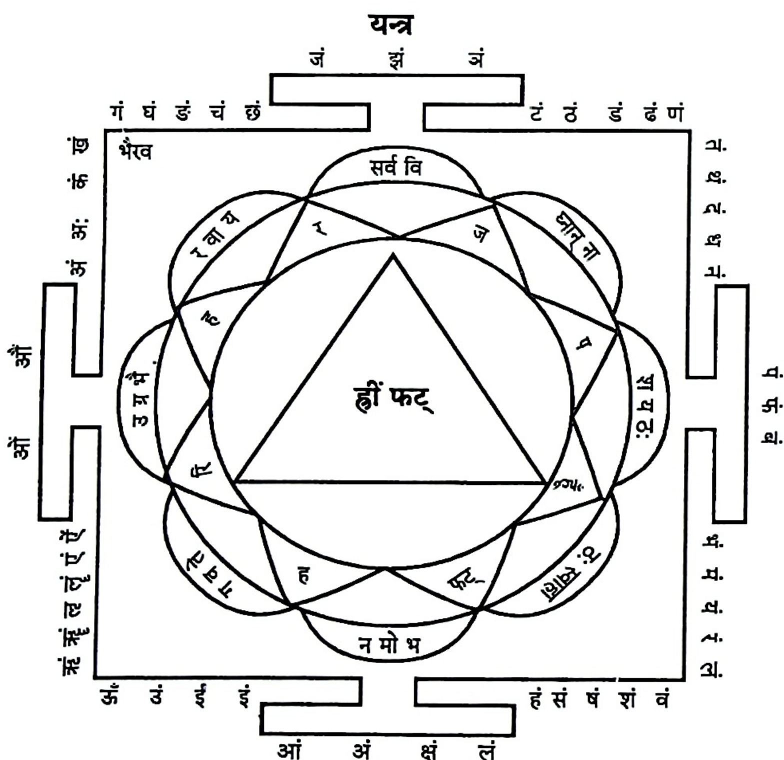
ध्यान—

कालाम्बुदश्यामलमानतास्यं करालमव्याहतप्रमेयम्।
लोलालकं लोकविनाशहेतुं लुण्ठद्रिपुं नौमिधृताट्टहासम्।।

ॐ नमो भगवते उग्र भैरवाय सर्व विघ्नान् नाशय ठः ठः स्वाहा इसका जप चौबीस हजार है।

पूजन यन्त्र—पहले त्रिकोण बनावे। उसके मध्य में ह्रीं फट् लिखे उसके बाहर अष्ट कोण उसके बाहर अष्ट पत्र बनावे। उसके बाहर चतुरस्र बनावे। अष्टकोण के कोनों में हरिहर जप हु फट् लिखे। अष्टदल में मूलमन्त्र के तीन वर्णों को लिखे। चतुरस्र को पचास मातृकाओं से वेष्टित करे। अग्नि कोण में भैरव लिखे।

यन्त्र



अष्टकोण में पूजा करे—भैरव्यै नमः। अघोराय नमः। स्कन्दाय नमः। विष्णवे नमः। दक्षिणवे नमः। दक्षिणामूर्तये नमः। चण्डोदण्ड गणेशाय नमः। आपदुद्धारणाय वटुकाय नमः।

अष्टदल में–ब्राह्म्यै नमः। माहेश्वर्यै नमः। कौमार्यै नमः। वैष्णव्यै नमः। वाराह्यै नमः। इन्द्राण्यै नमः। चामुण्डायै नमः महालक्ष्म्यै नमः।

पूर्वादि दिशाओं में—नरान्तकाय नमः। भीमाय नमः। विजयाय नमः। रक्त भैरवाय नमः।

इति भैरवार्चा विधि।

सिद्ध भैरव मन्त्र

अथसिद्ध भैरव मन्त्रस्य शंकर ऋषिः संस्कृति छन्दः सिद्धः भैरवो देवताभं बीजं श्रीं शक्तिः मोहने विनियोगः। भामित्यादि षडङ्गः।

जलदपटलनीलं दीप्यमानोग्रकेशं।
त्रिशिखडमरुहस्तं चन्द्र लेखावतंसं।
विमलवृष निरूढं चित्रशार्दूलवासः।
विजयमनिशमीडे विक्रमोद्दण्ड चण्डम्।

ॐ नमो भगवते विजय भैरवाय प्रलयान्तकाय महाभैरव्यै महाभैरवाय सर्वविघ्ननिवारणाय शक्तिधराय चक्रपाणये वटमूलसन्निषण्णाय अखिल गणनायकाय आपदुद्धारणाय आकर्षय आकर्षय आवेशय आवेशय मोहय भ्रामय भ्रामय भाषय भाषय शीघ्रं भाषय हां ह्रीं त्रिपुर ताण्डवाय अष्ट भैरवाय भाषय भाषय स्वाहा।

शान्तं त्रिमुखमालिख्य तेन संवेष्ट्य सर्वतः।
अथ शूलं द्वि पार्श्वे च यन्त्रं विजयमद्भुतम्।
एवं यन्त्रं लिखित्वातु मन्त्रेनानेन मन्त्रयेत्।
भस्म दर्शन मात्रेण क्षणा दावेशमाप्नुयात्।

त्रिविन्दुनि उक्तं षकारं विलिख्य अन्तिम विन्दु रेखाग्रेण परितः संवेष्ट्य पार्श्वयोः शूलद्वयं विलिख्य तद्यन्त्रं भस्मनि विलिख्य भैरव मन्त्रं जपित्वा भस्म क्षिपेत् आवेशो भवति।

अस्य सिद्धभैरवमन्त्रस्य शंकर ऋषिः। संस्कृति छन्दः। सिद्धः भैरवो देवता। भं बीजम्। श्री शक्तिः। मोहने विनियोगः। भां भीं भैं भौं भं भः से षडंग न्यास करे। फिर ध्यान करे।

जलदपटलनीलं दीप्यमानोग्रकेशम्।
त्रिशिखडमरूहस्तं चन्द्रलेखा वतंसं।।
विमलवृषनिरुढं चित्रशार्दूलवासः।
विजयमनिशमीडे विक्रमोद्दण्डचण्डम्।।

विजय भैरव का मन्त्र–ॐ नमो भगवते विजयभैरवाय प्रलयान्तकाय महाभैरव्यै महाभैरवाय सर्वविघ्ननिवारणाय शक्तिधराय चक्रपाणये वटमूलसन्निषण्णाय अखिलगणनायकाय आपदुद्धारणाय आकर्षय आकर्षय आवेशय आवेशय मोहय भ्रामय भ्रामय भाषय भाषय शीघ्रं भाषय ह्रां ह्रीं त्रिपुरताण्डवाय। अष्ट भैरवाय भाषय भाषय स्वाहा।

शान्त चित्त से त्रिशूल बनावे। उसे सभी ओर से संवेष्टित करे। त्रिशूल के दोनों पार्श्वों में अद्भुत विजय यन्त्र लिखे। यन्त्र बनाकर इस मन्त्र से मन्त्रित करे। भस्म देखते ही तत्क्षण साध्य आवेष्टित हो जाता है।

तीन बिन्दुओं में उक्त षकार लिखे। अन्तिम बिन्दु रेखाग्र के सब ओर वेष्टित करे। पार्श्वों में दो त्रिशूल बनावे यह यन्त्र भस्म से लिखे। भैरव मन्त्र जपकर भस्म को साध्य पर छिरक दे, तो आवेश होता है।

वड़वानल भैरव मन्त्र

अथ वडवानल मन्त्रस्य भास्कर ऋषिः अति धृति छन्दः वडवानलो देवता रं बीजं स्वाहा शक्तिः अभीष्ट सिद्धयर्थे विनियोगः। रामित्यादि षडङ्गः।

त्रिनयनमरुणन्त्वां वद्धमौलीषु शुक्लां
शुकमरुणमनेकाकल्पमम्भोजसंस्थम्।
अभिमत वरशक्ति स्वस्तिकाभीति हस्तं
नमत कनकमालालंकृतांगं कृशानुम्।

त्वमग्ने द्युभिस्त्वमाशु शुक्षणिस्त्वमद्भ्यः त्वं भस्म परित्वं वनेभ्यस्त्वमौषधीभ्यस्त्वं नृणां पते जावसे शुचिः इति मन्त्रः।

पश्चाष्ट नवकोणेषु यथाक्रमं वैश्वानर मन्त्रमथ लिखित्वा रेखाग्रे शूलं च तदग्रे साध्यं तारावृत्तं वाडववह्नि यन्त्रम्।

एतद् यन्त्र समालिख्य लोहे ताम्रे च शीशके।
आवाह्य पूजयेद् वह्निमाग्नेयाभिमुखोऽम्बिके।।

पञ्चाष्टकोणं चत्वारिंशंत्कोष्ठं त्वमग्नेद्युभिरित्यादि चत्वारिं-शत्वर्णाः तत्संख्य कोणेषु यथाक्रमं विलिखेत्। शत्रवस्तान् संहाराग्ने त्वं तेदगेहं दह सत्वरं फट् स्वाहा इति मन्त्रः अनेनैतद् मन्त्रं तु सपल्लवं जपेन्नूनमष्टोत्तर सहस्त्रकम्।

दग्ध योगे खनेद्रात्रौ श्मशाने बलिपूर्वकम्।
ततस्नात्वाजपेन्मन्त्रमष्टोत्तर सहस्त्रकं।
तत्पश्चाद्वैरिवेश्मानि निर्दग्धानि भवन्ति हि।
मन्त्रान्ते हुं फटादिस्तत् क्रियोचितपदयोजनम्।

पल्लव इत्युच्यते। तत्पश्चादुपसंहारः कर्त्तव्यश्च वरानने। तदर्थं मन्त्रश्चसविता ऋषिः अत्यष्टि छन्दःअग्निर्देवता ह्रीं बीजं स्वाहा शक्ति उपसंहारे विनियोगः। मन्त्रपदैःपूर्वोत्तरार्द्धैः षडङ्गानि। ध्यानमः-

सशराय सशार्ङ्गाय शक्तिहस्ताय वह्नये।
कपालिने नमस्तुभ्यं मत्पापं दहमुञ्चतम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नि रस्मि जन्मना जातवेदा घृतं मे च क्षरमृतं म आसन् अर्कस्त्रिधानृजसो विमातो जस्त्रो धर्मो हविरस्मि नाम भूर्भुवः मत्पापदं दह मुञ्चतं स्वाहा। जपेदष्टोत्तरशतं ब्राह्मणान् भोजयतेत्ततः।

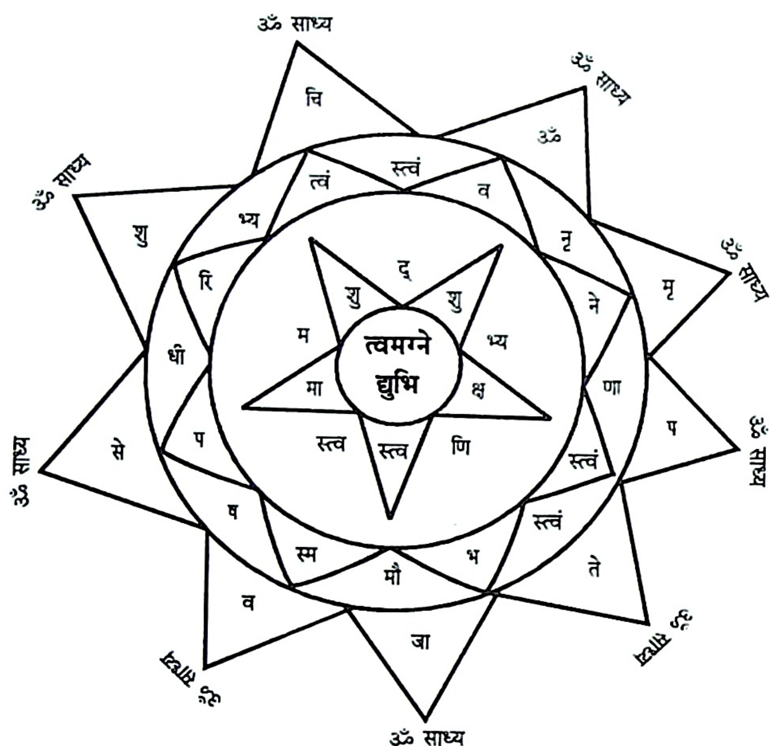
अस्य बड़वानल मन्त्रस्य भास्कर ऋषिः। अतिधृति छन्दः बड़वानलो देवता। रं बीज। स्वाहा शक्तिः। अभीष्ट सिद्ध्यर्थे विनियोगः। रां रीं रूं रैं रौं रः से षडंग न्यास करे। तब ध्यान करे-

त्रिनयनमरुणान्त्वां वद्धमौलीषु शुक्लां।
शुकमरुणमनेकाकल्पमम्भोज संस्थम्।।
अभिमतवरशक्तिस्वस्तिकाभीतिति हस्तं।
नमतकनकमालालंकृतांगं कृशानुं।।

मन्त्र-त्वमग्ने द्युभिस्त्वमाशु शुक्षणिस्त्वमदभ्यः त्वं भस्म परित्वं वनेभ्यत्वं औषधीभ्यस्त्वं नृणां पते जावसे शुचिः।

पाँच आठ नवकोन के कोनों में यथा क्रम इस मन्त्र को लिखे।

यन्त्र



इस वड़वानल भैरव मन्त्र में ३९ उनचालिस अक्षर हैं।
यन्त्र की कार्णिका में पांच अक्षर लिखे—त्वमग्ने धुभि
पाँचकोण में पाँच अक्षर लिखे—त्व मा शु शु क्ष।
संन्धियों में ४ अक्षर लिखे—णि स्त्वं मद्भ्यः।
अष्टकोण में ८ अक्षर लिखे—त्वं भ स्म प रि त्वं व ने।
सन्धियों में ७ सात अक्षर लिखे—भ्य त्वं मौ षधी भ्य स्त्वं।
नव कोण में ९ नव अक्षर लिखे—नृ णां पते जा व से शुचि।
रेखाग्रो के त्रिशूलों के आगे—ॐ के साथ साध्य नाम लिखे।

इस यन्त्र को लोहे ताम्बे या शीशे पर लिखे। इसमें वड़वानल का आवाहन करके सम्मुख होकर पूजा करे। तब 'शत्रवास्तान संहाराग्ने त्वं तेदगेहे दह सत्वरं फट् स्वाहा' का पल्लव लगाकर एक हजार आठ जप करे। दग्ध योग में रात में श्मशान में बलि देकर गाड़ दे। इसके बाद

स्नान करके एक हजार आठ १००८ मन्त्र जप करे। इसके बाद वैरी का घर अग्नि में जल जाता है। मन्त्र के बाद हूँ फट् के बाद क्रियोचित पद योजन को पल्लव कहते हैं। इसके बाद उपसंहार करे। इसके लिये जो मन्त्र है उसके 'ऋषि सविता, छन्द अत्यष्टि, देवता, अग्नि ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्ति उपसंहारे विनियोग:' मन्त्र के पूर्वोत्तरार्द्ध पदों से षडंग न्यास करे। तब ध्यान करे।

सशराय सशार्ङ्गाय शक्ति हस्ताय वह्नाये।
कपालिने नमस्तुभ्यं मत्पापं दह मुञ्चतम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्निरस्मि जन्मना जात वेदा धृतं मे च क्षरमृतं मे आसन् अर्कस्त्रिधा नृजसो विमातो जस्त्रो धर्मो हविरस्मि नाम भूर्भुवः मत्पापदं दह मुंचतं स्वाहा।

इसका जप एक सौ आठ बार करे। ब्राह्मणों को भोजन करावे। इति।

अथाग्नेयास्त्र मन्त्र

अथाग्नेयास्त्र मन्त्रः। अस्य मन्त्रस्य परब्रह्म ऋषिर्देवी गायत्री छन्दः वडवामुखोऽग्निर्देवता ॐ बीजं व्याहृति शक्तिः प्रणवपूर्वकाभिः अतुलोदः विलोमाभिः पदशो गायत्रीभिः करन्यासाङ्गन्यासौ।

बाणाग्रकोणस्थितं एधमानं परान् दहन्तं स्वमरीचिकोणैः।

शोणाम्बरं चन्द्रकलावतंसं नमामि देवं वडवामुखाग्निम्।
शोचिष्केशाय विद्महे वडवामुखाय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्। इति मन्त्रः।

त्रिकोणे वह्निबीजञ्च वसुकोणेऽस्त्र मन्त्रकम्।
पदशोवात्मके साध्यं प्राणमावाह्य पावकम्।

मनसा तरसा साध्यं पश्चादस्त्रमनुं जपेत्। वसुकोणमष्टकोणमिति।

अथ व्याधि मन्त्रस्य वीर भद्र ऋषिरनुष्टुप् छन्दः शिवो देवता व्यां बीजं हुं शक्तिः व्यामित्यादि षडङ्गः।

ध्यानम्

त्रिपादं त्रिभुजं भीमं त्रिमूर्द्धानं त्रिलोचनं।

त्रिशूलाहि कपालाढ्यं ज्वालास्य वक्त्रं दंष्ट्रकम्। सप्तश्रृङ्गं वसामाली चर्माम्बर धारिणम्।

अशेषांगे वृणोद्भूत कृमिजाले समाकुलम्।।
वक्त्रानासं वृहत्स्कन्धं क्षुधया पीडितोदरं।
वथरिणां देहमालिङ्ग्य भक्षयन्तं विकर्णकम्।
कलाय कुसुमानीलं महाव्याधिकरं शिवम्।।
चिरं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं सहस्त्ररिपु दिड मुखः।।

अथ मन्त्रः

ॐ नमो भगवते रुद्राय महा व्याधि कराय देवदत्तं पीडय हुं फट् स्वाहा इति मन्त्रः। तिर्यगूर्ध्वं चतुर्दशदरेखा मध्यतो विलिखेदथ मन्त्रः। बाह्यशूल गंत तदग्र साध्यं रोगचक्रमिदं रिपुनाशनं यन्त्रम्; यन्त्रमालिख्य शीर्षेवा साध्यवृक्षेऽथवाम्बिके आराध्य-चाष्टचूर्णेन लिप्त्वा जप्त्वा खनेन्निधिः। श्मशाने बलि पूर्वं तु पुनातुत्वा जपेत्तथा जपमेवं त्र्यहं कुर्याच्छत्रूणां व्याधि वृद्धये। अहेतुकं महारोगं रिपुः सम्प्राप्य नश्यति। यत्साध्यं लिख्यते व्याधिस्तत्तद्ब्याधिर्भविष्यति। तं रोगं रिपुराश्रित्य सर्वांगे नु भवेद्ध्रुवम्।। अयमर्थः। तिर्यगूर्ध्व चतुर्दश रेखा विलिख्य सर्वतो मध्य कोष्ठे मन्त्रं विलिख्य रेखाग्रेशूलानि विलिखत्।

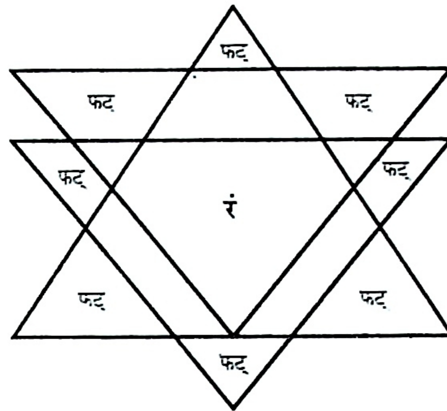
विनियोग–अस्य मन्त्रस्य परब्रह्मऋषि। देवी गायत्री छन्दः बड़वामुखोऽग्निर्देवता। ॐ बीजं। व्याहृति शक्तिः अभीष्ट सिद्धये विनियोगः।

करन्यास अंगन्यास–आगे लिखी गायत्री के पदों से करे। जैसे ॐ शोचिष्केशाय अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः। ॐ वड़वा मुखाय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः। ॐ तन्नः शुक्रः कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ प्रचोदयात् करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। इसी प्रकार हृदयादि षडंग न्यास करे। तव ध्यान करे।

बाणाग्रकोणस्थितिं एधमानं परान् दहन्तं स्वमरीचिकोणैः।
शोणाम्बरं चन्द्र कलावतंसं नमामि देवं वड़वामुखाग्निम्।।

वडवा गायत्री मन्त्र–शोचिष्केशाय विद्महे वड़वामुखाय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्।

यन्त्र



अपने और साध्य नाम के साथ प्राणाग्नि का आवाहन करे। मन्त्रोक्त विधि से साध्य का चिन्तन करते हुए अस्त्र के साथ मन्त्र जप करे।

व्याधि मन्त्र

विनियोग—अस्य व्याधि मन्त्रस्य वीरभद्र ऋषिः। अनुष्टुप छन्द शिवो देवता। व्यां बीजं। हुं शक्तिः।

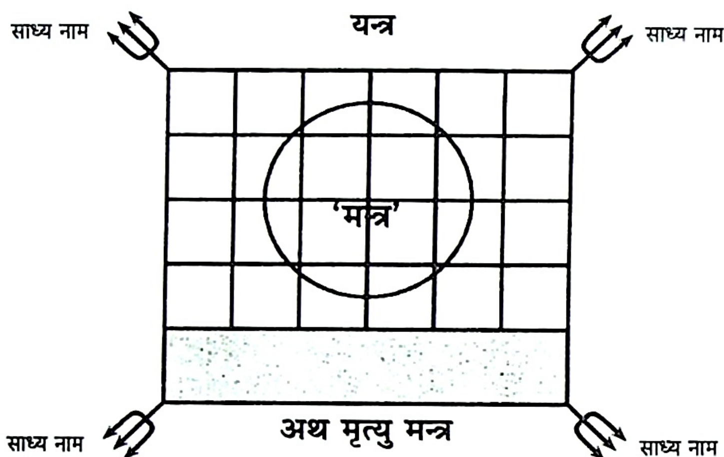
व्यां व्यीं व्यूं व्यैं व्यौं व्यः से कर और अंग न्यास करे।

ध्यान

त्रिपादं त्रिभुजं भीमं त्रिमूर्धानं त्रिलोचनं।
त्रिशूलाहि कपालाढ्यं ज्वालास्य वक्त्रदंष्ट्रकम्।।
सप्तश्रृंगवसामाली चर्माम्बरधारिणम्।
अशेषांगे वृणोद्भूत कृमिजाले समाकुलम्।।
वक्त्रानासं वृहत्स्कन्ध क्षुधया पीड़ितोदरं।
वैरिणां देहमालिंग्य भक्षयन्तं विकर्णकम्।।
कलाय कुसुमानीलं महाव्याधिकरं शिवम्।।

इसप्रकार ध्यान करके शत्रु निवास की ओर मुख करके एक हजार जप करे। मन्त्र—ॐ नमो भगवते रुद्राय महाव्याधिकराय देवदत्त पीड़य हुं फट् स्वाहा।

बाएँ से दाएँ ७ ऊपर से नीचे ७ रेखा समान दूरी पर परस्पर काटते हुए खीचे। उसके मध्य में मन्त्र लिखे। चारों कोनों पर त्रिशूल बनावे। उसके आगे साध्य का नाम लिखे। यह रोग चक्र शत्रु नाशक यन्त्र है। साध्य वृक्ष की लकड़ी पर इस यन्त्र को अंकित करे। पूजा करे। आठ चूर्ण का लेप लगावे। जप करे। बलि देकर श्मशान मे गाड़ दे। पुनः मन्त्र जप करे। ऐसा तीन दिनों तक करने से शत्रु की व्याधि बढ़ती है। अकारण महारोग से ग्रस्त होकर शत्रु का नाश हो जाता है। साध्य के लिये जिस रोग का नाम लिखा जाता है वही रोग उसे हो जाता है। वह रोग शत्रु के सारे शरीर में हो जाता है।



अथ मृत्यु मन्त्र

नारायण ऋषिरुष्णिक् छन्दः मृत्युर्देवता ङं बीजं हैं शक्तिः जीव संहारेविनियोगः। ङामित्यादि षडंगः।

रक्तास्यं भीम दष्ट्रं प्रकटित वदनं वक्रनास कराब्जैः।
शूलं पाशं कपालं फणिमुसजल हलं वज्र खेटं वहन्तं।
भीम कालाभनीलं भृकुटित नयनं सैरिभ-स्कन्धरुढं।
नाना भूतैः करालैः परिवृतमखिलं प्राणिकालं भजामि।।

ॐ नमो भगवते मृत्यवे यमाय सर्व जीव हरणाय उग्राय दण्ड हस्ताय ङं हैं देवदत्तं गृह्ण सर्व लोक भयङ्कराय नाशय हैं हूं फट् स्वाहा। इदं काल मन्त्रं निशामध्ये प्रातः पुनः जप्त्वा जपेत् ततो मन्त्रं सहस्त्र नाम पूर्वकं तज्जपस्यावसाने तु स रिपुर्मरणं लभेत्।

अस्य मृत्यु मन्त्रस्य नारायण ऋषिं। उष्णिक् छन्दः। मृत्युः देवता डं बीजं। हूँ शक्तिः जीवसंहारे विनियोगः।

डां डीं डूं डैं डौं डः से करन्यास और अंग न्यास करे।

ध्यान—

रक्तास्य भीमदंष्ट्रं प्रकटितवदनं वक्रनास करालैः।
शूलं पाशं कपालं फणीमुसजलहलं वज्रखेटं वहन्तं।।
भीमकालाभ्रनीलं भृकुटित नयनं सैरिभोस्कन्धरूढं।
नानाभूतैः करालैः परिवृत्तमखिलं प्राणिकालं भजामि।।

कालमन्त्र–ॐ नमो भगवते मृत्यवे यमाय सर्वजीवहरणाय उग्राय दण्डहस्ताय डं हूँ देवदत्त गृह्ण सर्वलोकभयंकराय नाशय नाशय हूं हूँ फट् स्वाहा।

इस काल मन्त्र को मध्य रात्रि में जपे। प्रातः पुनः जप करे। इसके बाद साध्य नाम के सहित एक हजार जप करे। इस जप के पूरा होने पर शत्रु की मृत्यु हो जाती है।

रक्त चामुण्डा मन्त्र

अथ रक्त चामुण्डा मन्त्रः। शङ्कर ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीं वीजं ह्रीं शक्तिः श्रीं हृदयं ह्रीं शिरः श्रीं शिखा ह्रीं कवच श्रीं नेत्रं श्रीं अस्त्रं इति षडंगः।।

रक्ताभां पीतवस्त्रां स्मितमुखकमलामिन्दुरेखावतंसाम्।
दिव्यैर्माणिक्यमुक्तामणिगणखचितैर्भूषणैर्दीप्यमानाम् ।
पौण्ड्रेक्ष्वीष्वासबाणारिजलजसुभुजां फुल्लपद्मायताक्षीम्।
चामुण्डां रक्ततुण्डां रिपुकुलमथिनीं शाकिनीं भावयामि।

श्रीं ह्रीं फट् रक्त चामुण्डेश्वरि शत्रुजीवविनाशिनि एह्येहि शीघ्रं इष्टानाकर्षय स्वाहा। अक्षर सहस्त्रं जपः।

विनियोग–अस्य रक्तचामुण्डा मन्त्रस्य शंकर ऋषिः। अनुष्टुप छन्दः श्रीं बीजं। ह्रीं शक्तिः।

न्यास–श्रीं हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। श्रीं शिखायै वषट्। ह्रीं कवचाय हुं। श्रीं नेत्राय वौषट्। फट् अस्त्राय स्वाहा।

ध्यान

रक्ताभा पीतवस्त्रां स्मितमुखकमलामिन्दुरेखावतंसांम्।
दिव्यैर्माणिक्यमुक्तास मणिगणखचितैर्भूषणैदीप्यमानाम्।।

पौण्ड्रेक्ष्वीष्वासबाणारिजलजसुभुजां फुल्लपद्माय ताक्षीम्।
चामुण्डां रक्ततुण्डां रिपुकुलमथिनीं शाकिनीं भावयामि।।

मन्त्र–श्रीं ह्रीं फट् रक्तचामुण्डेश्वरि शत्रुजीवविनाशिनि एह्येहि शीघ्र इष्टानाकर्षय स्वाहा।

मन्त्र के प्रत्येक अक्षर पर एक हजार जप करे। अनुष्टुप छन्द में बत्तीस अक्षर होते है इसलिये ३२ बत्तीस हजार जप करे।

मोहनी मन्त्र

अथ मोहिनी मन्त्रः। ईशान ऋषिर्जगती छन्दः मोहिनी देवता ऐं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं मोहने विनियोगः। ऐं ह्रीं हृदयं ऐं ह्रीं शिरः इत्यादि षडंगः।

भुवनविजयदक्षा पुष्पवाणेक्षुचापा
जगतिविविधरूपं दर्शयन्तीं जनानाम्।
तरुणतरणि शोभा श्वेतवासो वसाना
जयति निखिललोकान् जीवनी मोहनीयम्।

ऐं ह्रीं क्लीं ॐ नमो भगवति महोमोहिनि महामाये सर्वलोक वशङ्करि देवदत्तस्य वाक्चक्षुश्चित्तं मोहय मोहय नानारूपाकृतीः शीघ्रं दर्शय दर्शय ह्रीं स्वाहा।

पञ्च सहस्त्रं जपः। पञ्चकोणं लिखेच्छक्तिं मध्ये बीजेन वेष्टयेत्। पञ्चकोणे लिखेच्छक्तिं बाह्ये साध्यच समन्वितम्। देवदत्तमुखे यन्त्रं दर्शयन्प्रजपेन्मनुम्। जङ्गमाजगमानाञ्च देवभूतादिरक्षसाम्। पुरतो विविधं रूपं दर्शयन् विस्मयो भवेत्।

विनियोग–अस्य मोहिनी मन्त्रस्य ईशान ऋषिः। जगतीछन्दः मोहिनी देवता। ऐं बीजं। ह्रीं शक्तिः। क्लीं कीलकं मोहने विनियोगः।

षडंगन्यास–ऐं ह्रीं हृदयाय नमः। ऐं ह्रीं शिरसे स्वाहा...........। ऐं ह्रीं शिखायै वषट्। ऐं ह्रीं कवचाय हुम्। ऐं ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ऐं ह्रीं अस्त्राय फट्।

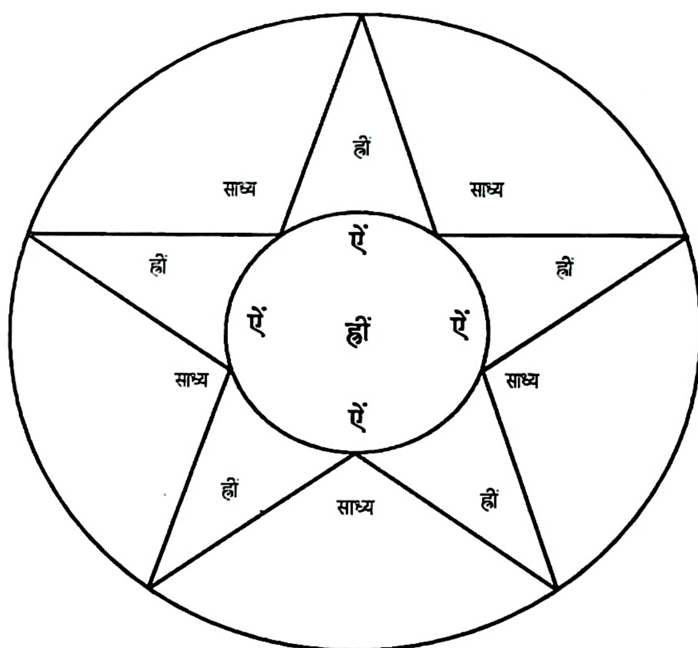
ध्यान—भुवन विजय दक्षा पुष्पबाणेक्षुचापा
जगति विविधरूपं दर्शयन्तीं जनानाम्।
तरुणतरणि शोभा श्वेतवासो वसाना
जयति निखिल लोकान् जीवनी मोहनीयम्।।

मन्त्र–ऐं ह्रीं क्लीं ॐ नमो भगवति महामोहिनि महामाये

सर्वलोकवशंकरि देवदत्तस्य वाक्चक्षुश्चित्तं मोहय मोहय नानारूपाकृतीः शीघ्रं दर्शय दर्शय ह्रीं स्वाहा।

इसका पुरश्चरण पाँच हजार जप से होता है।

यन्त्र



पंच कोण के मध्य में ह्रीं लिखकर बीज ऐं से वेष्ठित करे। पाँच कोनों में ह्रीं लिखे। सन्धियों में साध्य का नाम लिखे। साध्य के मुख में यन्त्र की भावना से देखते हुए जप करे। तो जड़ जंगम देव भूत राक्षस विविध रूप में दर्शन देते है। इससे विस्मय होता है।

लक्ष्मी मन्त्र

अथ लक्ष्मी मन्त्रः। वामेशऋषिः वृहति छन्दः श्रीर्देवता रां श्रीमित्यादि षडंगः।

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी,
गंभीरावर्तनाभिः स्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया।
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैमणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भै-
र्नित्यं सा पद्म हस्ता मम वसतु गृहे सर्वमांगल्ययुक्ता।

ॐ श्रीं क्लीं महालक्ष्मि महालक्ष्मि एह्येहि सर्वसौभाग्यं देहि मे स्वाहा। चतुर्विंशति सहस्त्रं जपः।

त्रिकोणेषु त्रिबीजं स्याद वसुकोणे परं लिखेत्।
त्रयोदश दले शेषं बाह्ये पञ्चाशदर्णकम्।
लक्ष्मीं बीजावृतं यन्त्र सर्वसौभाग्यदायकम्।

पञ्चाशदर्ण मातृका

विनियोग–अस्य मन्त्रस्य वामेश ऋषिः। बृहती छन्दः। श्रीः देवता श्रां श्रीं श्रूं श्रैं श्रौं श्रः से षडंगन्यास करे।

ध्यान

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्राय ताक्षी।
गंभीरावर्त नाभिः स्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया।।
लक्ष्मी दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणिगण खचितैः स्थापिता हेम कुम्भैः।
नित्यं सा पद्म हस्ता मम वसतु गृहे सर्व मांगल्ययुक्ता।।

लक्ष्मी मन्त्र—ॐ श्रीं क्लीं महालक्ष्मि महालक्ष्मि एह्येहि सर्व सौभाग्यं देहि मे स्वाहा। इसका चौबीस हजार जप से पुरश्चरण होता है।

यन्त्र

लक्ष्मी बीज से वेष्टित यन्त्र सर्व सौभाग्यदायक है।

माया मन्त्र

अथ मायामन्त्रः। अस्य मंकणऋषिः उष्णिक् छन्दः माया देवता ह्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः मायाकरणे विनियोगः। ह्रांमित्यादि षडंगानि।

माया पदेन जगतो विवशञ्च मोहं
मायाकुतूहलमनोरथमाकरोति ।
नारायण प्रियतमा सुतमालनीला
शूलायुधा विजयते तुरगाधिरूढा।

ह्रीं महामाये जगन्मोहिनि सर्वजनवांङ्मनः कार्यचक्षुः श्रोत्रघ्राण प्राणान् मोहय मोहय स्वेच्छा कुतूहलं शीघ्रं दर्शय ह्रीं स्वाहा इति पञ्चाशत सहस्रं जपः।

दर्शनादर्शनञ्चैव तथा दर्शनदर्शनम्।
मन्त्रस्मरण मात्रेण भवेदेव न संशयः।

अस्य माया मन्त्रस्य मंकण ऋषिः। उष्णिक् छन्दः। माया देवताः ह्रीं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। मायाकरणे विनियोगः।

ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः से षडंगन्यास करे।

ध्यान—

माया पदेनं जगतो विवशं च मोहं
मायाकुतूहलमनोरथमाकरोति ।
नारायणप्रियतमा सुतमालनीला
शूलायुधा विजयते तुरगाधिरूढ़ा।।

मन्त्र–ह्रीं महामाये जगन्मोहिनि सर्वजनवाङ्मनः कायचक्षुः श्रोत्रघ्राणप्राणान् मोहय मोहय स्वेच्छा कुतूहलं शीघ्रं दर्शय ह्रीं स्वाहा।

पचास हजार जप से पुरश्चरण होता है। सिद्ध होने पर अदृश्य का दर्शन और हृदय अदृश्य होता है। सिद्ध मन्त्र के स्मरण से ही ऐसा होता है। इसमें संशय नहीं है।

पुलिन्दिनी मन्त्र

अथ पुलिन्दिनि मन्त्रः। शङ्कर ऋषिरनुष्टुप् छन्दः पुलिन्दिनि देवता ईं बीजं स्वाहा शक्तिः प्रसादे विनियोगः। ईं इत्यनेन षडङ्गः।

ध्यानम्

वर्हापीडकचाभिराप्तचिकुरां बिम्बोज्वलच्चन्द्रिकां
गुञ्जाहारलतां भुजालिविलसत् ग्रीवामधीरेक्षणाम्।
माकन्दद्रुम पल्लवारुणपटामर्द्धेन्दु बिम्बाननाम्।
देवीं दिव्यमयीं प्रसन्नवदनां ध्यायेत्किरातीमिमाम्।

ईं नमो भगवति श्री शारदा देव्यन्त्यन्तातुल भोयं देहि देहि एह्यागच्छागच्छान्तुकं हृदिस्थं कार्यं सत्यं ब्रूहि पुलिन्दिनि ईं स्वाहा। पञ्चाशत् मात्रं जपः।

कार्याकार्य विवेकाभ्यां नित्यमष्टोत्तरं शतम्।
जप्त्वा स्वपिति यस्तस्य स्वप्ने वदति साम्बिका।
साधकस्तद्वचः श्रुत्वा तथैव हि समाचरेत्।
तस्य नास्ति भयं क्वापि सर्वकालं सुखी भवेत्।

अस्य मन्त्रस्य शंकर ऋषिः। अनुष्टुप छन्दः। पुलिन्दिनी देवता ईं बीजं। स्वाहा शक्तिः। प्रसादे विनियोगः। केवल ईं से षडंग न्यास करे।

ध्यान—

वर्हापीड़कचाभिराप्तचिकुरां बिम्बोज्वलंच्चन्द्रिकाम्।
गुञ्जाहारलतां भुजालि विलसत् ग्रीवामधीरेक्षणाम्।।
माकन्दद्रुमपल्लवारुणपटामर्द्धेन्दु बिम्बाननाम्।
देवीं दिव्यमयीं प्रसन्नवदनां ध्यायेत्किरातीमिमाम्।।

मन्त्र–ईं नमो भगवति श्री शारदा देव्यन्त्यन्तातुल भोयं देहि देहि एह्यागच्छागच्छान्तुकं हृदिस्थं कार्यं सत्यं ब्रूहि पुलिन्दिनि ईं स्वाहा।

पचास बार जप होता है। कार्या कार्य विवेक से नित्य एक सौ आठ जप करे। जप के समय जिसका चिन्तन करते करते सो जाता है तब स्वप्न में अम्बिका कहती है। अम्बिका के कथन के अनुसार कार्य करो। इससे साधक को कोई भय नहीं होता सभी समय सुखी रहता है।

शास्तृ मन्त्र

अथ शास्तृ मन्त्रः। अस्य अर्द्धनारीश्वरऋषिरनुष्टुप्छन्दः महाशास्ता देवता ह्रीं बीजं श्रीं शक्तिः इष्ट सिद्ध्यर्थे विनियोगः। मन्त्र पदैः षडङ्गानि।

आश्यामकोमलविशालविचित्रितंतु
वासो वसानमहणोत्पलदानहस्तम्।
उत्तुङ्ग रक्तनुकुटं कुटिलार्द्र केशं
शास्तारमिष्ट वरदं शरणं प्रपद्ये।

ह्रीं हरिहर पुत्राय पुत्र लाभाय शत्रु नाशाय मदगज वाहनाय महाशास्ताय नमः त्रयस्त्रिंशज्जपः।

अस्य शास्तृ मन्त्रस्य अर्द्ध नारीश्वर ऋषिः। अनुष्टुप छन्दः महा शास्ता देवता। ह्रीं बीजं। श्रीं शक्तिः। इष्ट सिद्ध्यर्थे विनियोगः मन्त्र के पदों से षडंग न्यास करे।

ध्यान

आश्यामकोमलविशालविचित्रतंतु ,
वासो वसानमहणोत्पलदानहस्तम्।
उत्तुंग रक्तमुकुटं कुटिलार्द्रकेशं शास्तारमिष्टवरदं शरणं प्रपद्ये।

मन्त्र—ह्रीं हरिहरपुत्राय पुत्रलाभाय शत्रुनाशाय मदगज वाहनाय महाशास्ताय नमः।

केवल तैंतिस जप होता है।

संक्षोभिणी मन्त्र

अथ संक्षोभिणि मन्त्रः। अस्य अगस्त्य ऋषिः पंक्तिछन्दः क्षं बीजं ह्रीं शक्तिः सर्व सक्षोभणे विनियोगः। क्षामित्यादि षडङ्गः।

शिवापञ्चमुखारूढ़ा परिधासिकराम्बुजा
सर्वारि हृदिक्षोभ कारणी पातु सर्वदा।

क्षां ॐ नमो भगवति अपवाद हरे महाक्रूरे सर्वशत्रुविमर्दिनिदेवदत्तमवक्षेपं कुरु कुरु स्वाहा।

अक्षर सहस्त्रं जपः।
मन्त्रावसानके वैरि नाममिश्रितपल्लवम्।
सहस्त्रं प्रजपेन्मन्त्रं भ्रष्टचित्तो भवेद्रिपुः।
शातानि मन्त्रित भस्म निखनेदष्टदिषु सः।
भवनं परितो मन्त्री रक्षणाय स्वकीयकम्।
शत्रु तस्कर पीडा च जन्तु भूतादि पीडनम्।
समकालेऽपि नैवास्य वरण्ये नात्र संशयः।

तत्र पल्लवे मन्त्रान्ते हुं फडित्यादि तत्क्रियोचित तद्योजनम्। वैरिनाम मिश्रितमिति मच्छत्रु मनः क्षोभं कुरु इत्यर्थः।

अस्य संक्षोभिणी मन्त्रस्य अगस्त्य ऋषिः। पंक्ति छन्दः। क्षं बीजं। ह्रीं शक्तिः। सर्वसंक्षोभणे विनियोगः।

क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः से षडंग न्यास करे।

ध्यान—

शिवापंचमुखारूढ़ा परिधासि कराम्बुजा।
सर्वारि हृदिक्षोभकारिणी पातु सर्वदा।।

मन्त्र—**क्षां ॐ नमो भगवति अपवाद हरे महाक्रूरे सर्वशत्रुविमर्दिनि देवदत्तमवक्षेपं कुरु कुरु स्वाहा।**

मन्त्र के प्रति अक्षर एक हजार जप से पुरश्चरण होता है। पुरश्चरण के बाद वैरी नामाक्षर मिश्रित पल्लव लगाकर एक हजार जप से वैरी का चित्त भ्रष्ट हो जाता है। अपने घर की आठों दिशाओं में सौ जप से मन्त्रित भस्म अपनी रक्षा के लिये गाड़ दे। इससे शत्रु, तस्कर, जन्तु, भूतादि की पीड़ा नहीं होती और साधक वरेण्य हो जाता है। मन्त्र के अन्त में लगने वाले पल्लव में 'हु फट्' के साथ मच्छत्रु अमुक नाम क्षोभ कुरु' होता है।

धूमावती मन्त्र

अथ धूमावति मन्त्रः। अस्य नृसिंह ऋषिः पंक्ति छन्दः ज्येष्ठा देवी देवता धूं बीजं स्वाहा शक्तिः निग्रहे विनियोगः। धामित्यादि षडङ्गः।

ध्यानम्

ध्यायेत्कालाभ्रनीलां विवलितवदनां काकनासाक्षिकर्णाम्।
सम्मार्जिन्येकशूर्पैर्युतमुसलकरां वक्रदन्तां विषास्यां।
ज्येष्ठां निर्वाणवेशां भ्रुकुटिलनयनां मुक्तकेशामुदाराम्।
शुष्कोत्तुङाति तिर्यक् स्तनभरयुगलां निष्कृपां शत्रुहन्त्रीम्।
धूं धूवावति स्वाहा। सप्त सहस्त्रं जपः।
ऋतु कोणस्य वृतान्तबीजं कोणे मनुं लिखेत्।
कोणाग्रे शूलके साध्यं ज्येष्ठा यन्त्रमिहोच्यते।
सम्पूज्य विधिवद्यन्त्रं जपित्वा तु सहस्त्रकम्।
श्मशाने तु निशामध्ये निखनेद्वलिपूर्वकम्।

रिपुगेहेऽथवाकुर्यात् खननं बलिवर्जितम्।
भयो जपेत् त्रिरात्रश्च तत्कालोचितदिङ्मुखः।
स्तम्भनोच्चाटने चैव निग्रहे चित्तविभ्रमे।
शत्रुक्षये च विद्वेषे प्रकुर्यात्सावधानतः।
आनाभिमुखां ध्यात्वा गच्छन्तीं वैरिणं प्रति।
यो जपेन्निशि साहस्त्रं तस्य शत्रुर्विनश्यति।।
ताडयन्तीं महावेगं शूर्पेण रिपुवक्षसि।
ध्यात्वा जपेत्सहस्त्रं तु नष्टचित्तो भवेद्रिपुः।
मार्जयन्तीं क्षणाच्छत्रोः धनधान्यादिकं चिरम्।
ध्यात्वाष्टोत्तरसाहस्त्रं जपेद् भाग्य क्षयाय च।
दीप्यमानोल्मुके नैव दहताञ्चापि वैरिणम्।
ध्यात्वा जपेत्तथा मन्त्रं स्तम्भनायाम्बिके बुधः।
त्रिकोणं विलेखेत्पूर्वं तन्मध्ये बीजमालिखेत्।
कोणाग्रे तु लिखेच्छूलं तच्छूलान्तरं लिखेन्मनुम्।
तदग्रे विलिखेत्साध्यं ज्येष्ठा यन्त्रं वरानने।
सम्पूज्य विधिवद्यन्त्रं निशामध्ये श्मशानके।
बलिपूर्वं खनित्वा तु पुनः स्नात्वा जपेन्मनुम्।
अष्टोत्तराष्टसाहस्त्रं दृढचित्तोऽरिदिङ्मुखः।
वैरिणस्तत्क्षणादेव यान्ति वैवस्वतं पदम्।
विद्वेषे तथा देवि जपेदेकाग्रमानसः।
अन्योन्यकलहं क्षिप्रं शत्रूणां जायते ध्रुवम्।
विलोमेन जपैनैव निवृत्तिः स्यात् सहस्त्रतः।।
नान्य मन्त्रैर्निवृत्तिः स्यात्तु प्रयत्नेऽपि कृतेऽम्बिके।।

अस्य धूमावती मन्त्रस्य नृसिंह ऋषिः। पंक्ति छन्दः। ज्येष्ठा देवी देवता। धूं बीजं। स्वाहा शक्तिः निग्रहे विनियोगः।

धां धीं धूं धैं धौं धः से षडंग न्यास करे।

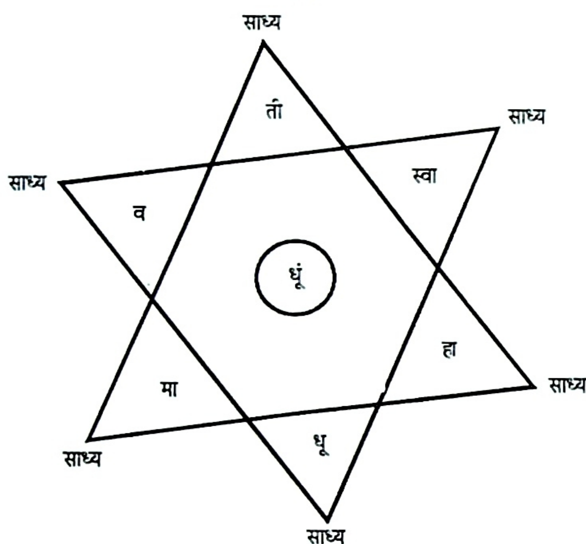
ध्यान

ध्यायेत्कालाभ्रनीलां विवलितवदनां काकनासाक्षिकर्णाम्।
सम्मार्जिन्येकशूर्पैर्युत मुसलकरा वक्रदन्तां विषास्यां।।

ज्येष्ठां निर्वाणवेशां भ्रुकुटिलनयनां मुक्तकेशामुदाराम्।
शुष्कोत्तुङ्गातितिर्यक् स्तनभरयुगलां निष्कृपां शत्रुहन्त्रीम्।।

मन्त्र—धूं धूमावति स्वाहा। सात हजार जप से पुरश्चरण होता है।

यन्त्र



षट्कोण में वृत्त बनाकर उसमें बीज धूं लिखे। कोनों में मन्त्र के छह अक्षरों धू मा व ती स्वा हा लिखे। कोणाग्रों में त्रिशूल बनाकर उसके आगे साध्य नाम लिखे। विधिवत् यन्त्र पूजन के बाद एक हजार जप करे।

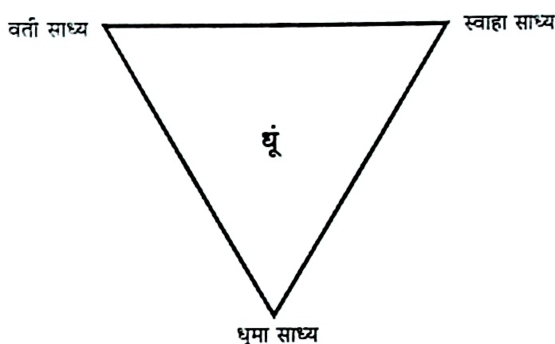
श्मशान में आधी रात में बलि देकर उसे गाड़ दे। अथवा शत्रु गृह में बिना बलि के गाड़ दे। इसके बाद तीन रातों तक काल के अनुसार दिशा में मुख करके जप करे। स्तम्भन, उच्चाटन, निग्रह, चित्तविभ्रम शत्रुक्षय, विद्वेषण आदि कर्म सावधानी से करे।

शत्रु निवास की ओर मुख करके जो रात में एक हजार जप करता है उसके शत्रु की मृत्यु हो जाती है। ध्यान सहित एक हजार जप करने पर देवी अपने सूप से वैरी को मारती है। तब उसके चित्त बुद्धि का नाश हो जाता है। शत्रु के धन धान्य आदि को झाड़ू से बहार देती है। शत्रु के भाग्य को क्षय करने के लिये ध्यान सहित एक हजार आठ जप करे। वैरी का दीप्यमान उल्का भी उसका नाश नहीं कर सकता। ध्यान के साथ जप करने से स्तम्भन होता है।

धूमावती का अन्य यन्त्र

त्रिकोण बनाकर उसके मध्य में बीज 'धूं' लिखे। कोणाग्रों में त्रिशूल बनावे। त्रिशूलों के आगे धू मा व ती, स्वाहा, दो दो मन्त्राक्षरों को लिखे। उसके आगे साध्य नाम लिखे। यह ज्येष्ठा यन्त्र है।

ज्येष्ठा यन्त्र



आधी रात में श्मशान में यन्त्र की पूजा विधिवत् करके बलि देकर जमीन में गाड़ दे। इसके बाद स्नान करके एक हजार आठ मन्त्र जप शत्रु की ओर मुख करके दृढ़ चित्त से करे। ऐसा करते ही शत्रु तत्क्षण यम लोक में चला जाता है।

विद्वेषण में एकाग्र मन से जप करे तो शत्रुओं में परस्पर कलह हो जाता है। कलह शान्ति के लिये विलोम मन्त्र का एक हजार जप करे। इसकी निवृत्ति अन्य मन्त्रों से नहीं होती। चाहे जितना प्रयत्न करे।

चित्र विद्या मन्त्र

अथ चित्र विद्या मन्त्रः। संवर्त्तक ऋषिः शक्वरी छन्दः चित्र विद्या देवता ठं बीजं सूं शक्तिः इष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। बीजशक्तिभ्यां करन्यासः। मन्त्रपदैः षडङ्गानि।

ध्यानम्

अमलकमलमध्ये चन्द्रपीठे निषण्णा
अमृत कलश वीणा भिन्न मुद्राग्रहस्ताम्।

प्रणत शिरसि पूरं संस्रवन्तीं सुधायाः
शरणमहमुपैमि श्रीशिवां चित्रविद्याम्॥

मन्त्र

वं सं ज्झ्रूं ज्झ्रजुँ ठं ह्रीं श्रीं ॐ भगवति चित्रविद्ये महामाये अमृतेश्वरि एह्येहि वरे वरदे प्रसन्न वदने अमृतं स्रावय स्रावय अनलं शौतलं कुरु सर्व विषं नाशय नाशय सर्वताप ज्वरं हन हन सर्वपैत्योन्मादं मोचय मोचय आज्योष्ठं शमय शमय सर्व जनं मोहय मोहय माँ पालय पालय श्रीं ह्रीं ठं जुँ ज्झ्रूं ज्झ्रं सं वं स्वाहा। अयुतं सहस्त्रं वा जपेत्।

वृतमालिख्य तन्मध्ये बीज षट्कं लिखेत्ततः।
मायया च श्रियावेष्ट्य मनसा साध्य मूर्धनि।
तत्सुधा सिंचितं ध्यात्वा देशिकं मूर्ध्नि चिन्तयेत्।
विशेत् स्पृशेद्धरेत् सिञ्चेत् चित्रविद्यामनुं स्मरेत्।
कारयेद्वाखिलं चान्यैः पैत्योन्मादे तु सुन्दरी।
वृत्तद्वयं समालिख्य बहिः शूलाष्टकं लिखेत्।
वृत्तमध्यष्ट बीजं च मन्त्रं तस्यान्तरालके।
शुलाग्रे विलिखेत् साध्यमष्टबीजद्वयं तथा।
स्पृशन्मन्त्रं द्विधा जप्त्वा वाहनाद्युपचारकान्।
कृत्वा तच्छतवारं च मन्त्रीं सन् चित्रविद्यया।
तत्पत्रं गुडमध्यस्थं खादयित्वा प्रवेशयेत्॥
पुष्पवत्सुधरेज्जन्तुं प्रविष्टं हव्यवाहनः।
अष्टबीजं द्वयं चैव पितलोमानुलोमितम्।
अष्ट वीजानि मन्त्रादावुक्तानि।

विनियोग–अस्य चित्र विद्या मन्त्रस्य संवर्त्तक ऋषिः। शक्वरी छन्दः चित्र विद्या देवता। ठं बीजं। सूं शक्तिः। इष्टसिद्धयर्थे जपें विनियोगः बीज शक्ति 'ठं सूं' से कर न्यास करे। मन्त्र के पदों से षडंगन्यास करे।

ध्यान—

अमलकमलमध्ये चन्द्रपीठे निषणा
अमृतकलशवीणा भिन्नमुद्राग्रहस्ताम्।
प्रणतशिरसि पूरं संस्रवन्तीं सुधायाः
शरणमहमुपैमि श्री शिवां चित्रविद्याम्।।

दश हजार या एक हजार जप है।

यन्त्र—वृत्त बनाकर उसके मध्य में छह बीजों को वं सं ज्झ्रं ज्झ्रं जुं ठं को लिखे। ह्रीं श्रीं से वेष्ठित करे।

यन्त्र



इस यन्त्र का चिन्तन साध्य के मूर्धा पर करे। उसे अमृत से सिंचित होने की भावना करे। बैठे, स्पर्श करते हुए सिञ्चित करे। चित्र विद्या मन्त्र का स्मरण करे। इससे पैत्योन्माद की शान्ति होती है।

अन्य यन्त्र

दो वृत्त बनाकर उसके बाहर आठों दिशाओं में आठ त्रिशूल बनावे। वृत्त के मध्य में आठ बीजों को लिखें। दो वृत्तों के अन्तराल में मन्त्र लिखे। त्रिशूल के आगे साध्य नाम के साथ दो बीजों को लिखे।

यन्त्र

वं सं ज्झ्रं ज्झ्रं
जुं ठं ह्रीं श्रीं

इस यन्त्र को स्पर्श करके दो बार मन्त्र जप करे। आवाहनादि उपचारों से पूजा करे। चित्रविद्या का एक सौ बार जप करे। यन्त्र को गुड़ में घुसा दे। इसे धारण करे तो इष्टसिद्ध होती है।

सुब्रह्मण्य मन्त्र

अथ सुब्रह्मण्यमन्त्रः। काश्यप ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः सुब्रह्मण्यो देवता संबीजं सां शक्तिः सां सुब्रह्मण्याय स्वाहा। हृत् सीमित्यादि मूलसहितैः अङ्ग न्यासः।

शक्तिहस्तं विरूपाक्षं शिखिवाहं षडाननम्।
दारुणं रिपुरोगघ्नं भावयेत् कुक्कुटध्वजम्।
सुँ सुब्रह्मण्याय स्वाहा। त्रिसहस्रं जपः।

विनियोग–अस्य सुब्रह्मण्य मन्त्रस्य काश्यप ऋषिः त्रिष्टुप छन्दः।

सुब्रह्मण्यो देवता। सं बीजं सां शक्तिः। सुब्रह्मण्याय स्वाहा। सां सीं सूं सैं सौं सः प्रत्येक के साथ मूल मन्त्र बोलकर षडंग न्यास करे।

ध्यान

शक्तिहस्तं विरूपाक्षं शिखिवाहनषडाननम्।
दारुणं रिपुरोगघ्नं भावयेत् कुक्कुटध्वजम्॥

मन्त्र—सुं सुब्रह्मण्याय स्वाहा। अष्टाक्षर है। तीन हजार जप होता है।

वीरभद्र मन्त्र

अथ मन्त्रसारोक्तो वीरभद्रमन्त्रो लिख्यते। ब्रह्माऋषिरनुष्टुप्छन्दः वीरभद्रो देवता ॐ हौं वीरभद्राय हृत् अति क्रूराय शिरः। रुद्रकोपं संभवाय शिखा सर्वदुष्ट कवचं निवर्हणाय नेत्रं हुं फट् स्वाहा अस्त्रं।

गोक्षीराभं दधानं परशुडमरूकौ खड्गखेटौ कपालम्।
शूलञ्चाभीतिदाने त्रिनयनमसितं व्याघ्रचर्माम्बराढ्यं।
वेतालारूढमुग्रं कपिशतर जटावद्ध शीतांशुखण्डं।
ध्यायेद्धोगीन्द्रभूषं निजगणसहितं सन्ततं वीरभद्रम्॥

ॐ हां वीरभद्राय अति क्रूराय रुद्रकोपसंभवाय सर्वदुष्ट निवर्हणाय हुँ फट् स्वाहा। द्वात्रिंशदक्षरः रक्षा प्रधानमन्त्रः।

द्वादशलक्षं जपः रक्तहयारिपुष्पैर्वा त्रिमधुराक्तैः कमलै र्वा दशांश पुरश्चरण होमः। हयारिः वोकरं।

अथ पूजाप्रसादोक्ते पीठे तत्पुरुषाय अघोराय सद्योजाताय वामदेवाय ईशानायेति।

प्राग्दक्षिणोत्तर पश्चिम दिक्षु ईशमैशान्ये च पूजयेत्। निवृत्यैः प्रतिष्ठायैः विद्यायैः शान्त्यै, शान्त्यतीतायैः०

इति तच्छक्तयः आग्नेयादि कोणेषु शान्त्यतीतामै शान्ये एवं प्रथमावृत्तिः। अङ्गैः द्वितीया।

परशवे० डमरुकाय० खड्गाय० खेटाय० कपालाय० शूलाय० अभयाय० वरदाय० इति तृतीया।

इन्द्राद्यैश्चतुर्थी। वज्राद्यैः पञ्चमी अथ प्रयोगः—

सम्पूज्यदेवमेवं जुहुयादिध्मैश्च पंचगव्याक्तैः।

खर मञ्जरी समुत्थै स्त्रिशतं कृत्वादिशान्तये रात्रौ।। खर मञ्जरी—अपामार्गः।

अमुं वीरभद्रं हरिद्राभमुग्रं गदामुष्टि हस्तं करालाह हासम्
समावाह्यवह्नौ रिपुस्तम्भनार्थं हरिद्रा रजोभिः सहस्रं जुहोतु।

प्रयोगान्तरम्—

भुजङ्गगणभूषणं भुजगतत्रिशूलाहत-
स्वशत्रु रुधिरोक्षितं भजद्भालनेत्रानलं

दिगम्बरमनुस्मरन् जपतु वीरभद्रं मनुम्। निशीथ समये शतं सितमतिर्निहन्तुँ रिपुम्।

विनियोग—अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। अनुष्टुप छन्दः। वीरभद्रो देवता। इष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

षडंगन्यास—ॐ हौं वीरभद्राय हृदयाय नमः। अतिक्रूराय शिरसे स्वाहा। रुद्रकोपं संभवाय शिखायै वषट्। सर्वदुष्ट कवचाय हुं। निर्वहणाय नेत्राय वौषट्। हुं फट् स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यान

गोक्षीराभं दधानं परशु डमरुकौ खड्ग खेटौ कपालम्।
शूल ञ्चाभीतिदाने त्रिनयनमसितं व्याघ्रचर्माम्बराढ्यं।।
वेतालारूढमुग्रं कपिशतर जटावद्धशीतांशुखण्डं।
ध्यायेद् भोगीन्द्रभूषं निजगणसहितं संतते वीरभद्रं।।

मन्त्र—ॐ हां वीरभद्राय अतिक्रूराय रुद्रकोपसंम्भवाय सर्वदुष्ट निवर्हणाय हुं फट् स्वाहा।

यह रक्षा प्रधान मन्त्र बत्तीस अक्षरों का है। बारह लाख जप से पुरश्चरण होता है। त्रिमधुराक्त लाल कनैल या कमलों से दशांश पुरश्चरण होम होता है।

प्रथम आवरण—पूजा प्रसाद पीठ में उक्त पीठ में पूर्व दक्षिण उत्तर पश्चिम और ईशान मध्य में इनकी पूजा करे। तत्पुरुषाय नमः। अघोराय नमः। सद्योजाताय नमः। वामदेवाय नमः। ईशानाय नमः। निवृत्यै नमः। प्रतिष्ठायै नमः। विद्यायै नमः। शान्त्यै नमः। शान्त्यातीताय नमः की पूजा दिशाओं में करे। विदिशाओ में पूजा करे शान्त्यातीत्राय नमः से ईशान में पूजा करे।

द्वितीय आवरण–ॐ हौं वीरभद्राय हृदयाय नमः। अतिक्रूराय शिरसे स्वाहा। रुद्रकोपं सम्भवाय शिखायै वषट्। सर्वदुष्ट कवचाय हुं। निवर्हणाय नेत्र त्रयाय वौषट्। हुं फट् स्वाहा अस्त्राय फट्।

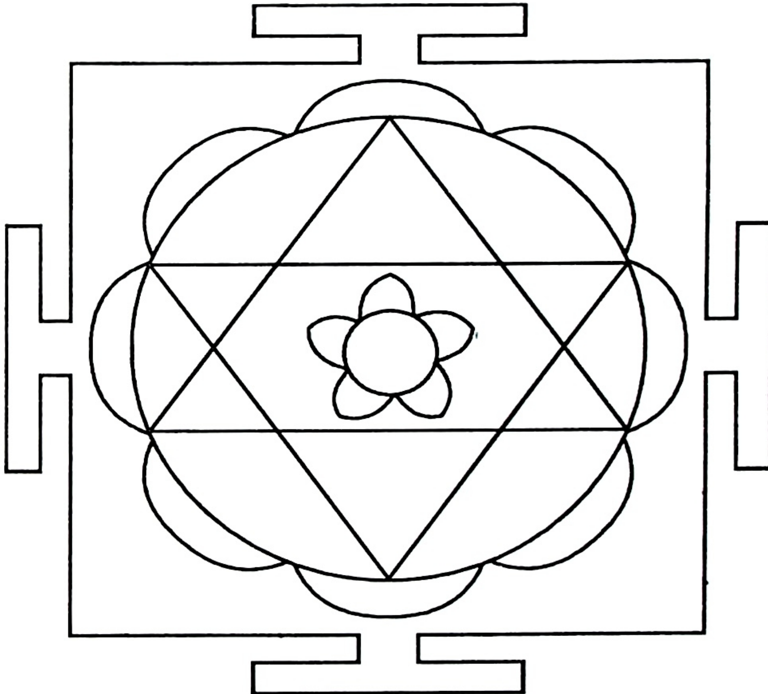
तृतीय आवरण–परशवे नमः। डमरुकाय नमः। खड्गाय नमः। खेटाय नमः। कपालाय नमः। शूलाय नमः। अभयाय नमः। वरदाय नमः।

चतुर्थ आवरण—इन्द्रादि दश दिक्पालों की पूजा करे।

पंचम आवरण—वज्रादि आयुधों की पूजा करे।

पूजन यन्त्र में पंचदल के बाहर षट्कोण इसके बाहर अष्टदल और इसके बाहर भूपुर अनुमान से होते हैं। जैसे—

पूजन यन्त्र



देव की पूजा इस प्रकार करके पंचगव्य से सिक्त अपामार्ग की समिधाओं से रात में शान्ति के लिये तीन सौ हवन करे। हल्दी के समान प्रभावाले गदा मुष्टि युक्त हाथों वाले भयंकर हास करनेवाले वीरभद्र का आवाहन शत्रुओं के स्तम्भन के लिये हल्दी चूर्ण से एक हजार हवन करे।

अन्य प्रकार का प्रयोग—साँपों के आभूषणों से भूषित त्रिशूल हत शत्रुओं को हाथ में लिये हुए, उसी के लहू से रँगे ललाट अग्नि के समान दहकते नेत्र और दिगम्बर वीरभद्र का चिन्तन करके मन्त्र जप रात में एक सौ करें तो सितमति वीरभद्र शत्रुओं को मार देते हैं।

वीरभद्र बलि प्रकार

अथ वीरभद्र बलि प्रकारः—

अतः परं प्रवक्ष्यते मनोरमुण्य संग्रहान्।
बलिक्रमो विधानतो हिताय मन्त्रजापिनाम्।।
कृत्वागोमयसलिलैः स्थण्डिलमस्मिन्विलिख्ययन्त्रवरं,
वीरेश्वरस्य भूयो रजोभिरापूरयेत्क्रमान्मन्त्री।

पीतेन मध्यमरुणेन च कोणषट्कं श्यामेन सन्धिमरुणेन दलाष्टकञ्च।

कृष्णेन सन्धिमसितेन कुगह्वरं सीमाः सितेन परिपूर्य पश्चात्।

अस्यार्थः-अथ यन्त्रलेखनप्रकारो पीतेन मध्यमित्यादिना अर्थादुक्तः। तत्र कर्णिकादि स्थानेषु मन्त्रवर्णानिकैकं दलेषु त्रिंशत् त्रिंशत् पुनः वलिमण्डलमस्य च दक्षिणतः प्रविधाय चतुष्षष्ठि पदं सितपाटल रजोभिरर्णा परिपूर्य च हौमिति तत्र लिखेत्। तत्र सितादि द्रव्यं खण्डक्रमेणेत्यर्थः। अस्योत्तरे पङ्कजमष्टपत्रं विलिख्य तद्वत्परितोऽष्टदिक्षु पदमानि शालीः प्रविधाय तेषु पीठादिकं तत्र निधाय तस्मिन् अरुणांशुकतण्डुलाहियन्त्रं क्रमुकासिप्रभुतीर्निधाय भूयः विधिना चरमामुपास्य सन्ध्यामथ संविदा गुरुनाथादि पञ्च अस्त्रेण तालत्रितयञ्च कृत्वा वाद्यादि बीजैरपिदेहशुद्धिः सवन्द्य देवं परिवार युक्तमावाह्य सम्पूज्य हृदम्बुजेस्वे। यन्त्रोत्तरस्थ पद्मे च शैवं पीठं प्रपूज्य कलशमपि न्यस्य च मृण्मयं यस्मिन् मलयज पुष्पाक्षतानि कूर्च च निक्षिप्य रक्ततोयैः प्रपूर्य चूतादि पल्लवान् न्यस्य तण्डुल पुष्पाण्येतानि विनिक्षिपेत्। चक्रकान् तदूर्ध्वं च रक्ततोयमिति हरिद्रा चूर्ण प्रसिद्ध चूर्ण लोहितं तोयमित्यर्थः चक्रकेति पत्रपटुस्याक्षतम्। पुनः-

रक्तांशुकेन कुम्भं संस्थाप्य वाह्य वीरभद्रमिहेष्ट्वा जप्त्वा च मनुं वसु संख्यं व्यापकं ततोऽङ्गञ्च। कृत्वा रक्षां च पश्चात् पाशुपतास्त्रेण मन्त्रवित्कुर्यात् पिप्पल पत्रे रक्ताः प्रतिपदमन्त्रेण कल्पिता मुद्राः।

अस्यार्थः–पिप्पलोऽश्वत्थ मुद्रा पिण्डान् इत्यर्थः प्रतिपदं प्रतिकोष्ठं पुनर्वलिं मण्डले निधाय क्रमेण सम्पूज्य मूलमन्त्रेण पूर्वोदितेषु पीठेष्वावाह्य ततः पुष्पाद्यैईशादि पूजनीया ब्राह्माद्यामातरः क्रमादष्टौ तदनुयन्त्रवरे विधिनानलं प्रतिनिधाय परिस्तरणादिकं सकलमग्निमुखं च करोतु तत् स्वचरणोदितं वन्मनुवित्तमः आहूय विप्रौ द्वा शुद्धौ तयोरेकन्नियोज्य च साध्य संरक्षणायान्यमपि नीराजनाय च।

ततः सुरक्ते परिधाय वस्त्रे जलैसमाचम्य विशुद्धिदेहः।
खड्गैपरिस्तीर्य निशीत धारैर्द्रव्यैरभि जुहुयात्क्रमेण।
तिलसर्षपपञ्चगव्यदुर्वा वटदुग्धाननमयूरकाक्षतैश्च॥

अस्यार्थः–पञ्चगव्यमिति एकं द्रव्यं पुनः मयूरमपामार्गः वसुसंख्यमथो पृथक घृताक्तैरपि पूर्णाहुतीमन्तरामन्तरा च–

मुद्राश्चतुषष्टिमिता पुरोक्ता सुधामया दीपकया समेता।

दीपका दीपवर्तिः नीराज्य नीराज्य जुतान्ते एता स्थाप्यास्तथेषादि पुरोवदेवम्।

अयमर्थः–एकैकेन द्रव्येन एकैकाहुत्यनन्तरं एकैक मुद्राया साध्यं नीराज्य ईशानादि कोणेषु एव संस्थापनीया इति। पुनः प्रतिहुतं मनुजप कर्त्ता सुमनोगन्धान्नसंयुतो दीपं साध्यं नीराज्य ततो मूलेन विनिक्षिपेच्च रक्तोदे।

अस्यार्थः–एकैक द्रव्य होमानन्तरं मनुजपकर्त्ता गन्धपुष्पधूपदीप-युक्त नान्येन पिण्डेन साध्यं नीराज्य नीराज्य मूलमन्त्रेण हरिद्राचूर्णप्रसिद्धचूर्णमिलित रक्तमयोदके विनिक्षिपेदिति। अनेनाष्टौ हुत्वा परिवारं व्याहृतीभिरेकैकं हुत्वा घृतेन भूयः समापयेद्धोमकर्म विशुद्धमतिः।

सम्पूज्य भूयः परिवारयुक्तं गन्धादिभिस्तमसुं प्रसन्नम्
आराध्य पुष्पैर्निज वाञ्छितानि सम्प्रार्थ्य चोदवास्य यथोपदेशं।
मातृः समुद्वास्य शिवञ्च भूयः पुरोनिधायान्यकृतं सुरक्तम्।
तारेण सम्पूज्य सदीपकान्तं नीराज्य कुम्भस्य मुखे विधिज्ञा।
आवङ्मुखो रक्तजलैर्युतस्य दीपोज्वलेनापि च तेन मन्त्री।
नीराज्यमूलेन पुरोवदेव निक्षिप्य संक्षाल्य करौ जलेन।
गत्वा प्राङ्गणदेशे गोमय सलिले समुद्रिये पश्चात्। कदलिकानन

बुद्धया सदलां कदलीं निर्वर्ण्य फलसहिताम्। तस्या मूले पीठं निधाय चावाह्य तत्र वीरेशम्। सम्पूज्य पूर्ववत्कृत्वा आदाय च पुत्तलीं तया साध्या।

अब अन्य मनोरमुण्य संग्रह को कहता हूँ। मन्त्र जापकों के लाभ के लिये बलि क्रम विधान कहता हूँ—

गोबर पानी से स्थण्डिल को लीप कर इस यन्त्रवर को लिखे। वीरेश्वर के चूर्ण से यन्त्र कोष्ठों को भरे। बीच में पीला चूर्ण भरे। लाल चूर्ण से कोनों को भरे। षटकोण की सन्धियों में कालाचूर्ण भरे। अष्टदल को लालचूर्ण से भरे। काले चूर्ण से सन्धियों को भरे। उजले चूर्ण से कुगह्वर सीमा को भरे। उजले चूर्ण से यन्त्र को पूरा करे।

यन्त्र लेखन प्रकार—

कर्णिका में एक एक मन्त्र वर्ण लिखे। दलों में तीस तीस वर्ण लिखे। पुन: बलि मण्डल के दाएँ भाग में चौंसठ कोष्ठों का मण्डल बनावे। उसे उजलेलाल चूर्ण से पूर्ण करे। उसमें हौं लिखे। इसके उत्तर भाग में अष्टदल कमल बनावे। उसके चारों ओर शालि से कमल बनावे। उसमें पीठादिबनाकर उसमें लाल चावल चूर्ण भरे।

विधि से चरम उपास्य, सन्ध्या संविदा गुरु नाथादि का स्मरण करे। फट् से तीन ताली बजाकर वाद्यादि बीजों से देहशुद्धि करे। परिवार सहित देव का आवाहन करके पूजा करें तब अपने हृदय कमल में यन्त्र के उत्तर स्थित कमल में शैव पीठ की पूजा करे। इसके बाद मिट्टी का कलश स्थापित करे। उसमें चन्दन फूल अक्षत कूर्च डाले। लाल जल से भरे। उस पर आम आदि के पल्लवों को रखे। पुष्पाक्षत छींटे। चक्रों के ऊपर हल्दी चूर्ण प्रसिद्ध चूर्ण जल अक्षत डाले।

पुन: लाल चूर्ण पर कलश स्थापित करे। वीरभद्र मन्त्र का जप आठ बार करे। तब व्यापक न्यास करे। पाशुपतास्त्र से रक्षा करे। पीपल के पत्ते पर मुद्रा बनावे। पीपल के पत्ते पर पिण्ड रखे। बलि मण्डल के प्रत्येक कोष्ठ में पिंड रखे। क्रम से पूजा करे।

पूर्वोदित पीठ में आवाहन करे। वहाँ पर पुष्पादि से ईशादि ब्राह्मी आदि की पूजा क्रमश: करे। तब विधिवत् अग्निस्थापन करके परिस्तरणादिकरे सकल अग्निमुख करे। तब दो शुद्ध विप्रो को बुलाकर

साध्य रक्षण के लिये नियोजित करे। तब लाल वस्त्र पहनकर जल से आचमन करे। खड्ग को रखकर हवन करे।

तिल सरसो पंचगव्य दूव वरगद दुग्धान्न मोरपंख पंचगव्य एक द्रव्य है। पुनः आठ मयूर अपामार्ग पृथक घृताक्त करके पूर्णाहुती चौसठ 'पुरोक्वा सुधामया दीपकया समेता।' दीप का दीपवत्ती नीराजन करे। हवन के बाद पूर्ववत् स्थापित करे। एक एक द्रव्य से एक एक आहुति देकर एक एक मुद्रा से निराजन करे। ईशानादि कोनों में स्थापित करे। पुनः प्रत्येक आहुति पर मन्त्र जप करे। फूल गन्ध अन्न युक्त दीप से साध्य नीराजन करे। तब मूल से विनिक्षिप्त करे। एक एक द्रव्य से हवन के बाद मन्त्र जापक गन्ध पुष्प धूप दीप युक्त पिण्ड साध्य का नीराजन करे। मूल मन्त्रों से हल्दी चूर्ण प्रसिद्ध चूर्ण मिलित लाल जल में छोड़ दे। इस प्रकार आठो परिवार को द्रव्याहृति से एक एक आहुति देवे। आहुति घी का देवे। हवन को समाप्त करे। सपरिवार साधक गन्धादि से आराध्य की पूजा करके वांछित भोगकर उद्भासित करके शिव के समान हो जाय। ॐ से पूजा करके नीराजन करे।

कलश के मुख का नीराजन पूर्ववत् मूल मन्त्र से करे। हाथों को धोये। इसके बाद प्रागंण में जाकर गोबर युक्त जल में तब समुद्रीय जल से हाथ धोये। केले के वन में जाकर फल सहित केले के मूल में पीठ स्थापित करके वीरेश की पूजा करे। पहले से बनी हुई साध्या की पुत्तली ले आये।

तत्र अन्येन सक्तुना वा पुत्तलीं पुनः नीराज्य पीठकायां स्थापयित्वा समज्वलैस्तथा दीपैः समलङ्कृत्य च कदली रक्तोदकमग्रतो निधाय सुरभि समाख्यां मुद्रां संदर्श्य सुधामयं विचिन्त्य जलैः सन्तर्पयेत् पुरस्तादेकैकं पीठमन्त्रपरिवारैः मूलेनाष्टौर्ध्वशतं पञ्चशतं वा सहस्त्र संख्यं वा सन्तर्प्यसुप्रसन्नं संचिन्त्यदेवं प्रपूज्य गन्धाद्यैः।

तब वहाँ पर सत्तू से बनी दूसरी पुत्तली का नीराजन करके पीठ पर स्थापित करे। दीपक जलाये। केले के लाल जल को आगे रखे। सुरभि मुद्रा दिखाये। उसे अमृत के समान होने का चिन्तन करे। उस जल से उसके आगे प्रत्येक पीठ परिवार का तर्पण एक सौ आठ मूल मन्त्र के जप से करे। या पाँच सौ जप से या एक हजार जप से तर्पण करे। देव के प्रसन्न मन का चिन्ता करके गन्धादि से पूजा करे।

तत शंखतोयैः समुभ्युक्ष्य साध्यं समुद्‌वास्य देवं गृहाभ्यन्तरे च प्रवेश्य साध्यस्य रक्षां च कृत्वा घटरन्यादि सर्वं गृहीत्वा सशिष्यः। गृहाद्विनिष्कृष्य च चत्वरेऽथो गत्वा समुभ्युक्ष्य च तत्र कुम्भं संस्थाप्य तस्यापि च दक्षिणेऽग्निम् निधाय वह्नि परितश्च दर्भैः, सम्यक्परिस्तीर्य च भूतक्रूर, युक्तेन चान्येन बलिं च कुर्यात्। अनेन मन्त्रेण सपुष्पतोयं प्रीत्यै गणानां परितोऽष्टभिक्षु। ॐ नमो रुद्र गणेभ्यः सर्वशान्तिकरेभ्यः प्रतिगृगृह्णत्विमांवलिं स्वाहा।

वलिमन्त्रेऽयमुद्दिष्टो भूतानां प्रीतिवर्द्धनः।

पललं रजनी चूर्णं लाजा दधि सक्तवश्च सन् पञ्चैते मिलितास्तु भूतक्रूरं भूतानां प्रीतिदं बुधाः प्राहुः। पललं तिलं विसृज्य वह्निम् निज रक्षणाय पञ्चाक्षरं मन्त्रं प्रजप्य तत्सर्वमग्रेऽथ निरीक्षमाणः शिष्यैः समं मन्दिरमाशुयायात्–

त्रिरात्रमेवं नियमेन कुर्याद्बलिं सहोमं विधिना यथावत्।
कृत्या ज्वरापस्मृति रोगनाशपिशाचभूता यदि तन्निवृत्यै।

ततः स्थण्डिलं गोमयादिभिः समालिप्य शुद्धे प्रगे वह्निमामन्त्र्य ततः स्थण्डिलं गोमयादिभिः समालिप्य शुद्धे प्रगे वह्निमामन्त्र्य प्रगे प्रातः काले निधाय आज्य संस्कारमारभ्य कृत्वा स्वगृह्योक्त मार्गेण वह्निर्मुखञ्च वह्नेर्दक्षिणभागे वसुपत्रं कमलं आरचय्य अत्र कलशं कशायादि जलैः प्रपूर्य चूतादि पल्लवा न्नयस्य कषायजलं क्षीरद्रु चर्मक्वथित तोयमावाह्य अस्मिन देवं प्रपूज्य वसन द्वयेन संवेष्ट्य संरक्ष्यास्त्रेण ततो घृतेन च अष्टोत्तरं हुत्वा दुग्धाक्तेन च तावद्धुत्वा शिष्टेन भोजयेद् विप्रान्। द्वादश संख्यानपिवा वसु संख्यान् जलधि परमितानथवा समर्प्य होमकलशस्थतोयैः–

संसिच्य सम्पातममुष्य दत्त्वा साध्यस्य सोऽपि प्रतिपूज्यविप्रान्।
सुवर्णगोधान्यधनाम्बराद्यैस्ततो यथाशक्तिमही सुवर्णम्।

धेन्वम्बरादीन् गुरवे वितीर्य, तेन प्रसन्ने न समीरिताभिःन्न-राशीर्भिरिद्धः सुचिरं सजीवेत् इति वीरभद्र वलि प्रकारः।

तब शंखजल से साध्य अभ्युक्षण करके देव को उद्‌वासित करे। साध्य को उसके गृह में प्रविष्ट कराकर उसकी रक्षा करे। इसके बाद कलश आदि सबों को लेकर सशिष्य घर से बाहर निकलकर चौराहे पर

जाकर अभ्युक्षा करे। वहाँ कुम्भ स्थापित करके उसके दाएँ अग्नि स्थापित कर अग्नि का परिस्तरण कुशों से करे। तब क्रूर भूत और दूसरों को बलि प्रदान करे। अग्रलिखित मन्त्र से गणों को तुष्ट करे। 'ॐ नमो रुद्र गणेभ्य: सर्वशान्ति करेभ्य:। प्रतिगृह्णाति इमां बलिं स्वाहा।'

यह बलिमन्त्र भूतों को प्रीति वर्द्धक है। पलल हल्दी चूर्ण लावा दही सत्तू ये पाँच क्रूर भूतों को प्रीतिदायक है। तिल पिष्ट को अग्नि में डालकर अपनी रक्षा के लिये 'नम: शिवाय' का जप करे। तब सभी वस्तुओं को लेकर शिष्य के घर आये। तीन रातों तक नियम पूर्वक विधिवत् हवन के साथ बलि प्रदान करे।

ऐसा करने से कृत्या, ज्वर अपस्मार रोग का नाश होता है। भूत पिशाच से छुटकारा होता है।

इसके बाद स्थण्डिल आदि को गोबर से लीपकर शुद्ध स्थान में अग्नि का आवाहन करे। प्रात: काल में गोधृत रखकर आज्य का संस्कार करे। अपने गृह्य सूत्र के अनुसार अग्निमुख अग्नि के दक्षिण भाग में अष्टदल कमल बनावे। यहाँ कलश रखकर उसे कशाय जल से पूर्ण करे। आम्रादि के पल्लवों को रखे। कषाय जल दूध वृक्ष की छाल का क्वाथ जल से आवाहित करे। इसमें देव की पूजा करे। दो कपड़ों से कलश को वेष्टित कर दे। अस्त्र में संरक्षित करे। तब घी से एक और आठ आहुति डाले। उसी प्रकार दूधाक्त से हवन करे। बारह आठ या ६ ब्राह्मणों को भोजन करावे। होमकलश के जल से साध्य का अभिषेक विप्र करे। यजमान भी ब्राह्मणों की पूजा करे। सोना, गाय, धन, वस्त्र, भूमि दान ब्राह्मणों को देवे। इसके बाद धन वस्त्र आदि गुरु को देवे। गुरु के प्रसन्न होने से अन्न धन की वृद्धि पाकर दीर्घकाल तक जीवित रहे।

इति वीरभद्र बलिप्रकार



काली मन्त्र

अथ काली मन्त्रः।

क्रोधीशत्रितयं वह्नि सामाक्षि विधिभिर्युतम्।
वराह द्वितयं वाम कर्ण चन्द्र समन्वितम्।
माया युग्मं दक्षिणे च दीर्घाः सृष्टिः सहक्क्रिया।
चक्रीझिण्टीशमारूढः प्रागुक्तं बीजसप्तकम्।
मन्त्रे वह्नि प्रियान्तोयं द्वाविंशत्यक्षरोमेतः।

क्रोधीशः ककार; वह्नि रेफः, सामाक्षि-ईकारः, विद्युरनुस्वारः, वराहो-हकारः, वाम कर्ण ऊकारः चन्द्रोऽनुस्वारः, दीर्घा-सृष्टिः 'क' सद्दक क्रिया, लि चक्री झिण्टीश मारूढ़ः (के) बह्नि प्रिया स्वाहा। भैरव ऋषिरुष्णिक छन्दः काली देवता ह्रीं बीजं हुं शक्तिः क्लीं कीलकं पुरुषार्थ सिद्धयै विनियोगः। इति स्मृत्वा यथास्थानं न्यस्य ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रैं ह्रौं ह्रः इति षडङ्ग कुर्यात्। क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः इति वा। अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॡं ॡं नमः इति हृदि एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं नमः इति दक्षिण बाहौ ङं चं छं जं क्षॅ ञं टं ठं डं ढं नमः इति वाम बाहौ णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं नं इति दक्षिण पादे मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं नमः इति वाम पादे।

अथ ध्यानम्

सद्यश्छिन्नशिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं विभृतीम्।
घोरास्यां शिरसां स्त्रजा सुरुचिरामुन्मुक्त केशावलिम्।
सृक्कासृक्कवहां श्मशाननिलयां श्रुत्योः शवालंकृतिं।
श्यामांगी कृतमेखलां शवकरैर्देवीं भजे कालिकाम्।।
एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षं जुहुयात्तद्दशांशतः।
प्रसूनैः करवीरोत्थैः पूजा यन्त्रमथोच्यते।
आदौ षट्कोणमालिख्य त्रिकोण त्रितयं ततः।
पद्ममष्टदलं बाह्ये भूपूरं तत्र पूजयेत्।
ज्याख्या विजया पश्चादजिता चापराजिता।
नित्या विलासिनी चापि दोग्ध्रथघोरा च मंगला।

पीठ शक्तय एता स्युः कालिका योग पीठतः।
आत्मने हृदयां तोय मायादिः पीठ मन्त्रकः।
अस्मिन् पीठे यजेद्देवीं शवरूपशिवस्थितां।
महाकाल रतां सक्तां शिवाभिः दिक्षुवेष्टिताम्।
अंगानि पूर्वमाराध्य षट्कोणेषु समर्चयेत्।
कालीं कपालिनीं कुल्लां कुरु कुल्लां विरोधिनीम्।
विप्रचित्तां सु सम्पूज्य नव कोणेषु पूजयेत्।
उग्रामुग्रप्रभां दीप्तां मात्रां मुद्रां तथामित्रां पूज्याः पत्रेषु मातरः।
पद्मस्याष्ट सुपत्रेषु ब्राह्मी नारायणीत्यपि।
माहेश्वरी च चामुण्डा कौमारी चापराजिता।
वाराही नारसिंही च पुनरेतास्तु भूपुरे।
भैरवी महदाद्यांतां सिहाद्यां धूम्रपूर्विकाम्।
भीमोन्मत्तादिकाञ्चापि वशीकरणभैरवीम्।
मोहनराद्यांसमाराध्य शक्त्या दीन्यायुधान्यापि।
एवमाराधिता काली सिद्धा भवति मन्त्रिणाम्।
ततः प्रयोगान् कुर्वीत महाभैरव भाषितान्।
सुदृशो मदनावासं पश्यन् यः प्रजपेन्मनुम्।
अयुतं सोऽचिरादेव वाक्पतेः समतामियात्।।
दिगम्बरो मुक्तकेशः श्मशानस्था धियामिति।
जपेद्योऽयुत् मेतस्य भवेयुः सर्व कामना।

अर्थात्–क्रोधीश त्रितयं वह्नि वामाक्षिविधिभिर्युतम्–क्रीं क्रीं क्रीं वराह द्वितयं वामकर्ण चन्द्र समन्वितम्–हुं हुं। माया युग्मं ह्रीं ह्रीं। दक्षिणे च दीर्घाः सृष्टि सहक्रिया चक्री झिण्टीशमारुढ़ः दक्षिणे कालिके। पूर्वोक्त बीज सप्तकम्-क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं मन्त्रो वह्निप्रियान्तोयं स्वाहा। द्वाविंशत्यक्षरोमेतः बाइस अक्षर इस प्रकार २२ बाइस अक्षरों का मन्त्र होता है–क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

विनियोग—अस्य मन्त्रस्य भैरव ऋषिः। उष्णिक् छन्दः। काली देवता। ह्रीं बीजं। हुं शक्तिः। क्लीं कीलकं पुरुषार्थ चतुष्टयर्थ सिद्धये विनियोगः। इसका स्मरण करके शिर मुख हृदय, गुह्य, पैरों, नाभि में न्यास करे। क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः से षडंग न्यास करे।

मातृका न्यास—

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं नमः हृदय में।

एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं नमः दक्षिण बाँह में।

ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं नमः बाएँ बाँह में।

णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं नमः दाएँ पैर में।

मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं नमः बाएँ पैर में।

ध्यान—

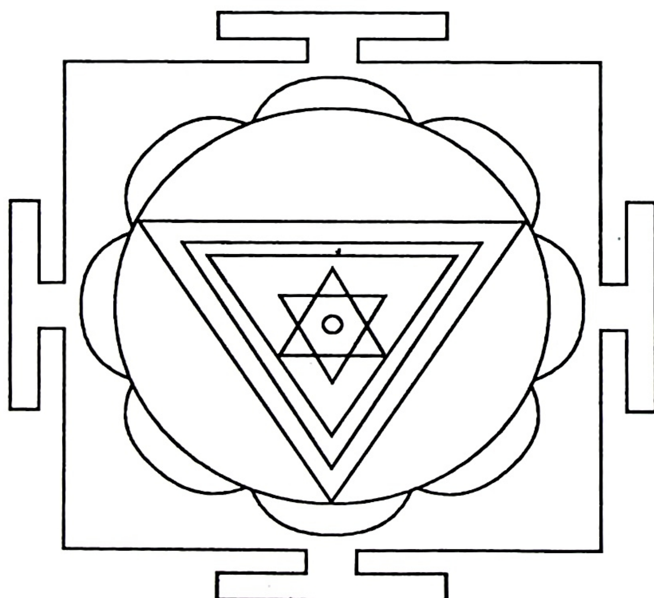
सद्यश्छिन्नशिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं विभृतीम्।
घोरास्यां शिरसां स्त्रजा सुरूचिरामुन्मुक्त केशावलिम्।।
सृक्कासृक्कवहां श्मशाननिलयां श्रुत्योः शवालं कृतिं।
श्यामांगी कृतमेखलां शवकरै र्देवीं भजे कालिकाम्।।

इस प्रकार ध्यान के बाद एक लाख जप करे। दशांश हवन कनैल के फूलों से करे।

पूजा यन्त्र

पहले षट्कोण बनाकर उसके बाहर तीन त्रिकोण उसके बाहर अष्टदल उसके बाहर भूपुर बनाकर पूजा करे।

यन्त्र



पूजा पीठ में शक्तियों की पूजा करे—जयायै नमः। विजयायै नमः। अजितायै नमः। अपराजितायै नमः। नित्यायै नमः। विलासिन्यै नमः। दोग्ध्रयै नमः। घोरायै नमः। मंगलाये नमः। ये नव याग पीठ की शक्तियाँ हैं।

इस पीठ में शवरुप शिव पर स्थित देवी की पूजा करे। ये महाकाल रतासक्ता है। शिवाओं से दिशाएँ वेष्ठित हैं; षटकोण के मध्य में षडंग पूजा करे।

षटकोण के कोनों में पूजा करे–काल्यै नमः। कपालिन्यै नमः। कुल्लायै नमः। कुरु कुल्लायै नमः। विरोधिन्ये नमः। विप्र चित्तायै नमः। अब नव त्रिकोण के नव कोनों में इन नौ देवियों की पूजा करे– उग्रायै नमः। उग्रप्रभायै नमः। दीप्तायै नमः। नीलायै नमः। धनायै नमः। बलाकिकायै नमः। मात्रायै नमः। मुद्रायै नमः। मित्रायै नमः।

अष्टदल में–ब्राह्मयै नमः। नारायण्यै नमः। माहश्वर्यै नमः। चामुण्डायै नमः। कौमार्यै नमः। अपराजितायै नमः। वाराह्यै नमः। नार सिंह्यै नमः।

भूपुर में महाभैरव्यै नमः। सिंह भैरव्यै नमः। धूम्र भैरव्यै नमः। भीम भैरव्यै नमः। उन्मत्त भैरव्यै नमः वशीकरण भैरव्यै नमः। मोहन भैरव्यै नमः से पूजा करे। इन्द्रादि दिकपालो और उनके आयुधों की पूजा करे।

इस प्रकार की आराधना करने पर साधकों को काली सिद्ध होती है। तब महाभैरव कथित प्रयोगों को करे।

मदनावास के समान देखकर जो दश हजार मन्त्र जप करता है वह अल्प काल में बृहस्पति के समान हो जाता है।

श्मशान में नंगे खुले केश होकर ध्यान सहित जो दश हजार जप करता है। उसकी सभी कामनाएँ पूरी होती है।

अथ प्रसंगात् श्मशान काली मन्त्रः—ॐ फ्रें फ्रें क्रों पशून् गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

अत्र न्यासादिकं नास्ति। तथा च—

न्यास शुद्ध्यादिकं किञ्चिद् नात्र कार्या विचारणा।
कृष्णा तोयैश्च सम्पूर्णे कृष्णकुंभेऽथ कालिका।

पञ्चवक्त्रां महारौद्रीं प्रतिवक्त्रं त्रिलोचना।
शक्तिशूलधनुर्वाण खंगखेट वाराभयान्।
धारयन्तीं भजेद्देवीं विभ्राणां भूरि भूषणाम्।
ध्यात्वैवं साधकः साध्यं साधयेन्मनसेप्सितम्।
ब्राह्मी माहेश्वरीञ्चैव कौमारीं वैष्णवीं तथा।
वाराहीं च तथा चैन्द्रीं चामुण्डां-चण्डिकाष्टमीम्।
पूर्वादीशान पर्यन्तं कुम्भाग्रे त्वि स्थिता इमाः।

तत्रक्रमः देवीं ध्यात्वा यथाविध्युपचारैः सम्पूज्याष्टशक्तिः पूर्वादि क्रमेण पूजयेत्।

तथा नामोच्चारण सम्बद्धं वह्नौ प्रज्वलितेऽम्बरे।
जुहुयाद्वैरिसंशुद्ध्यै देवी मन्त्रं जपंस्तथा।
समिधाप्यपि चुमन्दस्य विभीत काष्ठजा।
गृहधूम श्मशानान्तर विभीतङ्गार होमतः।
सप्ताहाद्वैरिणं हन्ति कालिका मन्त्रयोगतः।
उच्चाटनञ्चापराह्ने संध्यायां मारणं तथा।
दक्षिणस्यां दिशि स्थित्वा ग्रामादेर्दक्षिणा मुखः।

अथ विद्वेषे मन्त्र।

ॐ नमो भगवति श्मशान कालिकेऽमुकं विद्वेषय हन हन पच पच मथ मथ हुं फट् स्वाहा।

अमुना मन्त्र राजेन होमेत प्रयतः सुधीः।
वह्नौ च निम्बपंत्रेण कटु तैलान्वितेन च।
प्रज्वाल्य खादिरं वह्निं श्मशानजं ततः पुनः।
दशसाहस्त्रसंयुक्तं तिलयवाक्षतान्वितं।
भावयेत् कालिकां देवीमिन्द्रनीलसमप्रभाम्।
व्योमनीलां महाचण्डां सुरासुरविमर्दिनीम्।
त्रिलोचनां महारावां सर्वाभरणभूषिताम्।
कपवालकर्तृकाहस्तां चन्द्रसूर्यों परिस्थितां।
शरजालगतां चैव प्रेतभैरव वेष्टिताम्।
वसन्ती पितृकान्तारे सर्वसिद्धिप्रदायिनीम्।
होमयेद्विविधैः पुष्पैर्वलिछागोपहारकैः।

पूजयित्वा महेशानीं भक्तियुक्तेन चेतसा।
तद्भस्म च समादाय धारयेदभिमन्त्रितम्।
भस्मना तेन यं हन्यात् विद्वेषं तद्भवेन्नृणाम्।
वह्निः शीतलतां यायात् पत्तेद्भूमौ तथा रविः।
तथा शुष्यति पाथोधिश्चन्द्रमा प्रपतेद्यदि।
तदा मिथ्या भवेद्देवि योगराजः सुदुर्लभः।

श्मशान काली

प्रसंगवश श्मशान काली मन्त्र–ऊँ फ्रें फ्रें क्रों पशून् गृहाण हुं फट् स्वाहा।

यहाँ न्यासादि नही है तथापि कुछ न्यास शुद्धि करना चाहिये। काले जल से पूर्ण काले कलश में कालिका की पूजा करे।

ध्यान—

पंचवक्त्रां महारौद्रीं प्रतिवक्त्रं त्रिलोचनां।
शक्तिशूलधनुर्वाणखंगखेटवराभयान् ॥
धारयन्तीं भजेद्देवीं विभ्राणां भूरिभूषणाम्।
ध्यात्वैवं साधकः साध्यं साधयेन्मनसेत्सितम्॥

कलश के पूर्व से लेकर ईशान तक आठों दिशाओं में ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णावी वाराही ऐन्द्री चामुण्डा और चण्डिका अष्ट मातृकाओं की स्थिति मानकर क्रमश: उनका ध्यान करके पूर्वादिक्रम से विविध उपचारों से पूजा करे। तब अग्नि स्थापित करके नामकरण श्मशान काली के रूप में करे। वैरी नाम से हवन करे। शुद्धि के लिये देवी मन्त्र का जप करे। पिचुमन्द की समिधा से लिसोड़े के लकड़ी से प्रज्वालित अग्नि में घर के धुआँ और श्मशान के राख से हवन करे। ऐसा करने से कालिका एक सप्ताह में वैरी का संहार कर देती है। उच्चाटन कार्य अपराह्न में करे। मारणकार्य शाम में करे। यह कार्य गाँव से दक्षिण दिशा में अपना मुख दक्षिण दिशा में करके करे।

विद्वेषण

मन्त्र—ॐ नमो भगवति श्मशान कालिके अमुकं विद्वेषय हन हन पच पच मथ मथ हुँ फट् स्वाहा।

इस मन्त्रराज से साधक प्रयत होकर हवन करे। कडुआ तेल से

सिक्त नीम के पत्तों से खैर की प्रज्वलित अग्नि और श्मशान की अग्नि में करे। इसके बाद पुनः दश हजार हवन चावल तिल यव को मिलाकर करे। इस समय कलिका देवी का ध्यान इन्द्रनील प्रभा के समान करे।

ध्यान—

व्योमनीलां महाचण्डां सुरासुर-विमर्दिनीम्।
त्रिलोचनां महारावां सर्वाभरणभूषिताम्।।
शरजालगतां चैव प्रेतभैरवष्टिताम्।
वसन्ती पितृकान्तारे सर्वसिद्धिप्रदायिनीम्।।

ध्यान के बाद विविध पुष्पों से हवन करे। बकरे की बलि देवे भक्तियुक्त चित्त से महेशानी की पूजा करे। हवन भस्म अभिमन्त्रित करके धारण करे और अपने पास रखे।

उस भस्म को जिन मनुष्यों पर मारा या फेका जायगा उनमें द्वेष हो जाता है। आग शीतल हो जाता है। सूर्य भूमि पर गिर पड़ता है। उसी प्रकार समुद्र सुख जाता है। जब चन्द्रमा गिर पड़ेगा तभी यह दुर्लभ योग राज असत्य सावित होगा।

दुर्गा मन्त्र

अथ दुर्गामन्त्रः—

तारं माया सबीजञ्च, दुर्गायै हृदयं ततः।

स्व बीजं दुं शक्तिः अस्य नारद ऋषिगायत्री छन्दः दुर्गा देवता इष्ट सिद्ध्यै विनियोगः।

इति स्मृत्वा यथा स्थानं न्यस्य कर षडङ्गकुर्यात्।

ह्रां ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ह्रीं ॐ ह्रीं दुँ दुर्गायै नमः तर्जनीभ्यां नमः।
ह्रूं ॐ ह्रीं ० ० मध्यमाभ्यां०।
ह्रैं ॐ ह्रीं ० ० अनामिकाभ्यां०।
ह्रौं ॐ ह्रीं ० ० कनिष्ठिकाभ्यां ००।
ह्रः ॐ ह्रीं ० ० करतलकरपृष्ठा ००।

एवं हृदयादिः।

अथ ध्यानम्

सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः।

शंखं चक्र धनुश्शरांश्च दधतीं नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता। आमुक्ताङ्गदहारकङ्कण लसत्काञ्ची क्वणन्नूपुरा,

दुर्गा दुर्गति नाशिनी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला।

एवं ध्यात्वा मानसैः सम्पूज्य शंखस्थापनादि कृत्वा ह्रीं ज्ञानात्मने नमः इत्यन्तं सम्पूज्य केशरेश्षु मध्ये च पूर्वादिः आं प्रभायै नमः। ईं मायायै नमः। ॐ जयायै नमः। ऐं सूक्ष्मायै नमः। अं नन्दिन्यै नमः। औं सुप्रभायै०। ॐ बीजायै नमः। अः सर्व सिद्धिदायै०। तदुपरि पूजयेत्। मूर्ति मूलेन संकल्प्य ध्यात्वा वाहनादि पञ्चपुष्पाञ्जलिनान्तं विधायावरण पूजामारभेत्। अग्न्यादि कोणेषु मध्ये दिक्षु च ह्रां ॐ दुं दुर्गायै नमः इत्यादिना पूजयेत्। पत्रेषु पूर्वादि जं जलायै नमः। वं विजयायै नमः। कं कीर्त्यै नमः। पं प्रीत्यै नमः। पं प्रभायै नमः। शं श्रद्धायै नमः। मं मेधायै०। शं श्रुत्यै० पत्राग्रेषु। ॐ शंखाय नमः। ॐ चक्राय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ खड्गाय०। तद्बाह्ये इन्द्रादीन् वज्रादींश्च पूजयेत्। ततो धूपादि विसर्जनान्तं कर्म समापयेत्।

अस्य पुरश्चरणमष्ट लक्ष जपः। अष्ट सहस्रं त्रिमधुराक्तैः तिलैः पयसा वा होमः।

इति शर्भार्चा पारिजाते रामकृष्ण विनिर्मिते।
मन्त्र यन्त्रामोद भृतस्तृतीयस्तवकोऽगमत्।।

इत्यापदेव सूरि सूनु रामकृष्ण देव विरचिते शरभार्चा पारिजाते आवरण देवता मन्त्रयन्त्राख्यस्तृतीयस्तवकः सम्पूर्णः।

तार ॐ, माया ह्रीं, दुर्गा बीज दुं, दुर्गायै, हृदयं नमः। इस प्रकार दुर्गामन्त्र होता है–ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः। यह अष्टाक्षर मन्त्र है।

विनियोग–अस्य श्रीदुर्गामन्त्रस्य नारदऋषिः। गायत्री छन्दः दुर्गा देवता। इष्टसिद्धये विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास–नारद ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। दुर्गा देवतायै नमः हृदि।

करन्यास—ह्रां ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ह्रीं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः तर्जनीभ्यां नमः।
ह्रूं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः मध्यमाभ्यां नमः।
ह्रैं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः अनामिकाभ्यां नमः।
ह्रौं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः कनिष्ठाभ्यां नमः।
ह्रः ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः कर तलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

इसी प्रकार हृदयादि न्यास करे।

ध्यान—

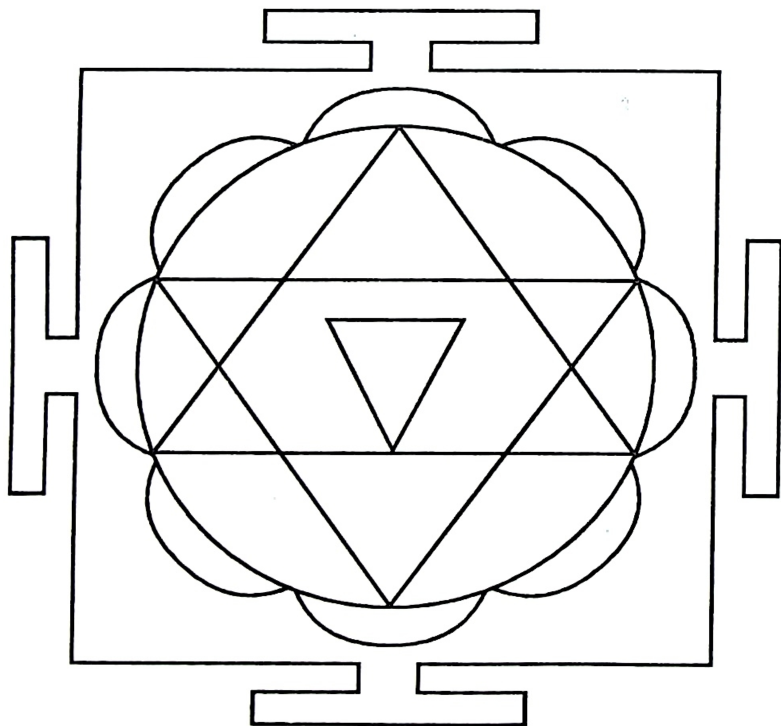
सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः।
शंखंचक्रं धनुश्शरांश्च दधतिं नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता॥
आमुक्तांगदहारकंकणलसत्कांची क्वणन्नूपुरा।
दुर्गा दुर्गति नाशिनी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला॥

इस प्रकार का ध्यान करके मानसोपचार पूजा करे। शंख स्थापन करे। ह्रीं ज्ञानात्मने नमः तक पूजा पीठ शक्तियों की करे। पूजन यन्त्र बनावे।

केशर मध्य में और पूर्वादि दिशाओं में पूजा करे। आं प्रभायै नमः। ईं मायायै नमः। ॐ ज्यायै नमः। ऐं सूक्ष्मायै नमः। अं नन्दिन्यै नमः। औं सुप्रभायै नमः। ॐ वीजायै नमः। अः अः सर्वसिद्धिदायै नमः।

उसके ऊपर ॐ वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहाय हुं फट् नमः।

पूजन यन्त्ररु



मूल मन्त्र से मूर्ति कल्पित करके ध्यान करके आवाहन करे। गन्ध से पुष्पांजलि तक पूजा करे। इसके बाद आवरण पूजा करे। आग्नेयादि कोनों में मध्य में तथा दिशाओं में षडंग पूजा करे।

ह्रां ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः हृदयाय नमः।
ह्रीं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः शिरसे स्वाहा।
ह्रूं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः शिखायै वषट्।
ह्रैं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः कवचाय हुम्।।
ह्रौं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः नेत्र त्रयाय वौषट्।
ह्रः ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः अस्त्राय फट्।
अष्ट पत्र में पूर्वादि क्रम से पूजा करे।

जं जयै नमः। वं विजयायै नमः। कं कीर्त्यै नमः।

पं प्रीत्यै नमः। प्रं प्रभायै नमः। शं श्रद्धायै नमः। मं मेधायै नमः। शं श्रुत्यै नमः।

अष्टदल के दलाग्रों में पूजा करे।

ॐ शंखाय नमः। ॐ चक्राय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ शराय नमः। ॐ चापाय नमः।

उसके बाहर इन्द्रादि दश लोकपालों और उनके वज्रादि आयुधों की पूजा करे।

तब धूप से विसर्जन तक की पूजा करके कर्म समाप्त करे। इस मन्त्र का पुरश्चरण आठ लाख जप से होता है। त्रिमधुराक्त तिल से अथवा खीर से आठ हजार हवन करे।

इति शर्भार्चा परिजाते रामकृष्णविनिर्मिते तृतीय स्तवकः सम्पूर्णः।

पुरश्चरण

गुरोराज्ञां समादाय शुद्धान्तः करणो नरः।
ततः पुरस्क्रियां कुर्यान्मन्त्र संसिद्धि काम्यया।।
जीव हीनो यथा देहः सर्व कर्मसु न क्षमः।
पुरश्चरण हीनो हि तथा मन्त्रः प्रकीर्तितः।
तस्मादादौ स्वयं कार्यं गुरुवां कारयेद्बुधः।
गुरोरभावे विप्रंवा मित्रं वा सङ्गणां स्त्रियम्।

गुरु की आज्ञा लेकर शुद्ध अन्तःकरणवाला मनुष्य मन्त्र सिद्धि की कामना से पुरश्चरण करे।

जीवहीनो यथा देहः सर्वकर्मसु न क्षमः।
पुरश्चरणहीनो हि तथा मन्त्रः प्रकीर्तितः॥

जीव के बिना जैसे देह कोई काम नहीं कर सकता; वैसे ही पुरश्चरण के विना मन्त्र से कोई कार्य नहीं होता। इसलिये पहले स्वयं कार्य करे या गुरु से करवाये। गुरु के न होने पर विप्र से या स्वयं पत्नी के साथ करे।

पुरश्चरण स्थान

पुण्यक्षेत्रं नदी तीरं गुहापर्वत मस्तके।
तीर्थं प्रदेशः सिन्धूनां संगमः पावनंवनम्।
उद्यानानि विविक्तानि बिल्वमूलं तटं गिरेः।
तुलसी काननं गोष्ठं वृषशून्यं शिवालयम्।
अश्वत्थामलकी मूलगोशाला जलमध्यतः। देवतायतनं कूलं समुद्रस्य निजं गृहम्।

वातुले—

शिवालये नदी तीरे शिवशक्तयोश्च सन्निधौ।
बीर भद्रालये चैव जपहोमार्चनादिकम्।

पावन क्षेत्र, नदी तट, गुफा या पर्वत के शिखर पर तीर्थ प्रदेश, सागर के किनारे, नदियों के संगम, पवित्रवन निर्जन बगीचा, वेल वृक्ष के मूल में, पर्वत पर तुलसीवन या गोशाला, नन्दी रहित शिवालय, पीपल मूल, आमला मूल, गोशाला, जल में, देवतायतन, समुद्र तट या अपने घर में पुरश्चरण क्रिया करे।

वातुल के अनुसार शिवालय, नदी तट, शिव पार्वती की सन्निधि में और वीरभद्र के मन्दिर में जप हवन अर्चन करे।

योगिनी हृदये—

गृहे शतगुणं विद्यात् गोष्ठे लक्षगुणं भवेत्।
कोटिर्देवालये पुण्यमनन्तं शिवसन्निधौ।
म्लेक्ष-दुष्ट-मृग-व्याघ्र शङ्कातङ्कविवर्जिते।

एकान्त-पावने निन्दा-रहितेभक्ति संयुते।
स्वदेशे धार्मिके देशे सुभिक्षे निरुपद्रवे।
रम्ये भक्तजनस्थाने निर्वसेत्तापसप्रिये।
गुरुणां सन्निधाने च चित्तैकाग्रस्थले तथा।
एवमन्यतमं स्थानं आश्रित्य जपमाचरेत्।
यत्र ग्रामे जपेन्मन्त्री तत्र कूर्म विचिन्तयेत्।

गौतमीये—

पर्वते सिन्धुतीरेवा पुण्यारण्ये नदी तटे।
यदि कुर्यात्पुरश्चर्यां तत्र कूर्मं न चिन्तयेत्।
ग्रामे वा यदि वा वास्तौ गृहेतञ्च विचिन्तयेत्।

अथ पुरश्चरणे भक्ष्यादि नियमः—गौतमीये—

पुरश्चरणकृन्मन्त्री भक्ष्याभक्ष्यं विचारयेत्।
अन्यथा भोजनाद्दोषात् सिद्धि हानिः प्रजायते।

अगस्त्य संहितायाम्—

दधिक्षीरं घृतं गव्यमैक्षवं गुड वर्जितम्।
तिलाश्चैव सितामुद्गा कन्दः केमुलवर्जितः।
नारिकेलफलञ्चैव कदलीलवली तथा।
आम्रमामलकञ्चैव पनसञ्च हरीतकी।
व्रतान्तरे प्रशस्तञ्च हविष्यं मन्यते बुधः।
भुञ्जानो वा हविष्यान्नं शाकं पावकमेव वा।
पयोमूलं फलं वापि यत्र यश्चोपलभ्यते।
चिञ्चानालिकाशाकं कलायं लकुचं तथा।
कदम्बं नारिकेलञ्च ब्रते कूष्माण्डकं त्यजेत्।

इति योगिनी तन्त्रवचनं तद्व्रतान्तविषयम्। अथ वर्ज्यानि—

विवर्जयेन्मधुक्षारं लवणं तैलमेव च।
ताम्बूलं कांस्यपात्रं च दिवाभोजनमेव च।
क्षारं च लवणं मास ग्रञ्जनं कांस्यभोजनम्।
माषाढकीं मसूरांश्च कोद्रवाश्चाणकानपि।
अन्नं पर्युषितञ्चैव निस्नेहं केशदूषितम्।

योगिनी हृदय के अनुसार घर में पुरश्चरण करने से सौ गुना फल और गोशाला में करने से लाख गुना फल होता है। देवालय में करोड़ गुना पुण्य और शिव की सन्निधि में अनन्त गुना पुण्य होता है।

म्लेच्छ दुष्ट मृग व्याघ्र की शंका और आतंक से रहित एकान्त पावन निन्दा रहित भक्ति युक्त, अपने देश धार्मिक, देश, जहाँ भिक्षा प्राप्त हो, उपद्रव रहित रमणिक, भक्तजनों के स्थान में साधक अनुष्ठान करे।

गुरु के समीप, जहाँ चित्त एकाग्र हो वैसे स्थान में और इस प्रकार के दूसरे स्थान में रहकर जप करे। जिस ग्राम या नगर में जप शुरू करे उसमें कूर्म विचार करे।

गौतमीय के अनुसार पर्वत, समुद्र किनारे, नदी के तट पर यदि पुरश्चरण करे तो वहाँ कूर्म चिन्तन न करे। ग्राम या घर में यदि अनुष्ठान करे तो कूर्म चिन्तन करे।

पुरश्चरणकाल में भोजन—गौतमीय के अनुसार पुरश्चरण करनेवाला मनुष्य भक्ष्य अभक्ष्य का विचार करे। नहीं तो भोजन के दोष से सिद्धि नहीं मिलती।

अग़स्त्य संहिता के अनुसार दही दूध घी गव्य ईख गुड़ वर्जित है नहीं खाना चाहिये। तिल, मिश्री, मूंग, कन्द, मूल नहीं खाना चाहिये। नारियल फल केला, लवली आम, आमला, कटहल, हर्रे को विद्वान प्रशस्त मानते है। हविष्यान्न, शाक या पावक मेव, दूध मूल फल जो जहाँ उपलब्ध हो उसे खाये। इमली, नालि का शाक कलाय लकुच, कदम्ब, नारियल और कूष्माण्ड व्रत में न खाये।

योगिनी तन्त्र वचन उस व्रत के अन्न का विषय है। इसके अनुसार विवर्जित है—मधु, क्षार, नमक, तेल, पान, कांस्य पात्र, दिवा भोजन, क्षार, नमक, मांस, ग्रंजन, कांस्य पात्र में भोजन, उड़द, आढ़की, मसूर, कोदो, चना, वासी भोजन, निस्नेह केश दूषित भोजन न करे।

वातुले

स्व देह धारणार्थञ्च भिक्षां वा ब्रह्मचर्यतः।
गृहस्थोऽपि हविष्याशी पयोभुक् फलमूलभुक्।
चित्तस्थैर्यं प्रकुर्वीत फलमूलादिकैः प्रिये।

मैथुनं तत्कथालापं तद्गोष्ठीः परिवर्जयेत्।
ऋतु कालं बिना नैव स्वस्त्रियं नाभिसंस्पृशेत्।
कौटिल्यं क्षौरभ्यङ्गमनवेदित भोजनम्।
असङ्कलित कृत्यञ्च वर्जयेन्मर्दनादिकम्।
स्नायाच्च पञ्चगव्येन केवलामलकेनसा।
मन्त्रं जप्त्वात्र पानीयैः स्नानाचमनभोजनम्।
कुर्याद्यथोक्तविधिना त्रिसन्ध्यं देवतार्चनम्।
फलासने च कर्त्तव्ये न कुर्यात्फल सङ्करम्।
अगव्यं तत्फलाहारं पृथक् तत्र व्यवस्थितम्।
हिक्वां कासं तथा जृम्भां निद्रां च परिवर्जयेत्।

वातुले—

नित्यं त्रिषवणस्नानं मृत्तिकास्नानमेव च।
वर्जयेच्चत्रिकालञ्च स्नानमुष्णोदकेन च।

अथ भोजन नियमः—

जठरं पूजयेदर्धमर्धभागं जलेन च।
वायोः सञ्चरणार्थं तु चतुर्थमवशेषयेत्।

नारदीये—

मृदुशोष्णं सुपक्वञ्च कुर्याद्वै लघुभोजनम्।

कुलार्णे—

यस्यान्नपानपुष्टाङ्गः कुरुतेधर्म सञ्चयम्।
अन्नदातुः फलस्यार्द्धं कर्त्तुरर्द्धं न संशयः।
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन परान्नं वर्जयेत्सुधीः।

परान्नं भिक्षेतर विषयम् :—

भिक्षाहारश्चोक्तत्वात् तथा तन्त्रान्तरे—

विहाय वह्निं नहि वस्तु किञ्चित् ग्राह्यं परेभ्यः सति सम्भवे च।
असम्भवे तीर्थ बहिर्विशुद्ध्यात् पर्वातिरिक्ते प्रतिगृह्य जप्यात्।
तत्रासमर्थोऽनुदिनविशुद्धयात् याचेतयावद्धितमात्र भक्ष्यम्।
गृहणाति रागादधिकं न सिद्धिः प्रजापते कल्पशतैरमुष्य।

तथान्यदपि सकृदुच्चरिते शब्दे प्रणवं समुदीरयेत्।
प्रोक्ते पारशिके शब्दे प्राणायामं सकृच्चरेत।

बहुप्रलापी आचम्य न्यस्याङ्गानि ततो जपेत्।
क्षतेप्येवं तथा स्पृश्य स्थानानां स्पर्शनेऽपि च।
एवमादींश्च नियमान् पुरश्चरण सकृच्चरेत्।
विण्मूत्रोत्सर्गशङ्कादि युक्तः कर्म करोति यः।
जपार्चनादिकं सर्वमपवित्रं भवेत्प्रिये।
मलिनाम्बरिकेशादि मुखदौर्गन्धिसंयुतः।
यो जपेत्तं दहत्याशु देवता गुह्य संस्थिता।
आलस्यं जृम्भण निद्रां धूतं निष्ठीबनं भयम्।
नीचाङ्गस्पर्शनं कोपं जपकालेपिवर्जयेत्।
देवता गुरु मन्त्रणामैक्यं सम्भाववयेन्धिया।
जपेदेकमनः प्रातः कालान्मध्यादिनावधि।
यत्संख्यया समारब्धं तत्कर्त्तव्यमहर्निशम्।
भूशय्या ब्रह्मचारित्वं मौनमाचार्य सेवनम्।
नित्यपूजा नित्यदानं देवता स्तुतिकीर्त्तनम्।
नैमित्तिकार्चनञ्चैव विश्वासो गुरुदेवयोः।
जपनिष्ठे द्वादशैते धर्माः स्युर्मन्त्रसिद्धये।
स्त्रीशूद्र पतितव्रात्य नास्तिको विण्ट भाषणम्।
नृशंशभाषणं जिह्यभाषणं परिवर्जयेत्।
सत्येनापि न भाषेत जपहोमार्चनादिषु।
अन्यथानुष्ठितं सर्वंभवत्येव निरर्थकम्।
पुरश्चरण कालेतु यदि स्यात् मृतसूतकम्।
तथापि कृत संकल्पो व्रतं नैव परित्यजेत्।

योगिनी तन्त्रेशयितो कुशशय्यायाँ शुचिरस्त्रधारः सदा।
प्रत्यहं क्षालयेच्छय्यामेकाकी निर्भयः स्वपेत्।

तथा च—नैकवासा जपेन्मन्त्रं बहुवस्त्रा कुलोऽपि वा।

पतितानामन्त्यजानां दर्शने भाषणे श्रुते।
क्षुद्रेऽधो वायुगमने जृम्भणे जपमुसृजेत्।
तथा तस्य च तत्प्राप्तौ प्राणायामषडङ्गके।
कृत्वा सम्यक् जपेच्छेषं यद्वा सूर्यादि दर्शनम्।

आदि शब्दाददिं ब्राह्मणञ्च। तन्त्रान्तरे—

मनः संहरणं शौचं मौनं मन्त्रार्थ चिन्तनम्।
अव्यग्रत्वमनिर्वेदो जप सम्पत्ति हेतवे।
उष्णीषी कञ्चुकी नैवोन्मुक्तकेशो गणावृतः।
अपवित्र करोऽशुद्धः प्रलपन् न जपेत् क्वचित्।
अनासनः शयानो वा गच्छन् भुञ्जान एव वा।
अप्राक्ततौ करौ कृत्वा शिरसा प्रावृतोऽथवा।
चिन्ता व्याकुलचित्तौ वा क्रुद्धो भ्रान्तः क्षुधान्वितः।
रथ्यायामशिवे स्थाने न जपेत्तिमिरान्तरे।
प्रसार्य न जपेत्पादो भ्रष्टासन एव च।
न यज्ञ काष्ठे पाषाणे न भूमावासने स्थितः।
मार्जारं कुक्कटं चैव क्रोञ्चं शूद्रं कपिं खरम्।
दृष्ट्वाचम्य चरेन्कर्म स्पृष्ट्वा स्नानं विधीयते।

अपने देह की रक्षा के लिये ब्रह्मचारी भिक्षान्न का भोजन करे। गृहस्थ भी हविष्यान्न खाये। दूध पीये फलमूल खाये। फल मूल आदि चित्त को स्थिर करते हैं। मैथुन उसकी कथावार्ता उसकी गोष्ठी न करे। ऋतु काल के अतिरिक्त अपनी स्त्री का स्पर्श भी न करे। कुटिलता, क्षौर तेल मालिश, इच्छानुसार भोजन और असंकलित कार्य मालिश आदि न करे। पंचगव्य से केवल आमला के जल से स्नान करे। मन्त्र जप के बाद जल पान स्नान आचमन भोजन यथोक्त विधि से करे। तीनों सन्ध्याओं में देवता का अर्चन करे। फलाहार में एक ही फल खाये। कई फलों को न खाये। गव्य के विना फलाहार की व्यवस्था पृथक् करे। जप के समय हिचकी, खांसी, जम्भाई, निन्द्रा का त्याग करे।

वातुल के अनुसार नित्य तीनों कालों में स्नान करे और मिट्टी लगाकर स्नान भी करे। तीनों समय में गर्म जल से स्नान न करे।

भोजन विधि—पेट को आधा भोजन से भरे चौथाई को जल से भरे। चौथे भाग को वायु संचार के लिये रहने दे। नारदीय के अनुसार मृदुल सुपक्व ऊष्ण भोजन अल्प मात्रा में करे।

कुलार्णव—जिसका अन्न जल ग्रहण करके धर्म कार्य जो करता है उसका आधा फल अन्न दाता को और आधा फल साधक को मिलता हैं इसलिये प्रयत्न से दूसरे का अन्न साधक ग्रहण न करे।

यहाँ परान्न में भिक्षा नहीं आता है।

तन्त्रान्तरों में भिक्षाहार के बारे में कहा है कि अग्नि को छोड़कर कोई दूसरी वस्तु दूसरे की ग्रहण न करे। यदि यह सम्भव हो। असम्भव होने पर तीर्थ के बाहर शुद्धता से पर्वत के अतिरिक्त स्थान से प्राप्त वस्तु ग्रहण करे।

यह भी असम्भव होने पर प्रतिदिन भिक्षा दिन में मांगे और खाये। लोभ से अधिक भिक्षा लेने पर सौ कल्पों में भी मनुष्य को सिद्धि नहीं मिलती।

अन्य सुकृत वचन कहने पर भी ॐ का उच्चारण करे। पारशिक शब्द कहने पर तुरत प्राणायाम करे। बहुत बोलने वाला आचमन अंग न्यासादि करके जप करे। शरीर में क्षत होने पर अस्पृश्य स्थान को स्पर्श न करे। इस प्रकार के नियमों का पालन पुरश्चरण काल में करे। मल मूत्र त्याग के बाद शुद्धि किए विना जो कर्म करता है वे सभी जप अर्चन आदि अपवित्र हो जाते हैं। मैले कुचैले वस्त्र पहनकर,गन्दे बालों वाला और दुर्गन्ध युक्त मुख वाला जो जप करता है उसके गुह्य में देवता रहकर उसे जला देता है। जप काल में आलस्य जम्भाई, झपकी लेना, थूकना, भय, नीचांग स्पर्श क्रोध वर्जित है। देवता गुरु और मन्त्र में वुद्धि से ऐक्य की भावना रखे। प्रात: काल से मध्य दिवस तक एकाग्र मन में जप करे। पहले दिन जितनी संख्या में जप करे उतना ही जप आगे के दिनों में करे।

जमीन पर सोये, ब्रह्मचर्य रहे, मौन रहें, गुरुसेवा करें, नित्य पूजा नित्यदान देवता की स्तुति और कीर्तन करें। नैमित्तिक अर्चन में भी गुरु और देवता में विश्वास रखे जप में निष्ठा और ये बारह धर्म से मन्त्र सिद्धि होती है स्त्री शूद्र पतित व्रात्य नास्तिक से बातचीत न करें कटु बोली न बोलें, जिह्म भाषण न करें जप हवन अर्चन काल में सत्यभाषण भी न करें अन्यया सभी अनुष्ठित कर्म निरर्थक हो जाते हैं। पुरश्चरण काल में यदि मरण अशौच हो जाय तो भी संकल्प व्रत का त्याग न करें।

योगिनी तन्त्र के अनुसार कुश के बिछावन पर सोना चाहिये प्रतिदिन विछावन को धोये अकेले निर्भय होकर शयन करें एक ही वस्त्र पहन कर जप न करें बहुत वस्त्र धारण करें

पतितों अन्त्यजों को न देखे न उनसे बोले और न उनका स्पर्श करे। क्षुद्र अधोवायु निकलने पर जम्भाई आने पर जप न करे। ऐसा होने पर प्राणायाम और षडंग न्यास करे। इसके बाद शेष जप सूर्य के दर्शन तक करे। आदि शब्द में ब्राह्मण भी आते हैं।

तन्त्रान्तरे में कहा गया है कि जप काल में मन पर नियन्त्रण रखे। शौच से रहे, मौन रहे, मन्त्र के अर्थ का चिन्तन करे। जप फल प्राप्ति के लिये व्यग्रता रहित निर्वेद होकर जप करे।

उष्णीश पहनकर, कंचुकी पहनकर, केश को खुला रखकर, लोगों से घिरकर, अपवित्र, अशुद्ध हाथ और प्रलाप करते हुए कभी जप न करे।

विना आसन के, सोकर, चलते हुए, भोजन करते हुए जप न करे।

पूर्व दिशा के अतिरिक्त अन्य दिशा में हाथ और शिर रखकर, चिन्ता से व्याकुल चित्त, क्रोधावस्था में, भ्रान्त क्षुधान्वित, रथ में अशिव स्थान में और अन्धेरे में जप न करे।

पैरों को पसार कर जप न करे। भ्रष्ट आसन में भी जप न करे। यज्ञ काष्ठ पर बैठकर, पत्थर पर बैठकर या जमीन पर बैठकर जप न करे।

विलार, मुर्गा, क्रोंच, शुद्र, वन्दर, गदहा को देखने पर आचमन करके जप करे। इनसे छू जाने पर स्नान करके जप करे।

सर्वजपेऽयं नियमो नास्ति मानसे जपे।
यावन्तः कर्मयज्ञः स्युः पवित्राणि तपांसिच।
सर्वैं ते जपयज्ञस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्।
माहात्म्यं वाचिकस्यैतज्जपयज्ञस्य कीर्तितम्।
तस्माच्छतगुणो पांशुः सहस्त्रो मानसस्मृतः।
मानसः सिद्धिकामनां पुष्टकामै रूपांशुकः।
वाचिको मारणे चैव प्रशस्तो जप ईरितः।
शक्तया त्रिषवणं स्नानमन्यथी द्वे सकृच्चवा।
त्रिसन्ध्यं प्रजपेन्मन्त्रं पूजनं तत्समं भवेत्।
एकदा वा भवेत्पूजा न जपेत्पूजनं विना।
जपान्ते वा भवेत्पूजा पूजान्ते वा जपेन्मनुम्।
प्रातःकाले समारभ्य जपेन्मध्यं दिनावधि।

मध्यन्दिनावधीति न नियम परम् किन्तु अधिक काल व्यवच्छेदपरम्। अन्यथा जिह्वाया जाड्येन अताड्येन वा प्रतिनियत संख्याया वा पूर्णत्वे वा नियत भङ्गः स्यात्। तन्त्रान्तरे–

अति ह्रस्वो व्याधि हेतुरतिदीर्घो वसुक्षयः।
अक्षराक्षरसंयुक्तं जपेन्मौक्तिकहारवत्।
मनसायः स्मरेत् स्तोत्र वचसा वा मनुँ जपेत्।
उभयं निष्फलं याति भिन्नभाण्डोदकं यथा।

कुलार्णवे—

जातसूतकमादौ स्यादन्ते च मृत सूतकम्।
सूतकद्वय संयुक्तो यो मन्त्रः सिद्ध्यति।
गुरोस्तत्र हितं नत्वा मन्त्रं यावज्जपेद्धिया।
सूतक द्वयं निर्मुक्तः स मन्त्रः सर्वसिद्धिदः।
ब्रह्मबीजमनोर्दत्वा चाद्यन्ते परमेश्वरि।
सप्तवारं जपेन्मन्त्रं सूतकद्वय मुक्तये।

रुद्रयामले—

कार्तिके, चाश्विने, माघे, वैसाखे मार्गशीर्षके।
फाल्गुने मासि दीक्षा पुरश्चर्या च शस्यते।

वाराही तन्त्रे:—

चन्द्र तारानुकूले च शुक्ल पक्षे शुभेऽहनि। आरभेत्पुरश्चर्यां हरौ सुप्तेन चाचरेत्।

ग्रहणे च महातीर्थे न कालमवधारयेत्।

तन्त्रान्तरे—

पुण्यक्षेत्रादिकं गत्वा कुर्याद्भूमिपरिग्रहम्।
तथा चामुकमन्त्रस्य पुरश्चरण सिद्धये।
मयेयं गृह्यते भूमिमन्त्रोऽयं सिद्ध्यतामिति।
नगरादावपि क्रोशं क्रोशयुग्ममथापि वा।
आहारादिविहारार्थं तावतीं भूमिमाक्रमेत्।

अथ प्रयोगः–तत्र तावद्भूमेः परिग्रहं कृत्वा पुरश्चरण प्राक् तृतीय दिवसे क्षौरादिकं विधाय वेदिका चतुर्दिक्षु क्रोशं क्रोशद्वयंवा चतुरस्त्र विहारमाहारार्थं वा परिकल्प्य तत्रैव कूर्मचक्रानुगणं मन्त्रं विधायैक भक्तङ्कुर्यात् ततः पूर्व दिने स्नानादिकं विधाय शुद्धः सन् चतुर्दिक्षु

अश्वत्थोदुम्बर प्लक्षानां अन्यतमस्य वितस्तिमात्रान् दशकीलान् ॐ नमः सुदर्शनास्त्राय फट् इति मन्त्रेणाष्टोत्तरशताभिमन्त्रितान् दशदिक्षु।

ॐ ये चात्र विघ्नकर्त्तारो भुवि दिव्यन्तरिक्षगाः।
विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मन्त्रस्य सिद्धिषु।
मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः।
अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे।

इत्यनेन निखन्य तेषु ॐ सुदर्शनाय अस्त्राय फट् इति मन्त्रेण अस्त्रं सम्पूज्य पूर्वादि क्रमेण इन्द्रादिलोकपालान् ॐ भूर्भुवः स्वः इत्यनेन लोकपालाः इहागच्छत इत्यावाह्य पञ्चोपचारैः पूजयेत्।

सभी प्रकार के जपों में यह नियम है। मानसिक जप में यह नियम लागू नहीं होता। जो भी कर्म यज्ञ है वे पवित्र तप है ये सभी जप यज्ञ की सोलहवीं कला के बराबर भी नहीं है। वाचिक जप को यज्ञ कहा गया है। इससे सौ गुना अधिक उपांशु जप का फल है। मानसिक जप का फल इससे हजार गुना अधिक है।

सिद्धि की कामना से मानसिक जप होता है। पुष्टि की कामना से उपांशु जप होता है। मारण में वाचिक जप को प्रशस्त माना जाता है।

शक्ति हो तो तीनों कालों में स्नान करे। अन्यथा सुबह शाम स्नान करे। तीनों सन्ध्याओं में जप और पूजन होते हैं। एक ही बार पूजा होती हो तो पूजा के बिना जप न करे।

जप के बाद पूजा करे या पूजा के बाद जप करे। प्रातःकाल से जब प्रारम्भ करके मध्य दिवस तक करे। मध्य दिवस तक का कोई नियम नहीं है परन्तु अधिक काल तक जप परम व्यवच्छेद है। अन्यथा जीभ में जड़ता होती है। जीभ को ताड़ित किए बिना नियत संख्या में जप पूर्ण करे। इसलिये नियत भंग न करे।

तन्त्रान्तरे में कहा गया है कि जप में अति ह्रस्व उच्चारण से रोग और अति दीर्घ उच्चारण से धन क्षय होता है। अक्षर से अक्षर संयुक्त करके मोती के हार के समान जप करे। जो स्तोत्र का पाठ मानसिक करता है और मन्त्र का वाचिक जप करता उसके दोनों उसी प्रकार निष्फल होते हैं जैसे माण्ड के फूटने पर उसका जल व्यर्थ होता है।

कुलार्णव के अनुसार—

जन्म सूतक के प्रारम्भ का और मरण सूतक के अन्त का दोनों सूतकों के संयुक्त होने पर मन्त्र सिद्धि नहीं होती। उसके लिए गुरु को प्रणाम करके सूतक द्वय से मुक्त होने तक जप करे तो मन्त्र सिद्धिप्रद होता है। दोनों सूतकों से मुक्ति के लिये ब्रह्म बीज 'ॐ' को मन्त्र के पहले सात बार और अन्त में सात बार जप करे।

रुद्रयामल के अनुसार कार्तिक, आश्विन, माघ, वैशाख, अगहन, फाल्गुन में दीक्षा पुरश्चरण प्रशस्त होती है।

वाराही तन्त्र के अनुसार—

चन्द्र तारा के अनुकूल होने पर शुक्ल पक्ष में शुभदिन में पुरश्चरण प्रारम्भ करे। श्री विष्णु की सुप्तावस्था में न करे। ग्रहण और महातीर्थ में काल का विचार नहीं होता।

तन्त्रान्तर के अनुसार—

पावन क्षेत्रादि में जाकर भूमि का ग्रहण करे। संकल्प करे कि 'अमुक मन्त्रस्य पुरश्चरणसिद्धये मयेयं गृह्यते भूमिः मन्त्रोऽयं सिद्ध्यताम्।'

नगर से कोश या दो कोश तक चारों ओर की पृथ्वी को आहार विहार के लिये संकल्पित करे।

प्रयोग

इस प्रकार भूमि को ग्रहण करके पुरश्चरण के तीन दिन पहले बाल बनवा ले। वेदिका के चारों ओर एक या दो कोश चतुरस्र भूमि को आहार विहार के लिये निश्चित करे। वहाँ पर कूर्म चक्र के अनुगुण मन्त्र विधायैक भक्त करे। इसके बाद पुरश्चरण शुरु करने के एक दिन पहले स्नान आदि करके शुद्ध होकर पीपल गूलर पाकड़ के बित्ता भर लम्बे दश कीलों को 'ॐ नमः सुदर्शनाय अस्त्राय फट्' मन्त्र के एक सौ आठ जप से अभिमन्त्रित करे।

ॐ ये चात्र विघ्न कर्तारो भुवि दिव्यन्तरिक्षगाः।
विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मन्त्रस्य सिद्धिषु॥
मयैतट कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः।
अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे॥

इन श्लोकों को पढ़कर दशों दिशाओं में कीलों को गाड़ दे। 'ॐ सुदर्शनाय अस्त्राय फट्' मन्त्र से अस्त्र की पूजा करे। तब पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि लोकपालों की पूजा इस मन्त्र से करे—ॐ भूर्भुवः स्वः इत्यनेन लोकपालाः इहा गच्छत से आवाहन करके पंचोपचार से पूजा करे।

ततो मध्यस्थानेक्षेत्र पालाय नमः। वास्तु पुरुषाय नमः इति सम्पूज्य गणपतिं पूजयेत्। यथा ॐ अद्येत्यादि अमुक गोत्रोऽमुक शर्मा मत्कर्त्तव्य शरभ मन्त्र पुरश्चरण कर्मणि विघ्नविघातार्थं गणेशपूजनं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य वेदिकामध्ये गणेशं पूजयेत्। ततो माषभक्तादिना पूजित देवताभ्यो बलिं दद्यात्। ततः–ॐ ये रौद्रा रौद्र कर्माणा रौद्र स्थान निवासिनः।

मातरो रौद्र रूपाश्च गणाधिपतयश्च ये।
विघ्न भूताश्च ये चान्ये दश दिक्षु समाश्रिताः।
सर्वे ते प्रीतिमनसः प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम्।

इत्यष्ट दिक्षु भूतेभ्यो बलिं दद्यात्। ततो गायत्रीं जपेत्। उक्तञ्च—

प्रातस्नात्वा तु गायत्र्याः अयुतं प्रयतो जपेत्।
विद्याधराचार्यस्तु सहस्रं जपमाहुः।

तदल्पादिसंख्यया–ॐ अद्येत्यादि ॐ अमुक गोत्रोऽमुक शर्मा ज्ञाताज्ञात पापक्षय कामोऽयुतं अष्टोत्तर सहस्रं वा गायत्री जपमहं करिष्ये। इति संकल्प्य जपेत्। तद्दिनमुपवासं हविष्याशनं वा कुर्यात्। ततः पर दिने उषसि स्नात्वा स्वस्ति वाचन पूर्वकं संकल्पं कुर्यात्। ॐ अद्येत्यादि अमुक गोत्रोऽमुक शर्मा शरभस्य द्विचत्वारिंशत् अक्षर मन्त्रस्य प्रतिबन्धकी भूतसमस्तदुरितक्षय पूर्वकं तन्मन्त्रं सिद्धिकामोऽद्यारभ्य यावता कालेन सम्पत्स्यते तावत्कालं शरभस्य द्विचत्वारिंशदक्षमन्त्रस्य द्विचत्वारिंशत् संख्य जप तद्दशांश तर्पण तद्दशांश होम तद्दशांश ब्राह्मण भोजन रूप पुरश्चरणमहं करिष्ये। इति संकल्प्य भूत शुद्धि प्राणायामादिकं कृत्वा पूर्वोक्त क्रमेण देवताः सम्पूज्य प्रज्वलिते दीपके देवतां हृदये कृत्वा प्रातरारभ्य यावन्मध्यन्दिनं जपं कुर्यात्। अथवा द्विचत्वारिंशत् संख्यया महेश्वरीतिशरभ तन्त्रात् जपेत्। तत्र पञ्चाशत् सहस्र संख्यं जपेयुः–

जपेद्वर्ण सहस्राणि संख्यया तु महेश्वरि।

अथवा पूजयेत् प्राज्ञो ह्यर्धलक्षं तु निश्चलम्। इति वातुलात् यत्तु अयुतं पुरश्चरणं सदा द्विज गृहे जपेदिति तत् सुकृत युगाभिप्रायम्।

कृते चायुतं संख्या त्रेतायां चायुतद्वयम्।
द्वापरे त्रियुतं चैव कलौ वेदायुतन्तथा इति वातुले।
ततः शुक्लाम्बरधरो भूत्वा गन्ध माल्यादिभिर्युतः।
गुरोर्लब्धवरं मन्त्रं प्रजपेद्ध्यान पूर्वकम्।

ततो जप दशांशेन गोदुग्धेन शर्करोदकेन वा तर्पणम्। तद्दशांशेन घृत शर्करपायसेन गोघृतेन पायसेन वा होमः। तद्दशांशं ब्राह्मण भोजनम्। तद्दशाशं तर्पयेद्धीमान् क्षीरेण च यथाक्रमम्। तद्दशांश हुनेद्देवि पायसं घृतशर्करा मन्त्रं जप्त्वा तर्पयेच्च होमं ब्राह्मणभोजनम्। जपान्ते विधिवत्कृत्वा मन्त्रसिद्धिमवाप्नुयात्। शर्करोदकसंयुक्तं तर्पयेत्तत्प्रकार-वित्। इति तन्त्रान्तरे–

यद्वा पुरश्चरण होमो गोघृतादियुक्त युक्त पायसेनैव।
पूर्वोक्त दशद्रव्य करणक होमस्तु क्रूरसौम्यक्रियास्वेव।
होमयेद्विधिनादेवि क्रूर सौम्यक्रियादिषु इति शारभात्।

तर्पण वाक्यन्तु मूलान्ते श्री शरभं तर्पयामि नमः। अभिषेकस्त्वत्र नास्ति चतुरङ्गत्वात्। ततो ब्राह्मण भोजनम् ततो दक्षिणा। अद्य कृतैतच्छरभस्यामुक मन्त्रस्य पुरश्चरण कर्मणः साङ्गता सिद्ध्यर्थं दक्षिणां इदं काञ्चनं वह्नि दैवतं यथा नाम गोत्राय गुरवे तुभ्यमहं सम्प्रददे। ततो छिद्रावधारणङ्कुर्यात्।

अथ ग्रहण पुरश्चरण संकल्पः समुद्रगामिन्यां नद्यां नाभिमात्रोदके स्थित्वा अभावे यत्र कुत्रापि स्नात्वा आचम्य ॐ अद्येत्यादि अमुक गोत्रोऽमुक शर्मा राहुग्रस्ते दिवाकरे निशाकरे वा श्री शरभस्यामुक मन्त्रस्य सिद्धि कामो ग्रासाद्विमुक्तपर्यन्तं जपरूप पुरश्चरणमहं करिष्ये। इति संकल्पयेत् ततस्तद्दिने तत्पर दिनेवा तर्पण होमौ विधाय महापूजां कृत्वा ब्राह्मणान् भोजयित्वा मन्त्र प्रसिद्ध्यर्थं गुरुं सम्पूज्य तोषयेत्। एवञ्च मन्त्र सिद्धिः स्यात् देवता च प्रसीदति। तोषयेदिति दक्षिणादिनेति शेषः। मन्त्र देव प्रकाशिकायाम्। अथवा देवता रूपं गुरूं भक्त्या प्रतोषयेत्। पुरश्चरण हेतोऽपि मन्त्री सिद्धेन्नसंशयः। वातुले च शुद्ध

स्वर्णैः प्रकुर्वीत सालुवप्रतिमान्यथा मन्त्र सिद्धिकरं देवि प्रतिमादानमेव च।

पलं वार्ध पलंवाय तदर्धं चार्धमर्धयोः। पलार्धं तदर्ध योरित्यर्थः।

चतुर्भुजं पक्षिरूपं त्रिनेत्रं चोग्रविग्रहम्।
कृत्वातु दक्षिणा युक्तं विप्राय च कुटुम्बिने।
वेदशास्त्रपुराणार्थकोविदे वेदपारगे।
मन्त्रदीक्षा समायुक्ते तन्त्रविद् यन्त्रकोविदे।
दद्यादन्नं वसुयुतं शरभप्रीतये तथा।
एवमुक्तं पुरश्चर्यां कृत्वा विध्युक्तप्रादरात्।
देवता मन्त्ररूपेण साक्षात्कारो भवेद्ध्रुवम्।

इसके बाद मध्य स्थान में क्षेत्रपालाय नमः। वास्तु पुरुषाय नमः से क्षेत्रपाल और वास्तु पुरुष की पूजा करे। तब गणपति की पूजा का यथा—ॐ अद्येत्यादि अमुक गोत्रो अमुकशर्मा मत्कर्तव्य शरभमन्त्र पुरश्चरण कर्मणि विघ्न विघातार्थ गणेश पूजनं करिष्ये।

इस प्रकार संकल्प करके वेदी के मध्य में गणेश की पूजा करे। इसके बाद पूजित देवताओं को उड़द भात की बलि प्रदान करे। इसके बाद निम्न श्लोकों से बलि देवे—

ॐ ये रौद्रा रौद्रकर्माणां रौद्रस्थाननिवासिनः।
मातरो रौद्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च ये।।
विघ्नभूताश्च ये चान्ये दश दिक्षु समाश्रिताः।
सर्वे ते प्रीति मनसः प्रति गृह्णन्ति इमे वलिम्।।

इन श्लोको को पढ़कर आठों दिशाओं में भूतों को बलि देवे। तब गायत्री का जप करे।

कहा है कि प्रातः काल स्नान के बाद दश हजार गायत्री जप करे। विद्याधराचार्य का कहना है कि एक हजार गायत्री जप करे। एक हजार से कम संख्या में भी जप करे।

संकल्प करे—अद्येत्यादि ॐ अमुक गोत्रोत्पन्न अमुक शर्मा ज्ञाताज्ञात पापक्षयकामो अयुतं, अष्टोत्तर सहस्त्रं वा जपमहं करिष्ये, ऐसा संकल्प करके जप करे। उस दिन उपवास करे या हविष्यान्न का भोजन करे। उसके दूसरे दिन बाद उषाकाल में स्नान करके स्वस्ति वाचन पूर्वक संकल्प करे।

ॐ अद्येत्यादि अमुक गोत्रो अमुक शर्मा शरभस्य द्विचत्वारिंशत अक्षर मन्त्रस्य प्रतिवन्धकीभूतसमस्तदुरितक्षयपूर्वकं तन्मन्त्र सिद्धिकामो अद्यारभ्य यावता कालेन सम्पत्स्यते तावत काले शरभस्य द्विजत्वारिशदक्षर मन्त्रस्य द्विचत्वारिंश सहस्र संख्य जप तद्दशांश तर्पण तद्दशांश हवन तद्दशांश बाह्मण भोजन रूप पुरश्चरणमहं करिष्ये।

संकल्प के बाद भूत शुद्धि प्राणायामादि करके पूर्वोक्त क्रम से देवता को पूजकर प्रज्वलित दीपक में देवता को हृदय से लाकर प्रात: काल से मध्य दिवस तक जप करे।

अथवा तन्त्र के मन्त्र महेश्वरीति शरभ का बयालिस जप करे अथवा तब पचास हजार जप करे। अथवा प्रत्येक वर्ण पर एक हजार जप करे। अथवा पचास हजार जप निश्चल होकर करे।

वातुल तन्त्र के अनुसार दश हजार पुरश्चरण जप जब द्विज घर में करता है तो वह सुकृत युग के अभिप्राय से है। अर्थात् सत्युग में दश हजार, त्रेता में बीस हजार, द्वापर में तीस हजार और कलियुग में चालिस हजार जप करे। उजला वस्त्र धारण करके गन्ध लगाकर माला पहन कर गुरु से प्राप्त मन्त्र का जप ध्यान पूर्वक करे।

जप का दशांश तर्पण गाय के दूध से करे अथवा चीनी के सरबत से करे। तर्पण का दशांश घी, शक्कर पायस से अथवा गोघृत और पायस से हवन करे। हवन का दशांश ब्राह्मण भोजन करावे।

उसका दशांश तर्पण बुद्धिमान दूध से यथा क्रम करे। उसका दशांश पायस घी और शक्कर से करे। मन्त्र जपते हुए तर्पण करे। तर्पण के बाद ब्राह्मण भोजन करावे। इससे मन्त्र सिद्धि होती है। पानी में शक्कर मिलाकर तर्पण उसका जानकार करे। तन्त्रान्तर में उक्त है कि यदि पुरश्चरण होम गोधृतादि युक्त पायस से करे तो पूर्वोक्त दश द्रव्य करणक होम क्रूर सौम्य क्रिया के अनुसार होता है।

शरभ के अनुसार क्रूर सौम्य क्रियाओं में विधिवत् हवन करे। तर्पण वाक्य में मूलमन्त्र के बाद श्री शरभं तर्पयामि जोड़े। इस पुरश्चरण में चार ही अंग हैं; मार्जन नहीं है। इसके बाद ब्राह्मण भोजन तब दक्षिणा देवे। दक्षिणा देने के समय कहे अद्य कृतैतत् शरभस्य अमुक मन्त्रस्य पुरश्चरण कर्मण: संगता सिद्धयर्थं दक्षिणा इदं कांचनं वह्निदैवतं यथा नाम गोत्राय गुरवे तुभ्यमहं सम्प्रददे। इसके बाद छिद्रावधारण करे।

ग्रहण पुरश्चरण

ग्रहण पुरश्चरण संकल्प। समुद्र गामिनी नदी में नाभि तक जल में खड़े होकर, इसके अभाव में जहाँ कहीं स्नान आचमन करके संकल्प करे।

ॐ अद्येत्यादि अमुक गोत्रो अमुक शर्मा राहु ग्रस्ते दिवाकरे वा निशाकरे श्री शरभस्य अमुक मन्त्र सिद्धिकमो ग्रासादि मुक्ति पर्यन्त जप रूपपुरश्चरणमहं करिष्ये।

इसके बाद उसी दिन या दूसरे दिंन तर्पण हवन करके महापूजा करे। ब्राह्मणों को भोजन करावे। मन्त्र सिद्धि के लिये गुरु की पूजा करके सन्तुष्ट करे।

इस प्रकार करने से मन्त्रसिद्धि होती है। देवता प्रसन्न होते हैं। तोषयेत का अर्थात् दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करते हैं। मन्त्र देव प्रकाशी काया देवतारूप गुरु को भक्ति से सन्तुष्ट करे। पुरश्चरण हवन से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

वातुल तन्त्र के अनुसार सालुव की प्रतिमा, शुद्ध सोने की बनवा कर, दान देने से मन्त्र सिद्धि होती है। सोने की मूर्ति ६० ग्राम या ३० ग्राम या १५ ग्राम या साढ़े सात ग्राम की बनवावे।

चतुर्भुज पक्षीरूप तीन नेत्र उग्र विग्रह शरभ की मूर्ती बनवाकर दक्षिणा के साथ विप्र को या उसके सम्बन्धियों को दान करे। वेदशास्त्र पुराण का अर्थ जानने वाले वेद पारग मन्त्रदीक्षा युक्त तन्त्रज्ञ, यन्त्र के जानकार विप्रों को अन्न धन का दान करे। इससे शरभ प्रसन्न होते हैं।

इस प्रकार के उक्त पुरश्चरण विधिवत् सादर करने से मन्त्ररूप देवता का साक्षात्कार निश्चित रूप से होता है।



अथ कूर्म चक्र

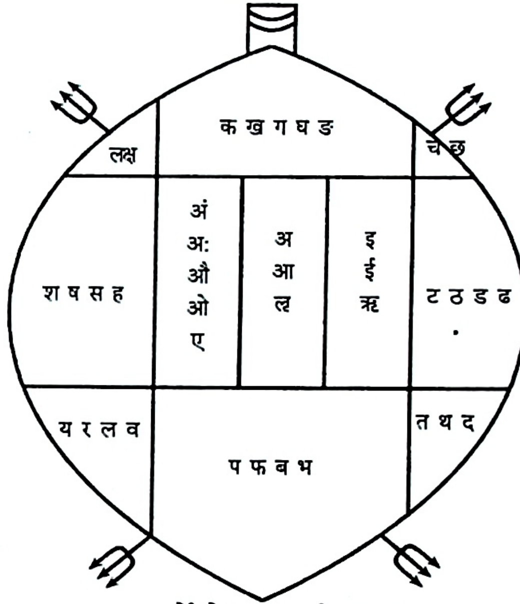
दीपस्थान समाश्रित्य कृतं कर्म फल प्रदम्।
दीप्यते पुरुषो यत्र दीपस्थानं तदुच्यते।।
चतुरस्त्रां भुवं भित्त्वा कोष्ठानां नवकं लिखेत्।
पूर्वं कोष्ठादि विलिखेत् सप्तवर्गाननुक्रमात्।।
लक्ष्मीशे मध्यकोष्ठे स्वरान् युग्मक्रमान् लिखेत्।
दिक्षु पूर्वादितो यत्र क्षेत्राद्यक्षर संस्थितिः।
मुखं तत्तस्य जानीयात् हस्तावुभयतस्थितौ।
कोष्ठे कुक्षी उभे पादौ द्वे शिष्टे पुच्छमीरितम्।।
क्रमेणानेन विभजेन्मध्यस्थमपि भागतः।
मुखस्थो लभते सिद्धि करस्थः स्वल्पजीवनः।।
उदासीनः कुक्षिसंस्थः पादस्थो दुःखमाप्नुयात्।
पुच्छस्थः पीड्यते मन्त्री बन्धनोच्चाटनादिभिः।
कूर्मं चक्रमिदं प्रोक्तं मन्त्राणां सिद्धिसाधनम्।
कूर्मचक्रमविज्ञाय यः कुर्याज्जप यज्ञकम्।
तस्य यज्ञफलं नास्ति सर्वानर्थाय कल्पते।

कूर्म चक्र के दीप स्थान में बैठकर जप करने पर कर्म फल प्रद होता है; जहाँ पर पुरुष दीप्त होता है, उसे दीप स्थान कहते हैं। जमीन पर चतुरस्त्र में नवकोष्ठ बनावे। पूर्व कोष्ठक से शुरू करके सातवर्गी के अक्षरों को क्रम में लिखे। लक्ष्मी ईश्वर को मध्यकोष्ठ में लिखे। दो दो स्वरों को पूर्व से शुरू करके सभी दिशाओं में वहाँ तक लिखे, जहाँ तक क्षेत्र का आद्य अक्षर स्थित है। क्षेत्र के पहले अक्षर को मुख माने। दोनों पार्श्वों को हाथ जाने। कोष्ठक में कुक्षि और उसके वगल में पैर और शेष को पूँछ माने।

इसी क्रम से मध्य स्थान को भी विभाजित करे। मुख स्थान में कर्म करने से सिद्धि मिलती है। हाथ में बैठकर करने से आयु घटती है। पैरों में बैठकर करने से दुख होता है। पूँछ में बैठकर करने से साधक को पीड़ा होती है। बन्धन उच्चाटन आदि में भी कूर्म चक्र में कर्म करने

से सिद्धि होती है। कूर्म चक्र को जाने बिना जो जप यज्ञ करता है उसे कोई फल नहीं मिलता। सभी अनर्थ घटित होते हैं।

कूर्म चक्र



मन्त्रों के दश संस्कार

गौतमीये—

जननं जीवनं पश्चात् ताडनं बोधनं तथा।
तथाभिषको विमली करणाप्यायने तथा।
तर्पणं दीपनं गुप्तिर्दशैता मन्त्र संस्क्रिया।
स्वर्णादि पात्रे संलिख्य मातृका यन्त्रमुत्तमम्।
काश्मीर चन्दनेनापि भस्मनावाथ सुब्रते।
काश्मीरं चन्दनेनापि भस्मनावाथ सुब्रते।
काश्मीरं शक्तिसंस्कारं चन्दनं वैष्णवे मनौ।
शैवे भस्म समाख्यातं मातृका यन्त्र लेखने।

तद् यन्त्रं तु—

व्योमेन्द्धौ रसनार्णकर्णिकमचां द्वं द्वैः स्फुरत् केशरम्।
वर्णोल्लासिवसूच्छदं वसुमती गेहेन संवेष्टितम्।

आशास्वस्त्रिषुलान्त लाङ्गलिभुजाक्षोणी पुरेणावृत्तम्।
यन्त्रं वर्णतनोः परं निगदितं सौभाग्यसम्पत्करम्।

इति शारदायाम्। अस्यार्थः-आदावष्ट दलं पद्म कृत्वाकार्णिकाया सौः बीजं लिखेत्। व्योमः हकारः। इन्दु शाकारः औ इति स्वरूपम् रसनार्णो विसर्गः एते कर्णिकायां यस्यतत्। केशरेषु द्विशोऽचो-लिखित्वा दलेषु कु चु टु तु पु य शवर्गान् लिखित्वा लक्षावन्तिमे दले लिखेत्। तस्योपरि भूपुर कृत्वातच्चतुर्दिक्षु वकारं लिखित्वा तत्कोणेषु टकारञ्च विलिख्य तस्योपरि चतुरस्त्रं चतुर्द्धारं लिखेत्।

इति वाग्देवता पूजा यन्त्रम्।

इति जननं।

प्रणवान्तरितं कृत्वा मन्त्रवर्णान जपेत् सुधीः।
प्रत्येकं शतवारन्तु जीवनं तदुदाहृतम्।
मन्त्रवर्णान् समालिख्य ताडयेच्चन्दनाम्भसा।
प्रत्येकं वायुवीजेन पूर्ववत्ताडनं मतम्।
शतं विलिख्य मन्त्रार्णान् प्रसूनैः करवीरजैः।
तन्मन्त्रवर्ण संख्यातैर्हन्याद्रेफेन बोधनभ्।
ततः मन्त्रोक्त विधिना अभिषेकः प्रकीर्तितः।
अश्वत्थ पल्लवैः सिञ्चेन्मन्त्री मंत्रार्णसंख्यया।
सच्चिन्त्य मनसा मन्त्रं सुषुम्णा मूल सन्ध्यतः।
ज्योति मन्त्रेण विधिना दहेन्मन्त्रलयंसुधी।
तारं व्योमाग्नि मन्युग्दण्डी ज्योतिर्मनुर्मनुः।

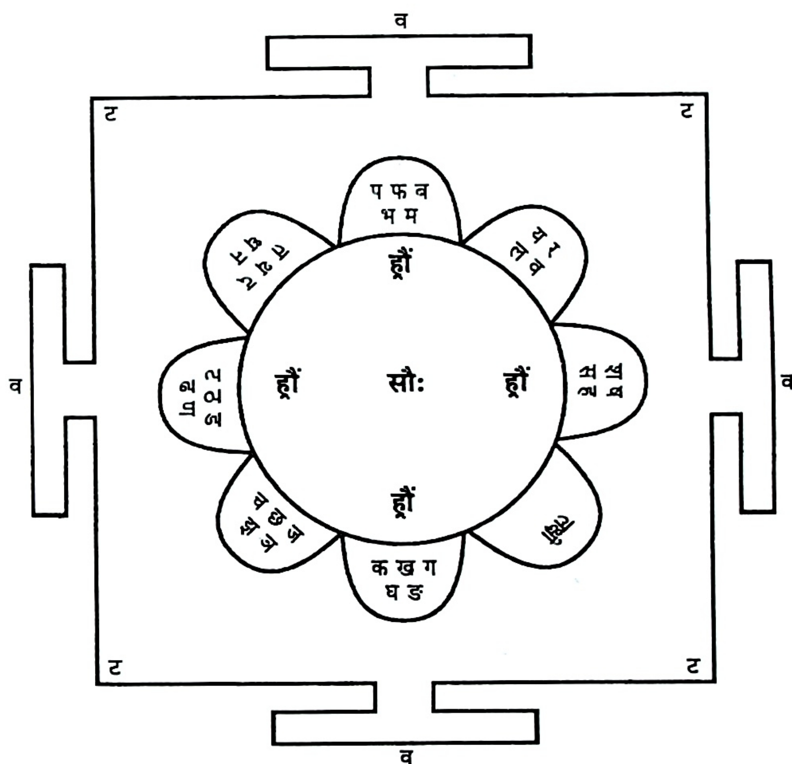
तारं प्रणवः, व्योम हकारः अग्नी रेफः, मनुरौकारः, दण्डी अनुस्वारः, ॐ ह्रौमिति सिद्धम्।

स्वर्णेन कुश तोयेन पुष्पतोयेन वा तथा।
तेन मंत्रेण विधिवदाप्यायन विधिस्मृतः।
मन्त्रेण विधिना मन्त्र देवता तर्पणं स्मृतम्।
शैवेघृतेन दुग्धेन तर्पणं सम्यगीरितम्।
तारमाया रमायोगो मनोदीपनमुच्यते।
जप्यमानस्य मन्त्रस्य गोपनं तव प्रकाशनम्।

संस्कारा दश सम्प्रोक्ता सर्वतन्त्रेषु गोपिता। यान् कृत्वा सम्प्रदायेन मन्त्री वाञ्छितमाप्नुयात्।

जनन, जीवन, ताड़न, बोधन, अभिषेक, विमलीकरण, आप्यायन, तर्पण, दीपन और गुप्ति, ये दश मन्त्र के संस्कार होते हैं। स्वर्णादि पात्र में उत्तम मातृका यन्त्र को केसर, चन्दन या भस्म से लिखे। केसर से शक्ति मन्त्र को, चन्दन से वैष्णव यन्त्र को और भस्म से शैव मन्त्र के यन्त्रों को लिखे।

यन्त्र स्वरूप



पहले अष्टदल बनावे। उसकी कर्णिका में सौः बीज लिखे। केशरं में ह्रौं ह्रौं लिखे। दलों में क च ट त प य श लक्ष लिखे। उसके बाहर भूपुर बनावे। चारो तरफ व लिखे कोनों में ट लिखे।

इति वाग्देवता पूजा यन्त्रम्।

संस्कार

जनन—मन्त्र वर्णों के बीच बीच में ॐ लगाकर जप करने से जनन होता है।

जीवन—प्रत्येक के सौ जप से जीवन होता है।

ताड़न—मन्त्र वर्णों को लिखकर चन्दन जल से ताड़न वायु बीज यं से करे।

बोधन—मन्त्र वर्णों को लिखकर कनैल अर्थात् करवीर के फूलों से 'रं' बोलते हुए सौ बार ताड़न करने से बोधन होता है।

अभिषेक—मन्त्र वर्णों पर पीपल के पत्तों से मन्त्र वर्ण की संख्या के बराबर छीटे मारे।

विमलीकरण—सुषुम्ना मूल मध्य में मन्त्र का चिन्तन करके ज्योति नेत्र से दहन करे।

आप्यायन—ॐ ह्रौं मन्त्र बोलते हुए सोने या कुश जल से या पुष्प जल से मन्त्र वर्णों का सिंचन करे।

तर्पण—मन्त्र से विधिवत् देवता का तर्पण घी दूध से करे।

दीपन—ॐ ह्रीं श्रीं के साथ मन्त्र जप से दीपन होता है।

गोपन—जप्यमान मन्त्र को किसी को न बताना गोपन होता है।

सभी तन्त्रों में गोपित दश संस्कारों को करने से साधक वांछित फल प्राप्त करता है।

मलत्रय

मलत्रयमिति—आणवं मायिकं कार्मणञ्चेति।

मायिकं नाम योषोत्थं पौरुषं कार्मणं मलम्।
आणवं यद् ज्ञेयं निषिद्धं तन्मलत्रयम्।

योषिन्मात्रोपासितं पुरुषमात्रोपासितं तारमाया रमाबीज पुटितं मंत्रमष्टोत्तर शतं जपेदित्यर्थः। अथ मंत्रसिद्धे रूपायान्तरम्। गौतमीये—

सम्यगनुष्ठिते मन्त्रे यदि सिद्धिर्न जायते।
पुनरस्तेनैव कर्त्तव्यं ततः सिद्धो भवेद्ध्रुवम्।
पुनरनुष्ठिते मन्त्रे यदि सिद्धिर्न जायते।
पुनस्तेनैव कर्त्तव्यं ततं सिद्धो न संशयः।

पुनरनुष्ठिते मन्त्रे यदि सिद्धिर्न जायते। उपायास्तत्र कर्त्तव्या सप्त शङ्कर भाषिताः।

भ्रामणं रोधनं वश्यं पीडनं योषणोषणे।
दहनान्तं क्रमात्कुर्यात् ततः सिद्धो भवेद् ध्रुवम्।

भ्रामणं वायुबीजेन ग्रन्थन क्रमयोगतः।
तन्मन्त्रं यन्त्रमालिख्य सिद्धकैर्तरुचन्दनैः।
उशीर चन्दनाभ्यान्तु मन्त्रं ग्रसितं लिखेत्।
क्षीराज्यमधुतोयानां मध्ये तल्लिखितं भवेत्।
पूजनाज्जपनाद्धोमाद्भ्रमितः सिद्धिदो भवेत्।
भ्रामितश्चेन्नसिद्धः स्याद्बोधनं तस्य कारयेत्।
सारस्वतेन बीजेन सम्पुटीकृत्य सञ्जपेत्।
एवं रुद्धो भवेन्मन्त्रो नोचेत्सिद्धो वशं कुरु।
अलक्तं चन्दनं कुष्ठं हरिद्रां च मनःशिला।
एतैस्तु मन्त्रमालिख्य भूर्जपत्रेषु शोधनम्।

धार्यः कण्ठे भवेत्सिद्धः पीडनं चास्य कारयेत्। अधरोत्तर यामेन् पदानि परजप्य वै।

ध्यायेच्च देवतां तद्वधरोत्तर रूपिणीम्।
विद्यामादित्य दुग्धेन लिखित्वा क्रम्य चांघ्रिणा।
तथा भूतेन मन्त्रेण होमः कार्यो दिने दिने।
पीडितो लज्जयाविष्टः सिद्धस्यादथ योषयेत्।
बालायास्त्रितयं बीजमाद्यन्ते तस्य सो जपेत्।
गोक्षीरमधुना लिख्य विद्यां पाणौ विभावयेत्।
योषितोऽयं भवेत्सिद्धो न चेत्कुर्वीत शोषणम्।
द्वाभ्यां च वायुबीजाभ्यां मन्त्र कुर्याद्विदर्भितम्।
एषा विद्यागले धार्या लिखित्वा वर भस्मना।
शोषितोऽपि न सिद्धः स्यात् दहनीयोऽग्निबीजतः।
आग्नेयेन तु बीजेन मन्त्रस्ये मन्त्रत्येकैमकरम्।
आद्यन्तमधऊर्ध्वञ्च यो जपेद्दाह कर्मणि।
ब्रह्म वृक्षस्य तैलेन मन्त्रमालिख्य धारयेत्।
कण्ठदेशे ततो मन्त्रः सिद्धः स्याच्छङ्करोदितम्।
इत्येवं कथितं सम्यक्केवलं तव भक्तितः।
एकैनैव कृतार्थः स्यात् बहुभिःकिञ्च सुव्रते।
अथान्यत्सम्प्रवक्ष्यामि मन्त्रसिद्धेस्तु कारणम्।
मातृका पुटितं कृत्वा मन्त्रं च प्रजपेत्सुधीः।

क्रमात्क्रमाच्छतावृत्या तदन्ते केवलं मनुम।
एवन्तु प्रत्यहं कुर्यात् यावल्लक्षं समाप्यते।
निश्चितं मन्त्रं सिद्धि स्यादित्युक्तं तन्त्र वेदिभिः।

आणव मायिक और कार्मण मल तीन प्रकार के होते हैं। मायिक मल स्त्री से होता है। कार्मण मल पुरुष से होता है। निषिद्ध कर्म से आणव मल होता है। स्त्रियों से उपासित और पुरुष से उपासित मन्त्र को ॐ ह्रीं श्रीं से सम्पुटित करके एक सौ आठ बार जप से मलत्रय की शुद्धि होती है। मन्त्र सिद्ध होने पर रूपान्तर होता है।

गौतमीय शास्त्र में कहा गया है कि—

सम्यक् अनुष्ठान करने पर भी मन्त्र से सिद्धि न मिले तो पुनः उसी प्रकार पुरश्चरण करने से अवश्य सिद्धि मिलती है। दूवारा करने पर भी यदि सिद्धि न मिले तो पुनः तीसरी बार उसी प्रकार करे। तब सिद्धि मिलने में कोई संशय नहीं रहता। इस पर भी यदि सिद्धि न मिले तो चौथी बार करे। यदि इस पर भी सिद्धि न मिले तो शंकर भाषित सात उपाय करे जिसे आगे कहा जा रहा है—

भ्रामण, रोधन, वश्य, पीड़न, पोषण, शोषण, और दाहन सात उपायों को करने से मन्त्र अवश्य सिद्ध होता है। भ्रामण वायु बीज यं के बाद मन्त्र का पहला अक्षर फिर यं तब दूसरा अक्षर..........अन्त में यं बीज से सम्पुटित करके ग्रन्थन करे।

इस मन्त्र को भोज पत्र पर चन्दन-खश से लिखे। उसे दूध, गोधृत, मधु, जल मिलित द्रव्य में डुबा दे। इसके बाद पूजा जप हवन करने से मन्त्र सिद्ध होता है।

शोधन—भ्रामण के बाद भी यदि सिद्ध न हो तो उसका रोधन करे। सारस्वत बीज ऐं से सम्पुटित करके जप करने से रोधन होता है।

वशीकरण—रोधन करने पर भी यदि सिद्ध न हो तब वशीकरण करें। मन्त्र को अलता, चन्दन, कूठ, हल्दी, मैन्सिल के घोल से भोजपत्र पर लिख कर शोधन करे। उसे कण्ठ में धारण करे तो मन्त्र सिद्ध होता है।

पीड़न—वश्य के बाद भी यदि मन्त्र सिद्ध न हो तब पीड़न करे। मन्त्र पदों का जप एक पहर के बाद उत्तरोत्तर प्रहरों में करे। देवता का

ध्यान भी अधरोत्तर रूप का करे। विद्या को दूध से लिखकर पावों के नीचे दबाकर हवन करे। कुछ दिन ऐसा करने से मन्त्र पीड़ित लज्जित होकर सिद्ध हो जाता है।

पोषण—पीड़न करने पर भी यदि सिद्ध न हो तो पोषण करे। बाला विद्या ऐं क्लीं सौः से सम्पुटित करके मन्त्र का जप करे। गाय के दूध से भोजपत्र पर मन्त्र को लिखकर अपनी भुजा में धारण करके पुरश्चरण करे तो मन्त्र सिद्ध होता है। इस क्रिया को पोषण कहते हैं।

शोषण—पोषण से मन्त्र सिद्ध न होने पर शोषण करे। मूल को वायु बीज यं से सम्पुटित करके जप करे। यज्ञ भस्म से भोजपत्र पर लिखकर गले में धारण करे और जप करे तो सिद्ध होता है।

दाहन—शोषण पर सिद्धि न होने पर अग्नि बीज रं से दाहन करे इस बीज को मन्त्र के प्रत्येक अक्षर के आदि अन्त और ऊपर पलाश बीज के तैल से भोजपत्र पर लिखकर गले में धारण करे। इससे मन्त्र सिद्ध होता है। हे सुव्रते तुम्हारी भक्ति के वश में होकर इसे सम्यक रूप से कहा गया। एक ही से कृतार्थ हो जाता है तब बहुत क्या कहा जाय।

अब मैं मन्त्र सिद्धि के अन्य उपाय कहता हूँ। मातृका पुटित मन्त्र जप करे ऐसा जप एक सौ बार करे। इसके बाद केवल मन्त्र का जप करे। इस प्रकार प्रतिदिन जप तब तक करे जब तक जप एक लाख पूरा न होवे। ऐसा करने से मन्त्र अवश्य सिद्ध होता है। यह कथन तन्त्र ज्ञानियों का है।

मन्त्र सिद्धि के लक्षण

मनोरथा नाम क्लेशः सिद्धेरूत्तमलक्षणम्।
मृत्यूनां हरणं तद्वद्देवता दर्शनं तथा।
प्रयोगास्याक्लेशसिद्धिः सिद्धेस्तु लक्षणं परम्।
ख्यातिर्भूषणवाहादि लाभः शुचिर्जीवनम्।
नृपाणां तद् गणानाञ्च रक्षीकरणमुत्तमम्।
सर्वत्र सर्व लोकेषु चमत्कारकरं सुखी।

दुःखापहरणं दृष्टया विषापहरणं तथा।
पाण्डित्यं लभतेमन्त्री चतुर्विधमयत्नतः।
वैराग्यञ्च मुमुक्षुत्वं त्यागिता सर्व वश्यता।
इत्यादि गुण सम्पत्तिर्मध्य सिद्धेस्तु लक्षणम्।
ख्यातिर्वाहनभूषादिलाभः सुचिरजीवनरम्।
महैश्वर्य धनित्वञ्च पुत्रदारादिसम्पदः।
अधमा सिद्धयः प्रोक्ताः मन्त्रिणामाद्य भूमिका।
सिद्धमन्त्रस्तु यः साक्षात् सशिवो नात्र संशयः।
शरभार्चा पारिजाते रामकृष्ण विनिर्मिते।
पुरश्चर्यामोद मृतश्चतुर्थस्तवकोऽगमत्।

इति श्रीमद्रामदेव सूरिसूनु रामकृष्ण विरचिते शरभार्चा पारिजाते चतुर्थस्तवकः समाप्तः।

मनोकामनाओं का अन्त होना सिद्धि का उत्तम लक्षण है। मृत्यु का हरण, उसी प्रकार देवता का दर्शन, प्रयोग में कष्ट न होना, बिना कष्ट के सिद्धि होना परम लक्षण है। ख्याति, भूषण, वाहन, लाभ, पवित्र जीवन, राजा और उसके गणों से रक्षीकरण उत्तम लक्षण है। सर्वत्र सभी लोकों में चमत्कार करके सुखी होना। दूसरों के दुखों को दूर करना; दृष्टि से ही विष का विनाश करना। विना यत्न के चतुर्विध पाण्डित्य प्राप्त होना। वैराग्यत्व, मुमुक्षुत्व, त्याग, सर्व वशीकरण इत्यादि गुणों की सम्पत्ति प्राप्ति सिद्धि के लक्षण है। ख्याति, वाहन, भूषादि, लाभ और लम्बी आयु, महा ऐश्वर्य प्राप्ति धनित्व, पुत्र-दारादि सम्पदा प्राप्ति अधमा सिद्धि होती है। इन्हें साधकों का आद्य भूमिका कहते है। जिसे सिद्ध मन्त्र का साक्षात्कार होता है वह शिव हो जाता है। इसमें संशय नहीं है।

शरभार्चा पारिजाते रामकृष्ण विरचिते चतुर्थस्तवकः समाप्तः।

दमन अर्चन

चैत्र शुक्ल चतुर्दश्यां दमनैरर्चयेद्धरम्।
वर्षार्चा फल सिद्धयै पवित्रैश्रीवणे यजेत्।

तत्र दमनार्चन प्रयोगः। पूर्व दिने नित्यार्चनं कृत्वा आसन स्थानं गत्वा क्रमेण तु गृहीत्वा शुचौ देशे उपविश्य–

अशोकाय नमस्तुभ्यं कामस्त्रिशोक नाशन।
शोकार्तितत्र हरमे नित्यमानन्दं जनयस्वमे।

इति प्रार्थ ह्रीं रत्यै नमः। क्लीं कामदेवाय नमः। इति मन्त्राभ्यां तत्र रतिकामौं सम्पूज्य। श्री महेशस्य पूजार्थ नेष्यामि त्वां इति ब्रुवन् पञ्चगव्यनाभिषिंच्य जलैः प्रक्षाल्य नमः इति गन्धादिमिरभ्यचर्च्य पत्रं पीतमवस्त्रेणाच्छाद्य गीत वाद्य पुरस्सरं गृहमानीय शिवं स्मरन् सद्देशे स्थापयेत्। ततो देवस्य पुरतः सित कृष्ण रक्त पीत वर्णैः खं प्रणवाद्याम्यां वंशभवेपात्रे निधाय षष्ठ दलं पद्मं कृत्वा तद्वहिः पीत वर्ण भूपुरं कृत्वा तद्वहिः सित रक्त पीत वर्ण वृत्तत्रयं कुर्यात्। तद्बाह्ये रक्त वर्णं चतुरस्त्रं रचयित्वा दमन पात्रं मण्डल मध्ये स्थापयेत्। ततो रात्रिपुजान्तेऽधि-वासनम्। यथा पूर्वोक्ताभ्यां रतिकाम मन्त्राभ्यां दमने रतिकामौ सम्पूज्याष्टसु दलेषु प्रणव कामबीजाद्यान् कामादि नमोऽन्तान् यजेत्।

ते च कामा भस्म शरीरश्च ततोऽनङ्गश्च मन्मथः।
वसन्त सरव संज्ञस्यस्मर इक्षु धनुर्धरः॥

पुष्पवाणइमे कामाः। इति। कर्पूर रोचनात् मकं नाभिजागरुकुंकुमै धात्फलैः चन्दनेन पुष्पैः कामान् यजेत् क्रमात्। ततो दमनं गन्ध पुष्पैः सम्पूज्यं–

कामदेवाय विद्महे पुष्पवाणाय धीमहि तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयात्।

इति कामगायत्र्याष्टोत्तर शतमभिमन्त्र्यस्य नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा।

नमोऽस्तु पुष्पवाणाय जगदानन्द कारिणे।

मन्मथाय जगन्नेत्ररति प्रीति प्रदायिने। इति प्रणमेत्। ततः आमन्त्रितोऽसि देवेश प्रातः कालने मया विभो। कर्त्तव्यं तु यथा लाभं पूर्णं पर्व तवाज्ञया। इति देवतामन्त्र्य पुष्पाञ्जलि दत्त्वा दण्डवत्प्रणम्य दमने हुं इत्यवगुण्ठनं कृत्त्वा फडिति रक्षणं कुर्यात्। इत्यधिवासनम्।। ततो देवंस्मरन् गायन् जागरं कुर्यात्। सद्योऽधिवासने तु न जागरः। प्रातः स्नात्वा नित्यार्चनं विधाय देश कालौ स्मृत्वा वर्षाचार्यया: सम्पूर्ण फलप्राप्तिद्वारा श्री शरभेश्वर प्रीत्यर्थ श्री शरभेश्वरं दमनेन पूंजयिष्ये इति संकल्प्य। हस्ताभ्यां दमन मंजरी गृहीत्वा नमः इत्यभिमन्त्र्य।

सर्वरत्नमयीं नित्यां सर्व गन्धमयीं शुभाम्।
गृहाण मञ्जरीं देव नमस्तेऽस्तु कृपानिधे।

इति पठित्वा घण्टादि घोषैर्देवेषु मूर्ध्नि तां समर्प्य दमन निर्मितां मालां हृदाभिमन्त्र्य।

सर्व रत्नमयीं नाथ दामनिं नवमालिकाम्।
गृहाण देव पूजार्थं सर्व गन्धमयीं विभो।

इति श्लोकेनाभिमन्त्र्य। मूलमन्त्रेण देव मुकुटे तां समर्पयेत्। ततः परिवारान् पूजयेत् ततो धूप दीप नैवेद्य ताम्बूलानि दत्त्वा दण्डवन्नत्वा दमनार्चां देवाय निवेदयेत्।

देव देव महेशान वाञ्छितार्थ प्रदायक।
कृत्स्नान् पूरय मे कामान् कामेश्वरि प्रियेति च।

ततो मूलमन्त्रं जपित्वा दशांशेन हुत्वा देवं विसृज्य गुरुं दमनैः सम्पूज्य ब्राह्मणान् संभोज्य देवाय निरवेदितं स्वयं भुञ्जीत। इति दमन पूजाविधिः।

चैत्र शुक्ल चतुर्दशी में दमन का अर्चन करे। वर्ष भर के अर्चन फल की सिद्धि के लिये पवित्रा का अर्चन करे। दमनार्चन प्रयोग पूजन दिवस के एक दिन पहले नित्यार्चन के बाद आसन स्थान पर जाकर क्रम से पवित्र स्थान को ग्रहण करके आसन पर बैठे। प्रार्थना करे।

अशोकाय नमस्तुभ्यं कामस्त्रिशोकनाशन।
शोकार्ति तत्र हर मे नित्यमानन्दजनयस्व मे।।

इस प्रकार प्रार्थना करके वहाँ पर रति-कामदेव की पूजा करे—

ह्रीं रत्यै नमः। क्लीं कामदेवाय नमः। ये पूजा मन्त्र हैं। तब यह मन्त्र बोले—श्री महेशस्य पूजार्थं नेष्यामि त्वां।

पंचगव्य से अभिसेचन करे। जल से प्रक्षालन करे। गन्धोदक से पूजन करे। अशोक की टहनी को पत्तों सहित लेकर पीले कपड़े से ढक दे। गीत गाते हुए वाद्य बजाते हुए घर पर ले आये। शिव का स्मरण करके पवित्र स्थान में स्थापित करे।

इसके बाद देवता के आगे बाँस के पात्र में उजले काले लाल पीले रंगों से छह दलों का कमल बनाकर उसके बाहर पीले रंग का भूपुर बनावे। उसके बाहर उजले लाल पीले वर्ण के तीन वृत्त बनावे। उसके

बाहर लाल रंग का चतुरस्र बनाकर पात्र मण्डल मध्य में दमन को स्थापित करे। तब रात्रि पूजा के बाद में अधिवासन करे।

पूर्वोक्त रति-काम मन्त्रों से दमन में रति काम की पूजा करे। अष्टदल के दलों में ॐ क्लीं कामाय नमः। ॐ क्लीं भस्म शरीराय नमः। ॐ क्लीं अनंगाय नमः। ॐ क्लीं मन्मथाय नमः। ॐ क्लीं वसन्तसखाय नमः। ॐ क्लीं स्मराय नमः। ॐ क्लीं इक्षु धनुर्धरायनमः। ॐ क्ली पुष्पबाणाय नमः से पूजा क्रमशः कपूर, गोरोचन, मदार, कस्तूरी, अगर, कुंकुम, आमला और चन्दन से फूलों के साथ करे। इसके बाद दमन की गन्ध पुष्प से पूजा करे। पुष्पांजलि को काम गायत्री के एक सौ आठ जप से अभिमन्त्रित करके पुष्पांजलि देवे। काम गायत्री—

कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय धीमहि तन्नो अनंग प्रचोदयात्॥
निम्नांकित श्लोक पढ़कर प्रणाम करे—

नमोऽस्तु पुष्पबाणाय जगदानन्दकारिणे।
मन्मथाय जगन्नेत्र रतिप्रीतिप्रदायिने॥

इसके बाद निम्नांकित श्लोक से देव को अभिमन्त्रित करे।

आमन्त्रितोऽसि देवेश प्रातःकाले मया विभो।
कर्त्तव्यं तु यथालाभं पूर्णपर्वं तवाज्ञया॥

देवता को आमन्त्रित करके पुष्पांजलि देकर दण्डवत् प्रणाम करे। दमने हुँ कहकर अवगुण्ठन करे। फट् से रक्षण करे। इति अधिवासन।

इसके बाद देव का स्मरण, गायन, जागरण करे। सद्योधिवासन में जागरण नही होता। प्रातःकाल में स्नान नित्यार्चन करके देश काल का स्मरण करके संकल्प करे—वर्षा चर्या यया: सम्पूर्णफलप्राप्तिद्वारा श्री शरभेश्वर प्रीत्यर्थं श्री शरभेश्वरं दमनेन पूजयिष्ये।

हाथ में दमन मंजरी को लेकर नमः से मन्त्रित करे।

सर्व मन्त्रमयीं नित्यां सर्वगन्धमयीं शुभाम्।
गृहाण मंजरीदेवं नमस्तेऽस्तु कृपानिधे॥

इस श्लोक को बोलकर घण्टादि बजाते हुए देव के मस्तक पर उसे समर्पित करे। दमन से निर्मित माला को 'नमः' से मन्त्रित करके यह श्लोक पढ़े—

सर्वरत्नमयींनाथ दामनिंनवमालिकाम्।
गृहाण देव पूजार्थं सर्वगन्धमयीं विभो।।

इस श्लोक से अभिमन्त्रित करके मूलमन्त्र से देव के मुकुट पर उसे पहना दे। इसके बाद परिवार पूजन करे। तब धूप दीप नैवेद्य ताम्बूलादि देकर दण्डवत् लेटकर प्रणाम करके दमनार्चा देव को निवेदित करे। प्रार्थना करे—

देव देव महेशान वांच्छितार्थं प्रदायक।
कृत्स्नान पूरय मे कामान् कामेश्वरि प्रियेति च।।

इसके बाद मूल मन्त्र जपकर दशांश हवन करे। देव का विसर्जन करे। गुरु की पूजा दमन से करे। ब्राह्मणों को भोजन करावे। देव को निवेदित भोजन स्वयं करे।

इति दमन पूजा विधि।



श्रावण शुक्ल चतुर्दशी में पवित्र पूजन

श्रावण शुक्ल चतुर्दश्यां पवित्रं पूजनम्। पूर्वोदीर्ण नित्यपूजान्ते स्वर्ण रौप्य ताम्रोत्पन्न तन्तुभिः पदसूत्रैः सदाचारया सधवया निर्मितं कार्पासतन्तुभिर्वा यथा सम्भवं त्रिगुणं त्रिगुणीकृत्य नव सूत्रिकां निर्माय पञ्चगव्येन प्रक्षाल्योष्मवारिणा प्रणवेनाभिषिंच्य मूलेनाष्टोत्तर शतमभिमन्त्र्य मूलगायत्र्या चाभिमन्त्र्य तया नव सूत्रोत्तम मध्यम कनिष्ठानि पवित्राणि कुर्यात् उत्तमानि जानु परिमितानि अष्टोत्तर शत नव तन्तुकानि षड्विंश ग्रन्थि युक्तानि मध्यमानि चतुः पञ्चाशन् नव तन्तुकानि ऊरु परिमितानि चतुर्विंशति ग्रन्थिकानि कनिष्ठानि सप्तविंशति नव तन्तुकानि नाभिमात्राणि द्वादश ग्रन्थिकानि एवमुत्तम मध्यम कनिष्ठानि पवित्राणि कृत्वा कुंकुम रोचनादिभिर्ग्रन्थीन् रञ्जयित्वा तानि वैणव पात्रे संस्थाप्य सितवस्त्रेणाच्छाद्य द्वादश ग्रन्थिकं द्वादश नव सूत्रीकं ग्रन्थि पवित्र कृत्वा सप्त विंशति नव सूत्रीभिर्गुरु पवित्रं सप्त विंशति नव सूत्र्याग्नि पवित्रं षड्विंशत्या स्व पवित्रञ्च यथाशोभं तत्र ग्रन्थीन् दत्त्वा गोरोचनादिना रञ्जयित्वा तानि पात्रान्तरे न्यस्य पूजार्थं षोडशदलं पद्मं नील पीत शोण माञ्जिष्ठ श्वेत सिन्दूर धूम्र कृष्णाख्यैरष्टवर्णैरचयित्वा तद्बहिः सूर्य सोमाग्नि संज्ञं सित पीतारुणं क्रमान्मण्डलत्रयं कृत्वा तद्बाह्ये सितरुणं वाष्टदलं कृत्वा कुसुमादिभिः सम्पूज्य तस्योपरि अलंकृत वितानं वध्वा मण्डले कलशं संस्थाप्य तत्र देवं सम्पूज्य पायस नैवेद्यं दद्यात् देवाग्रे पवित्रं पात्रं न्यस्याधिवासयेत्। उक्त सूत्रस्यालाभे यथारुचिः ज्येष्ठादीनि पवित्राणिणि कुर्यात्। अथ तेषु पवित्रेषु द्वाविंशति देवानावाह्य पूजयेत्। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। महेश्वराय नमः। एतास्त्रिसूत्रो देवताः।

ॐकाराय नमः। चन्द्रमसे नमः। ब्रह्मणे नमः। नागाय नमः। कार्तिकेयाय नमः। सूर्याय नमः। सदाशिवाय नमः। विश्वेभ्यो देवेभ्यो

नमः। इति नव सूत्री देवताः। क्रियायै नमः। पौरुषायै नमः। वीरायै नमः। अपराजितायै नमः। विजयायै नमः। जयायै नमः। मुक्तिदायै नमः। सदाशिवायै नमः। मनोन्मन्यै नमः। सर्वतोमुख्यै नमः। एताः ग्रन्थिदेवताः। आवाहनी। स्थापिनी। संन्निधापनी। सन्निरोधिनी। सम्मुखी करणी। सकली करणी। अवगुण्ठनी। अमृत करणी। परमी करणी। एताभिर्मुद्राभिः पवित्र देवतानां ब्रह्मादीनां आवाहनादिकं पदार्थानुसमयेन काण्डानु समयेन वा कृत्वा गन्धादिनार्चयेत्। पवित्रं प्रणवेन धूपयित्वा नमः इत्यभिमन्त्र्य देवं प्रणम्य प्रार्थयेत्।

ॐ आमन्त्रितोऽसि देवेश सार्धं देव्या महेश्वरः।
मन्त्रै सलोकपालैश्च सहितं परिवारकैः।
आगच्छ भगवन्नीश विधि सम्पूर्त्ति कारक।
प्रातस्त्वां पूजयिष्यामि सान्निध्यं कुरु शालुव।

ततो गन्ध पवित्रे प्रभोः पादयोर्विन्यस्य देवं स्तुवन् गायन् रात्रौ जागरणं कुर्यात्। इत्यधिवासनम् सद्योऽविधवासन पक्षे न जागरणम्। प्रातर्नित्यार्चनं कृत्वा कनिष्ठं पवित्रं मूलेनाष्टोत्तर शतवारम् अभिमन्त्र्य घण्टावाद्यादि घोषं कारयन् जयशब्द पूर्वकं देवकण्ठे मूलेनार्पयेत्। एवमेव मध्यमोत्तमे अर्पयेत्। कनिष्ठादि पवित्रार्पण समये क्रमाद्देवं श्वेतं रक्तं पीतं ध्यायेत्। उत्तमं पवित्रं मूलाभिमन्त्रितं देवस्य मुकुटेऽर्पयेत् ततः शत पुष्पैः सह स्वर्ण पुष्पं मूलाभिमन्त्रितं देवमुर्ध्नि समर्प्य धूपदीपादि समर्पयेत्। ततो मूलं जपित्वा अग्निसंस्थाप्य तत्र देवमाबाह्य होमं विधाय मूलेनाग्निपवित्रं देवतां स्मरन् अग्नौ समर्पयेत्। ततो देवं समुद्वास्य वह्निमात्मनि संयोज्य पुष्पाञ्जलिं विधाय।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहींन कृपानिधे।
पूजनं पूर्णतामेतु पवित्रेणार्पितेन मे।

इति सम्प्रार्थ्य देवं हृदये संयोज्य गुर्वन्तिके गत्वा स्वागे गुरौच षडङ्गं विन्यस्य पाद्यादि दत्वा वस्त्रालङ्करादिभिः सम्पूज्य तत्पवित्रं

तद्हस्ते समर्प्य दक्षिणां दत्वा प्रणम्य स्व पवित्रं धृत्वा ब्राह्मणान् भोजयित्वा बन्धुभिः सह भुञ्जीत। गुर्वभावे तत्पुत्रादि पूजनम्। इति पवित्रार्पणम्।

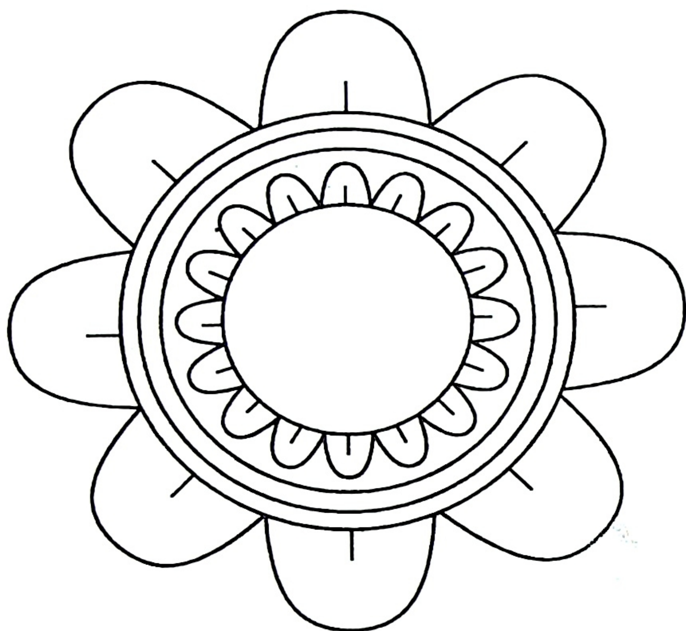
अन्येस्वपि उपरागादौ अपि सौम्यायनादिषु।
कुर्यादलभ्य योगेषु विशेषं देवतार्चनम्।

श्रावण शुक्ल चतुर्दशी में पवित्र पूजन करे। पूर्वोक्त नित्य पूजा के बाद सोना, चाँदी, ताम्बे के तन्तुओं के पट्ट या सूत्रों से या सदाचारी सधवा स्त्री निर्मित कपास के सूतों से यथा संभव तीन धागों को त्रिगुणी कृत करके नव सूत्रिका बनावे। पंचगव्य से प्रक्षालित करके गर्म जल से 'ॐ' बोलकर अभिसिंचन करे। मूल मन्त्र के एक सौ आठ जप से अभिमन्त्रित करे। मूल गायत्री से भी अभिमन्त्रित करे। उसमें नव सूत्र से उत्तम मध्यम कनिष्ठ पवित्रा बनावे। उत्तम पवित्रा की लम्बाई घुटनों तक होती है। उसमें एक सौ आठ गाँठ बनावे। मध्यम पवित्रा की लम्बाई उदर तक होती है। उसमें ५४ चौवन गाँठ लगते है। कनिष्ठ पवित्रा की लम्बाई नाभि तक होती है। उसमें सताइस गाँठे लगते हैं। नाभि तक की लम्बाई वाली पवित्राओं में क्रमश ३६, २४ और १२ गाँठे लगते हैं। इन्हें ज्येष्ठ आदि कध्वहं या उत्तम मध्यम कनिष्ठ कहते हैं।

गाँठों को कुंकुम गोरोचन आदि से रंगना चाहिये। इसके बाद उन्हें किसी पात्र में स्थापित करके उजले वस्त्र से ढक दे। पुनः बारह गाँठ वाली बारह नव सूत्री पवित्रा बनावे। सताइस ग्रन्थि वाली पवित्रा नव सूत्रिका से गुरु के लिये बनावे। सताइस ग्रन्थिवाली पवित्रा अग्नि के लिये और छब्बीस गाँठ वाली पवित्रा अपने लिये बनावे। उन्हें दूसरे पात्र में रख गोरोचनादि से रंग दे।

पूजा के लिये षोडशदल कमल बनाकर उसमें नीला, पीला, लाल, भूरा, उजला, सिन्दूरी, धूम्र, काला रंग भरे। उसके बाहर श्वेत, पीला, लाल रंग के सूर्य सोम, अग्नि नामक तीन वृत्त बनावे। उसके बाहर लाल या उजला रंग का अष्टदल कमल बनावे।

पवित्र पूजन यन्त्र



पुष्पादि से पूजा करे। उसके ऊपर अलंकृत वितान बाँधे। मण्डल में कलश स्थापित करे। वहाँ देव का पूजन करे। नैवेद्य में पायस चढ़ावे। देवता के आगे पवित्राओं को रखकर अधिवासन करे। उक्त सूत्र न मिलने पर यथा रुचि ज्येष्ठादि पवित्रा बनावे। उन पवित्राओं में बाइस देवताओं को आवाहित करके पूजा करे।

पहले तीन त्रिसूत्री देवों की पूजा करे–ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ महेश्वराय नमः।

नवसूत्री के नव देवों की पूजा करे–ॐ ॐकाराय नमः। ॐ चन्द्रमसे नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ नागाय नमः। ॐ कार्तिकेयाय नमः। ॐ सूर्याय नमः ॐ सदाशिवाय नमः। ॐ विश्वेदेवेभ्यो नमः।

दश ग्रन्थि देवताओं की पूजा इस प्रकार करे–ॐ क्रियायै नमः। ॐ पौरुषाय नमः। ॐ वीरायै नमः। ॐ अपराजितयै नमः। ॐ

विजयायै नमः। ॐ जयायै नमः। ॐ मुक्तिदायै नमः। ॐ सदाशिवाय नमः। ॐ मनोन्मन्यै नमः। ॐ सर्वतोमुख्यै नमः।

आवाहनी, स्थापिनी, सन्निधापनी, सन्निरोधिनी, सम्मुखीकरणी, सकलीकरणी, अवगुण्ठनी, अमृत करणी, परमीकरणी। इन दश मुद्राओं से पवित्रा के देवता ब्रह्मादि का आवाहनादि पदार्थ अनुसमय से काण्ड अथवा अनुसमय से कृत्वा गन्धादि से पूजा करे। पवित्रों को ॐ बोलकर धूपित करे। नमः से अभिमन्त्रित करे। तब प्रणाम करके प्रार्थना करे।

ॐ आमन्त्रितोऽसि देवेश सार्धं देव्या महेश्वरः।
मन्त्रैः सलोकपालैश्च सहितं परिवारकैः।।
आगच्छ भगवन्नीश विधिसम्पूर्तिकारकः।
प्रातस्त्वां पूजयिष्यामि सान्निध्यं कुरु शालुव।।

तब गन्ध पवित्रा प्रभु के पैरों पर चढ़ा दे। देव की स्तुति गायन करे। रात्रि जागरण करे। इति अधिवासन। सद्यः अधिवासन में रात्रिजागरण नहीं होता।

प्रातः नित्य अर्चन करके कनिष्ठ पवित्रों को मूल मन्त्र के एक सौ आठ जप से अभिमन्त्रित करे। घण्टावादन आदि घोष करे। 'जय' बोलते हुए मूल मन्त्र से देव के कण्ठ में पवित्रा को अर्पण करे।

इसी प्रकार मध्यम और उत्तम पवित्राओं को अर्पित करे। कनिष्ठादि पवित्राओं के अर्पण के समय क्रम से श्वेत लाल पीले वर्ण के देव का ध्यान करे। उत्तम पवित्रा को मूल मन्त्र से अभिमन्त्रित करके देव के मुकुट पर चढ़ावे। तब गुलाब या कमल के साथ स्वर्ण पुष्प को मूल से अभिमन्त्रित करके देव के मूर्धा पर समर्पित करे। धूप दीपादि समर्पित करे तब मूल मन्त्र का जप करे।

इसके बाद अग्नि स्थापन करके उसमें देव का आंवाहन करके हवन करे। मूल मन्त्र से अग्नि और पवित्रा देवता का स्मरण करके अग्नि को समर्पित करे। तब देव का समुद्वासन करे। अग्नि के साथ अपने आत्मा को जोड़कर पुष्पांजलि देवे। प्रार्थना करे।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं कृपानिधे।
पूजनं पूर्णतामेतु पवित्रेणार्पितेन मे।।

ऐसी प्रार्थना के बाद देवता को हृदय में बैठाकर गुरु के निकट जाये। अपने शरीर में षडंग न्यास करके गुरु के षडंगों में भी न्यास करे। पाद्यादि देकर वस्त्र अलंकार आदि से पूजा करे। गुरु की पवित्रा उन्हें देकर दक्षिणा देवे। प्रणाम करे। अपनी पवित्रा धारण करके ब्राह्मणों को भोजन करावे। बन्धुओं के साथ स्वयं भी भोजन करे। गुरु के न होने पर उनके पुत्र की पूजा करे। इति पवित्रार्पणम्। अन्य ग्रहणादि में सौम्यायनादि में, विशेष अंलभ्य योगों में देवता की पूजा करना चाहिये।

माघ शुक्ल चतुर्दश्यार्चनम्।

आषाढ़शुक्लचतुर्दश्यां प्रस्वापनोत्सवः। कार्तिकशुक्ल चतुर्दश्यां उत्थापनोत्सवः। माघशुक्लचतुर्दश्यां विशेष पूजा। एवं तत्तत्कालिकं पुष्पफलादिभिर्विशेषपूजा कीर्तितेयं शिवम्।

शरभार्चा पारिजाते रामकृष्ण विनिर्मिते।
नैमित्तिकामोदभृतः पञ्चमस्तवकोऽगमत्।

इति श्रीमदापदेवसूरिसूनुरामकृष्ण विनिर्मिते शरभार्चा पारिजाते नैमित्तिकार्चन स्तवकः पञ्चमः समाप्तिमगमत्।

आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी में प्रस्वापन उत्सव होता है। कार्तिक शुक्ल चर्तुदशी में उत्थापन उत्सव होता है। माघ शुक्ल चतुर्दशी में विशेष पूजा होती है। इस प्रकार उस समय उत्पन्न फूल फलादि से विशेष पूजा शुभद होती है।

शरभार्चा पारिजाते रामकृष्ण विरचिते समाप्तिऽगम।

कुछ काम्य प्रयोग

अथ काम्याः केचन् प्रयोगाः वक्ष्यन्ते।

आज्यमाहिषिकञ्चैव नवनीतन्तु यो नरः।
हुनेत्तत्र तु मूलेन साध्यनामपुरस्सरम्।
सद्यो वशो भवेत् क्षिप्रं सत्य सत्यं न संशयः।
नारी च दासी भवति शिवेन परिभाषितम्।

गाय की घी और भैंस के मक्खन से जो साध्य नाम के साथ मूल मन्त्र से हवन करता है उसके वश में शीघ्र साध्य हो जाता है। यह सत्य है। इसमें संशय नहीं है। शिव के कथनानुसार नारी दासी हो जाती है।

प्रयोगान्तर–दूर्वानावृताखण्डैर्गोधूमैश्च विशेषतः तिललाजैः सर्षपैश्च मिश्रीकृत्य हुनेत्ततो। त्रिदिनाच्छत्रु संघाताः पलायन्ते न संशयः।

प्रयोगान्तरम्

मधुं मधूकं मधुकं दशाहं सहस्रमेकैक दिने वरेण्ये। होमं प्रकुर्यात् प्रयतो मनीषी समस्त दुर्वार भयात् विमुक्त्यै।। लवंगमेलं मधुकञ्च कोष्ठं तिलं घृतं चम्पक कुड्मलञ्च। दिने सहस्त्र प्रयतो दशाहं उन्माद तापज्वर भूत शान्त्यै।।

श्री भार्गवीभिर्नव रात्रहोमैः प्रयान्ति शान्तिं कुपिताश्च देवाः। उदुम्बराश्वत्थ समित्सहस्रैः कुर्याच्चतुर्थ ज्वर भूतशान्त्यै। पलाशशाखाभिरभीष्टसिध्यै रक्षां हि कुर्यादथ खादिरोत्थैः। कुर्यात्पुनर्वैवहुमित्रकामस्त्वनन्तरायामश मीसमिद्भिः।

पुत्राय कुर्यादय दीपिकाभिः प्रसादसिद्धये करवीरपुष्पैः।। वश्याय कुर्यान्मधुसिक्त पद्मैराकर्षणायस्मर पञ्चबाणैः।। अरविन्दमशोकञ्च चूतञ्च नव मल्लिकाः। नीलोत्पलञ्च पञ्चैते पञ्च बाणस्य सायकाः।। विद्वेषणायाथ द्विषांघ्रियोत्थैः स्तम्भक्रियायै विजया प्रसूनैः। उच्चाटनाय स्नुहि बालपत्रैः संहारणायार्ककटु स्नुहीभिः।। धात्तूरशाखा फल पत्र पुष्पैरुन्मादनायोश्च शिखां विमुक्त्यै।। यद्धान्य होमं हुतमस्य शीघ्रं तद्धान्य राशेस्तनुते विवृद्धिम्।। दाडिमीकुसुम जालकैर्नरा मन्मथत्वमुपायान्ति सुभ्रुवाः। एवमेव नियतं रवेर्दिने कारयेदखिल काम्य सिद्धये।। अन्नेन चान्नं पयसा पयश्च घृतेन भाग्यं मधुना च नादम्।। तैलेन सारं दधिभिश्च पुष्टिं चूतप्रवालैरभि रूप वृद्धिम्।। त्रिकटु सर्षप हिङ्ग्वजमोदा तुरगमौलिससैन्धव जीरकम्। सघृत पारद टङ्कण युक्तं शरभ होम परिक्षयमेतत्।। साध्यर्क वृक्षेण विनिर्मिताकृतो वायुं समुत्पाद्य मनोः शतेन। श्वेतार्क दुग्धेन ततोष्ठ चूर्णं पिष्ट्वा समालिप्य वितप्य वह्नौ। लेप्यं प्रताप्याथ पुनः प्रलिप्य प्रताप्य लिप्त्वा निखनेत् श्मशाने। दत्त्वा वलिं मन्त्रमथत्रिवारं जप्त्वा ततस्नानमथाचरित्वा।। जत्त्वा सहस्रं शरभेश्वराख्य जपावसाने निखिलैरवद्यः। शरीर पिण्डं तरसा विहाय सद्यो रिपुः काल पुरीं प्रयाति।। तत्र होम द्रव्यानां नामानि–

मधु क्षौद्रं मधुकं मधुकपुष्पं मधुकयष्टिः मधुश्री भार्गवी श्वेतदूर्वा दीपिका पुत्रजीवकाष्टौ कूट त्रिकटु शिफेति मूलम्। गरुड मौलिः तत्संज्ञमेव अष्ट चूर्णं त्रिकटु जीरकद्वयं हिङ्ग्वजामोदमिति प्रयोगान्तरम्।। सङ्गृह्य सत्साध्य विहङ्गमाङ्ग सूत्रेण कोदण्डमिवाथ वद्धवा। साध्याङ्गजैर्दक्षपदाङ्गमृद्भिः कृत्वाथ कृत्तिं प्रतिकल्प्य वायुम्।। मञ्जिष्ठमालिप्य मुखे च कण्ठे त्वलात चूर्णं त्वथ शेष देहे। तदस्थिरोषो करेण कण्ठे मन्त्रं समुच्चार्य विमुच्य चैवम्। शत् प्रयोगात्सरिपुः स्वदेहात् प्रयाति याम्यंपुरमाशुघोरम्।। कृत्वा साध्य चतुष्पदोऽस्थि निचये मृत्कृष्टिकां कृत्तिकां। तस्याः प्राणक वस्त्रभूषण समालेपाञ्जनै श्चन्दनैः। आभूष्यस्व करेण मूर्ध्नि करे स्पृष्ट्वा स तं मारुतम्।। जप्त्वा मन्त्र सहस्रकच्च विधिवत् खड्गेन तां पीडयेत्। यस्मिन्पीडित मन्त्र शत्रु तनुषु क्षिप्तं तु तस्मिन् स्थले। पीडां कुर्वन्ति नून साग्नि तपनादाविज्वराङ्गो भवेत्।। अर्क कुर्वन्ति नून साग्नि तपनादाविज्वराङ्गो भवेत्।। अर्क क्षीर कटु त्रयेण सहिता वह्नौ प्रदग्ध्वा तदा शत्रुः काल पुरं प्रयाति तरसा श्री सालुवाज्ञावशात्।। कृत्तिं कृत्वा तु साध्य क्षिमिमुतिततैः रोक्षिमा लिप्य तस्याम्। वायुं संस्थाप्य जप्त्वा मनुमथ शतकं क्षार तोयेन चोक्तम्। कुर्यान्निक्षिप्तमन्त्र प्रपचन करणैः शत्रु लोकस्तदानीं प्रायः संताप पूर्वज्वर वर सहिताः सम्यगार्त्ता भवन्ति।। साध्यद्रुत्वं मनोज्ञां विविध कृति युतां तन्तुनैकीं कृतान्ताम्। वायुं संस्थाप्य तस्याः शिरसि तनयकं जन्तुमालेषयित्वा नाशे मौलिं च कण्ठे भ्रमर युगपथो जाठरे त्वाखुसानुं। जप्त्वा मन्त्रं तु मन्त्री द्वितीयमथ खनेद्वैरिनाशाय कोष्ठे।।

दूव, गुड़, गेहूँ, तिल, लावा, सरसों को मिलाकर तीन दिनों तक हवन करने से शत्रु समूह भाग जाता है। इसमें संशय नहीं है।

प्रयोगान्तर में कहा गया है कि मधु और महुआ से दश दिनों तक प्रत्येक दिन एक हजार हवन करने से मनीषी के सभी दुर्वार भय से छुटकारा हो जाता है। उन्माद, ताप ज्वर, भूत शान्ति के लिये लवंग, मधु, कूठ, तिल, घी, चम्बा के फूलों से दश दिनों तक प्रतिदिन एक हजार हवन करे।

श्री भार्गवी से नव रातों में हवन से क्रुद्ध देवता शान्त हो जाते

है। चातुर्थिक ज्वर और भूत शान्ति के लिये पीपल और गूलर की समिधाओं में एक हजार हवन करे।

पलाश की समिधा से हवन करने से अभी सिद्धि होती है।

खैर की समिधा से हवन करने पर रक्षा होती है। बहुत से मित्रों की कामना से पुनर्नवा से हवन करे। शमी की समिधा से हवन उसके बाद करे।

तथा पुत्र प्राप्ति के लिये ज्योतिष्मती से और प्रसन्नता प्राप्ति के लिये कनैल के फूलों से हवन करे। वशीकरण के लिये मधुराक्त कमलों से हवन करे। कामदेव के पाँच बाणों अर्थात् कमल अशोक आम मल्लिका और नील कमल से हवन आकर्षण के लिये करे। विद्वेषण के लिये वैरी के पैरों की धूल से और स्तम्भन के लिये भांग के फूलों से हवन करे। उच्चाटन के लिये थूहर के नये पत्तों से और मारण के लिये अकवन सोंठ और थूहर से हवन करे। धतूर के शाखा पत्र फल फूल से हवन उन्मादन के लिये करे। शिखा से हवन करने पर उन्माद ठीक हो जाता है। जिस अन्न से हवन होता है उसकी वृद्धि शीघ्र होती है। अनार के फूलों से हवन करने पर मनुष्य को कामदेवत्व प्राप्त होता है। इस प्रकार का हवन रविवार में सभी काम्य की सिद्धियों के लिये करे। अन्न के हवन से अन्न, दूध से दूध, घी से भाग्य, मधु से नाद, तेल से सार, दही से पुष्टि होती है। आम और मुंगा के हवन से रूप वृद्धि होती है। त्रिकटु, सरसों, हिंग, अजामोद, तुरगमौलि तथा सेन्धा नमक, जीरा, घी, पारद और टंकण को मिलाकर हवन करने से यहाँ नाश होता है। साध्य नक्षत्र वृक्ष से मूर्ति बनाकर प्राण प्रतिष्ठा करे। एक सौ मन्त्र जप करे। उजले अकवन के दूध और चूर्ण से पुत्तली के ओठ में लेप लगा कर आग में तपावे, पुनः लेप लगाकर त्रपावे पुनः लेप लगाकर श्मशान में गाड़ दे। बलि देकर तीन बार मन्त्र जंपे, तब स्नान करे। स्नान के बाद शरभेश्वर मन्त्र का एक हजार जप करे। जप खत्म होने पर शरीर पिण्ड छोड़कर शत्रु शीघ्र यमलोक में चला जाता है।

तत्र होम द्रव्य नामानि—

मधुक्षौद्र, महुआ, मधुयष्टि, मधुश्री, मधुक, मधुक पुष्प, भार्गवी, श्वेत दूव, ज्योतिष्मती, पुत्रजीव काष्ठ, कूट, त्रिकटु शिफामूल, गरुड़

मौलि, अष्टि चूर्ण, त्रिकटु दो प्रकार के जीरा, हिंग ग्वजामोद। इन द्रव्यों को एकत्र करके साधकर विहंगभांग सूत्र या धनुष से बोधे। साध्य के दाएँ पैर के नीचे की धूल मिट्टी से प्रतिमा बनावे। प्राण प्रतिष्ठा करे। मुख में मंजीठ का लेप लगावे। कण्ठ और पूरे शरीर में त्वलात चूर्ण लगावे। उसके कण्ठ की हड्डी को क्रोध से मन्त्र बोलकर कण्ठ से बाहर कर दे। ऐसा प्रयोग एक सौ बार करने से शत्रु यमलोक में चला जाता है।

साध्य चतुष्पद् अस्थि निचय लेकर मिट्टी में मिलाकर प्रतिमा बनावे। उसे साध्य के प्राण भूषण वस्त्र लेप अंजन चन्दन से अलंकृत करके प्रतिमा के मस्तक पर हाथ रखकर 'यं' बीज जप करे। मूलमन्त्र एक हजार जप कर खड्ग से उत्पीड़ित करे। शत्रु प्रतिमा के जिस अंग को पीड़ित किया जाता है उसके उस अंग में पीड़ा होती है। अग्नि पर तपाने से ज्वर से पीड़ित होता है। उस प्रतिमा को अकवन के दूध में कटुत्रय मिलाकर लेप लगाकर अग्नि में दग्ध करे तो शत्रु यमलोक में चला जाता है। ऐसी ही शालुव की आज्ञा है।

साध्य के दाएँ पैर के नीचे की धूल मिट्टी से उसकी प्रतिमूर्ति बनाकर उसमें रोक्षिमा का लेप लगावे। प्राण प्रतिष्ठा करके एक सौ बार मन्त्र जपते हुए उस पर नमकीन पानी का छींटा मारता रहे तब शत्रु बुखार से आर्त हो जाता है।



काम्य अभिषेक (मन्त्र वर्णन)

अभिषेक विधिं वक्ष्येऽलङ्कृते मण्डपे शुभे।
गोमयेनाथ संलिप्य पृथिवीं चतुरस्त्रकाम्।
गन्धाक्षतैस्तु संकीर्य तण्डुलेन सितेन च।
नवकोष्ठं समालिख्यालं कृत्य कुसुमादिभिः।
मध्यकोष्ठे लिखेद्यन्त्रं तन्मध्ये चतुरस्त्रकम्।
नवकुम्भं च तन्मध्ये प्रतिष्ठाप्य नवोशुकम्।
तन्तुना परिवेष्ट्याथ धूपदीपौ प्रदर्शयेत्।
गन्धमाल्यैरलंकृत्य गन्धयेद्धटमञ्जसा।
पद्मरागं प्रजाकामस्त्वायु कामस्तु मौक्तिकम्।
रजतंबृद्धि कामस्तु तेजस्कामस्तु विद्रुमम्।
वैडूर्य वश्य कामस्तु सर्वकामत्वशेषकम्।
हिरण्यं वाथ तत्स्थाने घटमध्ये विनिक्षिपेत्।

अब अभिषेक विधि कहता हूँ। अलंकृत शुभ मण्डप को गोबर से लीपे। उसमें चौकोर भूमि लेकर नवकोष्ठ बनावे। उस पर गन्धाक्षत छींटे। उजले चावल चूर्ण से उसे भरे। फूलों से सजावे। चतुरस्त्र के नव कोष्ठों में नव कलश स्थापित करे। उन्हें धागों से वेष्ठित करे। धूप दीप दिखावे। गन्ध माला से अलंकृत करे। कलशों में गन्ध डाले। प्रजा की कामना से पद्मराग, आयु की कामना से मोती, उन्नति की कामना से चाँदी, तेज की कामना से मूँगा, वश्य के लिये वैडूर्य सभी कामों के लिये शेष रत्नों को डाले। कलशों में सोना डाले।

देवतावाहनन्तत्र प्रकुर्यादासनादिकम्।
विश्वामित्रेण तत्कुम्भं दुर्वयासंस्पृशन् बुधः।
अष्टोत्तर सहस्त्रं तु जपेन्मन्त्रं समाहितः।
कृतस्नातः समाकृष्य भूताङ्गत्वादवाससम्।
प्राङ्गमुखं देव दत्तं तं कुम्भपाणिरुदन्मुखः।
अभिषेकं गुरुः कुर्यात् छुद्रपापाद्विमुक्तये।

कलशों में देवताओं का आवाहन करे। आसनादि प्रदान करे। विश्वामित्र० मन्त्र से उस कलश को दूब से स्पर्श करे। एकाग्र मन से एक हजार जप करे। साध्य को स्नान कराकर वस्त्र पहनाकर पूर्वमुख बैठायें। स्वयं हाथ में कुम्भ लेकर उत्तर मुख बैठकर क्षुद्र पापों से मुक्ति के लिये साध्य का अभिषेक करे।

पञ्चाहं वातरोगस्य शिरोरोगस्य मण्डलम्।
अनुभोगं पिशाचस्य त्वस्मारस्य वत्सरम्।
अभिषेकेन सत्सर्वं प्रशमं याति सुन्दरी।
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन अभिषेकं समाचरेत्।

वात रोग गठिया से छुटकारे के लिये पाँच दिन अभिषेक करे। शिरदर्द आदि रोगों के नाश के लिये चालिस दिन अभिषेक करे। एक वर्ष तक अभिषेक करने से पिशाच और मृगी रोग से मुक्ति मिलती है। अभिषेक से सभी रोगों का प्रशमन होता है। इसलिये सभी यत्नों से अभिषेक करे।

अथ वन्ध्या चिकित्साख्यमभिषेकं वदाम्यहम्—

वीर्यवती वधूं शुद्धां कृतुस्नानदिनादितः।।
दशाहं जन्मवन्ध्याख्यं द्व्यधिकं काक वन्ध्यमम्।
मृतवन्ध्यां षोडशाहं तदन्ते तु विशेषतः।
ऋतश्चेति ऋचाकुम्भ शतवाराभिमन्त्रितम्।
अभिषिञ्चेत्ततः पश्चात् रक्षां कुर्वीत बुद्धिमान्।
सीसं षण्मासवीर्यञ्च ताम्रवत्सुरवीर्यकम्।
त्रिलोहं वत्सरार्द्धं तु रजतन्तु त्रिवर्षकम्।
भूर्जपत्रं चतुर्वर्षं पञ्चाब्दं पल्वलोदकम्।
दशवर्ष त्रिकार्ष्णायः कनकं यावदायुषम्।
तस्मात् हिरण्यमथपदे साध्यमन्त्रं विलिख्य तु।
तद्यन्त्रकेऽक्षरं पद्यं तत्तदावाह्यदेवतम्।
अक्षरदेवतास्तु पूजास्तवके निरूपिताः।

अब वन्ध्या चिकित्सा नामक अभिषेक को कहता हूँ। वीर्यवती वधू शुद्धा ऋतु स्नान के दिन से जन्म वन्ध्या का दश दिनों तक; काक वन्ध्या का बारह दिनों तक, मृतवत्सांश सोलह दिनों तक उसके बाद

विशेष 'ऋतंच' ऋचा के सौ जप से अभिमन्त्रित ऋचा कुम्भ के जल से अभिषेक करे। इसके बाद बुद्धिमान रक्षा करे।

इसके बाद धारण यन्त्र बनावे। सीसे पर निर्मित यन्त्र का प्रभाव छै महीनों तक, ताम्र यन्त्र का एक वर्ष तक, चाँदी पर निर्मित यन्त्र का प्रभाव तीन वर्ष तक। त्रिलोह यन्त्र का प्रभाव छह महीने तक, भोज पत्र पर निर्मित यन्त्र का प्रभाव चार वर्ष पल्वलोदक यन्त्र का पांच वर्ष, त्रिकाष्र्णाय यन्त्र का दशवर्ष और सोने के पत्र पर निर्मित यन्त्र का प्रभाव जीवन भर रहता है। इसलिये सोने के पत्र पर ही साध्य मन्त्र अंकित करावे। उस यन्त्र के अक्षरों को कमल मानकर उनमें वर्ण देवताओं का आवाहन करे। अक्षर देवताओं का निरूपण पूर्वोक्त पूजा स्तवक में किया जा चुका है।

प्रत्येकं शतवारन्तु प्राणमन्त्रं जपेद्बुधः।
षोडशाद्युपचारन्तु कुर्यात्सर्वं यथाक्रमम्।
मूलेन च सहस्रन्तु प्रत्यहं प्रजपेच्छिवे।
अथ सा शुद्ध चित्ताख्या शुद्धाङ्गी शुद्ध वाससी।
ततस्तदादि षण्मासं निम्नगां नातिलंघयेत्।
भुगुवारे तु संस्थानं तदा पत्रस्य धूपनम्।
ब्राह्मणान् भोजयेद्देवि ऋतुस्नानाद्दिनेदिने।
तदा पयो घृताक्तान्नं ऋतुस्नाता पिपेष्य च।
भित्त्वा हृदष्टकं पीडमुपलेपित्तभूतले।
निक्षिप्य च करं ध्यात्वा तोयेन परिवेष्ट्य च।
आकाश भूतलं स्वर्ग वारुणो देवता स्वयम्।
इहागत्य मुदाकालं वदन्त्वाशु सुतां सुतम्।

प्रत्येक अक्षर देवता के नाम मन्त्र का जप सौ सौ बार करे। यथा क्रम सोलह उपचारों में पूजा करे। मूलमन्त्र का एक हजार जप प्रतिदिन करे। वह शुद्ध चित्तवाली पुत्रकामिनी शुद्धांगी, शुद्धवस्त्रधारिणी उस दिन से छै महीनों तक निम्नगा का लंघन न करे। शुक्रवार को स्नान करे और पत्र को धूपित करे। ऋतुस्नान के दिनों में ब्राह्मणों को भोजन करावे। इसके बाद धृताक्त अन्न खाकर दूध पीये। उपलेपित भूतल पर दण्डवत् लेटकर हाथों को आगे फैलाकर ध्यान करे और जल से परिवेष्टित करे। तब प्रार्थना करे—

आकाशभूतलस्वर्गवारुणो देवता स्वयम्।
इहागत्य मुदाकालं वदन्त्वाशु सुतां सुतम्।।

तथा च—

दशवारमिदं जप्त्वा स्फोटयेत्तु करं पुनः।
ततः पश्चात् प्रदेशस्थो जपेन्मन्त्रं पुनः पुनः।
प्रथमं काक आगत्य भक्षितमत्तु पिण्डकम्।
तद्दक्षिणे युग्मकञ्च पुत्री भवति निश्चयः।
पुत्रस्त्वयुग्मकं नूनं पिण्डेचेत्स्याद्विशेषतः।
प्रथमं प्रथमे मासि द्वितीयादि यथाक्रमम्।
उक्त लक्षण काले तु सा नारी गर्भिणी भवेत्।
एतद्विधानकं गुह्यं सर्व शास्त्रोत्तमोत्तमम्।
इत्थं ज्ञात्वा कलौमन्त्री सर्वकार्याणि कारयेत्।

तुलायां वृषभे कुंभे मीने सिंहे च वृश्चिके। रक्षाभिषेकौ कर्त्तव्यौ नान्ये मासि शुभावहौ। इत्याभिषेका।

दश बार इस श्लोक को जपकर चुटकी बजावे। उसके बाद वहीं पर बैठकर बार-बार मन्त्र का जप करे। पहले कौआ आकर यदि यमपिण्ड को खा जाय तो दो पुत्रियाँ होती हैं। जोड़ा पुत्र होना पिण्ड की विशेषता है। प्रथम पिण्ड खाने पर प्रथम माह में गर्भिणी होती है। द्वितीयादि यथाक्रम गर्भिणी होती है। यह गुह्य विधान सभी शास्त्रों में उत्तमोत्तम है। इसे जानकर मनुष्य कलियुग में सभी कार्य करे। तुला, वृष, कुंभ, मीन, सिंह वृश्चिक राशि के माह में रक्षाभिषेक करे। अंत्य महीनों में शुभावह नहीं है। इति अभिषेके।

प्रयोगान्तर

अथ प्रयोगान्तराणि—

सालुवमन्त्रराजेन शालीं सक्तून् तथैव च।
त्रिमध्वाक्तान् हुनेद्देवि योनिकुण्डे द्विरत्निके।
योनिमेखलया युक्ते चतुष्पात्र विधानतः।
षट्सहस्रं हुनेद्देवि भौमे रात्रौ समारभेत्।
पूर्णाहुतिं पुनर्भौमे एवं कुर्वन् समापयेत्।
राजा वा राजपत्नी वा सामान्य वनितापि वा।
सम्मोहनं भवेत् सद्यः सालुवस्य प्रसादतः।

अन्यत्र योनिकुण्डे योनि निषेधेऽपि वचनादत्र भवन्ति। भौमे रात्रौ समारभ्य सोम रात्रि पर्यन्तं हुत्वा अवशिष्टं भौमे रात्रौ हूत्वा पूर्णाहुतिं कुर्यादित्यर्थः।

प्रयोगान्तरम्

भौमे रात्रौ नग्नो भूत्त्वा वकुल तरोर्मूले दक्षिणाभिमुखो रक्त कम्बलासनो हरिद्रा मालया भौम पर्यन्तं द्वादश सहस्त्रजपादाकर्षणम्।

प्रयोगान्तरम्

भौम रात्रिमारभ्य सप्तरात्रं प्रत्यहं धत्तूरपुष्पैर्द्विसहस्त्रं जुहुयात् स्तम्भनं भवति।

प्रयोगान्तरम्

कर्पूर कस्तूरी गुञ्जामूलेन मर्दयित्वा तन्मध्ये मन्त्रं लिखित्वा प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा रक्त पुष्पैः सम्पूज्य सहस्त्रद्वयं जपेत्। एतच्च भौम रात्रिमारभ्य-अनुदिनं कुर्यात् ततस्तच्चन्दनगुलिकां कृत्वा ललाटे चन्दनं धारयेत्। यो यस्तं पश्यति स वश्यो भवति। पयसाक्तैः शमी समिद्भिस्त्रिदिनमष्टोत्तरशतहोमात् सर्वरोगनाशः। विभीतककाष्ठं वाम-हस्तेनादाय तत्पीठोपरि वज्रसनेनोपविश्य कृष्णाप्रतिपदमारभ्य तच्च-तुर्दशी पर्यन्तं शत्रुनामग्रथितमन्त्रमष्टोत्तरशतं जपित्वा वांछितार्थं लभेत्। सालुवं विधिना सम्पूज्य तत्प्रीतयेऽष्टाविंशति संख्यान् ब्राह्मणान् सम्पूज्य भोजयित्वा स्वाभीष्टं सम्प्रार्थ्य तद्दिनमारभ्यार्धे रात्रे सर्षप तैला-क्ताभिःष्णुहि समिद्भिर्दक्षिणाभिमुखोऽष्टोत्तरसहस्त्रं दशदिनपर्यन्तं जुहुयात्। सपुत्रपौत्रः सगणः शत्रुर्यमपुरं ब्रजेत्। इति। मारणम्। एतत्कर्त्तुः प्रायश्चित्त-मुक्तम् प्रायश्चित्त तु भो देवि सहस्यं कर्तुमिच्छताम्।

हस्तमात्रप्रमाणेन कुण्डं कुर्यात्समेखलम्।
स्वगृह्योक्तप्रकारेण अग्निस्थापनमाचरेत्।
जपञ्च प्राङ्मुखः कुर्याद्धोमं चोदङ्मुखस्तदा।
पञ्च वासनमात्रेण पापेभ्यो मुच्यते ध्रुवम्।

जपश्च पापानुसारेण अष्टोत्तरसहस्त्रमयुतं लक्षं यथा यथमूह्यम्। इदञ्च मारणं कुत्र कार्यं कुत्र न वा इति विवेचितम् शरभ तन्त्रे।

क्रियान्तरमुपालभ्य क्रियते येन यत्र तु।
तं प्रति क्रियया जेतुँ कालं नैव विचारयेत्।

अपवादं ब्रुवति यः सहायान्तैव हेतुना।
तं नरं क्रियया हन्तुर्दोषो नास्ति कदाचन।
गुरुमात् पुत्रद्रोही धर्मिणी मर्मसूचकः।
यस्तं मारयितुर्देवि दोषो नास्ति कदाचन।
धनधान्यगृहक्षेत्रधेनुपुस्तक चोरिताम्।
कुरुते यस्तु तं हन्तुर्दोषो नास्ति कदाचन।
वनितां ब्रह्म मध्यस्थां योऽवमानयति द्रुतम्।
गिरिजे तं नरं हन्तुर्दोषो नास्ति कदाचन।
व्यभिचारामपि वधूं बलात्कारेण योऽकरोत्।
तं यस्मारयितुर्देवि दोषो नास्ति कदाचन।
दम्पती मेलनं कालं प्रकाशं प्रकरोतितम्।
नराधमं समा हन्तुर्दोषो नास्ति कदाचन।
परकीयं स्वकीयञ्च दोषं यत्नेन गोपयेत्।
नरोत्तमं समाहन्तुँ मनसापि न चिन्तयेत्।
भूषणं दूषणं वापि न ब्रूत्वा पाति तां बधूम्।
तद्वातद्वापि संहन्तुं मनसापि न चिन्तयेत्।
गुरुपुत्रं गुरोर्वन्द्यं दीक्षितं सत्यवादिनं।
योगिनं व्रतमध्यस्थं मनसापि न चिन्तयेत्।

दुःखातिरेकात्तु भयाच्च कोपात् राजाज्ञया भीषण भाव भाज्यः पश्चात् क्षमध्वं विवंशान्यथोक्तं इति ब्रुवन्तं पुरुषं न कार्यम्।

एतद्रहस्यं सुबुधः समीक्ष्य क्रिया विधानं सकरोतु लोके।
तदेव नूनं शरभसेश्वराज्ञा नान्यत्र सर्वं विपरीतमेति।

सालुव मन्त्र राज से शाली चावल और सत्तू त्रिमधु रात्त करके द्विरत्निक योनि कुण्ड में हवन करे। मेखला युक्त योनि कुण्ड में चतुष्पात्र विधान से मंगलवार की रात में शुरू करके छै हजार हवन प्रतिदिन करे। अगले मंगलवार तक हवन करके पूर्णाहुति करके समाप्त करे। इससे राजा या राजरानी या सामान्य वनिता सालुव की कृपा से सम्मोहित होती है। अन्यत्र योनि कुण्ड में योनि का निषेध होने पर भी यहाँ होने का कथन है। मंगलवार की रात में प्रारम्भ करके सोमवार की रात तक

हवन करे। अवशिष्ट हवन मंगलवार की रात में करके पूर्णाहुति करे। यहाँ यही अर्थ है।

प्रयोगान्तर

मंगलवार की रात में नंगा होकर मौलसिरी के मूल के निकट दक्षिण तरफ मुख करके लाल कम्बल के आसन पर बैठकर हल्दी की माला से प्रतिदिन बारह हजार जप अगले मंगलवार तक करने से आकर्षण होता है।

प्रयोगान्तर

मंगलवार की रात में आरम्भ करके सात रातों तक प्रतिदिन धतूर के फूलों से दो हजार हवन करने से स्तम्भन होता है।

प्रयोगान्तर

कपूर कस्तूरी गुञ्जा मूल एक साथ पीसकर उससे मन्त्र लिखकर प्राण प्रतिष्ठा करे। लाल फूलों से पूजा करे। दो हजार जप करे। इसे मंगलवार की रात में आरम्भ करके प्रतिदिन करे। तब चन्दन की गोली बनाकर ललाट में चन्दन का टीका लगावे। इसके बाद उसे जो देखता है वह उसके वश में हो जाता है।

दूध से सिक्त शमी की समिधा से तीन दिनों तक प्रतिदिन एक सौ आठ हवन करने से सभी रोगों का नाश होता है।

बहेरे की लकड़ी को बाएँ हाथ से लाकर उसका पीढ़ा बनवाकर उस पर वज्रासन में बैठकर कृष्ण प्रतिपदा से आरम्भ करके चतुर्दशी तक १४ दिनों तक शत्रु नामाक्षरों से ग्रथित मन्त्र का एक सौ आठ जप प्रतिदिन करे तो वांछा पूरी होती है।

सालुव की पूजा विधिवत् करके सालुव की प्रीति के लिये अठाइस ब्राह्मणों की पूजा करे। भोजन करावे। अपना अभीष्ट उनसे कहे। अनुष्ठान प्रारम्भ होने के दिन की आधी रात से सरसौ बैलाक्त स्नुही की समिधाओं से दक्षिण दिशा में मुख करके एक हजार आठ हवन दश दिनों तक करे। इससे पुत्र पौत्र नौकर चाकर सहित शत्रु यम लोक में चला जाता है। इति मारण।

इसे करने के बाद प्रायश्चित करे। प्रायश्चित 'भो देवि सहस्यं क्रतुमिच्छताम्।' एक हाथ लम्बा चौड़ा गहरा कुण्ड मेखला सहित

बनावे। अपने गृह्य सूत्र में उक्त प्रकार से अग्नि स्थापन करे। पूर्व दिशा में मुख करके जप करे। उत्तर की ओर मुख करके हवन करे। पाँच दिनों तक ऐसा करने से पापों से मुक्त हो जाता है।

पाप के अनुसार जप

पाप के अनुसार जप १००८ या १०००० या एक लाख होता है। यह मारण कार्य कहाँ करना चाहिये और कहाँ नहीं करना चाहिये। इसका विवेचन शरभ तन्त्र में किया गया है। क्रिया में अन्तर करके जो किया जाता है उसकी प्रतिक्रिया के निवारण के लिये समय का विचार नहीं है। अपवाद यह है कि किसी की सहायता के लिये मारण क्रिया करने में कोई दोष नहीं है। गुरु, माता, पुत्र का द्रोही, धर्मिणी को दुख देनेवाले को मारने में दोष नहीं है। धन धान्य घर, खेत, गाय और पुस्तक चुराने वाले को मारने में भी दोष नहीं है। वनिता ब्रह्ममध्यस्थ को जो अपमानित करता है उसे मारने में कुछ दोष नहीं है।

अपनी वधू से बलात्कार रुप व्यभिचार भी करता है उसे मारने में कोई दोष नहीं है। दम्पति मिलनकाल को जो प्रकाशित करता है उसे मारने में कोई दोष नहीं है। नीच लोगों को मारने में कोई दोष नहीं होता। जो श्रेष्ठ मनुष्य दूसरों के दोष को और अपना दोष को भी यत्न से गुप्त रखता है उसे मारने का विचार मन से भी न करे। जो वधू अपने पति के भूषण दूषण को न कहकर जैसे तैसे सहती है उसको मारने के लिये मन से भी न सोचे। गुरुपुत्र, गुरु के वन्दनीय, दीक्षित, सत्यवादी, योगी, व्रतधारी के मारण का चिन्तन मन से भी न करे। दुखातिरेक से, भय से, क्रोध से राजाज्ञा के भीषण भाव का भागी होने पर क्षमा प्राप्त विवश अन्य यथोक्त पुरुष को नहीं मारना चाहिये। बुद्धिमान इस रहस्य की समीक्षा के बाद जो क्रिया विधान करता है वह शरभेश्वर की आज्ञा में ठीक है अन्यत्र सभी विपरीत है।



प्रयोग विशेष में ध्यान

ध्यान—१

अरुणमरुण मालालंकृतां शंकराग्रै-
विधृतपरशुशक्तिं पुष्पवाणेक्षु चापम्।।
विविध मणि फणीन्द्रैर्भूषणं भूषिताङ्गाम्।
शरभमखिलनाथं नौम्यहं सालुवेशम्।।
त्रिनयनमथ शूकश्याममालावतंसं
सहसकल रथांगस्त्वित्विदाभीतिहस्तम्।।
गृह्ण रिपुपिशाचस्तम्भविद्वेषसाध्यै
प्रतिदिनमिति मन्त्री भावयेत्सालुवेशम्।।

ध्यान—२

ज्वलदनलनिभं तं सूर्यचन्द्राग्निनेत्रम्।
स्वकरकलित शूलं खड्गखेटं कपालम्।।
सकलरिपुजनानां कण्ठहृदवक्त्रभेदम।
स्मरतु शरभमेव मारणोच्चाटनाय।।

ध्यान—३

सजलजलदनीलं चाष्टवाहुं त्रिनेत्रम्।
विविधचटुलपक्षं दीप्यमानोर्ध्व रम्यम्।।
अरि नरहितकोपस्पन्दमानाधरोष्ठं।
सकलरिपुविनाशं सालुवेशं नमामि।।

देह्यभीष्टमिति याचितंपुरा वाच्छितं परिददाति साधकैः। दानवारिभिरहर्निशं यथा पारिजात इव मानवैः शिवः।

अथ षट्कर्म प्रयोगे वसन्तादि निर्णयः—

सूर्योदयं समारभ्य घटिकादशकं क्रमात्।
ऋतवः स्युर्वसन्ताद्याः अहोरात्रं दिनेदिने।

वसन्त ग्रीष्म वर्षाख्य शरद्धेमन्त शिशिराः। हेमन्तः शान्तिके प्रोक्तो वसन्तो वश्यकर्मणि।

देहि अभीष्ट भोगने पर साधकों को शिवजी वांछित फल उसी प्रकार देते हैं जैसे कल्प वृक्ष वांछित फल देता है। दानव शत्रु को भी वांछित फल देते है।

षट्कर्म प्रयोग में वसन्त आदि ऋतु का निर्णय

सूर्योदय से प्रारम्भ करके दश घटी अर्थात ढाई घटी के क्रम से वसन्त आदि ऋतुएँ प्रति चार आवृत्ति में प्रति दिनरात में रहती है। अर्थात् सूर्योदय से ढाई घटी तक वसन्त, इसके बाद ढाई घटी ग्रीष्म इत्यादि छह ऋतुएं हैं—वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर। इस प्रकार हेमन्त ऋतु में शान्ति कर्म होते हैं और वसन्त में वश्य कर्म होते हैं।

तथा चामुण्डा तन्त्रे

जपेत् पूर्वमुखे वश्ये दक्षिणं चाभिचारिके।
पश्चिमे पौष्टिकं विद्यादौत्तरं शान्तिदं परम्।।

वशीकरण में पूर्वमुख, अभिचार में दक्षिणमुख, पोष्टिक में पश्चिम मुख और शान्ति कर्म में उत्तरमुख होकर मन्त्र जप करे।

अथ माला

मृतस्य युद्ध शून्यस्य दन्तेन गर्दभस्य तु।
कृत्वाक्षमालां जप्तव्यं शत्रूणां वधमिच्छता।।
भग्नेभदन्तमणिभिर्जपेदाकर्षकर्मणि ।
साध्यकेशसूत्रप्रौतेस्तुरङ्गदशनोद्भवैः ।।
अक्षमालां समादाय विद्वेषोच्चाटने जपेत्।

तिथयः—

पंचमी च द्वितीया च तृतीया सप्तमी तथा।
बुधेज्यवारसंयुक्ता ज्ञेया विद्वेष कर्मणि।
कृष्ण चतुर्दशी तद्वदष्टमी मन्दवारः।
उच्चाटै तिथिः शस्ता प्रदोषे च विशेषतः।
चतुर्दश्यष्टमी कृष्णा अमावास्या तथैव च।
मन्दभौमदिनोपेता शस्ता मारण कर्मणि।
बुध चन्द्रदिनोपेता पञ्चमी दशमी तथा।
पौर्णमासी तु विज्ञेया तिथि स्तम्भन कर्मणि।

शुभग्रहोदये कुर्याच्छुभानि च शुभोदये।
रौद्र कर्माणि रिक्तार्के मृत्युयोगे च मारणम्।

शत्रुओं के वध की इच्छा से युद्ध में मृत मनुष्य के दाँतों से और गदहे के दाँतों से अक्ष माला बनाकर जप करे।

आकर्षण कर्म में हाथी के भग्न दाँत की मणियों से माला बनावे। विद्वेषण-उच्चाटन में घोड़े के दाँतों से निर्मित मनकों को साध्य के केश निर्मित धागे में गूँथकर जप करे।

तिथियों का प्रयोग

विद्वेषण कर्म में पंचमी द्वितीया तृतीया सप्तमी तिथियों के बुधवार में जप करे।

उच्चाटन कर्म में कृष्ण चतुर्दशी अष्टमी शनिवार के प्रदोष काल में जप करे।

मारण कर्म में कृष्ण चतुर्दशी अष्टमी और अमावस्या तिथि और शनिवार मंगलवार प्रशस्त माने जाते हैं।

स्तम्भन कर्म में बुधवार, सोमवार, पंचमी, दशमी तथा पूर्णिमा तिथि प्रशस्त कहा गया है।

कल्याण के लिये शुभ ग्रहों के उदय काल में कर्म करे।

रौद्रकर्म रिक्ता तिथि और रविवार में करे। मृत्यु योग में मारण कर्म करे।

आसन

पद्माख्यं स्वस्तिकं भूयो विकटं कुक्कुटं पुनः।
वज्रं भद्रकमित्याहुः आसनानि मनीषिणः॥

मनीषियों ने पद्मासन स्वास्तिकासन विकटामन कुकुक्टासन वज्रासन भद्रासन को उत्तम कहा है।

मुद्रा का प्रयोग

षण्मुद्रा क्रमतो ज्ञेया पद्मपाशागदाह्वया।
मुसलासन खङ्गाख्या शान्तिकेषु सुकर्मसु॥
अग्निकार्ये जपेत् स्वाहा नमः सर्वत्र शस्यते।
शान्तिपुष्टिवशद्वेषा कृष्टोच्चाटनमारणे॥

स्वाहा स्वधा वषट् हुञ्च वौषट् फट् योजयेत् क्रमात्।
वश्याकर्षणसन्तापज्वरे स्वाहा प्रकीर्तयेत्।।
क्रोधोपशमने शान्तौ प्रीतौ योज्यं नमो बुधैः।
वौषट् सम्मोहने देयं पुष्टिं मृत्युं जपेषु च।।
हुंकारं प्रीतिनाशे छेदने मारणे तथा।
गृहेषु शान्ति कर्मस्याद्वश्यं च चाण्डिकागृहे।
देवालयेषु सर्वाणि श्मशाने क्रूरकर्म च।

शान्ति कर्म में पद्म, पाश, गदा, मुसल, खड्ग मुद्राओं को प्रदर्शित करे। हवन में स्वाहा जोड़े। नमः सर्वत्र प्रशस्त है। शान्ति में स्वाहा, पुष्टि में स्वधा, वश्य में वषट्, विद्वेषण में हुं आकर्षण में वौषट् और मारण में फट् जोड़कर मन्त्रोच्चार करे।

वशीकरण ज्वर सन्ताप में स्वाहा जोड़े। क्रोध निवारण में शान्ति मोहन में नमः जोड़े। सम्मोहन में वौषट् लगावे। पुष्टि जप में भी वौषट् लगावे। मारण जप, प्रीतिनाश, छेदन में हुं जोड़े। गृहशान्ति के लिये और वशीकरण में जप चण्डी मन्दिर में करे। सभी कर्म देवालय में करे। क्रूर कर्म श्मशान में करे।

प्रयोगान्तर कुलार्णव में

एकलक्षं जपेन्मन्त्रं ध्यान न्यास समन्वितः।
प्रयोगदोषशान्त्यर्थमात्मरक्षार्थकारणम् ।
नोचेत्फलं न प्राप्नोति देवता शापमाप्नुयात्।
शरभार्चा पारिजाते रामकृष्ण विनिर्मिते।
काम्यकर्मामोदभृतः षष्ठोऽयं स्तवकोऽगमत।।

इत्यापदेव सूरिसूनु रामकृष्ण विरचिते शरभार्चा पारिजाते षष्ठः स्तवकः।

प्रयोग दोष शान्ति के लिये आत्म रक्षा के लिये ध्यान न्यास करके एक लाख मन्त्र जप करे। अन्यथा फल नहीं मिलता बल्कि देवता का शाप मिलता है।

यन्त्र का प्रयोग

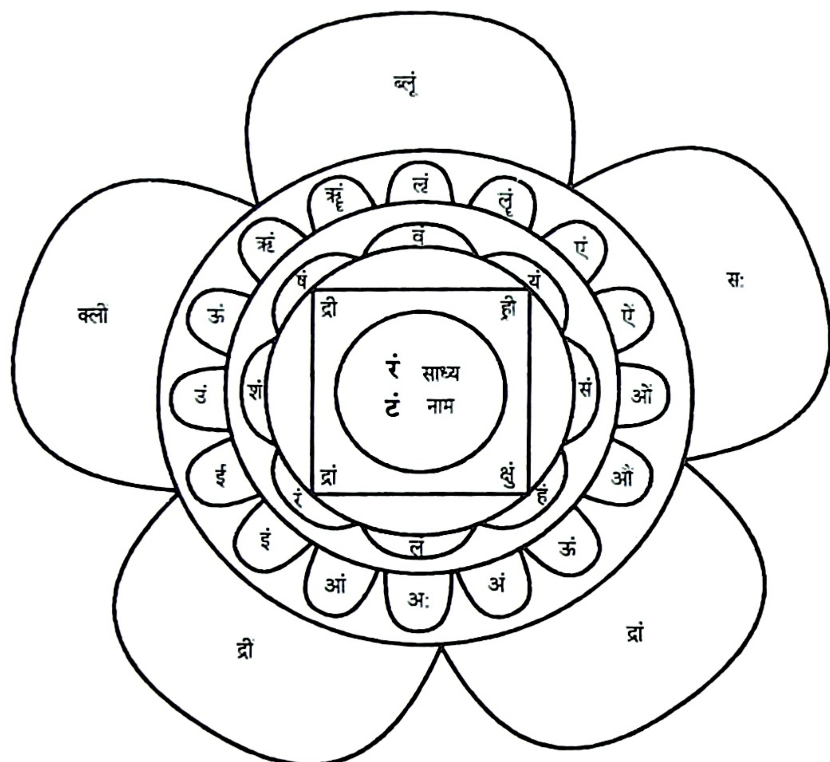
अथ यन्त्राणि—

रंकारं पूर्वमालिख्य तद्बाह्ये वर्त्तुलं लिखेत्।
तद्बाह्ये चतुरस्त्रञ्च तद्बाह्येऽष्ट दलं लिखेत्।
तद्बाह्ये षोडशारञ्च तदग्रे वृत्तमालिखेत्
तदग्रे पञ्चकोणञ्च टंकारं साध्यनामकम्।
वर्त्तुले मूलमालिख्य चतुरस्त्रे द्रां द्रीं ह्रीं क्षुः।
अथ तत्र कवर्णस्य द्वितीयं कोणतो भवेत्।
दलाष्टके लं रं शं षं वं यं सं हं तथैव च।
लोकेश बीजान्येतानि लिखित्वा षोडशे पुनः।
षोडशाख्यान् स्वरान्ब्रूते साधकाख्यां समन्ततः।
पञ्चकोणेषु द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः इत्यादि विन्यसेत्।
यन्त्रमेवं समालिख्य ताल पत्रे प्रयत्नतः।
स्नुही क्षीरेण तल्लिप्य तत्र यन्त्रं च निक्षिपेत्।
चुल्युपरि घटं स्थाप्य तापयेत् सर्व शत्रवः।
गृहे स्थिताः पलायन्ते प्रसादात् सालुवस्य च।
साधकः सर्वमाप्नोति देशान्तर्गतोऽपिता।

अस्यार्थः-प्रथमं सबिन्दुकं रेफं तदन्तः साध्यनामादि तद् वहिर्वृत्तम्। तन्मूल मन्त्रेणावेष्ट्य तद्वहिश्चतुरस्त्रं तद्दिक्षु लिखेत्। तद्वहिरष्टदलं विलिख्य दलेषु लं रं शं षं वं यं सं हं इति प्रागग्निरीशान निर्ऋति जलेश वायु सोम प्रेतेन दिक्ष्वेकैकेन यथायथं लिखेत्। तद्वहिः षोडशदलं विलिख्य तेषु दलेषु षोडश स्वरान् विलिख्य तद्वहिर्वृत्तं कृत्वा परितः साध्यवर्णैर्वेष्टयेत्। तद्वहिः पञ्चोणं तत्कोणेषु द्रां द्रीं क्लीं ब्लूँ सः इत्यत्यैकैकमक्षरं लिखेत्। एवं तालपत्रे विलिख्य तद्यन्त्रं स्नुहि क्षीरेण विलिप्य घटे स्नुहि क्षीरं विसृज्य चुल्युपरि सूर्योदयादनन्तरं संस्थाप्य तापयेत्। उच्चाटनं भवति।

पहले 'रं' लिखकर उसके बाहर वृत्त बनावे। उसके बाहर चतुरस्त्र और उसके बाहर अष्टदल बनावे। उसके बाहर षोडश दल उसके बाहर वृत्त बनावे। उसके बाहर पंचकोण बनावे।

यन्त्र



वृत्त टं के साथ साध्य नामाक्षरों को लिखे। चतुरस्र के कोनों में द्रां द्रीं ह्रीं क्षुं लिखे। अष्टदल के दलों में लं रं शं षं वं यं सं हं लिखे। षोडश दल के दलों में सोलह स्वरों को साध्य के साथ लिखे। पंचदल के दलों में द्रां द्रीं क्लीं ब्लू स: लिखे इस यन्त्र को ताड़ के पत्ते पर लिखे। थूहर के दूध का उसमें लेप लगावे। तब चूल्हा पर घट स्थापित करके उसमें यन्त्र को रखकर तपावे। ऐसा करने से सालुव के प्रभाव से सभी शत्रु घर छोड़कर भाग जाते हैं। विदेश जाने पर भी साधक अभीष्ट प्राप्त करता है।

अस्यार्थ—पहले सानुस्वार र=रं लिखे तब साध्य नाम को लिखे। उसे मूल मन्त्र से वेष्टित करे। उसके बाहर चतुरस्र के कोनों में द्रां द्रीं ह्रीं क्षुं लिखे। विदिशाओं में खं लिखे। उसके बाहर अष्टदल के दलों में लं

रं शं षं वं यं सं हं लिखे। इसका क्रम पूर्व अग्नि ईशान नैर्ऋत्य पश्चिम वायव्य उत्तर और ईशान दिशा होता है। उसके बाहर षोडश दल में स्वरों को लिखे। उसके बाहर वृत्त में साध्य नामाक्षरों को लिखकर वेष्टित करे। उसके बाहर पंचदल में द्रां ह्रीं क्लीं ब्लू सः एक एक अक्षर लिखे। इसे ताड़पत्र पर लिखकर थूहर के दूध का लेप लगाकर घड़े में रखकर चूल्हा पर सूर्योदय के बाद रखकर तपावे तो उच्चाटन होता है।

यन्त्रान्तर

त्रिकोणं विलिखेत्पूर्वं तद्बाह्ये तु दलद्वयम्।
द्वादशारं तु तद्बाह्ये तद्बाह्ये तु नवास्त्रकम्।
सप्तास्त्रं चापि पाञ्चस्त्रं भूपुरं चक्रमालिखेत्।
पावकादि पृथिव्यन्तं लिखेन्मन्त्रं यथाक्रमम्।
तद्वहिः कोणषट्केषु प्रागारभ्य मनुं शिवे।
षट् फट् जहि तथा छिन्धि भिन्धि यथाक्रमम्।

पद षट्कमित्यर्थः।

अकारादि क्षकारान्तं वेष्टयेद्विन्दु संयुतम्।
महामन्त्रमिदं पुण्यं सप्तावरणकं परम्।
सर्वभूतवशीकारं सर्वशत्रु जयं सुखम्।
नाना ज्वर हरं यन्त्रं नाना क्षुद्र निवारणम्।
यः इदं धारयेद्भक्त्या नासाध्यं तस्य विद्यते।

अनेनैव तु यन्त्रेण साक्षाच्छिवसमो भवेत्। द्विचत्वारिंशदक्षरं मन्त्रं भूपुरपर्यन्तं लिखेदित्यर्थः।

इस यन्त्र का वर्णन ग्रन्थ के प्रारम्भ में ही कर दिया गया है। उसे वहीं देखे।

●

नदी तरण यन्त्र

अथ नदितरणयन्त्रम्

भूपुर द्वन्द्वमालिख्य मध्ये पार्थिवमक्षरम्।
चतुःकोणे तु लंकारष्ट दिक्षु ठमालिखेत्।
परितो वायु बीजञ्च नैरन्तर्यन्तु सम्मुखम्।
प्रतिष्ठाप्यानिलं यन्त्रे तोयसन्तरणे बुधः।
कृत्वा यन्त्र जले देवि तत्परं निम्नगां तरेत्।
यन्त्रोपरि स्वयं छित्त्वा देवदत्तं प्रकल्प्य च।
त्रिवारं मनसा मन्त्रं जपेदेकाग्र मानसः।
निम्नगां तरसा तीर्त्वा सुखं गच्छति मानवः।

अस्यार्थ:—प्रथममष्टकोणं मध्ये लकारं वहिश्चतु: कोणे लंकारं कोणे ठं कारं—

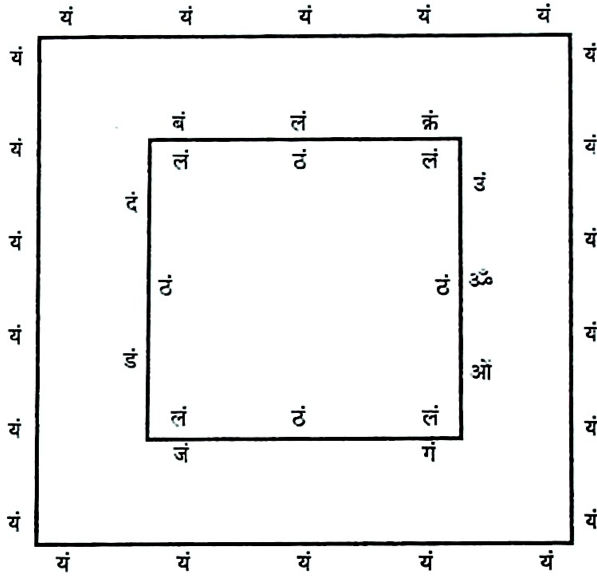
ॐ नमः शरभ सालुव पक्षिराजाय सर्व भूतमयाय मूर्तये रक्ष रक्ष शीघ्रं तारय तारय ॐ ह्रीं क्षं लं टं लं यं मम तरणाय स्वाहा।

ॐ नमो भगवते महाशरभ सालुव पक्षिराजाय वरद अष्ट मूर्त्तये अखिल मयाय भक्त वत्सलाय प्राणातार्ति विनाशनाय उत्तारय उत्तारय शीघ्रमुत्तारय श्रां ह्लं ॐ हां देव देवाय उत्तारणाय स्वाहा।

पञ्च वारं जपेनैव सालवेशो जगन्मयः।
तस्य हस्तं समुद्गृह्य तत्क्षणादुद्धरेज्जलात्।

दो चतुरस्त्र बनाकर दोनों के अन्तराल में पार्थिव अक्षरों को लिखे। ग ज ड द ब ल क्त उ ॐ ओ पार्थिव वर्ण हैं। चारों कोनों में लं लिखे आठो दिशाओं में ठं लिखे। बाहर से वायु बीज यं लिखकर वेष्टित करे।

यन्त्र



इस यन्त्र में प्राण प्रतिष्ठा करे। यह यंत्र जल में संतरण के लिये है। इस यन्त्र को हाथ में लेकर व्यक्ति नदी को पार कर सकता है। यन्त्र को हाथ में लेकर देवदत्त नाम कल्पित करे। एकाग्र मन से पाँच बार मन्त्र जप करे। इससे नदी को सुखपूर्वक पार करके अपने गन्तव्य की ओर जा सकता है। जपने का मन्त्र यह है।

ॐ नमः शरभ सालुव पक्षिराजाय सर्वभूतमयाय मूर्त्तये रक्ष रक्ष शीघ्रं तारय तारय ॐ ह्रीं क्षं लं टं लं यं मम तरणाय स्वाहा ॐ नमो भगवते महाशरभ सालुव पक्षिराजाय वरद अष्टमूर्त्तये अखिल मयाय भक्त वत्सलाय प्राणातार्ति विनाशनाय उत्तारय उत्तारय शीघ्रमुत्तारय श्रां हूं ऊँ हां देव देवाय उत्तारणाय स्वाहा।

इस मन्त्र को पाँच बार जप कर यन्त्र को हाथ में लेकर जल से बाहर तुरन्त हो जाता है।

यन्त्रान्तर

षट् सप्त कोष्ठेषु विलिख्य शारभम्।
रेखाग्रशूलञ्च तदग्र साध्यम्।।

बाह्ये तु मायावृत मारवेष्टितम्।
जपादिकं साधितमाशु कुर्यात्।।

बयालिश कोष्ठो में शरभ मन्त्राक्षरों को लिखे। रेखाग्रों में त्रिशूल बनाकर उसके आगे साध्य नाम लिखे। उसके बाहर ह्रीं क्लीं लिखकर वेष्टित करे। जप आदि से साधित होने पर तुरत इच्छित फल मिलता है।

यन्त्र

साध्य ह्रीं साध्य क्लीं साध्य ह्रीं साध्य क्लीं साध्य ह्रीं साध्य क्लीं साध्य ह्रीं साध्य

लु	वा	य	प	क्षि	ग	जा
शा	त्र	ह	सि	हुँ	फट्	य
भ	ण	खां	खं	फट्	स	हुँ
र	प्रा	खें	ॐ	प्रा	र्व	फट्
श	सि	ह	त्र	ण	श	स्व
य	णा	र	ह्य	रुं	त्रु	ह्य

साध्य क्लीं साध्य ह्रीं साध्य क्लीं साध्य ह्रीं साध्य क्लीं साध्य ह्रीं साध्य क्लीं साध्य

क्लीं साध्य ह्रीं साध्य क्लीं साध्य ह्रीं साध्य क्लीं साध्य ह्रीं साध्य क्लीं साध्य ह्रीं

क्लीं साध्य ह्रीं साध्य क्लीं साध्य ह्रीं साध्य क्लीं साध्य ह्रीं साध्य क्लीं साध्य ह्रीं

यन्त्रान्तर

मारं वर्त्तुल मध्यके वसुदले मायाञ्च लक्ष्मीं तथा।
वाह्ये क्षोणिपुरं लिखेत् प्रतिदिशं खां कारकं भूपुरे।।
मारं साध्यसमन्वितं रिपुजयं लोकाय मोहाकरम्।
नारीवश्यमहो विचित्रमचिरात् साम्राज्यलक्ष्मीप्रदम्।।

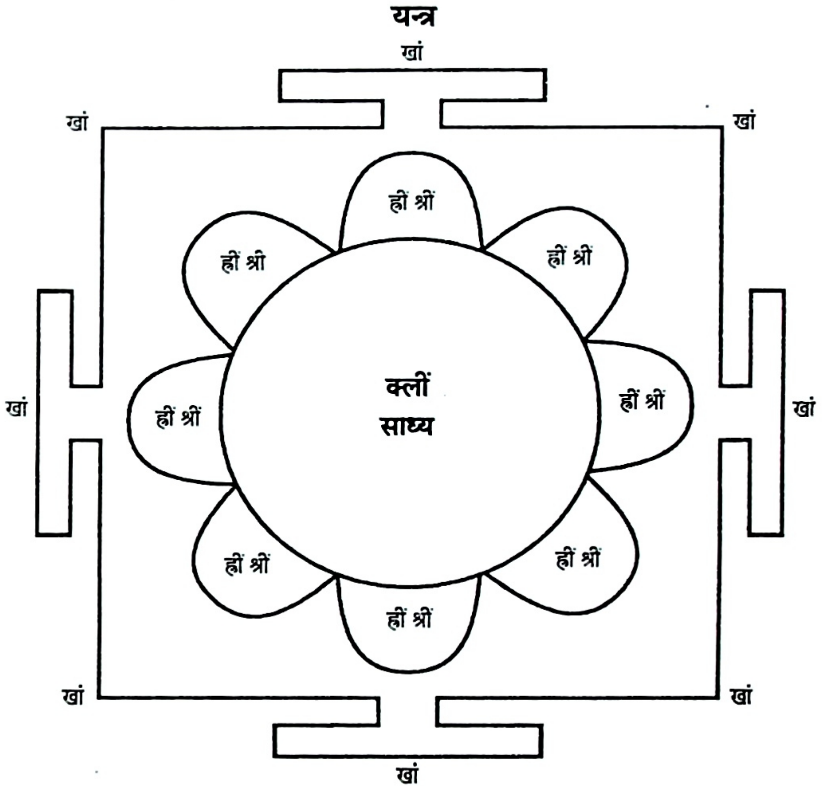
अस्यार्थः

वृत्त मध्ये कामम् साध्ययुतम् तदुपरि अष्टदलं तत्र मा लक्ष्मी बीजे तद्वाह्ये भूपुरं तत्र प्रति दिशं खां शब्दं लिखेत्।

पहले वृत्त बनाकर उसके मध्य में क्लीं के साथ साध्य नाम लिखे।

उसके बाहर अष्टदल बनावे। दलों में माया ह्रीं लक्ष्मीबीज श्रीं लिखे उसके बाहर भूपुर बनावे। उसके बाहर प्रत्येक दिशा में खां लिखे।

यन्त्र



इसे रिपुंजय यन्त्र कहते हैं यह लोकों को मोहित करने वाला है। नारी वश्य कर थोड़े दिनों में साम्राज्य लक्ष्मी प्रदायक है।

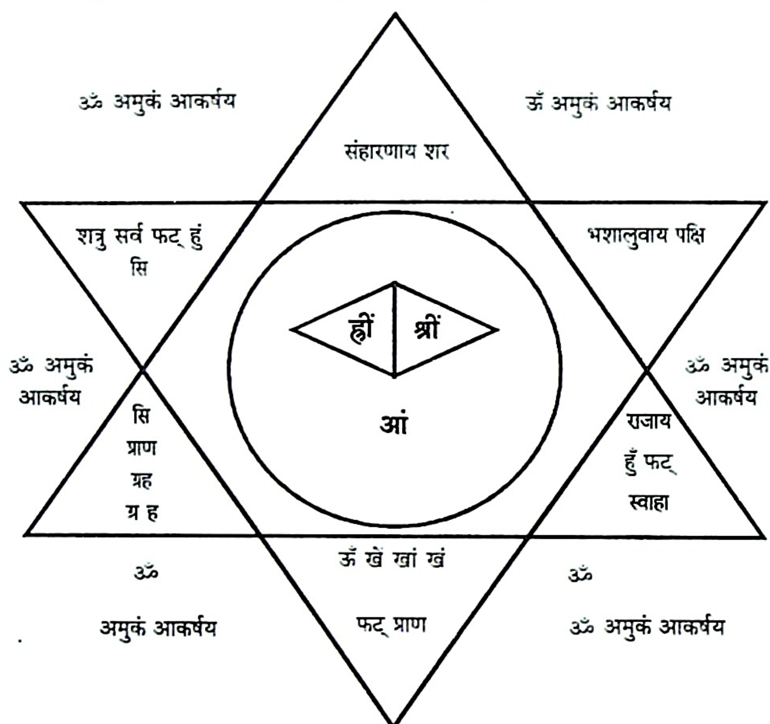
यन्त्रान्तर-आकर्षण

आलेख्यं वृत्त मध्ये महदनलगृहे द्वन्द्वके शक्ति लक्ष्मीः।
तद्वाह्ये षड्दलान्तः शरभमनुमथो सत्यकं सत्यकञ्च।।
ओं कारस्तस्यवाह्ये तदनु परिवृतं साध्यमाकर्षयेति।
त्रैलोक्यस्थामदृष्टां स्त्रियमपि विविधान्याशु भूतानि चैतत्।।

अस्यार्थः

वृत्तमध्ये आं बीजं लिखित्वा तदुपर्यर्द्ध चन्द्राकारं तदूर्ध्वं त्रिकोणञ्च कृत्वा अर्द्धचन्द्रे माया बीजं त्रिकोणे श्री बीजं लिखित्वा तद्वाह्ये षड्दलेषु

मन्त्रस्य क्रमेण सप्त सप्ताक्षराणि लिखित्वा तद्बाह्ये ओंकारं कृत्वा तत्सर्वं अमुकमाकर्षयेति वर्णावृत्या वेष्टयेत्। आकर्षण सिद्धिदं यन्त्रम्।

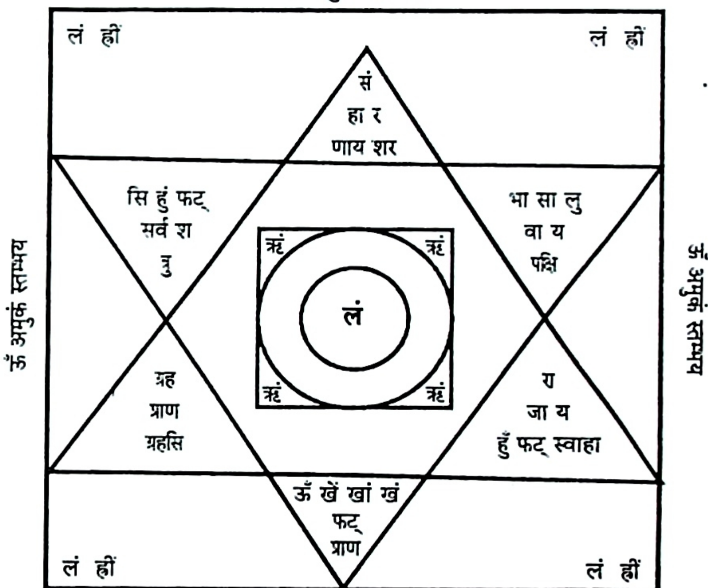


पहले वृत्त बनाकर उसके मध्य में आं लिखे। आं के ऊपर दो त्रिकोण बनावे। एक में ह्रीं लिखे और दूसरे त्रिकोण में श्रीं लिखे। उसके बाहर षट्कोण बनाकर मन्त्र के सात सात अक्षरों को लिखे—ॐ खें खां खं फट् प्राण, ग्रहसि प्राण ग्रहसि, हुंफट् सर्व शत्रु, संहारणाय शर, भशालुवाय पक्षि, राजाय हुं फट् स्वाहा। उसके बाहर ॐ लिखकर अमुकं आकर्षय लिखे। तीनों लोकों में कहीं भी अदृष्ट स्थित स्त्री या विविध अन्य का शीघ्र आकर्षण होता है।

यन्त्रान्तर स्तम्भन

मध्ये वृत्तं सभूमिं वहिरथ पृथिवी कोश कोशे ऋबीजम्।
तद्बाह्ये कोणषट्के शरभमनुमथो वाह्यके भूमिकोणे,
भूमिं शक्तिञ्च बाह्ये प्रणवमथ वहिः साध्यकं स्ततम्भनाख्यं
शत्रूणामाशु दृष्टि श्रुतिमुखहनुहत्प्राणिनां यन्त्रमेतत्।

अस्यार्थः-मध्ये भू बीजं युतं वुत्तं कृत्वा तदुपरि लं बीजाङ्कित कोणं चतुष्कोणं तदूर्ध्वं शरभमनुयुक्तं षट्कोणं तदूर्ध्वं भू शक्ति बीज कोणं चतुरस्त्रं तदूर्ध्वं प्रणवञ्च कृत्वा पूर्ववद् अमुकं स्तम्भय इत्यादि कृत्वा वेष्टयेत्। उक्त फलदं यन्त्रम्।



पहले वृत्त बनाकर उसमें लं लिखे। उसके बाहर चतुरस्त्र बनावे चतुरस्त्र के कोनों में ॠं लिखे। उसके बाहर षट्कोण बनावे। षट्कोण के कोनों में बयालिस अक्षर के मन्त्र के सात-सात अक्षरों को लिखे। ॐ खें खां खं फट् प्राण, ग्रहसि प्राणग्रहसि हुं फट् सर्व शत्रु, संहारणाय शर, भसालुवाय पक्षि, राजाय हुं फट् स्वाहा। उसके बाहर चतुरस्त्र बनावे। चतुरस्त्र के कोनों में लं ह्रीं लिखे। चतुरस्त्र के बाहर ॐ अमुकं स्तम्भय लिखे। इससे स्तम्भन होता है।

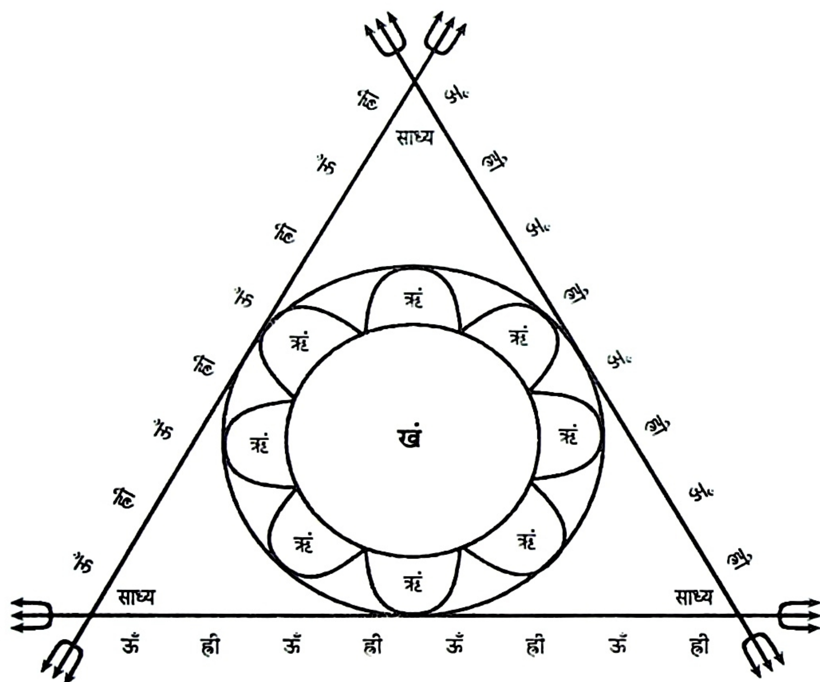
यन्त्रान्तर-विद्वेषण

खेकारं त्वातमध्ये तदुपरि कमले लान्तकं शक्ति युक्तं।
तद्वाह्ये शक्ति कोणोज्वलवृषभमुखान्या लिखेत्कोणशूले॥

आलेख्यं साध्यमेतत् सकलमपि ततस्तारमायान्वितं तम्।
विद्वेषो यन्त्रमेतत् त्रिभुवनमपि किं स्यात्पामराणां नराणाम्।।

अस्यार्थः–खं बीज युतं वृत्तम् तदुपरि अष्ट दलं ऋं बीजयुक्तं तद्बाह्ये कोणाग्रशूलम्। त्रिकोणे शूले साध्यलिखित्वा सकलमपि तारमायाभिर्वेष्टयेत् इति विद्वेषणं यन्त्रम्।

यन्त्र



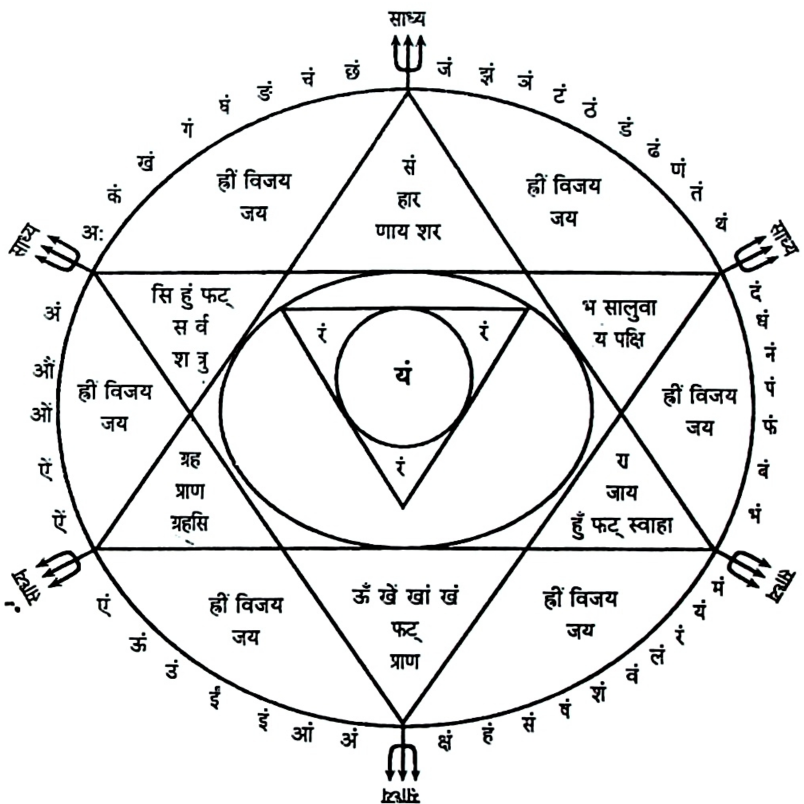
वृत्त बनाकर उसमें 'खं' लिखे। उसके बाहर अष्टदल बनाकर दलों में ऋं लिखे। उसके बाहर त्रिकोण बनावे। त्रिकोण के रेखाग्रों में त्रिशूल बनावे। कोनों में साध्य लिखे। इसके बाहर ॐ ह्रीं लिखकर वेष्टित करे।

यन्त्रान्तर उच्चाटन

वायुं सद्वृत्तमध्ये तदनु भुगु गृहे यावकं तस्य वाह्ये
षट्कोणे सालुवेशं त्रितयमथ वहिःतस्य रेखाग्रसाध्यम्।
तद्बाह्ये शक्तिबीजं विजययुतमनुँ दीपिकावर्ति यन्त्रम्।
शत्रूणां भूतनागेगृहगण समरोच्चाटनं चैवमेतत्।

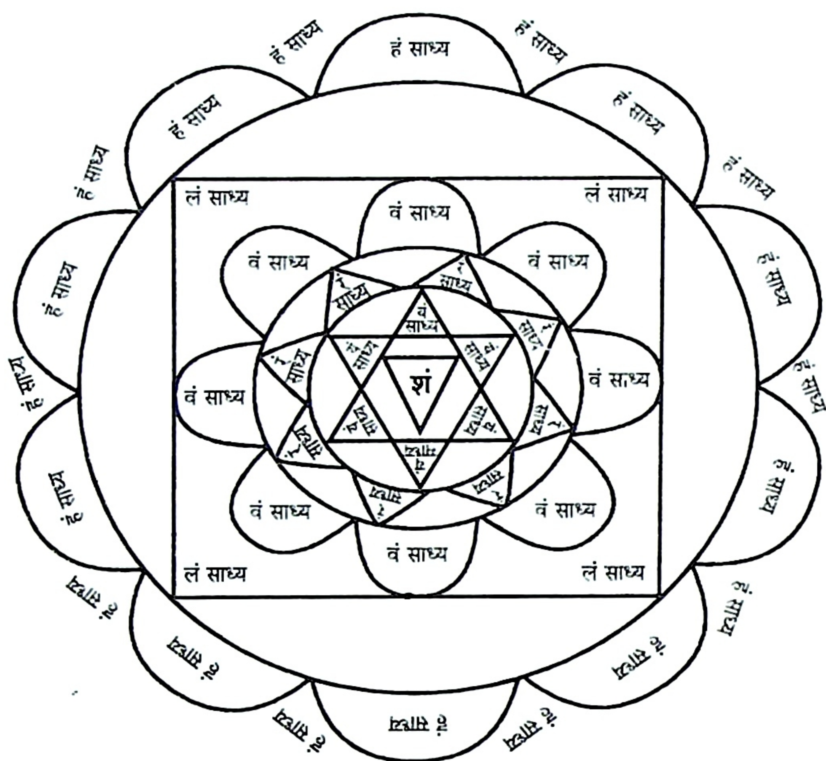
अस्यार्थः-वृत्तमध्ये यं बीजम् तस्योपरि त्रिकोणं तत्र कोणेष्वग्नि बीजं तदूर्ध्वं षट्कोणं तत्र शरभ मन्त्रं तत्कोणाग्रेषु त्रिशूलानि तदग्रे साध्यं तत्र वाह्यन्तरालेषु क्रमातो ह्रीं विजय जय इति वर्णांश्च लिखित्वा सकलं मातृकया वेष्टयेत् इति उच्चाटन यन्त्रम्।

यन्त्र



पहले वृत्त बनाकर उसमें यं लिखे। उसके बाहर त्रिकोण बनाकर कोनों में 'रं' लिखे। उसके बाहर षट्कोण बनाकर कोनों में मन्त्र के सात सात अक्षरों को लिखे। कोणाग्रों में त्रिशूल बनाकर आगे साध्य नाम लिखे। षट्कोणों के अन्तरालों में 'ह्रीं विजय जय' लिखे। सबों को बाहर से अं से क्ष तक के वर्णों को लिखकर वेष्टित करे। तीनों लोकों को इस यन्त्र से विद्वेषित किया जा सकता है तब पापियों के बारे में क्या कहना।

यन्त्रान्तर मारण यन्त्र



यन्त्रान्तरम्:—

बीजं स्वाद्बेशकोणे ऋतु गृह विवरे वायु बीजं स साध्यम्।
तद्बाह्ये चाष्टकोणे शिखि सहितमथो साध्यकञ्जाष्टपत्रे।
वंकारं साध्य पूर्वं भूवि भुवमथो साध्ययुक्तं दशारे।
व्योमाख्यं साध्ययुक्तं शरभमनुवृतं सर्वसंहार चक्रम्।

अस्याथः–त्रिकोणे शं बीजं तस्योपरि षट्कोणेषु साध्य युक्तं यं बीजं तद्बाह्येऽष्टकोणे साध्ययुक्तं रं बीजं तदुपरि अष्टपत्रे स साध्यं वं बीजं तदूर्ध्वं चतुरस्त्रं तत्र सं साध्यं लं बीजं तस्योपरि दशारं स साध्यं हं बीजं च लिखित्वा शरभयन्त्रं वेष्टयेदिति संहार यन्त्रम्। अस्य वक्ष्यमाण यन्त्रस्योपजीव्य भूत शरभास्त्रमन्त्र प्रयोगः प्रकाश्यते।

सालुवेशाय विद्महे पक्षिराजाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

एतदस्त्रं महामन्त्रं जपेन्मन्त्रो सदाम्बिके।
तस्य सर्वं भयं नास्ति स्वप्नेऽपि च कदाचन।
शरभास्त्रमिदं प्रोक्तममोघं जय वर्द्धनम्।
तत्प्रभाव वशाद् दृष्टुँ न सहन्ते सुरासुराः।
कुतोऽन्ये ये पिशाचाश्च क्षुद्रभूत निवारकाः।
गिरि ग्राम वृत्ताः क्लिष्टाः खेचरा पृथिवीचराः।
तस्मादेव जपे चिन्त्यमष्टोत्तरं शतं सुधीः।
मन्त्रयुक्तः समाकृष्टुं कालेनापि न शक्यते।
बुद्धिमान् शारभं घोरमन्त्रराजं महामनुम्।
न्यासाभावे जपं कुर्यादन्वहं पापमुक्तये।

पहले त्रिकोण बनाकर 'शं' लिखे। उसके बाहर षट्कोण बनाकर कोनों में साध्य के लिखे। उसके बाहर अष्टकोण बनाकर कोनों में 'रं' के साथ साध्य लिखे। उसके बाहर चतुरस्त्र बनाकर कोनों में साध्य के साथ लं लिखे। उसके बाहर दशार बनाकर दलों में हं साध्य लिखे। सबके बाहर हं साध्य लिखकर वेष्टित करे। यह संहारयन्त्र है।

इस वक्ष्यमाण यन्त्र के उपजीव्य शरभास्त्र मन्त्र प्रयोग लिखते हैं। 'सालुवेशाय विद्महे पक्षिराजाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।' इस शरभास्त्र महामन्त्र का जप जो सर्वदा करता है उसे सपने में भी कोई भय नही होता। यह शरभास्त्र अमोघ जय वर्द्धन है। इसके प्रभाव् से सुर असुर में साधक को देखने की क्षमता नहीं रहती। तब क्षुद्र भूत प्रेत पिशाच क्या कर सकते हैं।

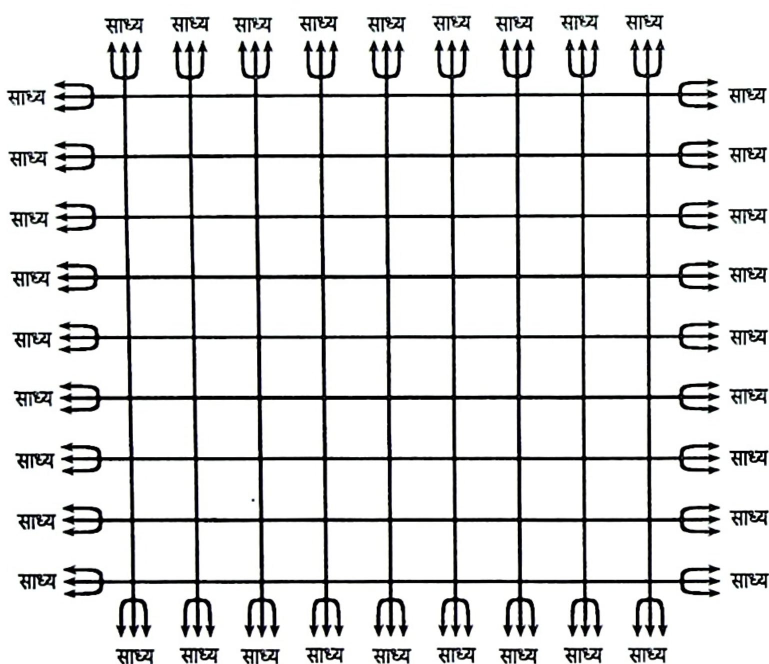
पर्वत, गाँव क्लिष्ट खेचर भूचर सवों के बीच में घिरने पर इस मन्त्र का जप एक सौ आठ बार करे। मन्त्र युक्त साधक को काल भी कुछ बिगाड़ नहीं सकता। शरभ के घोर मन्त्रराज महामन्त्र का जप मनुष्य न्यास के बिना ही दिन रात करे। इससे पाप मुक्त हो जाता है।

यन्त्रान्तर संहारयन्त्र

ऊर्ध्वं तु तिर्यग्ग्रहवेधरेखा
लिखेत्क्रमाद्यन्त्रमनन्ययन्त्रम्

बाह्येषु शूलं विलिखेत्स साध्यं त्रैलोक्य
संहारमिदं त्वमोघम्।
विषवृक्षे समालिख्य प्राणानावाह्य पूजयेत्।
अष्टोत्तराख्यसाहस्त्रं जपेदेकाग्रमानसः।
बलिपूर्वं क्षपामध्ये दक्षिणस्यां खनेद्दिशि।
ततस्नात्वा जपेन्मन्त्रमष्टोत्तरसहस्त्रकम्।
रिपवो मरणं यान्ति संशयो नास्ति सुन्दरि।

यन्त्र



ऊपर से नीचे और बाएँ से दाँऐं समान दूरी पर एक-दूसरे को काटती हुई नव-नव रेखाएँ खींचे। रेखाग्रो में त्रिशूल के आगे साध्य का नाम लिखे तो त्रैलोक्य संहारक अमोघ यन्त्र बनता है।

इस यन्त्र को विषवृक्ष पर अंकित करे। प्राण प्रतिष्ठा करके पूजा करे। एकाग्रमन से एक हजार आठ मन्त्र जप करे। आधी रात में बलि देकर दक्षिणामुख होकर जमीन में गाड़ दे। इसके बाद स्नान करके एक

हजार आठ बार मन्त्र जप करे। ऐसा करने से शत्रुओं की मृत्यु हो जाती है। इसमें संशय नहीं है।

प्रयोगान्तर

भानुमण्डलमध्यस्थं वैरिणं दशमेऽहनि।
राहुः संग्रहणादेव कृष्णवर्णमधोमुखम्।
पुटपाकतनुँ क्रान्तं निर्वाणं प्राणसंकटम्।
चिरं ध्यात्वा जपेन्मन्त्री अष्टोत्तरसहस्रकम्।
जपान्तेऽर्घ्यत्रयं कुर्यात् सूर्यमालोकयन्सुधी।
भूयो जपेत्सहस्रन्तु स्मृत्वा भस्मीकृतं रिपुम्।
सरिपुस्तद्दिनादेव मरणं यात्यहैतुकम्।

सूर्य ग्रहण के बाद दशवें दिन सूर्य मण्डल में स्थित वैरी को देखे कि वह पुटपाक तन क्रान्त निर्वाण प्राण संकट में है। देर तक ऐसा ध्यान करके एक हजार आठ मन्त्र जप करे। जप के बाद तीन अर्घ्य सूर्य को देखते हुए देवे। इसके बाद फिर एक हजार आठ जप करे और चिन्तन करे कि शत्रु जलकर भस्म हो गया। उस दिन शत्रु अकारण मर जाता है।

प्रयोगान्तर

द्विषन्तमुद्दिश्य सहस्रवारं जप्त्वावृतं तेन हुनेद्धुताशे।
दिनावसानात्पुरतो रिपूणां शरीर नाशाय सुसिद्धमन्त्री।

इति शरभास्त्र प्रकरण पाठतत्तस्यैवायं प्रयोगः इति गम्यते। गीर्वाणेन्द्यान्तु पापान्तो देवदस्येत्युक्तं तन्मन्त्रस्य यन्त्रन्तुनोक्तम्।

तद्यथा:—

बिन्दुं वह्निरथ कोणमणाष्ट द्वन्द्वकं च स चतुर्दश पत्रम्।
भूपुरञ्च विलिखेदथ मन्त्रं मध्यमादि वह्निर्नामि सतारम्।
पायान्नो देवः शरभस्त्वपायात्सदारे रोगाद्वीपिनोरगाभ्यां
वैश्वानराखु करि रिक्षकेभ्यो पदेभ्योयो भूतेभ्यो रुषः कृतान्तात्।।

इति चतुश्चत्वारिंशदक्षराणि तावत्सु बिन्द्वादिस्थानेषु लिखेदित्यर्थः।

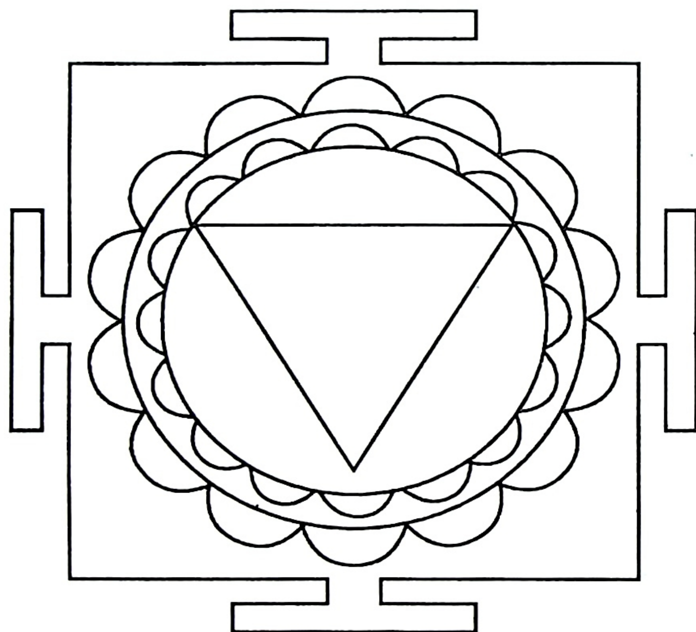
आथर्वणमिदं मन्त्रं मनोद्यन्दुरितापहम्।
सर्वं संरक्षणं श्रेष्ठं सर्वं सौभाग्य दायकम्।

एतद्यन्त्रं समालिख्य हैमके पट्टके शुभे।
विधिना धारयेद्योऽङ्गे सर्वत्र विजयी भवेत्।

शत्रु का चिन्तन करते हुए एक हजार बार मन्त्र जप करे। उसी मन्त्र से अग्नि में हवन करे। तब सूर्यास्त के पहले ही शत्रु का शरीरान्त हो जाता है।

इति शरभास्त्र प्रकरण। शरभास्त्र के पाठ के बाद ये प्रयोग है। ये गीर्वाण तन्त्र में उक्त है। इसके प्रायश्चित उक्त नहीं है। अन्तिम मंत्रों का यन्त्र उक्त नहीं है।

यहाँ यन्त्रान्तर देखिये—



यन्त्र

पहले त्रिकोण बनाकर मध्य में बिन्दु अंकित करे। उसके बाहर षोडशदल कमल बनावे। उसके बाहर चौदह दल कमल बनाकर बाहर भूपुर बनावे। इसमें मध्य से प्रारम्भ करके निम्नलिखित मन्त्राक्षरों को बाहर तक लिखे। सबसे बाहर ॐ के साथ साध्य नाम लिखे।

पायान्नो देवः शरभस्त्वपायात्सदारे रोगाद्द्विपिनोरगाभ्यां।
वैश्वानराखुकरिरिक्षकेभ्यो पदेभ्यो यो भूतभ्यो रुषः कृतान्तात्।।

इसमें चौवालिस अक्षर है। बिन्दु से शुरु करके बाहर तक लिखे।

यह आथर्वण मन्त्र मनोरोगादि का विनाशक है। यह सभी प्रकार से रक्षक, श्रेष्ठ और सर्व सौभाग्य दायक है। इस यन्त्र को सोने के पत्र पर लिखकर विधिवत अंग में धारण करने वाला सर्वत्र विजयी होता है।

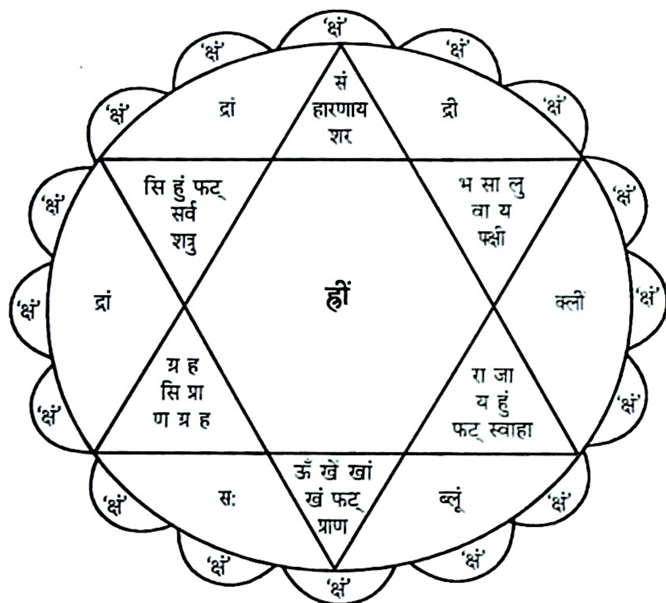
यन्त्रान्तर

शिखिपुरयुगमध्ये शक्तिबीजञ्च कोणे
प्रतिग्रहमथ मन्त्रं सत्यवर्णं लिखित्वा।
इषु मनुरथ वाह्ये षोडशारेन्त्यवर्णं
अहियुगयुतमेतत् सालु वेशस्य यन्त्रम्।
एतत्तु सम्पूज्य तदग्रभूमौ पुरीमलातेन लिखेद्यमस्य।
मध्ये तु रूपं विलिखेद्यमस्यत्तदङ्गदेशे सुमनापुमांसम्।।
मुखाक्षिनासापुटकर्णजिह्वा गलांश वक्षोदर नाभिलिङ्गम्
प्रत्यङ्ग साध्यं विलिखेत्स नाम वह्निं समाधाय हुनेत्सहस्रम्।
तत्सालशाखाभिरथाष्टचूर्णयुक्ताज्य सिक्ताभिरनन्यमेताः।
दिनत्रयादेवपुरीं यमाख्यां गच्छेद्रिपूर्धूम इव स्वदेहात्।

इति भूमावन्ते सशक्तिकं षट्कोणं कृत्वा कोणेषु सप्त सप्ताक्षराणि लिखित्वा तत् द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः इति मन्त्रेणावेष्टय तदूर्ध्वं षोडशदले क्षं बीजं कृत्वोभयतः सर्पद्वयं लिखेत्। तदग्रभूमौ अलातमय्यां यमपुरीं कृत्वा तत्र यमस्य यथोक्तं रूपं मुखादि सर्वावयव युतं कृत्वा तस्य प्रत्यङ्गे अमुकं मारयेति साध्यनाम लिखित्वा तत्राग्निमुपसमाधाय अष्टचूर्णयुक्ताज्य सिक्ताभिः साल समिद्भिः जुहुयात्। एवं दिनत्रय प्रयोगेण रिपुर्म्रियतेत्यर्थः।

पहले षट्कोण बनाकर उसके मध्य में शक्तिबीज ह्रीं लिखे षटकोण के कोनों में बयालिस अक्षरों के मन्त्र के सात-सात अक्षर लिखे। इसके बाहर पंचबाण बीज द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः लिखकर वेष्टित करे। इसके बाहर षोडशदल कमल बनाकर दलों में दो सर्पों के बीच में क्षं बीज लिखे।

यन्त्र



इस यन्त्र को पूजकर उसके आगे की भूमि में यमराज का चित्र बनावे। चित्र में पुरुष के अंगों को बनावे। मुख, आँख, नाक, कान, जीभ, गला, कन्धा, वक्ष, पेट, नाभि, लिंग में साध्य का नाम लिखे। अग्नि स्थापन करके एक हजार हवनसाल शाखा अष्ट चूर्ण को गोघृत से सिक्त करके करे। तीन दिनों तक ऐसा करने से शत्रु धुएँ के समान देह त्याग कर यमलोक चला जाता है।

यन्त्र पूजन स्थान के आगे भूमि में यम पुरी बनाकर उसमें यम के सभी अंगों को बनावे। उसके प्रत्येक अंग में साध्यं मारय लिखे। साध्य नाम लिखे। तब अग्नि स्थापन करके अष्ट चूर्ण युक्त सिक्त और साल समिधाओं से एक हजार हवन करे। इस प्रकार का प्रयोग तीन दिनों तक करने से शत्रु मर जाता है।

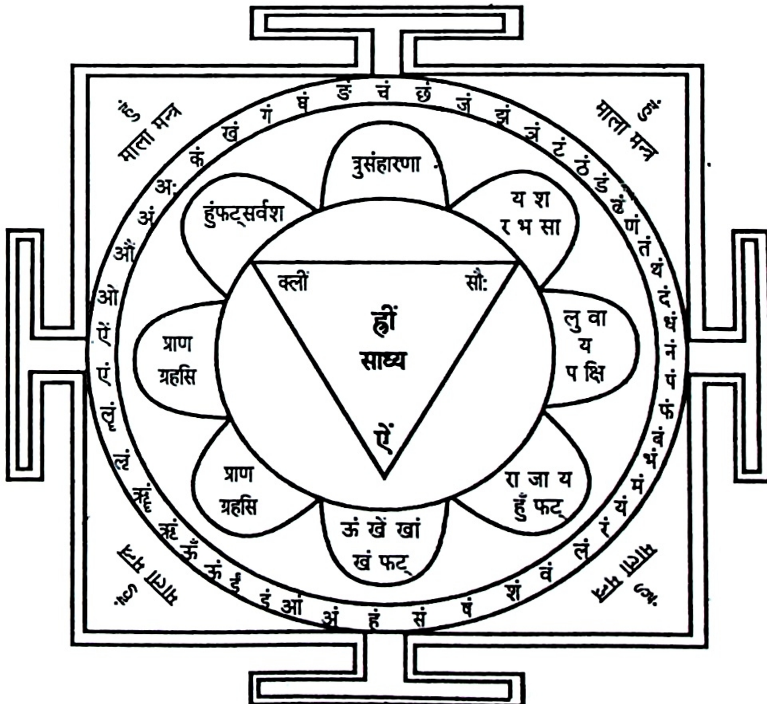
यन्त्रान्तर

बिन्दुत्रिकोणाष्टदलं च पद्मं वृत्तद्वयं भूपुरयुग्मकञ्च।
बिन्दौ च मायाङ्कितसाध्यनाम तत्सालुवेनैव तु वेष्टयेद्बुधः।
त्रिकोणे विलिखेद्बालामष्टपत्रेतु सालुवम्।
पञ्च पञ्च लिखेद् वर्णान् आशादिदलेषु च।

विदले विलिखेद्वर्णान् मातृका द्वितयं क्रमात्।
वृत्ते वर्णांश्च विलिखेत्पञ्चाशत्परमेश्वरि।
सालुवमालिकामन्त्रं द्वितीयावरणे लिखेत्।
लिखेद्भूपुर कोणेषु वाराहं बीजमुत्तमम्।
प्राणप्रतिष्ठामन्त्रेण वेष्टयेद्भूपुरान्तरे।
लघुसालुवयन्त्रञ्च एतत्सर्वार्थदायकम्।
क्षौरामे कांस्यपात्रे वा भूर्जे वा ताल पत्रके।
एतद्यन्त्रं लिखेत्प्राज्ञो मध्याह्ने पूर्वदिङ् मुखः।
सालुवं यन्त्रसिद्ध्यर्थं मूलमन्त्रायुतं जपेत्।
हुनेत्तिलाक्षतैर्युक्त त्रिकोणे कुण्ड उत्तमे।
ब्राह्मणान् भोजयेद्धीमान् सहस्रं शतमेव वा।
तद्यन्त्रं धारयेद्धीमान् शिखायां कण्ठदेशयोः।
सर्वं रोगाद्विमुच्येत् जीवेद्वर्षशतं नरः।
भूतप्रेतपिशाचाद्याः यक्षगन्धर्व राक्षसाः।
नश्यन्ति दर्शनादेव यन्त्रराजं कुलेश्वरि।

बिन्दु त्रिकोण अष्टदल पद्म दो वृत और दो भूपुरों से युक्त यन्त्र बनावे।

यन्त्र



बिन्दु में ह्रीं के साथ साध्य नाम लिखे। कोनों में ऐं क्लीं सौः लिखे अष्टदल के दलों में मन्त्र के पाँच पाँच अक्षरों को लिखे वृत्त में पचास मातृका अं से क्षं तक लिखे। दूसरे वृत्त में माला मन्त्र लिखे। भूपुर के कोनों में वाराह बीज हुँ लिखे। भूपुर की दो रेखाओं के अन्तराल में प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र लिखे। यह लघु सालुव यन्त्र सर्वार्थ दायक है।

इस यन्त्र को क्षौरा में, कास्य पात्र में, भोजपत्र पर या ताड़ पत्र पर मध्य दिवस में, पूर्व दिशा में मुख करके लिखे। सालुव यन्त्र की सिद्धि के लिये मूल मन्त्र का दश हजार जप करे। उत्तम त्रिकोण कुण्ड में तिल चावल से हवन करे। एक हजार या एक सौ ब्राह्मणो को भोजन करावे। इस यन्त्र को शिखा में या गले में धारण करे। इससे साधक सभी रोगों से मुक्त होकर सौ वर्षों तक जीवित रहता है। भूतप्रेत पिशाच आदि यक्ष गन्धर्व राक्षस इस यन्त्रराज को देखते ही नष्ट हो जाते है।



अन्य प्रकारक प्रेत पट्टिका यन्त्र

प्रतिपदे या लिखेद्यन्त्रं वरिनाम्ना च वेष्टयेत्।
विषधत्तूरजद्रावैर्वजीक्षीरैस्तथैव च।
काकपक्षश्च लेखिन्या लिखेन्नैऋत दिङ्मुखः।
चण्डालरुद्रभूमौ तु लिखनेद्धस्तंमात्रकम्।
स्थापयेत्तत्रतद्यन्त्रं ब्रह्माविष्णुमहेश्वराः।
म्रियन्ते सप्तरात्रेण विष्णुनां यदि रक्षिताः।
प्रेतकर्पटके यन्त्रं महालिमिरसेन तु।
चिति काष्ठेन संलिख्य दक्षिणाभिमुखेन तु।

शत्रु गेहे च निखनेत् मार्गे वा शयनस्थले। लंघनाद्व्याधितो भूत्वा षण्मासान्म्रियतेऽचिरम्।

पाषाणे विलिखेद्यन्त्रं चिताङ्गारेण बुद्धिमान्।
अर्कक्षीरेण संयुक्तं लेखिनीशल्यसर्पजा।
सार्षपं सैन्धवं चैव वज्राक्षं क्षीरमेव च।
यन्त्रोपरि च संलिप्य तप्त्वा दीपशिखेन्।
तत् ज्वरार्तो जायते सद्यो द्वितीय इव शङ्करः।
भूर्जे कुंकुमकस्तूर्याः पौर्णिमायां लिखेत्प्रिये।
धारयेत्कण्ठदेशे तु त्रैलोक्यं वशमाप्नुयात्।
एतत्सालुव यन्त्रञ्च गोपनीयं प्रयत्नतः।

इति ईशानकोणगतदलमारभ्य दिग्दशेषु च पञ्च पंच वर्णान् लिखेत् अन्ते अन्तेत्यव्यः।

शव के कपड़े पर प्रतिपदा तिथि में इस यन्त्र को धतूर के रस में उसका दूध मिलाकर कौए के पंख की लेखनी से नैऋत्य दिशा में मुख करके लिखे। मध्य में वैरी का नाम लिखे। चंडाल रुद्र भूमि में एक हाथ का गड्ढा खोदकर उसमें यन्त्र को गाड़ दे तो ब्रह्मा विष्णु महेश से रक्षित वैरी भी मर जाता है।

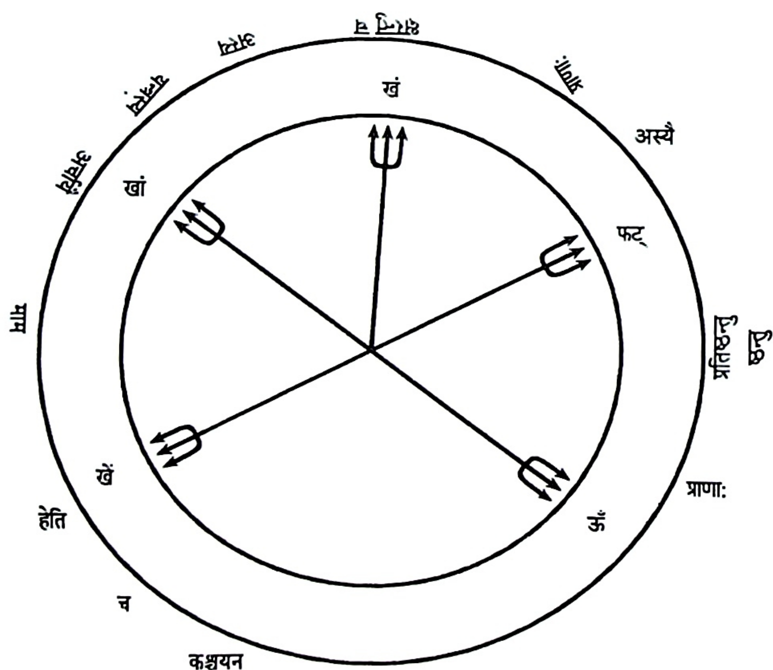
श्मशान घट के टुकड़े पर महालिमि के रस से चिति की कलम से दक्षिण तरफ मुख करके उक्त यन्त्र को लिखकर शत्रु के घर में, या रास्ते में, या सोने की जगह में गाड़ दे। इसको लांघने से शत्रु व्याधि ग्रस्त होकर छह महीनों में मर जाता है।

बुद्धिमान साधक पत्थर पर चिता की राख और अकवन के दूध के मिश्रण से शल्य सर्प की लेखनी से यन्त्र लिखे। सरसों सेन्धा नमक वज्राक्ष और दूध के घोल का लेप यन्त्र पर लगावे। दीप शिखा से तपावे। इससे शत्रु बुखारग्रस्त होकर मर जाता है।

भोजपत्र पर कुंकुम और कस्तूरी से पूर्णिमा में यन्त्र को लिखकर गले में पहने तो तीनों लोकों को अपने वश में कर सकता है। इस सालुव यन्त्र को यत्न से गोपनीय रखे। इस यन्त्र के दश दल में ईशान से प्रारम्भ करके पाँच पाँच वर्णों को लिखे। अन्त में अव्यय लिखे।

यन्त्रान्तर

यन्त्र



अथ यन्त्रन्तरम्–पूर्वादि पंच वर्णान् प्रादाक्षिण्येन तु आलिखेत्। मूलमन्त्रस्य रेखाग्रे शूलमालिखेत् प्राण प्रतिष्ठा मन्त्रेण वेष्टयेद्यन्त्रमुत्तमम्।

एतद्यन्त्रं पट्टे वाथ भूर्जपत्रेऽथवा लिखेत्।
सैवाष्ट गन्धं संयुक्तं लेखिनी कुश संभवा।
पश्चिमाभिमुखो भूत्वा भानुवारे लिखेत्प्रिये।
कुड्येवा देवतागारे स्थाप्यं यन्त्रं वरानने।
चौरादि बन्धनं व्याघ्रस्फोटकादेश्च बन्धनम्।
सर्पवृश्चिकयोश्चैव नाना ज्वरविसर्पिकाः।
नाशयेद्यन्त्र माहात्म्यं सत्यं सत्यं न संशयः।
सर्वरक्षाकरं यन्त्रं संसारसुखदं प्रिये।
पशुरक्षा गर्भरक्षा बालकस्य तथैव च।
वाणिज्ये लाभमाप्नोति सेवायां वशदं भवेत्।
बन्ध्याया धारयेद्यन्त्रं सद्यः पुत्रवती भवेत्।
लघु सालुव यन्त्रञ्च सुलभेन फलप्रदम्।

इति प्रति ग्रहं मूलमन्त्रस्य आद्यान् पंच वर्णान् लिखेदित्यर्थः।

मूलमन्त्र के प्रारम्भ के पाँच वर्ण ॐ खें खां खं फट् लिखे। रेखा के आगे त्रिशूल बनावे। प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र से वेष्टित करे। प्रतिष्ठा मन्त्र—

अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्य यन्त्रस्य अर्चायै मामहेति च काश्चन।।

इस यन्त्र को कपड़े पर या भोजपत्र पर शैव अष्टगन्ध में कुश की लेखनी से पश्चिम तरफ मुख करके रविवार में लिखे। कुड्य या देवालय में स्थापित करे। इससे चोरों का बन्धन, बाघ, चेचक आदि का भय, साँप, बीछू, विविध बुखार, विसर्पिका के भय का नाश होता है। यन्त्र का माहात्म्य सत्य है संशय नहीं है। यह यन्त्र सर्व रक्षाकर संसार में सुखदायक है। इससे पशुओं की रक्षा, गर्भ की रक्षा बालक की रक्षा व्यापार में लाभ होता है। सेवा से वश में होता है। वन्ध्या स्त्री यदि इस यन्त्र को धारण करे तो वह पुत्रवती होती है। यह लघु सालुव यन्त्र सुलभ और फलप्रद है।

यन्त्रातर

यन्त्रान्तरम्—आदौ बिन्दुत्रिकोणादुपरि च वलयं द्वित्रिकोणेन युक्तम्।
वेष्टेयं मण्डले नाप्युपरि च विलिखेदष्ट पत्राम्बुजं च।

मण्डलाभ्यां समावेष्ट्य तदूर्ध्वं भूपुरत्रयम्।
बिन्दुमध्ये लिखेन्मन्त्रं सालुवं सर्वकामदम्।
त्रिकोणे तु लिखेत्त्रीणि देवीं मायां च वेष्टयेत्।
षट्कोणे सालुवाख्यञ्च षडक्षरं मनुं लिखेत्।
अष्टपत्रे लिखेद्देवि सालुवाष्टाक्षरं मनुम्।
विदलेषु लिखेद्देवि स्वरान् युग्मक्रमेण तु।
पंचाशद्वर्णयुक्तन्तु वेष्टयेत्पत्र मध्यगम्।
प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रेण द्वितीयमण्डलं प्रिये।
ईशानादि समावेष्ट्य बिन्दु युक्तं कुलेश्वरि।
भूपुत्रय मध्ये तु सालुवं मालिकामनुम्।
लिखेत् स्पष्टतया वर्णान् यन्त्रोद्धार विचक्षणः।
स्वर्णे वा रौप्य पट्टेवा भूर्जेवा विलिखेत्प्रिये।
कस्तूर्या कुशलेखिन्या भूर्जपत्रलिखित्प्रिये।
कृष्णाङ्गार चतुर्दश्यां निशिपूर्वदिशामुखः।
लिखेदस्त्राक्षयन्त्रञ्च सालुवं सर्वसिद्धिदम्।
पूजयेद्भैरवस्याग्रे वीरभद्रस्य सन्निधौ।
अथवा चण्डिका गेहे पूजयेदुपचारकैः।
तत्र संजप्य मन्त्रञ्च सालुवं च षडक्षरम्।
पंचायुत प्रमाणन्तु दशांशं तर्पयेत्प्रिये।
शर्करोदक संयुक्तं तर्पयामि पदं सदा।
तद्दशांश हुनेद्देवि हस्तमात्रे सुकुण्डके।
मोषापूपं त्रिमध्वाक्तं बदरीफल मात्रकम्।
हुनेत्सालुवसम्प्रीत्यै ध्यानयुक्तं कुलेश्वरि।
ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चात् कार्य गौरव लाघवान्।
तद्यन्त्रं धारयेद्देवि शिष्याय च सपुत्रकः।

वस्त्वपेक्षा न कुर्वीति एतद्यन्त्रं वरानने।
भौमै वा भार्गवे चार्के निशि यन्त्रं प्रपूजयेत्।
षडक्षरं सालुवञ्च अयुतं प्रजपेत्प्रिये।
शत्रोरुच्चाट्टनं भूत्वा काकवद् भ्रमते महीम्।
कृष्णायाञ्च चतुर्दश्यामारभेद्यन्त्रमुत्तमम्।
रात्रौ पूजा जपश्चैव तावद्होमो दिवा प्रिये।
समापयेत्पौर्णमास्यां पूर्णाहुति समन्वितम्।
रणपलायनाख्यश्च प्रयोगो भूवि दुर्लभः।
एतद्यन्त्रं वरञ्चैव द्वादशार्कस्य वासरे।
प्रातः काले लिखेद्मन्त्रं प्रेतवस्ते च पार्वती।
प्रेतभस्मचिताङ्गारविषतैल समन्वितम्।
आलिखेन्नरस्याङ्गेन यन्त्रमेतद्विचक्षणः।
वज्रं क्षीणं चार्क क्षीरं श्वेतसर्षपसंयुतम्।
मर्दयेन्मोहनद्रावैर्वरशल्येन पार्वति।
सालुव मालिका मन्त्र लेपनं सम्यगाचरेत्।
त्रिकालं लेपनं कुर्यात् त्रिकालं तस्य माचरेत्।
त्रिकालं वैरिणं ध्यायेत् सम्यङ्ज्ञान विचक्षणे।
पक्षद्वयेन संयुक्तः शत्रुनिर्मूलतां व्रजेत।
वज्रक्षीरमथार्कजं सममथो संगृह्यं भौमे निशि।
चार्क पर्णतले फणीन्द्र गरयोः
तच्छल्ययोर्लेखिनी नवीननरदाहस्थानमाश्रित्यतत् ॥

पात्रे नग्नविमुक्तकेशसहितः सम्यग् विलिखेत्तन्निशि। त्रिकाललेपन्वंवज्रक्षीरेण कमलेण यत्।

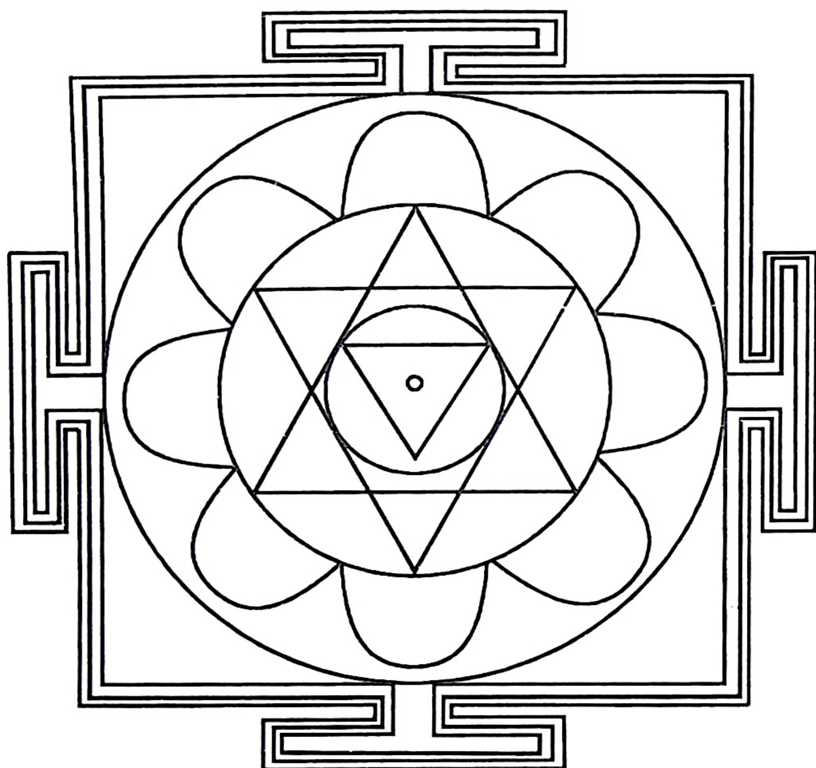
त्रिरात्रज्वरमाप्नोति ग्रामे वा पत्तनेषु वा।
एतद्यन्त्रप्रभावेण सर्वतो ज्वरपीडिताः।

अस्यार्थः—त्रीणि बाला वीजानि देवी बाला त्रिकोणे विदलेषु केशरेषु मातृकया प्रथमं वेष्टनम्। द्वितीयं प्राण प्रतिष्ठाया। ईशादिक्रमेणावेष्टनम्। वेष्टनवर्णाः सर्वे विन्दुयुक्ताः। इति शिवम्।

पहले त्रिकोण बनाकर बीच में बिन्दु लिखे। उसके बाहर वृत्त

बनावे उसके बाहर षट्कोण बनावे। उसके बाहर अष्टदल बनावे। उसके बाहर वृत्त बनावे। उसके बाहर भूपुर त्रय बनावे।

यन्त्र



त्रिकोण बिन्दु में सर्वकामद सालुव मन्त्र लिखे। त्रिकोण के कोनों में ऐं क्लीं सौः लिखे। षट्कोण में सालुव षडक्षर मन्त्र सालुवाय नमः के एक-एक अक्षर को लिखे। अष्टदल के दलों में सालुव के अष्टाक्षर मन्त्र खे खां सालुवाय नमः के एक एक अक्षर को लिखे। दलों के बाहर सोलह स्वरों में से दो दो वर्णों को लिखे—अं आं..........अं अः। पचास मातृकाओं से अष्टपत्र और वृत्त के मध्य को वेष्टित करे। वृत के बाहर प्राण-प्रतिष्ठा मन्त्र को लिखकर केन्द्रित करें। भूपुर की तीन रेखाओं के अन्तराल में सालुव मालामन्त्र लिखे। अक्षरों को स्पष्ट लिखकर यन्त्रोद्धार करे।

इस यन्त्र को सोना, चाँदी के पत्र पर या भोज पत्र पर कुश की कलम से मंगलवार चतुदशी की रात में पूर्व मुख होकर लिखे। सालुव का यह दस्त्राक्ष यन्त्र सभी सिद्धियों का देने वाला है। भैरव के आगे वीरभद्र के निकट पूजा करे। अथवा देवी मन्दिरों में सभी उपचारों से पूजा करे। वहाँ पर सालुव षडक्षर मन्त्र का जप दश हजार करे। दशांश तर्पण शक्कर के शर्बत से करे। मन्त्र के साथ तर्पयामि में जोड़कर तर्पण करे। उसका दशांश हवन एक हाथ के कुण्ड में करे। त्रिमधुर युक्त माष, पूआ और बैर फल से हवन करे। ध्यान करते हुए भक्ति से हवन करे। कार्य की गुरुता-लघुता के अनुसार ब्राह्मणों को भोजन करावे। इस यन्त्र को अपने शिष्य या पुत्र को पहनावे। वास्तु की अपेक्षा न करे। मंगल, शुक्र, या रविवार की रात में यन्त्र की पूजा करे। सालुव के षडक्षर मन्त्र का दश हजार जप करे। इससे शत्रु उच्चाटित होकर कौआ के समान पृथ्वी पर भ्रमता रहता है।

कृष्णपक्ष की चतुर्दशी में यन्त्र प्रारम्भ करे। रात में पूजा-जप करे और दशांश हवन दिन में करे। प्रतिदिन इस प्रकार १५ दिनों तक करे। पूर्णिमा में पूर्णाहुति के साथ समाप्त करे। यह रण पलायन नामक पृथ्वी पर दुर्लभ है।

इस यन्त्रवर को बारह रविवारों में प्रातः काल श्मशान या मुर्दा के वस्त्र पर लिखे। श्मशान भस्म, चिता का कोयला और विष तेल को मिलाकर नर के अंग पर लिखे। वज्र क्षीर अकवन क्षीर पीला सरसो मिलाकर मोहन द्राव वर शल्य से मर्दन करे। सालुव मालामन्त्र से लेप लगावे। तीनों सन्ध्याओं में लेप लगावे। तीनों कालों में वैरी का ध्यान करे। ऐसा करने से तीस दिनों में शत्रु निर्मूल हो जाता है।

मंगलवार की रात में वज्रक्षीर और अकवन के दूध को सम भाग में रखे। अकवन के पत्ते के नीचे फणीन्द्र विष की लेखनी से युवा मनुष्य के दाह स्थान के समीप बैठकर नंगे केश खोलकर लिखे। तीनों कालों में वज्रक्षीर और कमल से लेप लगावे। इससे गाँव में या नगर में बुखार होता है। इस यन्त्र के प्रभाव से सर्वत्र सभी ज्वर पीड़ित हो जाते हैं।

सर्वयन्त्र साधारण क्रिया

अथ संप्रोच्यते सर्वयन्त्रं साधारण क्रिया।
स्नातः शुद्धाम्बरधरः पुष्पचन्दनभूषितः।
द्रव्यैः समुदितैरुक्तस्थले यन्त्रं लिखेद्रहः।
षष्ठ्यान्तं साधकपदं मध्यबीजोपरि स्मृतः।
द्वितीयान्तं साध्यमधः पार्श्वयोः कुरु युग्मकम्।
वियत् भृग्वौ सर्गबीजं मध्यभागादधो लिखेत्।
दशानादिचतुःकोणे तु हंसः सोऽहमत्युत।
नेत्रे श्रोत्रे पार्श्वे च युग्मे दिग्बीजानि दिक्षु च।

यन्त्र गायत्रिका वर्णान् प्रति कोष्ठा यन्त्रराजाय सद्वन्ति विद्महे वर्त्तत पर प्रदाय धीमहि इत्यन्ते तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्।

एषोक्ता यन्त्र गायत्री स्मृता सर्वेष्ट सिद्धिदा।
बहिः प्राण प्रतिष्ठायाः मनुं सर्वत्र वेष्टयेत्।
स्थलानुक्तौ भूर्जपत्रे क्षौमे वा ताडपत्रतः।
यन्त्रं विलिख्य गुलिकां वध्वा सूत्रेण वेष्टयेत्।
लाक्षया छादितं स्वर्णे रौप्ये ताम्रेऽथवा क्षिपेत्।
मध्यबीजेन देवेशं पूजयेदिष्टसिद्धये।
शान्तिर्वश्यं स्तम्भनञ्च द्वेषोच्चाटनमारणे।
षडेतानि च कर्माणि सम्प्रोक्तानि प्रिये मया।
चन्दनं रोचना रात्रिर्गृह धूमश्रिता भवः।
अङ्गारोष्ट विशाणि स्युः सालुवो यन्त्र लेखने।
पिपली मरिचं शुण्ठीश्लेन विष्ठा च चित्रकैः।
गृह धूमामत्त रत्यौ लवणञ्च विषाष्टकम्।
शान्तेवश्ये लिखेद्भूर्जे स्तम्भने द्वीपि चर्मणि।
खरचर्मणि विद्वेषे उच्चाटे ध्वज वाससि।
नरास्थीनि लिखेद्यन्त्रं मारणे मन्त्र वित्तमः।
हेमजा रूपजा जाति संभवा लेखनी शङ्ग।
दूर्वांकुरोत्पन्ना स्तम्भनागस्त्यस्य च बृक्षजा।
राजवृक्षभवा वास्यात् विद्वेष तु करञ्जजा।
विभीतकोच्छितोच्चाटे मारणे तु पुमस्थिजा।

शुभे कर्मणि रम्याहे लेखिनी रचयेत्सुधी।
रिक्ता तिथौ कुजदिने विष्टौताम शुभे पुनः।
सम्यक्कृत्ता न्यासजामात्म रक्षां विधाय च।
काम्यं कर्म प्रकर्त्तव्यमन्यथाभिभवो भवेत्।
शुभं वाप्यशुभं वापि काम्यं कर्म करोति यः।
तस्यारित्वं ब्रजेन्मन्त्रो न तस्मात्तत्परो भवेत्।
विषयासक्तचित्तानां सन्तोषाय प्रकाशितम्।
नाना तन्त्रोदितं काम्यं कर्म नैतद्धितावहम्।
काम्यं कर्म प्रसक्तानां तावन्मात्रं भवेत्फलम्।
निष्कामं भजतामेव अखिलाभीष्टसिद्धयः।
इति शरभार्चा पारिजाते रामकृष्ण विनिर्मिते।
काम्य यन्त्राः मोदभृतः मृप्तमस्तकोऽगमत्।

रामकृष्ण विनिर्मिते शरभार्चा पारिजाते सप्तमः स्तवकः।

सभी यन्त्रों के साधन की साधारण क्रिया को कहता हूँ। स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहन पुष्प चन्दन से भूषित होकर बैठे। समुदित द्रव्यों से उक्त स्थानों में यन्त्र लिखे। मध्य बीज पर षष्ठ्यन्त साधकं पद लिखे। द्वितीयान्त साध्य नाम नीचे लिखे। पार्श्वों में कुरु कुरु लिखे। आ औं अं: मध्यभाग के नीचे लिखे। चारों कोनों में हंस: सोऽहं नेत्र श्रोत्र दोनों पार्श्वों में दिग्बीजों को लिखे। यन्त्र गायत्री के वर्णों को प्रत्येक कोष्ठ में लिखे।

यन्त्र गायत्री—यन्त्र राजाय विद्महे वरप्रदाय धीमहि तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्।

यह यन्त्र गायत्री सभी इष्टों की सिद्धि दात्री है। बाहर प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र के वर्णों को लिखकर वेष्टित करे। जहाँ पर यन्त्र लिखने के लिये आधार का वर्णन न हो वहाँ भोजपत्र, रेशमी वस्त्र या ताड़पत्र पर लिखे। यन्त्र लिखकर गोली बनाकर धागे से वेष्टित करे। उसके ऊपर लाह लगावे या सोने चाँदी के ताबीज में भरे। मध्य बीज से देवेश की पूजा इष्ट सिद्धि के लिये करे।

शान्ति, वश्य: स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन और मारण इन छह कर्मों का वर्णन मैंने किया। यन्त्र लेखन के द्रव्यों में चन्दन, गोरोचन,

गृहधूम, चिता का कोयला, अष्ट विष होते हैं। आठ प्रकार के विषों में—पिप्पलि, मरिच, सोंठ, बाज की विष्ठा चित्रक, गृह धूम, मत्त, स्त्री नमक आते हैं।

शान्ति और वशीकरण में भोजपत्र पर यन्त्र लिखे। स्तम्भन में हाथी की चमड़ी पर, विद्वेषण में गदहे की चमड़ी पर, उच्चाटन में झंडे के कपड़े पर और मारण में मनुष्य की हड्डी पर यन्त्र लिखे। शान्ति वश्य में सोना चाँदी जाति की लेखनी और दूव की लेखनीय से यन्त्र लिखे। स्ततम्भन में अगस्त्य वृक्ष की लेखनी से या राज वृक्ष की लेखनी से यन्त्र लिखे। विद्वेषण में करन विभीतक की लेखनी से, उच्चाटन-मारण में मनुष्य की हड्डी से यन्त्र लिखे। शुभ कर्म में शुभ दिन में लेखनी बनावे। रिक्ता तिथि मंगलवार में अशुभ कर्म के लिये लेखनी बनावे। यन्त्र लेखन के पहले व्यास जाल से आत्म रक्षा करे। अन्यथा अशुभ होता है। जो कोई शुभ या अशुभ काम्य कर्म करता है। उसके वैरी मन्त्र हो जाते हैं। इसलिये काम्य कर्म न करे। विषयासक्त चित्त वालों के सन्तोष के लिये यह प्रकाशित किया गया। नाना तन्त्रों में कथित काम्य कर्म नहीं करना चाहिये। काम्य कर्म प्रसक्तों को कर्म का फल ही मिलता है। निष्काम भजन से सभी अभीष्टों की सिद्धि होती है।

।।इति शरभार्चा रामकृष्ण विनिर्मिते सप्तम स्तवक:।।



आशुगरुड़ मन्त्र

अस्य श्री आशु गारुडस्तोत्र महामन्त्रस्य शंख ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्री आशुताक्ष्र्यो देवता गां वीजं गों शक्तिः गूः कीलकं मम आशुगरुड प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। गां अंगुष्ठाभ्यां नमः गीं तर्जनीभ्यां नमः गूः मध्यमाभ्यां नमः गेः अनामिकाभ्यां नमः गैः कनिष्ठिकाभ्यां नमः गोः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः गां ज्ञानाय हृदयाय नमः गों ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा गूः शक्तये शिखायै वौषट् गेः वलाय कवचाय हुं गैः तेजसे नेत्राभ्यां वौषट् गोः वीर्याय अस्त्राय फट् भूर्भुवस्वरोमिति दिग्बन्धः।

विनियोग–अस्य श्री आशुगारुड़ स्तोत्र महामन्त्रस्य शंखऋषिः। अनुष्टुप छन्दः। श्री आशुताक्ष्र्यो देवता। गां बीजम्। गों शक्तिः। गूः कीलकम्। मम आशु गरुड़ प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

करन्यास–गां अंगुष्ठाभ्यां नमः। गीं तर्जनीभ्यां नमः। गूः मध्यमाभ्यां नमः। गैः अनामिकाभ्यां नमः। गौः कनिष्ठाभ्यां नमः। गाः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास–गां ज्ञानाय हृदयाय नमः। गीं ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा। गूं शक्तये शिखायै वषट्। गैः बलाय कवचाय हुं। गैः तेजसे नेत्राभ्यां वौषट्। गोः वीर्याय अस्त्राय फट्। भूर्भुवः स्वरोम से दिग्बन्ध करे।

ध्यानम

आजानोस्तप्तहेमप्रभममलहिमं प्रख्यमानं हि तस्मा-
दाकर्णं कुंकुमाभं भ्रमरकुलमिव श्यामलं मूर्ध्निकेशम्।
ब्रह्माण्डं व्याप्त देहं भुजमहि प्रवरैर्भूषणैर्भूषिताङ्गं,
पिङ्गाक्षं ताक्ष्र्य दंष्ट्रं वरदमभयदं ताक्ष्र्यमुग्रं नमामि।।

ॐ नमो भगवते श्रीआशुगरुड़ाय गरुड़ाय महागरुड़ाय

समस्ताण्डबहिस्त्रैलोक्यनायकाय नाग शोणिततीर्थाय पक्षिराजाय विष्णु वाहनाय सर्वसर्वान् संहर संहर मं मर्दय मर्द मोटाय२ त्रोटाय२ भ्रमय२ मुञ्च२ आगच्छ२ आवेशयावेशय शीघ्र२ समस्त भूतवेतालान्नाशय नाशय परमंत्र परहोम परजप परशून्य परक्षुद्रान् छेदय२ स्वविद्या मंत्रान् प्रकटय२।

ॐ नमो भगवते आशुगरुड़ाय स्वर्णपक्षाय विनतादास्य मोचनाय कश्यपानन्द वर्धनाय सर्पशत्रून्निवारणाय ॐ हन२ दह२ ॐपच२ हन२ दह२ सर्वसर्पान्ति भक्षय२ सर्प विषान्नाशय नाशय हुं फट् स्वाहा गां अंगुष्ठाभ्यां नमः, गीं तर्जनीभ्यां नमः गूः मध्यमाभ्यां नमः गेः अनामिकाभ्यां नमः गैः कनिष्ठिकाभ्यां नमः गोः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः, गां ज्ञानाय हृदयाय नमः गीं ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा, गूः शक्तये शिखायै वौषट् गेः वलाय कवचाय हुं, गैः तेजसे नेत्राभ्यां वोषट्, गोः वीर्याय अस्त्राय फट्, भूर्भुवस्सुवरोम्–इति दिग्बन्धः।

।। गरुड़मन्त्रः समाप्तः।।

आशु गरुड़ मन्त्र

विनियोग–अस्य श्री आशु गारुड़ मन्त्रस्य शंकर ऋषिः। जगतीच्छन्दः। आशु गारुड़ो देवता। गं बीजं। स्वाहा शक्तिः सर्वविष हरणे विनियोगः। गां गीं गूं इत्यादि से षडंग न्यास करे।

अथ ध्यान

आजानोस्तप्तहेमप्रभमलहिमप्रख्यमानाहि तस्मात्,
आकण्ठः कंकुमाभं भ्रमरकुलमिव श्यामलं ऊर्ध्वकेशम्।
ब्रह्माण्डव्याप्तदेहं द्विजमहिप्रवरैर्भूषिताङ्गम
पिङ्गाक्षं तीक्ष्णदंष्ट्रं वरदभयदं तार्क्ष्यमुग्रं नमामि।।

मन्त्रम्

ॐ श्रीं गरुडाय महागरुड़ाय समस्ताण्डाद्वहिस्त्रैलोक्य नायकाय नागशोणित दिग्धाङ्गाय ॐ पक्षिराजाय विष्णु वाहनाय सर्प सर्प संहर संहर मठ मठ मर्दय२ मोटय२ लोपय२ त्रौटय२ भ्रामय२ मुञ्चय२

आकर्षय२ आगच्छागच्छ आवेश्य२ सिब्धय२ शीघ्र२ समस्त भूतवेतालान् नाशय२ सर्वग्रहान् नाशय नाशय सर्वशत्रून विद्रावय२ सर्वदुष्टान् विनाशय विनाशय सर्वविषं नाशय नाशय स्वाहा।

इतिषट् सप्तत्युत्तर शताक्षरोऽयं मन्त्रः विषहरण भूतनिग्रह प्रधानश्च। द्वादश सहस्त्रं जपः गुरुपदिष्टेन तिलनलैः शतांशं होमः पूर्वोक्तवत्।

यह मन्त्र १७६ एक सौ छिहत्तर अक्षरों का है। यह विषहरण भूतनिग्रह प्रधान है। गुरु उपदेश के अनुसार बारह हज्जार जप करे। प्रज्वलित अग्नि में शतांश १२०० एक हजार दो सौ हवन तिल से करे।



अथ दारुण सप्तकम्

अथ दारुण सप्तकम्।

वंदे गुरुपदद्वंद्वमवाङ्मनसगोचरम्
रक्तशुक्लप्रभामिश्रमतर्क्यं भैरवमहः।

ॐ अस्य श्री दारुण सप्तक माला मन्त्रस्य श्री सदाशिव ऋषिः वृहती छंदः श्री शरभो देवता मम वैरि विनाशार्थे जपे विनियोगः।

ईश्वर उवाच—

कोपोद्रेकाति निर्य्यन्निटिल परिचरत्तार भार प्रभूत।
ज्वालामालाग्रताम्यत्स्मरतनुशलभं त्वामहं सालुवेश।
याचेत्त्वत्पाद पद्म प्रणिहित मनसं द्वेष्टि मां यः क्रियाभि-
स्तस्य प्राण प्रयाणं परशिव भवतः शूलभिन्नस्य तूर्णम्।
शंभोत्त्वद्धस्तकुंतक्षतरिपुहृदयान्निस्त्रवलौहितौघं
पीत्वा पीत्वाति दीर्घा दशदिशि विसरास्त्वद्गणाश्चंडमुख्या।
गर्जन्तु क्षिप्रवेगा निखिलजयकराभीकराः खेल लोलाः
संत्रस्ता ब्रह्मदेवाः शरभखगपते त्राहि नः सालुवेश।।२।।
सर्वाद्यं सर्वनिष्टं सकलभयहरं त्वत्स्वरूपं शरण्यं
याचेहं त्वाममोघं परिकरसहितं द्वेष्टि मां यः क्रियाभिः।
श्री शंभो त्वत्कराब्जस्थितहलकठिना घातवक्षःस्थलस्य।
प्राणाः प्रेतेशदूत ग्रहण परिभवाः क्रोशपूर्व प्रयांतु।।३।।
द्वेष्यक्षोण्यां वयं यत्तव पद कमल ध्यान निर्द्धूतपापाः
कृत्याकृत्यैर्व्विमुक्ता विहगकुलपते खलयाबद्धमूर्त्ते।
तूर्णं त्वत्पादपद्मप्रभृत परशुना तुंड खंडी कृताङ्गः
सद्वेषी यातुयाम्यं पुरमतिकलुषं कालपाशाग्रवद्धः।।४।।
भीम श्री सालुवेश प्रणतभयहर प्राण जिद्दुर्मदानां
याचेहं चात्य गर्वप्रशमन विहितस्वेच्छया बद्ध मूर्त्ते।
त्वामेवाशुत्त्वदं ग्रयष्टक नखविदलद्दीन जिह्वो दरस्य
प्राणोत्क्रामप्रयाण प्रदलितहृदयस्यायुरल्पाय तांद्राक्।।५।।

श्रीशूलं ते करा ग्रेस्थितमुसलगदावर्त्त वाताभि घाताद्
यातायातारियू थत्त्वरित विघटनोद्भूत रक्तच्छटार्द्रम्।
संह्वष्ट्वायो धनेज्यामखिलसुरगणाश्चाशु नन्दन्तुनाना
भूतावेताल पूगः पिवतु तदखिलं प्रीतचित्तः प्रमत्तः॥६॥

त्वंहोहेलाग्रमुक्तप्रकटितविनमच्चंडकोदंड मुक्तै-
र्बाणैर्दिव्यैरनेकैः शिथलितवपुषः क्षीणकोलाहलस्य।
तस्य प्राणावसानं परशरभरिपोर्यत्त्वदीज्याप्रभावै-
स्तूर्णं पश्यामि यो मां परिहसति सदा त्वादिमध्यांतहेतोः॥७॥

इति निशि प्रयतः सनिरामिषो यममुखः शिवभावमनुस्मरन्।
प्रतिदिनं दशवार दिनत्रयं जपति निग्रह दारुण सप्तकम्॥८॥

इति गुह्यं महाबीजं परमं रिपुनाशनम्। भानुवारं समारभ्य मंगलांतं जपेत्सुधीः।

इति श्री मदाकाश भैरव तंत्रे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे नृसिंहकृत शरभस्तुतिः समाप्ता।

अथ संकल्पः—अद्यामुके मासि अमुके पक्षेऽमुक तिथौ यथा नाम गौत्रो अमुक कार्य सिद्ध्यर्थममुक दैवत कामुक मंत्रस्यामुक संख्यकं जपम् धारयामि यथाकाले।

दारुण सप्तक प्रारम्भ होता है। गुरु के दोनों चरण कमलों में प्रणाम करता हूँ। ये वचन और मन से नहीं जाने जाते। ये लाल उजले प्रभा मिश्र अतर्क्य महान भैरव है।

विनियोग—अस्य श्री दारुण सप्तक माला मन्त्रस्य श्री सदाशिव ऋषिः। वृहती छन्दः। श्री शरभो देवता मम वैरि विनाशार्थे जपे विनियोगः।

ईश्वर ने कहा—स्तोत्र

कोपोद्रेकाति निर्य्यन्निटिल परिचरत्तारभारप्रभूत।
ज्वालामालाग्रताम्यत्स्मर तनु शलभं त्वामहं सालुवेशः॥

***

प्रतिदिनं दशवार दिनत्रय जपति निग्रहदारुण सप्तकम्॥८॥

यह गुह्य महाबीज परम शत्रुओं का विनाशक है। रविवार से प्रारम्भ करके मंगल वार तीन दिनों तक जप करे। आकाश भैरव तन्त्र में प्रत्यक्ष सिद्धिप्रद नृसिंह कृत शरभ स्तुति समाप्त।

अथ संकल्पः–अद्यामुके मासि अमुके पक्षे अमुक तिथौ यथानाम गोत्रौ अमुक कार्य सिद्ध्यर्थम् अमुक दैवत कामुक मन्त्रस्य अमुक संख्यां जपन धारयामि यथाकाले।

प्रयोगात्मक श्री दारुण सप्तकम्।

विनियोग–श्री गणेशाय नमः। ॐ अस्य श्री दारुण सप्तकस्तोत्र महामन्त्रस्य वामदेव ऋषिः। जगती छन्दः। शरभ सालुव कालाग्नि रुद्रो देवता। खं बीजं। ह्रीं शक्तिः। हुं फट् कीलकम्। मम ये ते प्रतिकूल कारिणः तेषां पलायनार्थे दारुण सप्तकमहं करिष्ये।

करन्यास–ॐ ह्रां खां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं खीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ हूं खूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ हैं खैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ हौं खौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ हः खः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

अथ ध्यान

ॐ चन्द्रार्काग्निस्त्रिदृष्टिः कुलिशवरनखश्चंचुरत्युग्रजिह्वाः।
काली दुर्गा च पक्षौ हृदयजठरगौ भैरवो वाड़वाग्निः।।
उरुस्थौ व्याधिमृत्यू शरभो वा खगश्चण्डवातातिवेगः।
संहर्ता सर्व शत्रून् सजयति शरभसालुवः पक्षिराजः।।

ईश्वर उवाच

ॐ खें खां घ्रां घ्रं ह्रां ह्रं फट् सर्वसंहारणाय शरभ सालुवाय कालाग्निरुद्राय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ह्रीं दें खीं वं खीं दं खं तममुकनामानां शत्रुं नाशय ॐ श्लीं पशु हुं फट् घ्राण्येव हुं फट् त शीघ्रं नाशय स्वाहा सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फ घृणे हुं फट् कोपोद्रेकाति निर्यन्निखिल परिचरत्ताम्रभार प्रभूत, ज्वालामालाग्रदग्ध स्मरतनु सकलं त्वामहं सालुवेश। याचे त्वत्पाद पद्म प्रणिहित मनसो द्वेष्टिमां यः क्रियाभिः, तस्य प्राणा प्रयाणं परशिवभवतः शूलभिन्नस्य तूर्णम्।।१।।

ॐ नमो भगवते वाडवानलभैरवाय ज्वल२ वैरिकुलं दह२ वर्म२ ठः२ सर्वशत्रूणामुच्चाटनं कुरु२ हुं फट् सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फं घृणे हुं फट्।।२।।

ॐ खें खां घ्रां घ्रं ह्रां ह्रं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभ सालुवाय कालाग्निरुद्राय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ह्रीं दे खीं व खीं दे

खंतममुक नामानां शत्रुं नाशय ॐ श्लीं पशु टुं फट् घ्राण्येव हुं फट् त शीघ्रं नाशय स्वाहा सर्वज्ञ ॐ ह्लीं खं खें फं घृणे हुं फट् शम्भो त्वद्धस्त कुन्तक्षतरिपुहृदयान्निःस्रवल्लौहितौघं पीत्वा पीत्वातिदीर्घा दिशि२ विचरास्त्वद्गणाश्चण्डमुख्या, गर्जन्तु क्षिप्रवेगा निखिलजयकरा भीकराः खेललोलाः संत्रस्ता ब्रह्मदेवाः शरभ खगपते त्राहिन सालुवेश।।३।।

ॐ नमो भगवते वाडवानलभैरवाय ज्वल२ वैरिकुलं दह दह वर्म वर्म ठः२ सर्वं शत्रूणामुच्चाटनं कुरु कुरु हुं फट् सर्वज्ञ ॐ ह्लीं खें खें फट् घृणे हुँ फट्।।४।।

ॐ खें खां घ्रां घ्रं ह्रां ह्रं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभसालुवाय कालाग्निरुद्राय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ह्लीं दे खीं दं खीं द ख तममुक नामानांशत्रुं नाशय ॐ श्लीं पशु हुँ फट् घ्राण्येव हुं फट् शीघ्रं नाशय स्वाहा सर्वज्ञ ॐ ह्लीं खें खं फ घृणे हुं फट् सर्वाद्यं सर्वनिष्ठं सकलभयकंरं त्वत्स्वरूपहिरण्यं याचेहं त्वाममोघपरिकरमिहते द्वेष्टि मां यः क्रियाभिः। श्रीशम्भो त्वत्कराब्जस्थितकुलिशकराघात वक्षःस्थलस्य, प्राणा प्रेतेशदूतग्रहगणपरिखाः क्रोशपूर्वं प्रयातु।।५।।

ॐ नमो भगवते वाडवानल भैरवाय ज्वल२ वैरिकुल दह२ वर्म२ ठः२ सर्वशत्रूणामुच्चाटनं कुरु२ हुं फट् सर्वज्ञ सर्वज्ञ ॐ ह्लीं खं खं फं घृणे हुं फट्।।६।।

ॐ खें खां घ्रां घ्रं ह्रां घं फ्रट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभ सालुवाय कालाग्निरुद्राय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ह्लीं देखीं वखीं दखं त्तममुक नामानां शत्रुं नाशय ॐ श्लीं पशु हुं फट् घ्राण्येव हुं फट् तं शीघ्रं नाशय स्वाहा सर्वज्ञ ॐ ह्लीं खं खें फं घृणे हुं फट् द्विष्मः क्षोण्यां वयंहि तव पद ध्याननिर्धूते पापाः कृत्याकृत्यैर्विमुक्ता विहगकुलपते खेलयावद्धमूर्ते। तूर्णं त्वत्पादपद्मप्रभृतिपरशुना तुण्डखण्डीकृत्तांगः। स द्वेषी पातु याम्यं पुरमति कलुषं कालपाशाग्रबद्धः।।७।।

ॐ नमो भगवते वाडवानलभैरवाय ज्वल२ वैरिकुल दह२ वर्म२ ठः२ सर्व शत्रूणामुच्चाटनं कुरु२ हुँ फट् सर्वज्ञ ॐ ह्लीं खें खें फं घृणे हूं फट्।।८।।

ॐ खें खां घ्रां घं ह्लां हूं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभसालुवाय कालाग्निरुद्राय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ह्लीं देखीं वखीं दखंत्तममुकनामानां शत्रुं नाशय ॐ श्लीं पशु हुं फट् घ्राण्येव हूं फट् घ्राण्येव हूँ फटं तं शीघ्रं नाशय स्वाहा सर्वज्ञ ॐ ह्लीं खें खें फं घृणे हुं फट् भीमः श्री शालुवेश प्रणतभयहरः प्राणजिद्दुर्मदानां याचे हं चास्य वर्ग प्रशमनमिहते स्वच्छया बद्धमूर्ते त्वामेवाशु त्वं दघ्र्यष्टक नख विद लद् ग्रीव जिह्वोदरस्य प्राणायत्तु प्रयाणं प्रकटित हृदयस्या-युरल्पायतेश।।९।।

ॐ नमो भगवते वाडवानलभैरवाय ज्वल२ वैरिकुलं दह२ वर्म२ ठः२ सर्व शत्रूणामुच्चाटनं कुरु२ हुं फट् सर्वज्ञ ॐ ह्लीं खें खें फं घृणे हुं फट्।।१०।।

ॐ खें खां घ्रां घ्रं ह्लां ह्लं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभसालुवाय कालाग्निरुद्राय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ह्लीं देखीं वखीं दखंत्तममुक नामानां शत्रुं नाशय ॐ श्लीं पशु हुं फट् घ्राण्येव हुं फट् तं शीघ्रं नाशय स्वाहा सर्वज्ञ ॐ ह्लीं खें खें फं घृणे हुं फट् श्री शूलं ते कराग्र स्थितमुसलगदावृत्तवात्याभिघाताद् यातायातारियूथं त्रिदश विघटनोध्दू-तरक्तछटार्द्रं सद्दृष्ट्वा योधने ज्यामखिल सुरगाश्चाशु नन्दन्तु नानाभूता वेताल पूगः पिवतु तदखिलं प्रीतचित्तः प्रमत्तः।।११।।

ॐ नमो भगवते वाडवानल भैरवाय ज्वल२ वैरिकुलं दह२ वर्म२ ठः२ सर्व शत्रूणामुच्चाटनं कुरु२ हुं फट् सर्वज्ञ ॐ ह्लीं खें खें फं घृणे हुं फट्।।१२।।

ॐ खें खां घ्रां घ्रं ह्लां ह्लं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभ सालुवाय कालाग्निरुद्राय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ह्लीं देखीं वखीं दखंतत्तममुक नामानां शत्रुं नाशय ॐ श्लीं पशु हुं फट् घ्राण्येव हुं फट् तं शीघ्रं

नाशय स्वाहा सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फं घृणे हुं फट् अल्पं दोर्दण्ड बाहुप्रकटित विनमच्चण्डकोदण्डमुक्तैर्बाणैर्दिव्यैरनेकैः शिथिल तव वपुषः क्षीणकोलाहलस्य। तस्य प्राणावसानं परशरभरिपोहंत्वदिज्या प्रभावैस्तूर्णं पश्यामि यो मां परिहसति सदा त्वादि मध्यान्त हेतोः।।१३।।

ॐ नमो भगवते वाडवानलभैरवाय ज्वल२ वैरिकुलं दह२ वर्म२ ठः२ सर्वशत्रूणामुच्चाटनं कुरु२ हुं फट् सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फं घृणे हुं फट् इति निशि प्रयतस्तु निराशनोयममुखः शिवभावमनुस्मरन्। प्रतिदिनं दशवरं दिनत्रयं जपति निग्रहे दारुण सप्तकम्।।१४।।

इति गुह्यं महाबीजं परमरिपुनाशनम्।
भानुवारं समारभ्य मंगलान्तं जपेत् सुधीः।।१५।।

।। इति श्री आकाश भैरव कल्पे प्रत्यक्ष सिद्धि प्रदे नृसिंह कृते शरभस्तुतिः समाप्ता।।



सभाष्य निग्रह दारुण सप्तकम्

श्री गणेशाय नमः

भाष्यम्

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते इत्यादि श्रुत्या उत्पत्ति स्थिति संहारा ब्रह्माण एव धर्माः श्रूयन्ते। उत्पत्तिम् आश्रित्य कर्म काण्ड प्रवृत्तिः, स्थितम् आश्रित्य उपासना मार्गो भक्ति मार्गो वा, संहारम् आश्रित्य ज्ञानकाण्ड इति च त्रिदेव निर्णये व्याख्यातम्। इदम एव आश्रित्य तस्य च ब्रह्म विष्णु रुद्रादि संज्ञा च क्रमेण भवति। अथ च। दारुण सप्तक नाम-निग्रह दारुण सप्तकम् इति च पूर्ण नाम्नि स्तोत्रे संहारार्थकं ाीगवच्छिवपरं तत्त्वं निर्णीतम्, तच्च ज्ञानमार्ग प्रधान योग साधनकम्, ज्ञानम् अग्नित्वेन च स्वीकृतं गीतायां यथा–

'ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन।' अविद्या रूपध्वान्तावस्थायां काम क्रोध लोभात्मकान्येव 'सर्व कर्माणि' कार्यकारण भावमाश्रित्योक्तानि। प्रतिकूल कारित्वेन च यथा इम एव शत्रु पदवाच्या उच्यन्ते, तथाऽन्तिमे पद्ये दर्शयिष्यामः एतेषामेव मारणार्थं पलायनार्थं वा स्तोत्र विनियोगः। नच शत्रु पदेनात्र लौकिक शत्रूणां ग्रहणमिति वाच्यं चतुर्थश्लोक विपरीततत्वात्। 'नमस्ते रुद्र मन्यवे' इति भाष्ये अग्नि रूपेण रुद्रः स्तुतः। ॠग्वेदे अग्ने रुद्रत्वमति विशदम। अतएव संहार भाव सिद्धिः। मन्योराग्नेयभावस्य प्रसिद्धत्वम्।

हिन्दी—जगत में जितने भूत है श्रुति के अनुसार उनकी उत्पत्ति स्थिति संहार होता रहता है यह ब्राह्म धर्म है। कर्मकाण्ड की प्रवृत्ति उत्पत्ति आश्रित है। उपासना मार्ग भक्ति मार्ग स्थिति आश्रित है। ज्ञानकाण्ड संहार पर आश्रित है। ब्रह्मा उत्पत्ति करते है। विष्णु पालन करते है और महेश संहार करते है। त्रिदेवों के निर्णय की व्याख्या से इसी प्रकार का भाव प्रकट होता है।

अथ दारुण सप्तक—दारुण सप्तक नामक निग्रह दारुणसप्तक स्तोत्र संहारार्थक है। इसमें भगवान शिव परक तत्व निर्णीत है। ज्ञान मार्ग प्रधान योग साधन है। ज्ञान अग्नित्व रूप में स्वीकृत है। गीता में भी कहा है—

ज्ञानाग्नि सर्व कर्माणि भस्मसात कुरुतेऽर्जुनः।

हे अर्जुन ज्ञानानल में सभी कर्मों को भस्मसात कर दो।

अज्ञान रूप ध्वान्त अवस्था में काम, क्रोध, लोभात्मक सभी कर्म कार्य कारण भाव के आश्रित हैं। प्रतिकूल कर्म करने वाले को शत्रु कहा गया है। अन्तिम पद में इन्हीं के मारण या पलायन के लिये स्तोत्र का विनियोग किया गया है। शत्रु पद लौकिक शत्रुओं के लिये नहीं कथित है। चतुर्थ श्लोक में इनके विपरीतत्व का वर्णन है। 'नमस्तेरुद्र मन्यवे' के भाष्य में रुद्र को अग्नि रूप कहा गया है। ऋग्वेद में अग्नि के रुद्रत्व का विशद वर्णन है। अतएव संहार भार सिद्ध होता है। मन्यो का अग्नि भाव में प्रसिद्धी है।

मूलम्—ध्यान

चन्द्रार्काग्निस्त्रिदृष्टिः कुलिशवरनखश्चञ्चलोऽत्युग्र जिह्वः
काली दुर्गा च पक्षौ हृदयजठरगो भैरवो वाडवाग्निः।
ऊरूस्थौ व्याधिमृत्यू शरभवरखगश्चण्डवातातिवेगः
संहर्ता सर्वशत्रून् स जयति शरभः शालुवः पक्षिराजः॥१॥

भाष्यम्–चन्द्रार्काग्निः त्रिदृष्टिः विधुसूर्याग्नि नेत्रवान् विराट् रूपी भगवान् कुलिशवरनखः वज्रसदृशनखः, इत्यनेन भोग सम्पादने क्षमत्वं सूचितम्। चञ्चलः प्रतिक्षणं क्रियाशीलः। अत्युग्रजिह्व अत्युग्रः प्रचण्डाः सप्तजिह्वा यस्याऽसौ, कर्मिणां फलप्रदानं साधनत्वेन मुण्डके प्रसिद्धाः। काली दुर्गा च पक्षौ। काली कालस्य सर्ववस्तु नियामिका शक्तिः। दुर्गा दुःखेन गन्तुं योग्या सर्वदेवमयी पराशक्तिः। श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च' अहो रात्रे पार्श्वे इतिवत् पक्षौ। इमे द्वे शक्ति भगवतः पक्षस्थानीये जगद्रूपकार्यकरणे आश्रय भूते। हृदयजठरगः हृदयगतं जठरं वैश्वानरं गच्छतीति हृदयस्थानीयो वैश्वानररूपः वाडवाग्निः

जलेऽपि तस्य ज्वलन स्वभावः, सर्वदा विद्यमानत्वात्। भैरवो नित्योद्यमशीलः। उद्यमो भैरव इत्युक्तत्वात् शैव सूत्रे। ऊरुस्थौ व्याधिमृत्यू व्याधिश्च मृत्युश्च तौ पापिनां कृते कामक्रोध रतानां मूढानां कृते आवश्यकत्वात्। शरभवरखगः शृणातीति शरभः मूलाज्ञान निवर्तकः स चासौ वरश्च। खगः खे गच्छतीति आकाशवद् व्यापनशीलः, खं बीजं, जेन गम्यते लक्ष्यते इति वा खगः। खं बीजं भगवतः शरभस्य प्रसिद्धम्। चण्डवाताऽतिवेगः चण्डवायुरिव अतिवेगः भक्तानां रक्षणे, शीघ्र गामी सर्वांतिशा यित्वात्। तदेजदिति मंत्रानुसारं सर्वशत्रून् काम क्रोधादीन् संहरतीति संहर्ता विनाशकः। पक्षिराजः पक्षिणां जीवानां राजा पक्षिराजः समासान्तः टच्। वैनतेयश्च पक्षिणाम् इत्युक्तत्वात्। शालुवः शालते शोभते इति शालुवः उयसाादित्वात् साधुः। सर्व शोभा सम्पन्नः। क्वचिद् दन्त्यादिः। सार दौर्बल्ये रलयोर्न भेदः इत्यनेन निष्पत्तिः। सारयति शत्रूणां दौर्बल्यं सम्पादयतीति सालुवः। षल् गतावित्यनेन वा चण्डवातातिं वेग इत्यनेन गतिशीलत्वस्य प्रतिपादनाच्च। क्वचित् साल्व इतयपि पाठो दृश्यते। शरभः जयति सर्वोत्कर्षेण वर्ततेतराम् इत्यर्थः।

आध्यात्मतत्त्व साक्षात्कार लब्धये कामस्य प्रधानं शत्रुत्वमभिलक्ष्य स्तोतुमुपक्रमन्नाह कोपोद्रेकेति। यतः रुद्ररूपिणः शिवस्यैव कामदाहे प्रसिर्,ः। समाधि विघ्न विघ्नायिनं काममेवाह हन्तुं भगवान् श्रीकृष्णः– जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम् इति।।१।।

हिन्दी—चन्द्रार्काग्निः त्रिदृष्टि का अर्थ है कि चन्द्र सूर्य अग्नि तीन नेत्र वाले शरभ विराट भगवान हैं। कुलिशवर नखः का अर्थ है कि इनके नख वज्र के समान है। इनसे लोगों को भोग सम्पादन की क्षमता है। चंचलः प्रत्येक क्षण में क्रियाशीलता का द्योतक है। अत्युग्र जिह्व का अर्थ है कि अग्नि की सात जिह्वाओं के समान शरभ की उग्र प्रचण्ड जिह्वाएँ कर्मियों को फल प्रदान करने के साधन है। मुण्डक-उपनिषद् का यह मत प्रसिद्ध है।

काली दुर्गा च पक्षौ—काली काल की सभी वस्तुओं को नियन्त्रित करनेवाली शक्ति है। दुर्गा दुख से जानी जाती है। यह सर्व देवमयी पराशक्ति है। दिन और रात के रूप में श्री और लक्ष्मी इनके

दो पंख हैं। ये दो शक्तियाँ भगवत पक्ष स्थान के जगतरूप कार्य करने के आश्रय है।

हृदय जठरग:—हृदय में स्थित जठराग्नि वैश्वानर वड़वानल के रूप में जल में भी जाकर ज्वलित रहता है, यह उसका स्वभाव है। यह जल में सर्वदा विद्यमान रहता है। नित्य उद्यमशील को भैरव कहते हैं। शैव सूत्र में कहा है—उद्यमो भैरव:। उद्यम ही भैरव है।

उरुस्थौ व्याधिमृत्यू—व्याधि और मृत्यु पापियों के किए गये काम क्रोध हैं जिन्हें मूर्ख लोग आवश्यकता वश करते हैं।

शरभवर खग:-मूलज्ञान निवर्तक होने से ये श्रेष्ठ है।

खग:—आकाश में चलते हैं इसलिये खग है। आकाश के समान व्यापक है, इसलिये खग है। खं बीज गम्यते लक्ष्यते के लिये है। जाते है लक्ष्य करते है इसलिये खग कहते है। भगवत शरभ का प्रसिद्ध बीज खं है।

चण्डवातातिं वेग—तेज आँधी के समान अतिवेग का अर्थ है कि भक्तों की रक्षा के लिये अति शीघ्रगामी वेग से चलते हैं। तदेजदिति मन्त्र के अनुसार काम,क्रोध आदि सभी शत्रुओं का विनाश संहार करते हैं।

पक्षिराज का अर्थ है कि पक्षी धारी जीवों के राजा के समान है। इससे स्पष्ट है कि वैनतेय गरुड़ के समान इनकी गति तेज है। शालुव शालते अर्थात् शोभित होते है। उणादित्व में शालुव का अर्थ साधु होता है। अर्थात् सर्वशोभा सम्पन्न हैं। कुछ लोग इसं सालुव लिखते हैं। सार दौर्वल्य से इसमें कोई भेद नहीं है। सारयति शत्रूणां दौर्वल्यं अर्थात् शत्रुओं को दुर्बल बनाते है। इसी को सालुव कहते हैं वल् गतित्व होने से या प्रचण्ड वायुवेग से गतिशीलता का प्रतिपादन होता है। कहीं साल्व भी पाठ है सभी प्रकार का उत्कर्ष होकर विजय देते है। शरभ जयति का अर्थ है विजय देते हैं।

आध्यात्म तत्व के साक्षात्कार में काम का शत्रुत्व प्रधान होता है स्तोत्र के उपक्रम में कहा है। इनके क्रोध में कामशान्ति होता है। इनकी रुद्र रूप में कामदेव को मारने की शक्ति है। समाधि विघ्न कामदेव का विनाश करते है। श्रीकृष्ण ने कहा—जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्। कामरूप महाशत्रु दुरासद है।

कोपोद्रेकातिनिर्यन्- निखिलपरिचरत्- ताम्रभारप्रभूतं
ज्वालामालाग्रदग्धस्मरतनुं सकलं त्वामहं शालुवेश
याचे त्वत्पाद पद्मप्रणिहितमनसं द्वेष्टिमां यः क्रियाभि
स्तस्य प्राणप्रयाणं परशिव भवतः शूलभिन्नस्य तूर्णम्।। २।।

भाष्यम्–कोपस्य क्रोधात्मकाग्नेयरूपस्य उद्रेकः वृद्धि तया अतिनिर्यत निर्गच्छत्। लिखिलेषु कामजन्यपदार्थेषु परिचरत् परितः प्रसरणं कुर्वत्। ताम्र- भारवत् प्रभूतं रक्तवर्णवद् राशिभूतम् आग्नेयस्य रक्तवर्णत्वात्। ज्वालामालाग्रदग्धम् ज्वालाया माला अग्निरूपस्य ज्ञानस्य माला अविच्छिन्न–प्रवाहरूपा वृत्तिर्गृह्यते। तदग्रेण प्रधानेन दग्धं भस्मीकृतं स्मरतनुसकलं कामशरीरसाकल्यं येनतं दग्ध कामदेहं त्वाम्, हे शालुवेश अहं याचे प्रार्थये। यथा त्वमकार्षीः तथाऽहमपि कुर्यामिति भावनया त्वत्पादपद्य प्रणिहित मनसं त्वच्चरणारविन्दार्पितचित्तं मां यः कामः क्रियाभिः स्वव्यापारैः द्वेष्टि अप्रीतिं जनयति। परशिव भवतः तव शूलभिन्नस्य शूलेनभिन्नस्य त्रिविधतापद्वैधी भावमापन्नस्य तस्य कामस्य प्राणप्रयाणं विनाशं तूर्णं शीघ्रं याचे इति पूर्वेण सम्बन्धः।। २।।

कोपोद्रेकातिनिर्यन्—क्रोध की वृद्धि अग्निरूप है। वह सभी कामजन्य पदार्थों में जाता है, सभी पदार्थों के सभी ओर फैलता है। उसका वर्ण ताम्बे जैसा लाल होता है। अग्निरूप ज्वाला की माला ज्ञान रूप में अविच्छिन्न प्रवाह रूप ग्रहण करती है। वह अपने अग्रभाग से प्रधानता से कामदेव विग्रह रूप सभी कामशरीर को जला देता है। ऐसे सालुवेश से हम याचना करते हैं।

जैसा तुम करते हो वैसा मैं भी करना चाहता हूँ। भावनाओं से तुम्हारे चरणकमलों में प्रणत होकर मन से अपने चित्त को अर्पित करता हूँ। तुम्हारे चरण कमलों में अर्पित मेरा चित्त जो कामना क्रिया व्यापार हैं। उनमें जो द्वेष से अप्रीति उत्पन्न करता है। हे परशिव आपके त्रिशूल से वह क्षत हो जाये। त्रिविध ताप द्वैधी भाव युक्त कामाकांक्षियों के प्राण के शीघ्र प्रयाण या विनाश के लिये मैं याचना करता हूँ। सभी अनर्थों की जड़ काम है। उनके विनाश का सामर्थ्य केवल आप शम्भु में है।

शम्भो त्वद्धस्तकुन्तक्षत रिपुहृदयान्निःस्रवल्लोहितौघं पीत्वा- पीत्वाऽतिदीर्घा दिशिदिशि विचरास्त्वद् गणाञ्चण्डमुख्याः। गर्जन्तु

क्षिप्रवेगा निखिलजयकरा भीकराः खेललोलाः संत्रस्ताब्रह्मदेवाः शरभखगपते त्राहि नः शालुवेश।।३।।

शं कल्याणं भावयतीति शम्भुः शिवः सम्बोधने शम्भो। त्वद्हस्ते धृतः। कुन्तः कुं पृथिवीतत्त्वमनुत्तीति। उन्दी क्लेदने बाहुलकाततः शकन्ध्वादिः तस्मात् क्षतं विदीर्णं यद् रिपुहृदयो तस्मात् निःस्रवन्तं निस्सरन्तं लोहितौघं रक्तप्रवाहं षट्चक्रभेदमापाद्य रक्तवर्णममृत प्रवाहं पीत्वापीत्वा मुहुर्मुहुःपानं विधाय अतिदीर्घा वलिष्ठाअमृतस्य रक्तवर्णत्वात्। पादुकापञ्चके स्वीकृतमेतत्। त्वद्गणाश्चण्डमुख्याः चण्ड भाव प्रधाना दशप्राणाः। सहचना प्राणाः इति भगवत्पादाचार्याः। दिशिदिशि विचराः सर्वत्र गतिमन्तः क्षिवेगाः प्रसरणशीलाः प्राणनिरोधेश्रमराहित्यम् अनेनगम्यते। अतएव निखिलजयकाराः निखिलेषु इन्द्रियगणेषु जयकराः विजयप्रदाः। भीकराः भियं कुर्वन्तीति, कामगणानां त्रासकारिणः। खेललोलाः खेलेन लोलाः श्वासप्रश्वासक्रियया चञ्चलाः। संत्रस्ताब्रह्मदेवाः सनत्रस्ता आब्रह्मदेवा बुद्धीन्द्रियाणि यैस्ते योगिनः गर्जन्तु विजयिनो भवन्तु। प्रश्नोपनिषद्युक्त प्राण–कथादनुसर्तव्या। हे शरभखगपते शालुवेश नः अस्मान् त्राहि रक्ष। कामस्यानङ्ग त्वादपि अङ्गारोपवत् कथनं सुलभेन बोधाय। यथामनुः नीरूपस्यापि दण्डस्य रूपम्।

यत्र श्यामो लोहिताक्षो दण्डश्चरति पापहा।
प्रजा तत्र न मुह्यन्ति नेता चेत् साधुपश्यति।।३।।

–अ. ७३५/२०

सर्वस्यापित्वगुणैः स्तुवन् स्वाभिलषितमाह सर्वाद्यमिति।

जो कल्याण करे उसे शम्भु कहते हैं। शम्भो शिव का सम्बोधन है। शम्भु के हाथ में गोकुन्त है। कुं पृथ्वी तत्व है। उन्दी क्लेदन बाहुल्य है। इससे शत्रु का हृदय क्षत विदीर्ण होता है। क्षत हृदय से लाल रक्त प्रवाह निकलता है। षट्चक्र भेदन में मस्तक से पैरों तक लाल अमृत प्रवाह जो होता है उसे पीकर साधक, तुम्हारे मुख्य चण्ड गण बलिष्ठ और दीर्घ होते है। पादुका पंचक में भी यह स्वीकृत है। तुम्हारे चण्ड गणों में मुख्य भाव प्रधान दश प्राण हैं। भागवत पादाचार्य के अनुसार दश प्राण सहचर है। ये सभी दिशाओं में सर्वत्र विचरण करके गतिमान क्षिप्रवेग से प्रसरण करते है। इससे प्राण निरोध में श्रम राहित्य होता है।

इसलिये ये सभी इन्द्रिय गणों को जीतकर विजय देते हैं। कामगण भयभीत करते हैं। श्वास प्रश्वास क्रियाऐं चंचल रहते हैं। इनसे ब्रह्मादि देवता भयभीत रहते हैं। किन्तु इससे योगी विजयी होकर गरजते है। प्रश्नोपनिषद में कहा है—प्राण कैसे अनुसरण करते हैं। हे शरभ खगपते शालुवेश हमारी रक्षा करो। काम के अनंग होने पर भी उसे अंगारोपवत कहना सहज बोध युक्त है जैसे मन से निरुपित दण्ड का रूपं होता है उसी प्रकार सुगम है।

यत्र श्यामो लोहिताक्षो दण्डश्चरति पापहा।
प्रजा तजन मुह्यन्ति नेता चेत् साधु पश्यति।।

सर्व व्यापित्व गुणों की स्तुति के बाद अपनी अभिलाषा व्यक्त करते हैं।

सर्वाद्यं सर्वनिष्ठं सकलभयकरं त्वत्स्वरूपं हिरण्यं
याचेऽहं त्वाममोघं परिकरसहितं द्वेष्टिमां यः क्रियाभिः।
श्रीशम्भो त्वत्कराब्जस्थित कुलिशकराघात वक्षः स्थलस्य
प्राणाः प्रेतेशदूत ग्रहणगपरिखाः क्रोशपूर्वं प्रयान्तु।।४।।

भाष्यम्—हे प्रेतेशदूत, प्रेतेशो भगवान्शिवः तस्यदूतः वार्ताहिरः प्रापकः सम्बोधने रूपमिदम्। गुरुरूपेण तत्तत्त्वोपदेष्टा। सर्वाद्यं सर्वप्रमुखं सर्वनिष्ठ सर्वस्मिन् नितरां तिष्ठतीति सर्वव्यापी। कलयासहितं सकलं पापिनां त्वत्स्वरूपं कम्पनाद् इत्यधिकरणोक्तम्। महद् भयमुद्यतमित्यादि। हिरण्यं हिरण्यवर्ण परिकरसहितं सर्वसाध्यसाधनैक नीडम् अमोधं सफलं सत्यस्वरूपम् श्री शम्भो श्री श्रियासहितः शम्भुः सम्बोधने श्री शम्भो। यः कामः क्रोधो लोभो वा क्रियाभिः स्वस्वव्यापारैः मां द्वेष्टि प्रीत्यभावमुत्पादयति। अतः अहंत्वां भवन्तंयाचे प्रार्थये यत् त्वत्कराब्जस्थितेन कुलिशेन शासनात्मकदण्डभूतेन कराघातेन वक्षः स्थले हृदये यस्य तस्य प्राणाः प्रकर्षेण चष्टन्ते इति प्राणाव्यापाराः ग्रहण परिखा ग्रहगणे स्वानुकुलग्रहैः रक्षिता अपि क्रोशपूर्व प्रयान्तु दूरी भवन्तु। ते स्वव्यापारकरणे निष्फलाः सन्तु इत्यभिप्रायः।।३।। योमां द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः शरभंते शुगृच्छतु यंद्विमस्तं तेशुगृच्छन्तु (य० १३) इतिमंत्राभ्यां यदुक्तं, तत् कथयति द्विष्म इति।।४।।

हे प्रेतेश दूत सम्बोधन है। प्रेतेश भगवान शिव हैं। उनके दूत वार्ताहिर: प्रापक यह सम्बोधन रूप है। प्रेतेश दूत गुरु उसके तत्वों का उपदेश करता है। शिव सबों के आदि कारण हैं। सवों में प्रमुख हैं। सर्वनिष्ठ हैं। सवों में रहते हैं। सर्व व्यापी हों कलायुक्त सकल पापियों को वह रूप कम्पित करता है। यह अधिकरण के रूप में उक्त है। महान् भय उत्पन्न करता है। रक्तवर्ण के परिकर सहित, सभी साध्यों के साधन रूप नीड, अमोघ, सफल सत्यस्वरूप श्री के साथ श्री शम्भो जो कामक्रोध लोभ या कर्म से अपने अपने व्यापार से मुझसे द्वेष रखते हों उनमें प्रीति भाव उत्पन्न करो। अत: मैं तुमसे याचना करता हूँ कि अपने कर कमलों में स्थित कुलिश से शासनात्मक दण्ड के रूप में कराघात करके उनके वक्षस्थल के हृदय में स्थित प्राण को निकाल दो। प्राण व्यापार ग्रहण दूर हो जाये। परित्वा ग्रहों और स्वानुकूल ग्रहों से रक्षित होने पर उनके प्राण कोसो दूर चले जायें। इसका अभिप्राय है कि उनका व्यापार निष्फल हो जाये। मन्त्र है—यो मां द्वेष्टि यं च वयं द्विष्म: शरभं ते शुगृच्छतु यद्विष्मस्तं तेशु गृच्छन्तु। इस मन्त्र से जो उक्त है वह द्विष्म में कथित है।

द्विष्मः क्षोण्यां वयं हि तव पद कमल ध्यान निर्धूत पापाः
कृत्या कृत्यैर्विमुक्ता विहग कुलपते खेलया वद्ध मूर्ते।
तूर्णं त्वत्पादपद्म प्रवृत परशुना तुण्ड खण्डी कृताङ्गः
सद्द्वेषी यातु याम्यं पुरमति कलुषं काल पाशाग्रबद्धः॥५॥

भाष्य–द्विष्मः अप्रीतिं कुर्मः संसार विषयं वेराग्यार्थम्। हे विहगकुलपते पक्षिराज, खेलया लीलया बद्ध मूर्ते गृहीत विग्रह- क्षोण्यां पृथिव्यां हि निश्चयेन। तव पद कमल ध्यान निर्धूतपापाः तव पद कमल ध्यान निर्धूतपापाः तव पद कमल ध्यानेन निर्धूत पापाः सर्व दोष रहिताः शुद्धाः। योगिनः कर्म कुर्वन्ति–आत्मशुद्धये इति गीता। कृत्या कृत्यैर्विमुक्ताः कृत्याया कृत्यानि मारणोच्चाटनादीनि कर्माणि तैर्विमुक्ताः रहिताः सन्तः। एतेन मारणोच्चाटनादिषु अयंस्तवो विनियुज्जते इत्यज्ञान मूलकमेव सिद्धयति तद्राहित्यविधानात् प्रमाणाभावाच्च। अथ च कृत्याकृत्यैर्विमुक्ता इत्यनेन कृत्यानि विधि ज्ञाप्यकर्माणि अकृत्यानि निषेध कर्माणि तैर्विमुक्ताइत्यर्थो गृह्यते चेत् तर्हि सर्वथा कर्म मार्ग

प्रतिषेधेन ज्ञान मार्गस्य सिद्धिः। एवं सति मारणादिकृत्यस्य कथा दूरादेवा अपास्ता वेदितव्या भवति। अत एव शत्रु पदेन लौकिक शत्रु ग्रहणं सर्वथा विप्रतिषिद्धमेव। मारणाद्यर्थे कृती छेदने तथा कर्माद्यर्थे डुकृञ् करणे च इत्युभयेषां प्रयोगः आंग्ल मराठी कोषे कृत्यापदमेवं व्याखतम्–

कृत्या a female beity to whom sacrifices are offered for destruction of magical purposes.

कृत्याकृत्य right and wrong doings proper and improper actions (page 107)

वयं तव भक्ता विमुक्ता भवाम इति सम्बन्धः। आत्मशुद्धस्य मुक्तावधिकारात्। प्रत्वत्पादिपद्म धृत-परशुना अज्ञानिनां कृते परशु रूपत्वात् तेषां छेदने समर्थत्वादित्यर्थः। तुण्डखण्डीकृताङ्ग तुण्डेन खण्डीकृताङ्गः। प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानमिति तृतीया। ध्वस्त मुखो विदग्धशाकल्यवत्। सद्द्वेषी विषयादिषु प्रवृत्तत्वा त् दृढाहङ्कारत्वाच्च अतएव अति कलुषं मलिनं काल पाशा ग्रबद्धः कालस्य यमस्य पाशः विततो मृत्यु पाशः इति श्रुतेः। तस्याग्रेण बद्धः सन् साम्यं पुरं यातु यातुमिच्छतीतयर्थः। इच्छार्थेभ्यो विभाषा वर्तमाने पा० ३.३.१६० पुनः पुनर्वश मापद्यते मे इति श्रुतेः। परमात्मज्ञानरहितस्य संसारे पच्यमानत्वं श्रुति प्रसिद्धमिति परमार्थः।।५।।

रागद्वेषादकामवर्गस्य निवृत्तिमाह भीम इति।

हिन्दी—द्विष्मः अप्रीति कुर्मः का अर्थ है—सांसारिक विषयों से वैराग। हे विहग कुल पते पक्षिराज खेल से लीलाओं से जो आपने मूर्त रूप पृथ्वी में ग्रहण किया है। आपके चरण कमलों के ध्यान से पापरहित होता है। तुम्हारे चरणकमल के ध्यान चिन्तन से मनुष्य सभी पापों से रहित होकर सभी दोषों से मुक्त होकर शुद्ध हो जाता है। योगी लोग आत्मशुद्धि के लिये कर्म करते हैं यह गीता का कथन है।

कृत्या के मारण उच्चाटन आदि कर्मों से रहित होते हैं। मारण उच्चाटन में इस स्तोत्र का प्रयोग होता है यह अज्ञान मूलक है। इस स्तोत्र से अभिचारों से राहित्य मिलता है। इसका प्रमाण नहीं है। इस स्तोत्र से कृत्या के कृत्यों से छुटकारा मिलता है। इससे ज्ञात होता है कि

कर्म मार्ग का सर्वथा प्रतिषेध होने में ज्ञानमार्ग की सिद्धि होती है। मारणादि कर्मों की कथा दूर से ही ज्ञात होता है। अतएव शत्रु पद से लौकिक शत्रु समझना सर्वथा प्रतिसिद्ध है। मारण के लिये पुत्तली में छेदन करना तथा कर्मादि में डुकृज करना इन दोनों प्रयोगों का अर्थ आंग्ल मराठी कोष में कथित है। कृत्या पद की भी व्याख्या है जैसे—

कृत्या female deity to whom sacrifices are affered for destruction of magical perpose । कृत्या एक स्त्री देवता है जिसे जादुई विनाश के उद्देश्य से बलि दी जाती है। कृत्या कृत्य right and wrong doings proper and emproper action । कृत्या कृत्य सही और गलत ठीक या बेठीक है। वयं तव भक्ता इनसे विमुक्त हो जाये इतना ही सम्बन्ध है। आत्म शुद्धि में मुक्ति के अधिकार से प्रत्वत्यादि पद्मधृत परशु का उपयोग अज्ञानी छेदन में करते है उन्हें इससे छेदन की क्षमता प्राप्त होती है। तुण्ड खण्डी कृतांग का अर्थ तुण्ड से कटा हुआ अंग है। प्रकृति आदि से उपसंख्यान तृतीया है। ध्वस्त मुखो विदग्ध शाकल्य के समान। सत्कर्म के द्वेषी विषयादि में प्रवृत्त बहुत अहंकार से अति कलुष मलिन काल पाश से बँधकर यम पाश मृत्यु पाश से वद्ध होकर यमलोक में जाते है। इच्छार्थिभ्यो विभाषा वर्तमाने पा० ३/३/१६० 'पुनः पुनर्वशमापद्यते में' श्रुति वचन है। परमात्म ज्ञान विहीनों का संसार में पच्य मानत्व श्रुति प्रसिद्ध परमार्थ है।।५।।

रागद्वेष में काम वर्ग की निवृत्ति का कथन अगले श्लोक के भीम में हुआ है।

भीमं श्री शालुवेशं प्रणतभयहरं प्राणजिद् दुर्मदानां
याचेऽहं चास्य वर्ग प्रशमनमिह ते स्वेच्छया बद्धमूर्ते।
त्वामेवाशु त्वदङ्ध्यष्टकनख विलसद्ग्रीवजिह्वोदरस्य
प्राणायान्तु प्रयापणं प्रकटित हृदयस्यायु रल्पायुतेश।।६।।

हे प्रणतभयहर शरणागत रक्षक श्री शालुवेश, हे अंल्पायुतेश दीनरक्षक, दुर्मदानां राक्षसानां प्राणजिद् नाशकः अत एव भीमः। इह संसारे स्वेच्छया बद्धमूर्ते स्वेच्छया गृहीत देहः कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुम समर्थत्वात्। अस्य रागद्वेषादिकाम वर्गस्य प्रशमनम्, अस्य संसारस्य वा इदिमा संविधायित्वात् वर्गप्रशमनं निवृत्तिं ते त सशकाशात् अहंत्वामेवाशु शीघ्रं याचे द्विकर्मकत्वात् प्रकटित हृदयस्य सवृत्तिवस्य

प्रकटित बहिर्भावस्य त्वदङ्घ्र्यष्टक नखैः विदलद् ग्रीव जिह्वोदरस्य तव चरणाष्टकैः अष्ट भैरवैः नष्ट सामर्थ्यस्य द्वेष वर्गस्य संसारस्य आयुः जीवन कालः प्राणाः सामर्थ्यं प्रयाणयान्तु स्वरूपे विलीनतां गच्दन्तु इत्यर्थः रागद्वेषमय संसारस्य निवृतौ सत्यां सम्यक् तत्त्वज्ञानं भवतीति भाव।।६।।

यज्ञरूपकेणाऽह श्री शूलमिति।

हिन्दी—हे शरणागतों के भय को हरने वाले, हे शरणागतों के रक्षक श्री शालुवेश, दीन रक्षक!! दुर्दम, राक्षसों के प्राणों का अन्त करनेवाले, आप भीम हैं। इस संसार में अपनी इच्छा से मूर्त होने वाले, अपनी इच्छा से देह धारण करनेवाले आपमें करने या न करने या अन्यथा करने की सामर्थ्य है। इस राग द्वेषादि कामवर्ग का प्रशमन, इस संसार का अस्तित्व देनेवाले वर्ग प्रशमन निवृत्ति के लिये मैं तुमसे याचना करता हूँ। द्विकर्मकता से प्रकटित हृदय के सद् वृत्ति से प्रकटित तुम्हारे आठ पैरों के नावों से, बिदलद गर्दन जीभ उदर का अष्ट भैरवों के सामर्थ्य से द्वेष वर्ग का संसार की आयु जीवन काल प्राण सामर्थ्य का प्रयाण स्वरूप में हो जाये रागद्वेष भय संसार की निवृत्ति सत्य सम्यक् तत्व ज्ञान हममें हो जाय।

यज्ञ रूप का कथन श्री शूलमिति श्लोक में है—

श्रीशूलं तं कराग्रस्थित मुसलगदा वृत्त वात्याभिघातात्
यातायातारियूथं त्रिदश विघटनोध्दूतरक्तच्छटार्द्रम्।
सद् दृष्टावऽऽयोधने ज्यामखिलसुरगणाश्चाशु नंदन्तु नाना
भूत वेतालपूगः पिबतु तदखिलजं प्रीतचित्तः प्रमत्तः।।७।।

भाष्यम्–हे शरभ खगपते ते तव कराग्रस्थित मुसलगदा वृत्तवात्या तव कराग्रस्थिते मुसलगदे सामर्थ्यविशेषे तयोर्वृत्तेन भ्रमणजात चक्राकारेण वात्या वात समूह रूपेण अतिवेग सामर्थ्येन अभिघाताद् यातायातारियूथं चराचरारिमंडलं त्रिदशानां देवानाम् इन्द्रियाणामित्यर्थः। विघटनम् अस्वास्थीकरणम्, तेन उद्धूतोद्रिक्तं रक्तच्छटार्द्रं रुधिर धारया कर्दमी भूतं रक्तान्यधातुभिः मिश्रीकरणं सद्आयो धनेज्यां युद्ध रूपं यज्ञम् युद्धमायोधनं जन्यमित्यमरः। अखिलसुरगणाः इन्द्रयाधिदेवा भूताश्च प्राणिनः पञ्चभूतानिच लिङ्गव्यत्यय आर्षत्वात्। दृष्टवा नन्दन्तु प्रसन्ना भवन्तु उभयेषांहितत्वात्

प्रीतिचितः प्रसन्नो वेतालपूगः प्राणविशेष समुदायः तदखिलं पिवुत। वेतालपूगस्य आग्नेय भाव विशेषत्वात् समुचितमेव युद्धक्षेत्रं यां कृत्वा निर्दिष्टवान् अनेन आध्यात्मिक एवं यज्ञोऽत्राभिप्रेतः देवासुर भावयोर्विरुद्धत्वेन प्रतिक्षणं युद्धकारित्वेन च प्रसिद्धत्वात्। त्रिदशविघटनमिहेन्द्रियाणां वैचित्यरूपं मुसलगदारूपं, सामर्थ्य विशेष वृत्तवात्येति प्राणानां वृत्याकारेण प्रवर्तनमिहेति ग्राह्यम्।।७।।

हिन्दी—हे शरभ खगपते तुम्हारे हाथों में स्थित मुसलगदा वृत्तवात्य से तुम्हारे हाथों में स्थित मुसलगदा सामर्थ्य विशेष में उनके वृत्ताकार चक्राकार भ्रमण से जो अतिवेगवान वायु उत्पन्न होता है उनके अभिघात से यातायात शत्रु समूह चराचर शत्रु मण्डल देवताओं इन्द्रियों का विघटन होता है। उनसे निकले रक्त छटा से आर्द्र रुधिर धार से कर्दमी भूत रक्त अन्य धातु के मिलने से सद आयो धनेज्या युद्ध रूप यज्ञ युद्ध मायोधन जन्य अमर है। सभी देवगण इन्द्रियों के अधिदेवता भूत प्राणीपंचभूत, लिंग व्यव्यय आर्षत्व से उसे देखकर आनन्दित प्रसन्न होते हैं। दोनों के अहित से प्रीतिचित्त प्रसन्न वेताल प्राण विशेष समुदाय उसे पीता है। वेताल पूजा के आग्नेय भाव विशेष से समुचित युद्ध क्षेत्र यज्ञ करके निर्दिष्टवान इस आध्यात्मिक यज्ञ यहाँ अभिप्रेत है। देवता असुरों की भाव विरुद्ध होने से प्रति क्षण युद्ध होता रहता है यह प्रसिद्ध है। त्रिदश विघटन इन्द्रियों का वैचित्य रूप मुसलगदा रूप सामर्थ्य विशेष से वृत्याकार प्रवर्तन होता है। साधक साधना से प्राप्त सामर्थ्य से हर्षित होकर गर्जन करता है।

अल्पं दोर्दण्डबाहुं प्रकटितं विनमच्चण्ड कोदण्डमुक्तै
र्बाणैर्दिव्यैरनेकैः शिथिलितवपुषः क्षीणकोलाहलस्य
तस्य प्राणावसानं परशरभ विभोऽहंत्वदिज्या प्रभावैः
तूर्णम् पश्यामि यो मां परहसति सदा त्वादिमध्यान्त हेतो।।८।।

भाष्यम्—हे परशरभ विभो आदिमध्यान्तहेतो उत्पत्ति स्थिति संहारकारण त्वदिज्या प्रभावैः तव सङ्गतीकरण रूपैः प्रभावैः तूर्णं शीघ्रं पश्यामि। यस्तु सदा मां परहसति इन्द्रियगणः, त्वत्कृपया वशीभूते तस्मिन्, परहासः कीदृश इति पश्यामि इति साभमानोक्तिः। उक्तिं च तुलसीदासे—परवशदेखहँस्यौ इनि इन्द्रिन स्ववश होय न हंसे हौं।'

अल्पं निम्नं दोर्दण्डो भुजदण्डश्चासौ बाहुश्च तेन प्रकटितो विनमच्चण्डोदण्डः प्रहरण सामर्थ्य विशेषः। प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा

ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते, इति श्रुतिः। तेन मुक्तैरनेकैः दिव्यैः साधनरूप सामर्थ्यैः शिथिलितवपुषः क्षीणकोलाहलस्य क्षीणशरीरस्य कार्श्यमापन्नस्य विक्षेपरहितस्य तस्य इन्द्रियगणस्य प्राणावसानं सामर्थ्यसमाप्ति पश्यामति पूर्वेण सम्बन्धः।।८।।

हिन्दी—हे पर शरभ विभो आप सृष्टि के आदि मध्य और अन्त के कारण हैं। आप उत्पत्ति स्थिति और संहार के कारण हैं। आपकी इज्या के प्रभाव से आपके संगतीकरण रूप के प्रभाव से मैं तूर्ण शीघ्र देखूँ। जो मुझ पर सर्वदा हँसती हैं; वे इन्द्रियाँ आपकी कृपा से मेरे वश में हो जाये। तब परहास कैसा होगा इसे देखता हूँ। तुलसीदास ने कहा है—परवश देख हंस्यौ इनि इन्द्रिन स्वबश होय न हँसै हौं।

मेरे कमजोर भुजदण्ड बाहु उसके प्रकट होने पर चण्ड दण्ड प्रहार करने के योग्य होंगे। ॐ धनुष और बाण आत्मा का लक्ष्य ब्रह्म है। यह श्रुति वचन है। उसके छूटने पर अनेक दिव्य साधन रूप सामर्थ्य से शिथिलित शरीर, क्षीण कोलाहल है। क्षीण शरीर के कार्श्यमापन्न, विक्षेप रहित के इन्द्रिय गण के प्राणान्त होने पर सामर्थ्य की समाप्ति देखता हूँ। पूर्व से सम्बन्धित सप्तक साधन के विशेष नियम है—

इति निशि प्रयतिस्तुनिरासनो यममुखः शिवभावमनुस्मरन्।
प्रतिदिनं दशवारं दिनत्रयं जपतिनिग्रह दारुणसप्तकम्।।९।।

इति पूर्वोक्त क्रमेण प्रयतः संयतः सन्। तु अवधारणे अर्थात् प्रयत एवात्र विनियुज्यते। निरासनः आस्यते अस्मिन्नति आसनं शय्या, तन्निर्गतः जितनिद्र इत्यर्थः। यममुखः यमनयमप्रधानः यमनययोर्योगाङ्गत्वात्। यमपदेन उभयोर्ग्रहणम् प्रयत इति वचनात्। निशि रात्रौ 'यानिशा सर्वभूतानां मिति गीतावचनात्। शिवभावं कल्याणभावनात्मकं परमात्मकं परमात्मानं शिवं शरभमनुस्मरन् मुहुर्मुहः आवर्तयन् प्रतिदिनं प्रत्यहं दशवारं दशवृत्यात्मकं तद्युक्तिं दिनानां सप्तानां त्रयम् एवविंशति दिन पर्यन्तमित्यर्थः। निग्रह दारुण सप्तकं निग्रहारकं दारुणसप्तकं सप्तश्लोकात्मकम्, मध्यम पद लोपत्वात्। मनो दुर्निग्रहं परम् दारुणं भीष्मं भयानकम् इन्द्रियाणां निग्रहे दारुणा सप्तकम्। इन्द्रियाणां प्रमथानशीलत्वात्। इन्द्रियाणिप्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः इति प्रमाणात्। अतएव दशवारेति ग्रहणम्। ननु

मनसोपीन्द्रियत्वात् कथं दशवारेति चेन्न मनसो निरुद्धत्वात् इन्द्रियस्य इन्द्रियेभ्यः पराह्यर्थो अर्थेभ्यश्च परं मनः इति पृथङ् निर्देशात्। एकविंशति दुःखध्वंसो मोक्ष इति न्यायविदां समयः तस्मादेकत्वात् विंशतिग्रहणम्।।१०।।

हिन्दी—पूर्वोक्त क्रम से प्रयत संयत होकर विनियोग करे। निरासन शय्या को त्याग करे निद्रा को त्याग कर यम नियम प्रधान योगांग का पालन करे। यम पद से दोनों का ग्रहण है। निशा रात या निशा सर्वभूतानां गीता वचन है। शिवभाव कल्याण भावनात्मक परमात्मा शिव शरभ का स्मरण करे। तब दारुण सप्तक का दश बार पाठ प्रतिदिन एकइश दिनों तक करे। निग्रह दारुण सप्तक सात श्लोकात्मक निग्रह कारक दारुण सप्तक मध्यम पदलोप से सप्तश्लोकात्मक है। मन परम दुर्निग्रह है। दारुण भीष्म भयानक है। इन्द्रियों के निग्रह में यह सप्तक भयानक है। इन्द्रिय प्रमथानशील है। 'इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रदभं मनः' यह प्रमाण है। अतएव दश बार पाठ ही करना चाहिये। मन भी इन्द्रिय है। तो दशवार ही क्यों? मन के निरुद्ध होने पर मन इन्द्रिय नहीं रहता यह पृथक निर्देश है। एकइश दुखों के ध्वंस होने पर मोक्ष होता है। यह न्यायविदो सामयिको का मत है। इनके एकंहीनं से एकइश ही ग्रहणीय है।।९।।

इति गुह्यं महाबीजं परमं रिपुनाशनम्।
भानुवारं समारभ्य मङ्गलान्तं जपेत् सुधीः।।१०।।

भाष्यम्–इति गुह्यं गुहायां भवं महाबीजं कारणं सर्वेषां स्तोत्राणां परमं श्रेष्ठं रिपुनाशनं कामक्रोध निवारकम् जहि शत्रु महाबाहो कामरूपं दुरासदम् जहि शत्रुं रपमृधोनुदस्वाभयंकुणुहि विश्वतो नः। (कण्व सं ७-३८) शत्रूणां ग्रीवाः कृन्तामि (का०सं०)

कामएष क्रोध एष रजोगुण समुद्भवः।
त्रिविधिं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामक्रोधस्तथा लोभः तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।

भानुवारं द्वादशवारं द्वादशधा विभक्तम् ज्योतिर्मय रूपेण इति हेतोर्द्वादश ग्रहणम्। समारभ्य मङ्गलान्तं ब्रह्मा प्राप्ति पर्यन्तम्।

(मंगलं श्रेयसि श्वेत इति विश्वः। स्वरूप प्रान्तयोरन्तमन्तिकेऽपि प्रयुज्यते' इति शाश्वतः। कल्याणं मङ्गलं शिवम्—इत्यमरः।)

जपेत् स्मरेत्। सुधीः सुष्ठु धीर्यस्यासौ सुधीः। सन् सुधीः कोविदोबुधः इत्यमरः। सुधीः ब्रह्मवित् एतद् बुद्धवा बुद्धिमान् स्यात् इति गीता। इत्यनेन मारणादिषु एतत् स्तोत्र पाठकः प्रवर्तते इति कुधियां कथनं परास्तंवेदितव्यम्। प्रथमं पद्यं मनोनिग्रहात्मकम् इन्द्रियनिग्रहात्मकं च द्वितीयं ब्रह्म प्राप्तिफलप्रदर्शनार्थ मितिस्तोत्रप्रतिपाद्यक्रमः प्रदर्शितः श्लोकद्वयेनेति।।१०।।

श्री पीताम्बरापीठ, दतिया पावनस्थलस्या खण्ड श्री स्वामिपादैर्विरचितम् निग्रह दारुण सप्तक संस्कृत भाष्यम्।

हिन्दी—सबों का कारण महाबीज गुहा में गुह्य है। सभी स्तोत्रों में श्रेष्ठ है। शत्रु विनाशक कामक्रोध निवारक है। जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपे दुरासदम्'। जहि शत्रुं रपमृधोनुद स्वाभयं कृणुहि विश्वतो नः। कण्व सं ७-३८ शत्रूणां ग्रीवाः कृन्तामि' का०सं०।

काम एष क्रोध एष रजोगुण समुद्भवः।
त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।।

काम, क्रोध और लोभ इन तीनों का त्याग करना चाहिए।

भानुवारं वारहवार द्वादशधाविभक्तं ज्योतिमये रूपसे बारह ही ग्रहण करना चाहिये। समारभ्य मंगलांत का अर्थ ब्रह्म प्राप्ति तक है। अमर कोष के अनुसार मंगलश्रेय श्वेत विश्व है। स्वरूप प्रान्त के अन्त में भी प्रयुक्त होता है। शाश्वत है। मंगल कल्याण शिव है।

जपते का अर्थ स्मरण करना है। सुष्ठु धीर को सुधी कहते है। अमरकोष के अनुसार सन् सुधीः कोविदो बुधः। सुधी ब्रह्मज्ञानी को कहते हैं। बुद्धिमान को भी सुधी कहते हैं। उपर्युक्त तथ्यों को जानने के बाद दुष्टों का यह कथन परास्त होता है कि इस स्तोत्र का पाठ मारण आदि षट् कर्मों में होता है। प्रथम पद्य मनोनिग्रहात्मक इन्द्रिय निग्रहात्मक है। द्वितीय पद्य ब्रह्म प्राप्ति फल के प्रदर्शन के लिये है। यही स्तोत्र के प्रतिपाद्य का क्रम है। दो श्लोकों में यही क्रम प्रदर्शित है।

इति श्री अखण्ड श्री स्वामीपादै विंरचितं निग्रह
दारुण सप्तक भाष्यम्।



अथ श्री शरभ दिग्बन्धनम्

श्री गणेशाय नमः।

विनियोग–अस्य श्री शरभ दिग्बन्धन महामन्त्रस्य वामदेव ऋषि अति जगती छन्दः। शरभ सालुव पक्षिराजो देवता। खं बीजं स्वाहा शक्तिः। क्रों कीलकम्। शरभ सालुव प्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

करन्यास–ॐ खे खां वीर शरभाय अंगुष्ठाभ्यां नमः।

खं फट् उग्र शरभाय तर्जनीभ्यां नमः।

प्राण ग्रहासि प्राणग्रहासि हुंफट् क्रूरशरभाय मध्यमाभ्यां नमः।

सर्व शत्रु संहारणाय त्रिशूल शरभाय अनामिकाभ्यां नमः।

शरभ सालुवेशाय आनन्द शरभाय कनिष्ठाभ्यां नमः।

पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा वज्र नख वज्रदंष्ट्र शरभाय करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास—इसी प्रकार हृदयाय नमः, शिरसे स्वाहा शिखाय वषट। कवचाय हुं। नेत्रत्रयाय वौषट। अस्त्रायफट जोड़कर करे। जैसे—

ॐ खें खां वीर शरभाय हृदयाय नमः।

खं फट् उग्रशरभाय शिरसे स्वाहा।

प्राण ग्रहासि प्राण ग्रहासि हुंफट् क्रूर शरभाय शिखायै वषट्।

सर्व शत्रु संहारणाय त्रिशूलशरभाय कवचाय हुं।

शरभ सालुवेशाय आनन्दशरभाय नेत्र त्रयाय वौषट्।

पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा वज्रनखवज्रदंष्ट्रशरभाय अस्त्राय फट्।

दिग्बन्धन

ॐ लें वीर शरभाय पूर्वद्वारं बन्धय२ माँ रक्ष२ महायोगीश्वराय हुं फट् स्वाहा।

ॐ रं अग्नि शरभाय आग्नेय द्वारं बन्धय२ माँ रक्ष२ महा योगीश्वराय हुं फट् स्वाहा।

ॐ हुं प्रलयकाल शरभाय दक्षिण द्वारं बन्धय२ माँ रक्ष२ महायोगीश्वराय हुं फट् स्वाहा।

ॐ शं आनंद शरभाय नैऋृत द्वारं बन्धय २ माँ रक्ष २ महायोगीश्वराय हुं फट् स्वाहा।

ॐ वं प्रचण्डशरभाय पश्चिमद्वारं बंधय२ माँ रक्ष२ महायोगीश्वराय हुं फट् स्वाहा।

ॐ यं कपाल चामुण्ड शरभाय वायव्य द्वारं बंधय२ माँ रक्ष२ महायोगीश्वराय हुं फट् स्वाहा।

ॐ शं आनंद शरभाय उत्तर द्वारं बंधय२ माँ रक्ष२ महायोगीश्वराय हुं फट् स्वाहा।

ॐ शं उग्र शरभाय ईशान द्वारं बंधय२ माँ रक्ष२ महायोगीश्वराय हुं फट् स्वाहा।

ॐ लं कल्याण शरभाय अंतरिक्ष द्वारं बंधय२ माँ रक्ष२ महायोगीश्वराय हुं फट् स्वाहा।

ॐ क्षं प्रलय काल महा तांडव शरभाय भूमि द्वारं बंधय२ माँ रक्ष२ महायोगीश्वराय हुं फट् स्वाहा।

ॐ फं दक्षाध्वरध्वंसन शरभाय सर्वदिग्द्वारं बंधय२ माँ रक्ष२ महायोगीश्वराय भूतप्रेतपिशाचोच्चाटनाय महाशरभाय सालुव पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।

इति श्रीशरभदिग्बन्धनं समाप्तम्।

श्री शरभ शान्ति स्तोत्रम्

श्री गणेशाय नमः।।

रुद्रः शंकर ईश्वरः पुर हरः स्थाणुः कपर्दी शिवो,
वागीशोवृषभध्वजःस्मरहरो भक्तप्रियस्त्र्यम्बकः।
भूतेशो जगदीश्वरश्च शरभो मृत्युंजयः श्रीपति
रस्मान्काल गलोवतात्पशुपतिः शंभुपिनाकीहरः।।१।।
यतो नृसिंहं हरसे हर इत्युच्यते बुधैः।
यतो विभर्षि सकलं विभज्य तनुमष्टधा।।२।।
अतोऽस्मान् पाहि भगवन्नः प्रसीद पुनः पुनः।
इति स्तुतो महादेवः प्रसन्नो भक्तवत्सलः।।३।।
सुरानाह्लादयामास वरदानैरभीप्सितैः।
प्रसन्नोऽस्मि स्तवेनाहमनेन विवुधेश्वराः।।४।।
मंयि रुद्रे महादेवे भजध्वं भक्तिपूरिताः।
ममांशोऽयं नृसिंहोऽपि मयि भक्ततमोस्त्विह।।५।।
इमं स्तवं पठेद्यस्तु शरभेशाष्टकं नरः।
तस्य नश्यंति पापानि रिपुवच्च सुरोत्तमाः।।६।।
नश्यंति सर्वरोगाणि क्षयरोगादिकानि च।
अशेषग्रहभूतानि कृत्रिमाणिं ज्वराणि च।।७।।
सर्पचौरादिशार्दूल गजपोत्रि मुखानि च।
अन्यानि च वनस्थानि नास्ति भीतिर्न संशयः।।८।।
इत्युक्त्वान्तर्दधे देवि देवान् शरभसालुवः।
ततस्ते स्वस्वधामानि गताश्चाह्लाद् पूर्वकम्।।९।।
एतच्छारभकं स्तोत्रं मंत्रभूतं जपेन्नरः।
सर्वान्कामान् वाप्नोति शिवलोकं स गच्छति।।१०।।

जो मनुष्य इस स्तोत्र का पाठ करता है और शरभेशाष्टक का पाठ करता है उसके पापों का नाश होता है। सुरोत्तम के समान शत्रु भी नष्ट हो जाते हैं। सभी रोग नष्ट होते है। क्षय रोग भी नष्ट हो जाता है। सभी ग्रह, भूत, कृत्रिम ज्वर, सर्प, चोर शेर, हाथी, शूकर आदि अन्य जंगली जानवरों का भय उसे नहीं होता। देवों से इतना कहकर शरभ सालुव अन्तर्धान हो गये। तब सभी देवता हर्षित होकर अपने अपने

धाम में गये। जो मनुष्य इस मन्त्रात्मक शारभ स्तोत्र का जप करता है वह सभी कामनओं को प्राप्त करके शिव लोक में जाता है।

श्री आकाश भैरव तन्त्र के शरभ शान्ति स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ।

श्री शरभ सहस्त्र नाम स्तोत्रम्

श्री गणेशाय नमः

ॐ खें खां खं फट् प्राण ग्रहासि प्राण ग्रहासि हुं फट् सर्व शत्रु संहारणाय शरभ सालुवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा। द्विचत्वारिंशद्वर्णः। ॐ अस्य श्रीशरभ मन्त्रस्य कालाग्निरुद्रऋर्षिर्जगति छंदः श्री शरभेश्वरो देवता ऊं बीजं स्वाहा शक्तिः फट् कीलकं श्री शरभेश्वर प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

शिरसि कालाग्नि रुद्राय ऋषये नमः मुखे जगती छंदसे नमः हृदि शरभेश्वराय देवतायै नमः गुह्ये ॐ बीजाय नमः पादयोः स्वाहा शक्तये नमः सर्वांगं हुं फट् कीलकाय नमः।।

ॐ खें खां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।। खं फट् तर्जनीभ्यां स्वाहा। प्राण ग्रहासि प्राणग्रहासि हुं फट् मध्यमाभ्यां वषट्। सर्वशत्रु संहारणाय अनामिकाभ्यां हुं। शरभसालुवाय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्।

अथ हृदयादि न्यासः।। ॐ खें खां हृदयाय नमः ॐ खं फट् शिरसे स्वाहा।। प्राणग्रहासि प्राणग्रहासि हुं फट् शिखायै वषट्। सर्वशत्रु संहारणाय कवचाय हुं।। शरभ सालुवाय नेत्रत्रयाय वौषट्।। पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा अस्त्राय फट्।।

ऊपर लिखित ४२ अक्षरों के शरभ मन्त्र का जप प्रत्येक वर्ण पर एक हजार है। तदनुसार ४२ हजार जप होता है। घृताक्त पायस से हवन होता है।

अथ ध्यानम्

चंद्रार्कौ वह्निदृष्टिः कुलिशवरनखश्चंचलोत्युग्रजिह्वः।
काली दुर्गा च पक्षौ हृदयजठरगौ भैरवो वाडवाग्निः।।
ऊरुस्थौ व्याधिमृत्यू शरभवरखगश्चण्डवातातिवेगः।
संहर्त्ता सर्वशत्रून् स जयति शरभः सालुवः पक्षिराजः।।१।।

गौरी वल्लभकामारे कालकूट विषादन।
मामुद्धरापदाम्बोधेस्त्रिपुरध्नान्तकांतकः ।

अथ श्री शरभ सहस्त्रं नाम स्तोत्रम्

ॐ सर्वभूतात्मभूतस्य रहस्यमिततेजसः।
अष्टोत्तर सहस्त्रं तु नाम्नां सर्वस्य मे शृणु॥१॥
यच्छ्रुत्वा मनुजव्याघ्रसर्वान्कामानवाप्यसि।
स्थिरः स्थाणुः प्रभुर्भीमः प्रभवो वरदो वरः॥२॥

सर्व भूतात्मक भूतों का रहस्य अतुल्य तेजस एक हजार आठ नामों को सुनो। इसे सुनकर नर व्याघ्र सभी कामनाओं को प्राप्त कर लेता है।

जटीचर्मीशिखण्डी च सर्वाङ्गः सर्वभावनः।
हरश्च हरिणाक्षश्च सर्वभूतहरः प्रभुः॥३॥
प्रवृत्तिश्च निवृत्तिश्च नियतः शाश्वतो ध्रुवः।
श्मशानवासी भगवान् वचसोऽगोचरो धनः॥४॥
अतिवाधो महाकर्मा तपस्वी भूतभावनः।
उन्मत्तवृषोऽथ प्रच्छन्नः सर्वलोकप्रजापतिः॥५॥
महारूपो महाकायो वृषरूपो महायशाः।
महात्मा सर्वभूतात्मा विश्वरूपो महाहनुः॥६॥
लोकपालोंऽतर्हितात्मा प्रसादो हय गर्दभी।
पवित्रश्च महांश्चैव नियमो निगमप्रियः॥७॥
सर्वकर्मा स्वयंभूश्च आदि सृष्टि करोनिधिः।
सहस्त्राक्षो विरूपाक्षः सोमो नक्षत्रसाधकः॥८॥
सूर्यचंद्रगतिः केतुर्ग्रहो ग्रहपतिर्वरः।
अदारिद्रघ्नालयः कर्ता मृगवाणार्पणो नघः॥९॥
महातपा दीर्घतपा अदीनोदीन साधनः।
संवत्सरकरो मंत्री प्रमाणं परमं तपः॥१०॥
योगी योग्यो महाबीजो महारेता महातपाः।
सुवर्णरेताः सर्वज्ञः सुवीजो वृषवाहनः॥११॥
दशबाहुश्च निमिषो नीलकण्ठ उमापतिः।
बहुरूपः स्वयं श्रेष्ठो बलिर्वैरोचनो गणः॥१२॥

गणकर्त्ता गणपतिर्दिग्वासाः काम एव च।
मंत्रवित्परमो मंत्रः सर्वभाव करो हरः॥१३॥
कमण्डलु धरो धन्वी वाणहस्तः कपालवान्।
अशिनी शतघ्नी खण्डी पट्टिशश्चायुधी महान्॥१४॥
श्रुतिहस्तः सरूपश्च तेजस्तेजस्करो विभुः।
उश्नीषी च सुवक्त्रश्च उदग्रो विनयस्तथा॥१५॥
दीर्घश्च हरिनेत्रश्च सुतीर्थः कृष्ण एव च।
शृगालरूपः सर्वार्थो मुण्डः सर्वकमण्डलुः॥१६॥
अजश्च मृगरूपश्च गंधचारी कपर्दिनः।
ऊर्ध्वरिता उर्ध्व लिंग उर्ध्वशायी नभस्तलः॥१७॥
त्रिजटश्चौरवासी चरु द्रसेनापतिर्विभुः।
नक्तं चरोति तिग्मश्च अहश्चारी सुवर्चसः॥१८॥
गजहादैत्यहा चैव लोकध्नाता गुणाकरः।
सिंहशाद्रूलरूपश्च आर्द्रचर्मांवरोवरः॥१९॥
कालयोगी महाकालः सर्ववासाश्चतुष्पथः।
निशाचरप्रेतचारी भूतचारी महेश्वरः॥२०॥
बहुरूपो बहुधन सर्वाधारो मनोगतिः।
नृत्यप्रियो नृत्य तृप्तो नृत्यकः सर्वमालयः॥२१॥
घोषो महातपा ईशो नित्यो गिरिचरो नभः।
सहस्त्र हस्तो विजयो व्यवसायोह्यनिंदितः॥२२॥
अमर्षणो महामर्षी यज्ञा कामो मनोमयः।
दक्ष यज्ञापहारी च सुखदो मध्यमस्तथा॥२३॥
तेजोपहारी बलहा मुदितोप्यजितो भवः।
दंभीद्वेषी गंभीरो गंभीरबलवाहनः॥२४॥
न्यग्रोधरूपो न्यग्रोधो वृक्षकर्त्तास्गावृद्विभुः।
तीक्ष्णबाहुश्च हर्षश्च सहायः सर्वकालवित्॥२५॥
विष्णुप्रसादितो यज्ञः समुद्रो वडवामुखः।
हुताशनः सहायश्च प्रशान्तात्मा हुताशनः॥२६॥
उग्रतेजा महातेजा जयो जयो विजयकालवित्।
ज्योतिषामयनः सिद्धिः संधिविग्रह एव च॥२७॥

शिखी दंडी जटी ज्वाली मृत्युजिद्दुर्धरो वली।
वैष्णवी पणवीताली कालः काटकटंकरः॥२८॥
नक्षत्र विग्रह विधिर्गुण वृद्धि लयोगमः।
प्रजापति दिशा वाहु विभागः सर्वतोमुखः॥२९॥
वैरोचनो सुर गणो हिरण्यकवचोद्भवः।
अप्रज्यो वालचारी च महाचारी स्तुतस्तथा॥२०॥
सर्वतूर्य निनादी च सर्वनाथ परिग्रहः।
व्यालरूपो विलावासी हेममाली तरंगवित्॥३१॥
त्रिदिशस्त्रिदिशावासी सर्वबंधविमोचनः।
बंधनस्त्वसुरेन्द्राणां युधि शत्रुविनाशनः॥३२॥
साक्षात्प्रसादो दुर्वासा सर्वसाधुनिषेवितः।
पुस्कंदनो विभावश्च अतुल्यो यज्ञभागवित्॥३३॥
सर्वचारी सर्ववासो दुर्वासा वाङ्मनो भवः।
हेमो हेमकरो यज्ञः सर्ववीरो नरोत्तमः॥३४॥
लोहिताक्षो महोक्षश्च विजयाख्यो विशारदः।
सद्ग्रहो विग्रहो कर्मामोक्षः सर्वनिवासनः॥३५॥
मुख्यो मुक्तश्च देहश्च देहार्थः सर्वकामदः।
सर्वकाल प्रसादश्च सुवलो बलरूपधृक्॥३६॥
आकाशनिधिरूपश्च निषादी उरगः खगः।
रौद्ररूपी पांसुरादीः वसुरग्निः सुवर्चसी॥३७॥
वसुवेगो महावेगो महायक्षो निशाकरः।
सर्वभावप्रियावासी उपदेशकरोहरः॥३८॥
मनुरात्मा पतिर्लोकी संभोज्यश्च सहस्त्रशः।
पक्षी च पक्षिरूपी च अतिदीप्तो विशांपतिः॥३९॥
उन्मादो मदनः कामोह्यास्योर्थकरोयशः।
वामदेवश्च रामश्च प्राग्दक्षिणश्च वामनः॥४०॥
सिद्धयोगो महर्षिश्च सिद्धार्थः सिद्धि साधकः।
विष्णुश्च भिक्षुरूपश्च विषघ्नो मृदुरव्ययः॥४१॥
महासेनो विशाखश्च वृष्टिभोगो गवांपतिः।
वज्रहस्तश्च विष्कुंभी च भूस्तंभन एव च॥४२॥

वृत्तोवृत्तकरः स्थाणुर्मधुर्मधुकरोघनः।
वाचस्पत्यो वाजसेनो नित्यमाश्रमपूजितः॥४३॥
ब्रह्मचारी लोकचारी सर्वचारी विचारवित्।
ईशान ईश्वरः कालो निशाचारी पिनाकधृक्॥४४॥
निमित्तज्ञोस्थो निमत्तश्च नंदिर्नादकरो हरिः।
नंदीश्वरश्च नंदी च नंदिनो नंदिवर्द्धनः॥४५॥
भगहारीनिहंता! च कालो ब्रह्मा पितामहः।
चतुर्मुखो महालिंगश्चतुर्लिंगस्तथैव च॥४६॥
लिंगाध्यक्षः सुराध्यक्षो योगाध्यक्षो युगावहः।
बीजाध्यक्षो बीजकर्त्ता अध्यात्मानुगतो बलः॥४७॥
इतिहासः सकल्पश्च गौतमोऽथ निशाकरः।
दंभोह्यदंभो वैदंभो वश्यो वश्यकरः कलिः॥४८॥
लोककर्त्ता पशुपतिर्महाकर्त्ता ह्यनौषधः।
अक्षरं परमं ब्रह्म वलटाच्छन्न एव च॥४९॥
नीतिर्ह्यनीतिः शुद्धात्मा शुद्धो मान्यो गतागतिः।
बहुप्रसादः सुस्वप्नो दर्पणोथत्वमित्रजित्॥५०॥
वेदकारो मन्त्रकारो विद्वान्समरमर्दनः।
महामोघ निवासी च महाघोरो वशीकरः॥५१॥
अग्नि ज्वालो महाज्वालो अतिधूम्रो हुतोहविः।
वृषलः शंकरो नित्यो वर्चसी धूम्रलोचनः॥५२॥
नीलस्तथांगलुब्धश्च शोभनो निरवग्रहः।
स्वस्तिदः स्वस्तिभावश्च भोगीभोग करोलघुः॥५३॥
उत्संगश्च महांगश्च महाभोगो परायणः।
कृष्णवर्णः सुवर्णश्च इंद्रियं सर्वदेहिनाम्॥५४॥
महापाद्रो महाहस्तो महाकायो महायशाः।
महामूर्द्धा महामात्रो महानेत्रो निशालयः॥५५॥
महांतको महाकर्णो महोक्षश्च महाहनुः।
महाननो महाकंवुर्महाग्रीवः श्मशानभाक्॥५६॥
महावक्षा महोरस्को ह्यंतरामा मृगालयः।
लंबितो लंबितोष्टश्च महामाया पयोनिधिः॥५७॥

महादंतो महादंष्ट्रो महाजिह्वो महामुखः।
महानखो महारोमा महाकेशो महाजरः॥५८॥
प्रसन्नश्च प्रसादश्च प्रत्ययो योगिसाधनः।
स्नेहनोऽतिशुभस्नेहः अजितश्च महामुनिः॥५९॥
वृक्षकारो वृक्षकेतुः अनलो वायुवाहनः।
मंडली खिल धामश्च देवाधिपतिरेव च॥६०॥
अथर्वशीर्षः सामास्यः ऋक् साहस्त्र मितेक्षणः।
यजुः पादभुजागुह्यः प्रकाशो जंगमस्तथा॥६१॥
अमोघार्थप्रसादश्च अतिगम्यः सुदर्शनः।
उपकारप्रियः सर्वः कनकः कांचनस्थितः॥६२॥
नाभिर्नंदिकरो भावः पुष्करस्य पतिस्थिरः।
द्वादशास्त्रमसश्चाघो यज्ञो यज्ञसमाहितः॥६३॥
नक्तं कलिश्च कालश्च ककारः कालपूजितः।
सवाणो गणकारश्च भूतवाहन सारथिः॥६४॥
भस्मशायी भस्मगोप्ता भस्मभूतस्तमोगुणः।
लोकपालस्तथा लोको महात्मा सर्वपूजितः॥६५॥
शुक्लस्त्रिशुक्लसंपन्नः शुचिर्भूतनिषेवितः।
आश्रमस्थः क्रियावस्थो विश्वकर्मा मतिर्वरः॥६६॥
विशालशाखस्ताम्रो ष्टोऽह्यंबुजालः सुनिश्चलः।
कपिलः कपिलः शुक्ल आयुश्चैव परोवरः॥६७॥
गन्धर्वो ह्यदितिस्तार्क्ष्यः सुविज्ञेयः सुशारदः।
परश्वधायुधो देव अंधकारिः सुबाँधवः॥६८॥
तुंबवीणो महाक्रोध ऊर्ध्वरिता जलेशयः।
उग्रो वंशकरोद्वंशो वंशनादो ह्यनिंदितिः॥६९॥
सर्वांगरूपो मायावी सुह्यदो ह्यनिलोनलः।
बंधनो बंधकर्त्ता च सुबंधुरविमोचनः॥७०॥
मेषजारिः सुकर्मारिर्महादंष्ट्र समोयुधि।
बहुस्वनिर्मितः सर्वः शंकरः शंकरो वरः॥७१॥
अमरेशो महादेवो विश्वदेवः सुरारिहा।
निसंगश्चाहिर्बुध्न्यश्चाकिताक्षो हरिस्तथा॥७२॥

अजैक पाल पाली च त्रिशंकुरजितः शिवः।
धन्वंतरिर्धूम्रकेतुः स्कंदो वैश्रवणस्तथा॥७३॥
धाताशक्रश्च विश्वश्च मित्रस्त्वष्टाध्रुवो वसुः।
प्रभावः सर्वगो वायुरर्यमासवितारथिः॥७४॥
उग्रदंष्ट्रो विधाता च मांधाता भूतभावनः।
रतिस्तीर्थश्च वाग्मी च सर्वकर्मगुणावहः॥७५॥
पद्मवक्रो महावक्रश्चंद्रवक्रो मनोरमः।
वलयान्यश्च शांतश्च पुराणः पुण्यवर्चसः॥७६॥
कुरुकर्त्ता कालरूपी कुरुभूतो महेश्वरः।
शर्वो सर्वो दर्भशायी सर्वेषां प्राणिनांपतिः॥७७॥
देवदेव सुखाशक्तः सदसत्संवररत्नवित्।
कैलास शिखिरावासी हिमवद्गिरिसंश्रयः॥७८॥
कूलहारी कूलकर्त्ता बहुबीजो बहुप्रदः।
वनिजो वर्द्धनो दक्षो नकुलश्चंदनश्छदः॥७९॥
सारग्रीवी महाजंतुरत्नकश्च महौषधिः।
सिद्धार्थकारी सिद्धार्थ छंदो व्याकरणानि च॥८०॥
सिंहनादः सिंहदंष्ट्रः सिंहगः सिंहवाहनः।
प्रभावात्मा जरास्तालो हि यल्लोकाहितान्तकः॥८३॥
सारंगोऽसुखवक्रांत केतुमाली स्वभावतः।
भूताश्रयो भूतपतिरहोरात्रमनिंदकः॥८२॥
आसनः सर्वभूतानां निलयश्च विभुभैरवः।
अमोघ सर्व भूषास्यो याजनः प्राणहारकः॥८३॥
धृतिमान् ज्ञातिमान् दक्षः सत्कृतश्च युगाधिपः।
गोपालो गोपतिर्गोप्ता हि गोश्च वसनोहरः॥८४॥
हिरण्यबाहुश्च तथा गुह्यकालः प्रवेशकः।
प्रतिष्ठायां महाहर्षो जितकामो जितेंद्रियः॥८५॥
गांधारश्च सुशीलश्च तपः कर्मरतिर्धनः।
महागीतो महाब्रह्मा ह्यक्षरोगणसेवितः॥८६॥
महाकेतुः कर्मधातनैकतानश्चराचरः।
अवेदनीय आवेशः सर्वगंध सुखावहः॥८७॥

तोरणास्तरणो वायुः परिधावति चैतकः।
संयोगो वर्द्धनो वृद्धो महावृद्धो गणाधिपः॥८८॥
नित्यो धर्मसहायश्च देवासुरपतिः पतिः।
अमुक्तो मुक्तबाहुश्च द्विविधश्च सुपर्वणः॥८९॥
आषाढश्च सुखाढ्यश्च ध्रुवो हरिहयो हरिः।
वसुरावर्त्तनो नित्यो वसुश्रेष्ठो महामदः॥९०॥
शिरोहारी च वर्षी च सर्वलक्षणभूषितः।
अक्षरश्चाक्षयो योगी सर्व योगी महावलः॥९१॥
समाम्नायोऽसमाम्नायस्तीर्थ देवो महाद्युतिः।
निर्बीजो जीवनो मंत्रो अनघो बहुकर्कशः॥९२॥
रक्तप्रभूतो रक्तांगो महार्णवनिनादकृत्।
मूलो विशाखो यमृतो व्यक्तोऽव्ययः सनातनः॥९३॥
आरोहणो निरंहश्च शैलहारी महातपाः।
सेनाकल्पो महाकल्पो युगो युगं करोहरिः॥९४॥
युगरूपो महारूपो पवनो गहनो नगः।
न्याय निर्वापणो नादः पंडितोह्यचलोपमः॥९५॥
बहुमालो महामालः सुमालो बहुलोचनः।
विस्तारो लवणः क्रूरः ऋतुमासफलोदयः॥९६॥
वृषभो वृषभागांगो मणिबंधुर्जटाधरः।
इन्द्रो विसर्गः सुमुखः सुरः सर्वायुधः सहः॥९७॥
निवेशनः सुधन्वा च पूगगंधो महाहनुः।
गंध माली च भगवान् सानन्दः सर्वकर्मणाम्॥९८॥
मात्मनो बाहुलो बाहुः सकलः सर्वलोचनः।
रुद्रस्तालीकरस्ताली ऊर्ध्वसंहतलोचनः॥९९॥
छत्रपद्मः सुविख्यातः सर्वलोकाश्रयो महान्।
मुण्डो विरूपो बहुलो दंडी मुण्डो विकुण्डलः॥१००॥
हर्यक्षः ककुभो वज्री दीप्तावर्चः सहस्रपात्।
सहस्रमूर्द्धा देवेंद्रः सर्वभूतमयोहरिः॥१०१॥
सहस्रबाहुः सर्वांगः शरण्यः सर्वकर्मकृत्।
पवित्रः स्निग्धयुर्मंत्रः कनिष्ठः कृष्णपिंगलः॥१०२॥

ब्रह्मदंडविनिर्वातः शरघ्नः शरतापधृक्।
पद्मगर्भो महागर्भो पद्मगर्भो जलोद्भवः॥१०३॥
गभस्तिर्ब्रह्मकृत् ब्रह्म ब्रह्मकृद्ब्राह्मणो गतिः।
अनंत रूपोऽनैकात्मा तिग्मतेजात्मसंभवः॥१०४॥
ऊर्ध्वगात्मा पशुपतिः वीतुरंगा मनोजवः।
वंदनी पद्ममाली च गुणज्ञो स्वगुणोत्तरः॥१०५॥
कर्णिकारो महास्रग्वी नीलमौलीपिनाकधृक्।
उमापतिरुमाकांतो जान्हवी हृदयंगमः॥१०६॥
वीरो वराहो वरदो वरेशश्च महामना।
महाप्रभावस्त्वनघः शत्रुहाश्वेतपिंगलः॥१०७॥
प्रीतात्मा प्रयत्तात्मा च संयतात्मा प्रधानधृक्।
सर्वपार्श्वस्तुतस्तार्क्ष्यो धर्मः साधारणो वरः॥१०८॥
चराचरात्मा सूक्ष्मात्मा गोवृषो गोवृषेश्वरः।
साध्यर्षिर्वसुरादित्यो दिवस्वान् सवितामृगः॥१०९॥
व्यासः सर्वस्य संक्षेपो विस्तारः पर्ययो नयः।
ऋतुः संवत्सरो मासः पक्षः संख्या परायणः॥११०॥
कला काष्टा लयो मात्रा मुहूर्त्तः पक्षपाक्षणः।
विश्वक्षेत्रं प्रजाबीजं लिंगमाद्यस्त्वनिंदितः॥१११॥
सद्व्यक्तमवयक्त पिता माता पितामहः।
स्वर्गद्वारं प्रजाद्वारं मोक्षद्वारं त्रिविष्टपम्॥११२॥
निर्वाणं ज्ञानदं चैव ब्रह्मलोक परागतिः।
देवासुरगुरुर्देवो देवासुरनमस्कृतः॥११३॥
देवासुरमहामात्रो देवासुरसमाश्रयः।
देवासुरगणाध्यक्षो देवासुरगणाधिपः॥११४॥
देवासुरेश्वरो देवो सुरमहेश्वरः।
सर्वदेवमयो चिंत्यो देवानामात्मसंभवः॥११५॥
उद्भिज्जस्त्रिक्रमो वैद्यो विराजो वरदोवरः।
ईज्यो हस्ति मुखो व्याघ्री देव सिंहो नरर्षभः॥११६॥
विबुधाग्रवरश्रेष्ठः सर्व देवोत्तमोत्तमः।
गुरुः कांतो निजः सर्वः पवित्रः सर्ववाहनः॥११७॥

प्रयुक्तः शोभनो वज्र ईशानः प्रभुरव्ययः।
भृंगी भृंग प्रियो वभ्रू राजराजो निरामयः॥११८॥
अविरामः सुशरणो विरामः सर्वसाधनः।
ललाटाक्षो विश्वदेहो हारिणो ब्रह्मवर्चसी॥११९॥
स्थावराणांपतिश्चैव नियमेंद्रियवर्द्धनः।
सिद्धार्थः सर्वसिद्धार्थो नित्यः सत्यव्रतः शुचिः॥१२०॥
व्रतादिर्यत्परं ब्रह्म मुक्तानां परमागतिः।
विमुक्तो दीर्घ तेजाश्च श्रीमान् श्रीवर्द्धनो जगत्॥१२१॥
यथाप्रसादो भगवानिति भक्त्यास्तुतो मया।
यत्र ब्रह्मादयो देवाविदुर्यन्न महर्षयः॥१२२॥
तंस्तवीम्यहमाद्यं च कंस्तोष्यति जगत्प्रभुम्।
भक्तिश्चैव पुरस्कृत्य मया यज्ञपतिर्वसुः॥१२३॥
ततोऽनुज्ञापयामासस्तुतो मतिमतांगतिः।
शिव एवं स्तुतो देवैः नामभिः पुष्टिवर्द्धनैः॥१२४॥
नित्ययुक्तः शुचिर्भूत्वा प्राप्नोत्यात्मानमात्मनः।
एतद्धिपरमं ब्रह्मा स्वयंगीतं स्वयंभुवा॥१२५॥
ऋषयश्चैव देवाश्च स्तुवंत्येते नुतत्परम्।
स्तूयमानो महादेवः प्रीयते चात्मनापतिः॥१२६॥
भक्तानुकंपी भगवानात्म संस्थान् करोतितान्।
तथैव च मनुष्येषु यत्र कुत्र प्रधानतः॥१२७॥
आस्तिकः श्रद्धाधानश्च बहुभिर्जन्मभिः स्तवैः।
जाग्रतोथ स्वपतश्च व्रजंतो गतिसंस्थिताः॥१२८॥
स्तुवंति स्तूयमाने च चतुष्पथि रमंति च।
जन्मकोटि सहस्रेषु नानासंसारयोनिषु॥१२९॥
जंतोर्विशुद्धपापस्य भवेभक्तिः प्रजायते।
उत्पन्नाच भवेभक्तिरनन्या सर्वभावतः॥१३०॥
एतद्देवेषु दुःप्रापोनानुषेषुचन लभ्यते।
निर्विघ्नानिश्चलाभद्रे भक्तिरव्यभिचारिणी॥१३१॥
तस्यैव च प्रसादेन भक्तिरुत्पद्यते नृप।
ययायाति परां सिद्धिं तद्भागवतमानसः॥१३२॥

ये सर्व भावोपहताः परत्वेनानुभाविताः।
प्रपन्न वत्सलोदेवः संसारात्तान् समुद्धरेत्॥१३३॥
एवमन्येपिकुर्वन्ति देवाः संसारमोचनम्।
मनुष्याणां महादेवादन्यत्रापि तपोबलात्॥१३४॥
इतितेनेदं कल्यायाय भगवान् सदसत पतिः।
कृत्तिवासा ध्रुवं पूर्व ताड़िता शुद्ध बुद्धयः॥१३५॥
स्तवमेनं भगवति ब्रह्मो स्वयमधारयत्।
ब्रह्मा प्रोवाच शक्राय शक्रः प्रोवाच मृत्यवे॥१३६॥
मृत्युः प्रोवाचरुद्रेभ्यो रुद्रेभ्यस्तंडिमागयत्।
महता तपसा प्राप्तस्तंडिना ब्रह्म सम्मतिः॥१३७॥
स्तंडीः प्रोवाच शुक्राय गौतमायाह भार्गवः।
वैवस्वताय भगवान गौतमः प्राह साधवे॥१३८॥
नारायणाय साध्याय मनुरिष्टायधीमते।
यमाय प्राह भगवान् साध्यो नारायणोव्ययः॥१३९॥
नाचिकेताय भगवानाह वैवस्वतो यमः।
मार्कण्डेयायवार्ष्णेय नाचिकेताभ्यभाषत॥१४०॥
तथाप्यहममित्रघ्नस्तावंद्धाद्य विश्रुतम्।
स्वर्ग्यमारोग्यमायुष्यं धन्यं वेदैश्च समितम्॥१४१॥
नास्य विघ्नानि कुर्वन्ति दानवायक्षराक्षसाः।
पिशाचा यातुधान्ताश्चगुह्यका भुजगा अपि॥१४२॥
यः पठेत्प्रयतः प्रातर्ब्रह्माचारी जितेन्द्रिय।
अभिन्नयोगो वर्षन्तु अश्वमेधफलं लभेत्॥१४३॥
इत्याकाश भैरव तंत्रे हरिहर ब्रह्मविरचिते।
शरभ सहस्त्रनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥१४४॥

व्रत आदि से परे ब्रह्म मुक्तों की परम गति है। विमुक्तों को दीर्घ तेज होता है। श्रीमानो के धन की वृद्धि करता है। मेरे स्तुति करने पर भगवन आपने जैसी कृपा किया वैसी कृपा ब्रह्मादि देवता और महर्षियों पर भी नहीं किया। हे आद्य जगत्प्रभु मैं आपको किस प्रकार सन्तुष्ट करूँ? हे यज्ञपति वसु मुझे भक्ति दीजिये। तव शिव ने आज्ञा

दिया कि इन नामों से जो बुद्धिमान मेरी स्तुति करेगा उसे सद्गति मिलेगी। देवताओं द्वारा इस प्रकार की स्तुति की गयी। इन नामों में स्तुति करने पर पुष्टि की वृद्धि होती है। पवित्र होकर नित्य आत्मा से आत्मा मिलाकर इन नामों से स्तुति करे। क्योंकि स्वयंभू परमब्रह्म स्वयं गीत हो गये हैं। ऋषि और देवता इन नामों से शिव की स्तुति करने में तत्पर रहते हैं। स्तुति करने पर आत्मापति महादेव प्रसन्न होते हैं। भक्तों पर अनुकम्पा करनेवाले भगवान स्तुति करने वालों के हृदय में निवास करते हैं।

उसी प्रकार मनुष्यों में भी जहाँ कहीं प्रधान रूप में आस्तिकों श्रद्धालुओं के द्वारा बहुत जन्मों तक स्तुति की जाती है। ये आस्तिक श्रद्धालु जागते हुए सोते हुए चलते हुए चतुष्पथ में भी स्तुयमान की स्तुति करते है। हजार करोड़ नाना संसार की योनियों में जन्म लेने के बाद पापों से शुद्ध होकर मनुष्य को शिव भक्ति प्राप्त होती है। वह उत्पन्न भक्ति सभी भावों में आनन्ददायी होती है। देवताओं को भी दुर्लभ यह भक्ति मनुष्यों को तब तक प्राप्त नहीं होती जब तक उनमें निर्विघ्न निश्चल अनन्यभिचारिणी भक्ति नहीं होती। उन्हीं की कृपा से भक्ति उत्पन्न होती है तब भागवत मानस परम सिद्धि प्राप्त करता है। जो मनुष्य सभी भावों को त्याग कर शिव परत्व की भावना करता है उसे प्रपन्न वत्सल देव भवसागर से पार कर देते है।

इस प्रकार का भव मोचन अन्य देव भी करते हैं। महादेव अन्यत्र तपोबल से भी मनुष्यों का उद्धार करते है। सत असत पति भगवान कृत्तिवास से पहले ताड़ित होने पर ही शुद्ध बुद्धि होती है।

इस स्तोत्र को पहले ब्रह्मा ने धारणा किया। ब्रह्मा ने इन्द्र से कहा। इन्द्र ने मृत्यु को बतलाया। मृत्यु ने रुद्र से कहा। रुद्र ने तण्डी से कहा। तण्डी ने कठिन तपस्या किया और ब्रह्म स्वरूप हो गया। तण्डी ने शुक्र

से कहा शुक्र ने गौतम से कहा। गौतम ने वैवस्वत से कहा। नारायण साध्य मनु अरिष्ट से कहा। साध्य ने यम से कहा। साध्य नारायण अव्यय है। नचिकेता को भगवान वैवस्वत यम ने बतलाया नचिकेता ने वार्ष्णेय मार्कण्डेय से कहा। ऐसा मैंने सुना है। इससे स्वर्ग आरोग्य आयु धन वेद सम्मत प्राप्त होते हैं।

इसके उपासकों को दानव यक्ष राक्षस विघ्न नही करते पिशाच यातुधान गुह्यक सर्प भी विघ्न नहीं पहुँचाते। जो प्रयत होकर ब्रह्मचर्य जितेन्द्रिय अभिन्न योग होकर एक वर्ष तक पाठ करता है उसे अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

इस प्रकार आकाश भैरव तन्त्र में हरिहर ब्रह्मा रचित शरभ सहस्त्र नाम स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ।



लिंग पुराणोक्त श्री नृसिंह कृत शरभ स्तोत्रम्

अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम्

नमो रुद्राय शर्वाय महाग्रासाय विष्णवे।
नमः उग्राय भीमाय नमः क्रोधाय मन्यवे॥
नमो भवाय शर्वाय शङ्कराय शिवाय ते।
कालकालाय कालाय महाकालाय मृत्यवे॥
वीराय वीरभद्राय क्षयद्वीराय शूलिने।
महादेवाय महते पशूनाम्पते नमः॥
एकाय नीलकण्ठाय श्रीकण्ठाय पिनाकिने।
नमोऽनन्ताय सूक्ष्माय नमस्ते मृत्युमन्यवे॥
पराय परमेशाय परात्परतराय ते।
परात्पराय विश्वाय नमस्ते विश्वमूर्त्तये॥
नमो विष्णुकलत्राय विष्णुक्षेत्राय भानवे।
कैवर्त्ताय किराताय महाव्याधाय शाश्वते॥
भैरवाय शरण्याय महाभैरव रूपिणे।
नमो नृसिंहसंहर्त्रे नमः कालपुरारये॥
महापाशौघ संहर्त्रे विष्णुमायान्तकारिणे।
त्र्यम्बकाय त्र्यक्षराय शिपिविष्टाय मीढुषे॥
मृत्युञ्जयाय शर्वाय सर्वज्ञाय मखारये।
मखेशाय वरेण्याय नमस्ते वह्निरूपिणे॥
महाघ्राणाय जिह्वाय प्राणापान प्रवर्तिने।
त्रिगुणाय त्रिशूलाय गुणातीताय योगिने॥
संसाराय प्रवाहाय महायन्त्र प्रवर्तिने।
नमश्चन्द्राग्निसूर्य्याय मुक्तिवैचित्र्य हेतवे॥
वरदायावताराय सर्वकारण हेतवे।
कपालिने करालाय पतये पुण्यकीर्त्तये॥
अमोघायाग्निनेत्राय नकुलीशाय शम्भवे।
भिषक्तमाय मुण्डाय दण्डिने योगरूपिणे॥

मेघ वाहाय देवाय पार्वतीपतये नमः।
अव्यक्ताय विशोकाय स्थिराय स्थिरधन्विने॥
स्थाणवे कृत्तिवासाय नमः पञ्चार्थ हेतवे।
वरदाय कपर्दाय नमश्चन्द्रार्द्धमौलिने॥
नमस्तेऽवर राजाय वयसां पतये नमः।
योगीश्वराय नित्याय सत्याय परमेष्ठिने॥
सर्वात्मने नमस्तुभ्यं नमः सर्वेश्वरायते।
एकद्वित्रिचतुः पञ्च कृत्वास्तेऽस्तु नमो नमः॥
दशकृत्वस्तु साहस्रकृत्वस्ते च नमो नमः।
नमोऽपरिमितिं कृत्वाऽनन्त कृत्वो नमो नमः॥
नमो नमो नमोभूयः पुनर्भूयो नमो नमः।

सूत उवाच

नाम्नामष्ट शतेनैव स्तुत्वाऽमृतयेन तु।
पुनस्तु प्रार्थयामास नृसिंहं शरभेश्वरम्॥
यदायदा ममाज्ञानमत्यहङ्कार दूषितम्।
तदातदापऽनेतव्यं त्वयैव परमेश्वरः॥
एवं विज्ञापयन्प्रीतः शंङ्करं नरकेसरी।
नन्वशक्तो भवान्विष्णो! जीवितान्तं पराजितः॥
तद्वक्त्र शेषमात्रान्तं कृत्वा शर्वस्य विग्रहम्।
शुक्तिशित्यं तदा मङ्गं वीर भद्रः क्षणात्ततः॥

॥इति श्री नृसिंह कृत शरभाष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

इस अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र से देवताओं ने स्तुति किया। पुनः नृसिंह ने शरभेश्वर से प्रार्थना किया। जब जब मैं अज्ञान-अति अहंकार से दूषित होऊँ तब तब आप परमेश्वर मुझमें सुधार करने की कृपा करें। नृसिंह ने शंकर से इस प्रकार कहा। तब विष्णु कभी पराजित नहीं हुए। विष्णु के मुख से अन्तिम मात्रा निकलते ही शरभ शर्व के रूप में हो गये। उसी क्षण उनके अंग से वीरभद्र प्रगट हो गये।

इति श्री नृसिंह कृत शरभ-अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम्।

शरभोपनिषद्

सर्वं संत्यज्य मुनयो यद्भजन्त्यात्मरूपतः।
तच्छारभं त्रिपाद्ब्रह्म स्वमात्रमवशिष्यते॥

ओ३म् भद्रं कर्णेभिरिति शान्ति पाठः। ततश्च—

अथ हैनं पैप्पलादो ब्रह्माणमुवाच भो भगवन् ब्रह्मविष्णुरुद्राणां मध्ये को वा अधिकतरो ध्येयः स्यात्तत्वमेव नो ब्रूहीति।

तस्मै स होवाच पितामहश्च हे पिप्पलाद शृणु वाक्यमेतत्।
बहूनि पुण्यानि कृतानि येन तेनैव लभ्यः परमेश्वरोऽसौ।
यस्याङ्गजोऽहं हरिरिन्द्रमुख्या मोहान्न जानन्ति सुरेन्द्रमुख्याः॥१॥
प्रभुं वरेण्यं पितरं महेश यो ब्रह्माणं विदधाति तस्मै।
वेदांश्च सर्वान्प्रहिणोति चाग्र्यं तं वै प्रभुँ पितरं देवतानाम्॥२॥
ममापि विष्णोर्जनकं देवमीड्यं।
योऽन्ते काले सर्वलोकान्संजहार॥३॥
स एकः श्रेष्ठश्च सर्वशान्तः स एव वरिष्ठश्च।
यो घोरं वेषमास्थाय शरभाख्यं महेश्वरः।
नृसिंहं लोकहन्तारं संजघान महाबलः॥४॥
हरिं हरन्तं पादाभ्यामनुयान्ति सुरेश्वराः।
मावधीः पुरुषं विष्णुं विक्रमस्व महानसि (महानिशि)॥५॥
कृपया भगवान्विष्णुं विददार नखैः खरैः।
चर्माम्बरो महावीरो वीरभद्रो वभूव ह॥६॥
स एको रुद्रो ध्येयः सर्वेषां सर्वसिद्धये।
यो ब्रह्मणः पञ्चवक्त्रहन्ता तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥७॥
यो विस्फुल्लिङ्गेन ललाटजेन सर्वं जगद्भस्मसात्संकरोति।
पुनश्च सृष्ट्वा पुनरप्यरक्षदेवं स्वतन्त्रं प्रकटीकरोति।
तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥८॥
यो वाम पादेन जघान कालं घोरं पपेऽथो हालाहलं।
दहन्तम् तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥९॥
यो वाम पादार्चित विष्णु
नेत्रस्तस्मै ददौ चक्रमतीव हृष्टः।
तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥१०॥

यो दक्षयज्ञ सुरसङ्धान् विजित्य
विष्णुं बबन्धोरगपाशेन वीरः।
तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥११॥
यो लीलयैव त्रिपुरं ददाह विष्णुं कविं सोमसूर्याग्निनेत्रः।
सर्वे देवाः पशुतामवापुः स्वयं तस्मात्पशुपतिर्वभूव।
तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥१२॥

कामकालम्

यो मत्स्य कूर्मादिवराह सिंहान्विष्णुँ क्रमन्तं वामनमादि विष्णुम्।
विविक्लवं पीड्यमानं सुरेशं भस्मी चकार मन्मथं यमं च।
तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥१३॥

एवं प्रकारेण बहुधा प्रतुष्ट्वा क्षमापयामासुर्नीलकण्ठं महेश्वरम्।

तापत्रय समुद्भूत जन्म मृत्यु जनादिभिः।
नानाविधानि दुःखानि जहार परमेश्वरः॥१४॥
एवं[1] मन्त्रैः प्रार्थ्यमान आत्म वै सर्वदेहिनाम्।
शङ्करो भगवानाद्यो ररक्षसकलाः प्रजाः॥१५॥
यत्पादाम्भोरुहद्वन्द्वं मृग्यते विष्णुना सह।
स्तुत्यं महेशानमवाङ्मनसगोचरम्॥१६॥
भक्त्या नम्रतनोर्विष्णोः प्रसादमकरोद्विभुः।
यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह।
आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान्न बिभेति कदाचनेति॥१७॥
अणोरणीयान्महतो महीयानात्मास्य जन्तोर्निनिहितो गुहायाम्।
तमक्रतुं पश्यति बीतशोको धातुः प्रसादान्महिमा तमीशम्॥१८॥
वसिष्ठवैयासकिवामदेवविरिञ्चिमुख्यैर्हृदि भाव्यमानः।
सनत्सुजातादिसनातनाद्यैरीड्यो महेशो भगवानादिदेवः॥१९॥
सत्योनित्य; सर्वसाक्षी महेशो नित्यानंदो निर्विकल्पो निराख्यः।
अचिंत्यशक्तिर्भगवान्गिरीशःस्वाविद्यया कल्पितमानभूमिः॥२०॥
अतिमोहकरी माया मम विष्णोश्च सुव्रत।
तस्य पादाम्बुज ध्यानादुदुस्तरा सुतरां भवेम्॥२१॥

---

१. प्रार्थनं सर्वदेवानामेवाङ्गी कोच्छिवः

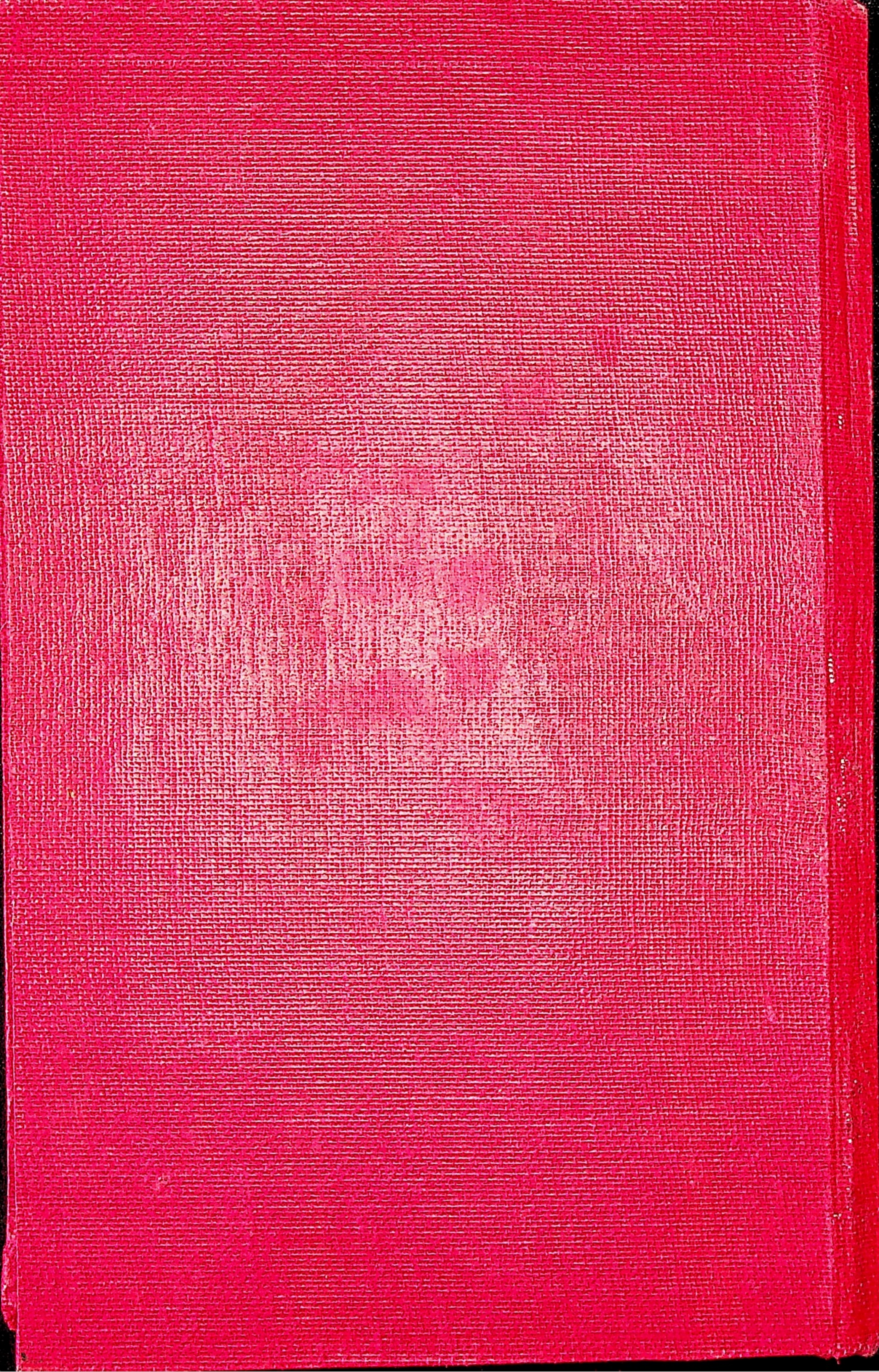
विष्णुर्विश्वजगद्योनिः स्वांशभूतैः स्वकैः सह।
ममांश संभवो भूत्वा पालयत्यखिलं जगत्॥२२॥
विनाशं कालतो याति ततोऽन्यत्सकलं मृषा।
ॐ तस्मै महाग्रासाय महादेवाय शूलिने।
महेश्वराय मृडाय तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥२३॥
एको विष्णुर्महद्भूतं पृथुभूतान्यनेकशः।
त्रींल्लोकान् व्याप्य भूतात्मा भुङ्क्ते विश्व भुगव्ययः॥२४॥
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च।
हूयते च पूनर्द्वाभ्यां स मे विष्णुः प्रसीदतु॥२५॥
ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥२६॥
शराजीवास्तदङ्गेषु भाति नित्यं हरिः स्वयम्।
ब्रह्मैव शरभः साक्षान्मोक्षदोऽयं महामुने॥२७॥
मायावशादेव देवा मोहिता ममतादिभिः।
तस्य माहात्म्यलेशांशं वक्तुं केनाप्य शक्यते॥२८॥
परात्परतरं ब्रह्म यत्परात्परतो हरिः।
परात्परतरो हीशस्तस्मात्तुल्योऽधिको न हि॥२९॥
एक एव शिवो नित्यस्ततोऽन्यत्सकलं मृषा।
तस्मात्सर्वान्परित्यज्य ध्येयान्विष्णवादिकान्सुरान्॥३०॥
शिव एव सदा ध्येयः सर्व संसारमोचकः।
तस्मै महाग्रासाय महेश्वराय नमः॥३१॥
पैप्पलादं महाशास्त्रं न देयं यस्य कस्यचित्।
नास्तिकाय कृतघ्नाय दुर्वृत्ताय दुरात्मने॥३२॥
दाम्भिकाय नृशंसाय शठायानृत भाषिणे।
सुव्रताय सुभक्ताय सुव्रताय सुशीलिने॥३३॥
गुरुभक्ताय दान्ताय शान्ताय ऋजुचेतसे।
शिवभक्ताय दातव्यं ब्रह्मकर्मोक्तधीमते॥३४॥
स्वभक्तायैव दातव्यमकृतघ्नाय सुव्रत।
नादातव्यं सदा गोप्यं यत्नेनैव द्विजोत्तम॥३५॥

एतत्पैप्पलादं महाशास्त्रं योऽधीते श्रावयेद्द्विजः
स जन्ममरणेभ्यो मुक्तो भवति।
यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति।
गर्भवासाद्विमुक्तो भवति।
सुरापानात्पूतो भवति।
ब्रह्महत्यात्पूतो भवति।
गुरुतल्पगमनात्पूतो भवति।
स सर्वान्वेदानधीतो भवति।
स सर्वान्देवान्ध्यातो भवति।
समस्त महापातकोपपातकात्पूतो भवति
तस्मादविभुक्तमाश्रितो भवति।
स सततं शिवप्रियो भवति।
स शिवसायुज्यमेति।
न स पुनरावर्तते न स पुनरावर्तते ब्रह्मैव भवति।
इत्याह भगवानब्रह्मेत्युपनिषत्।

शरभोपनिषत्समाप्तम्।

।।ग्रन्थोऽयं सुमनेन सम्पन्नः।।





गन्धर्वतन्त्रम्

'ज्ञानवती' हिन्दी टीका सहित

*व्याख्याकार—**आचार्य प्रो. राधेश्याम चतुर्वेदी***

गन्धर्वतन्त्र भगवती त्रिपुरसुन्दरी की साधना का ग्रन्थ है। गन्धर्वतन्त्र का विषय भगवती त्रिपुरसुन्दरी का वाममार्गी पूजा है। इसमें भगवती त्रिपुरसुन्दरी के विग्रहस्वरूप श्रीयन्त्र का रचनाविधान साङ्गोपाङ्ग वर्णित है। यन्त्र की निर्माणविधि, प्रत्येक अवान्तर चक्र की अधिष्ठात्री आवरण देवता का ध्यानपूर्वक सविधि-सभेद पूजनप्रकार, कुमारी पूजा, दीक्षा, पुरश्चरण, कौलाचार आदि का विस्तृत विवेचन इस ग्रन्थ में प्रस्तुत है।

मुख्य विषय के साथ आनुषाङ्गिक अनुष्ठानों की चर्चा इस ग्रन्थ की पूर्णता में सहायक सिद्ध हो[illegible] है। उदाहरण के लिए न्यास की चर्चा में अन्तर्मातृकान्यास, बहिर्मातृकान्यास, [illegible]न्यास, ग्रह, नक्षत्र, यो[illegible]ठ, वाग्देवता, मूलाङ्ग आदि सत्रह न्यासों की च[illegible] यहाँ की गयी है। बाह्य याग [illegible]-साथ आन्तर याग का भी वर्णन है। तत्तद् सन्दर्भों [illegible]स मुद्रायें प्रकीर्ण रू[illegible]हित हैं। दीक्षा-चर्चा के क्रम में सद्गुरु, सच्छि[illegible] [illegible]के कर्त्तव्य आ[illegible] भी दर्शाया गया है। इसी प्रकार आसन, गन्ध, पुष्प आ[illegible] उपचारों का सूक्ष्म एवं स[illegible]ीण विवरण ग्रन्थ में सुवर्णसौरभ की भूमिका प्रस्तुत करता है। आसन के प्रकार, उत्तम मध्यम अधम आसन, गन्ध के भेद, समर्प्य असमर्प्य पुष्प आदि का सूक्ष्म वर्णन साधक की साधना को सुकर एवं उत्कृष्ट बनाने में सहायक सिद्ध होता है। यह ग्रन्थ कभी बारह हजार श्लोकों वाला था। अब इसमें ४४४५ श्लोक ही हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ की हिन्दी व्याख्या आचार्य प्रो. राधेश्याम चतुर्वेदी द्वारा इदं प्रथमतया की गई है। प्रो. राधेश्याम जी तन्त्रशास्त्र के पारङ्गत व्याख्याता है। काशी हिन्दू विद्यविद्यालय से अवकाशग्रहण के बाद आपने अनेक तन्त्रग्रन्थों की इदं प्रथमतया हिन्दी प्रस्तुत की है। प्रस्तुत गन्धर्वतन्त्र विवेचनात्मक भूमिका, पारिभाषिककोश एवं श्लोकार्धनुक्रमणिका के साथ प्रकाशित है जो तान्त्रिक साधकों के लिए संग्रहणीय है।

₹ 650.00

designed by Shreyashi GRAPHICS, mo. 9839814784

Also can be had from : **Chowkhamba Sanskrit Series Office, Varanasi.**

ISBN : 978-81-218-0310-6